

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी-कहानी में परिवार का स्वरूप (१९४७ से १९७५ तक)

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की पी-एच० डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध



प्रबन्ध-सार

शोधकर्त्री :

कुमारी सुधा

निर्देशक :

प्रो० हरबंशलाल शर्मा

अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली ।

(१९७८)

THESIS SECTION

CERTIFICATE FROM THE SUPERVISOR

I certify that the thesis submitted by Kumari Sudha
title Swatantrayotter Hindi Kahani main Parivar Ka Swrup -
1947 se 1975 tak is the original work of the candidate and
is suitable for submission to the examiners for the award of
Ph.D. Degree.

H.L. Sharma
(H.L. Sharma)
Supervisor
Chairman

Central Hindi Directorate
New Delhi.

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप

(सन् 1947 से 1975 तक)

: शोध- प्रबन्ध का सँक्षिप्त रूप :

: परिचयात्मक विवेचन :

स्वतन्त्रता के बाद की हिन्दी कहानी ने भारतीय परिवार की निर्मम सच्चाइयों और सामयिक बुनियादी प्रश्नों को उठाया है। प्रश्न हो सकता है कि विवेच्य युगीन कहानियों की संवेदना की यथार्थ से टकराने की प्रक्रिया क्या है? यह प्रक्रिया रचनात्मक रूप में किन स्तरों पर उद्घाटित हुई है? इस संबंध में पहली बात यह है कि इस युग की कहानी में यथार्थ को चित्रित करने वाली दृष्टि सीधी और सरल न होकर जटिल और बहुआयता भी है। दूसरी बात यह है कि स्वतंत्र्योत्तर मध्यमवर्ग के तमाम कहानी लेखक भारतीय परिवार के समस्त पहलुओं को निकट से देख चुके हैं और देख रहे हैं। आस-पास के जीवन की समस्याओं और विसंगतियों ने ही उनकी कहानियों में मार्क्सिय मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और वस्तुपरक दृष्टि को उभरने का अवसर दिया है।

प्रेमचन्द युगीन अंतिम चरण की कहानियों को देखने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि संयुक्त कुटुम्ब की टूटन और बिखराव को उन लेखकों ने भी समझ लिया था। पारिवारिक तनाव और रिश्तों की विचिकित्ता स्वतंत्रता से पूर्व ही लेखकों के अध्ययन का विषय बन चुके थे। उसके बाद निरन्तर वैज्ञानिक परिवेश, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, व्यक्तिबोध, नारीजागृति, नारी जांकिता, और तलाक जैसे घटकों ने परम्परागत जीवनमूल्यों को फक्कड़ दिया। मूल्य विघटन ने नवीन मूल्यों के उदय का सूत्रपात किया। स्वतंत्र्योत्तर कहानी में पुरातन जीवन मूल्यों के विघटन एवं नवीन जीवन मूल्यों के उदय के टक्काहट को स्पष्ट गूँज सुनाई देती है।

वस्तुतः यह युग संक्रमण-काल है। हरदोत्र में उथल-पुथल और बेचैनी नजर आ रही है। पुराना परिवार सर्वथा टूट गया हो, ऐसी बात नहीं है। गांवों में आज भी संयुक्त कुटुम्ब विद्यमान हैं। दो-दो, तीन-तीन

पीढ़ियाँ साथ-साथ रहती हुई दिखलाई पड़ जाती हैं लेकिन वैमनस्य ईर्ष्या, द्वेष और पारस्परिक विरोध जैसी प्रवृत्तियाँ उन परिवारों में भी स्पष्ट दिखलाई देती हैं। परिस्थितियों और परिवेश ने नगरबोध और शहर की हवा का प्रभाव ग्रामांचलों में भी फैला दिया है। अतः ग्रामीण परिवार का प्रत्येक सदस्य उससे अत्यधिक प्रभावित है। अर्थतन्त्र की विषम प्रक्रिया ने पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी के संबंधों में ग्रामीण स्तर पर भी निर्भीक प्रहार किया है। यही कारण है कि नई पीढ़ी एकाकी परिवार को वहाँ भी अधिक अच्छा समझने लगी है और एक ही घर में तीन-चार बूढ़ों पर अलग - अलग भोजन बनने लगा है।

स्वातंत्र्योत्तर कहानी साहित्य में भारत की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है। समाज उस विन्दु पर खड़ा है जहाँ असन्तोष और अराजकता के नाना सन्दर्भ-सूत्र बिखरे हुए हैं। परिवार भला समाज से अछूता कैसे रह सकता है? वह समाज का ही क़ोटा और संचिपित रूप है। पारिवारिक संबंध जिन परिस्थितियों में बदले हैं या बदल रहे हैं उनका लेखकों ने तटस्थ रूप से यथार्थ के धरातल पर चित्रण किया है। आज आर्थिक पक्षा दुर्बल होने के कारण रक्त संबंधों में अनायास ही परिवर्तन आ गया है। वापसी¹ में पति-पत्नी, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री तथा जिन्दगी और गुलाब के फूल² में भाई-बहन, माता-पुत्र और माता-पुत्री के रिश्तों का परिवर्तन स्पष्ट रूप से अंकित है।

पति के लिये पति देवता नहीं रह गया है अपितु आज की शिद्धांत और समर्थ पत्नी, पति को समान भागीदार और साथी है, केवल भोग्या बनकर वह रहना पसन्द नहीं करती। *ऊंचाई*³ की नायिका

-
- 1- वापसी- उषा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल, पृ०-119
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष माग, दिल्ली, तृ० सं०-1971
 - 2- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा, पृ०-130, -- वही --।
 - 3- ऊंचाई- मन्मू मंडारी, एक प्लेट सैलाब, पृ०-126, अक्षर प्रकाशन,
2136-अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, पृ० सं०- 1968।

स्पष्ट रूप से अपने स्वांत्र शारीरिक संबंधों के अधिकार को उचित ठहराती है । जीविका-रत नारी ने भी परिवार के अन्तर्गत विभिन्न प्रश्नचिन्ह प्रस्तुत कर दिये हैं । कंटीली क्रांति¹, 'सुहागिनें'² कहानियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं ।

पारिवारिक समस्याओं के अतिरिक्त समाज में व्याप्त रिश्त-खोरी, सिफारिश, पदापात और अविश्वास आदि बुराइयों का भी चित्रण स्वाधीनोत्तर कहानियों में उपलब्ध है । इस संबंध में आखिरी सामान³ सेफ्टीपिन,⁴ अपने ही शहर में⁵ आदि कहानियाँ पठनीय हैं ।

आज ऐसी स्थिति है कि भाई-बहन एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी जैसे लगते हैं । लड़कियों को किचन के नाम से एलर्जी है, वे पापा की बीमारी से बोर होने लगती हैं ।⁶ माँ-बेटे के ममत्व-मूल्यों में विचित्र सा बदलाव आ गया है ।⁷ पुरानी पोट्टी और बुजुर्गों के प्रति आदर-सत्कार के भाव विलुप्त हो रहे हैं । एक पिता को उसकी सन्तान ही बिरादरी से बाहर कर रही है ।⁸

-
- 1- कंटीली क्रांति, उषा प्रियंवदा, जिन्दगी और गुलाब के फूल, पृ0-76 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, मैनाजी सुभाष मार्ग, दिल्ली, तृ0 सं0-1971
 - 2- सुहागिनें- मोहन राकेश, एक और जिन्दगी, पृ0-15, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली ।
 - 3- आखिरी सामान- मोहन राकेश, एक-एक दुनिया, पृ0-40, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दिल्ली- संस्करण-1969 ।
 - 4- सेफ्टीपिन- मोहन राकेश, पहचान- पृ0-102, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वि0 सं0-1974 ।
 - 5- अपने ही शहर में, रमेश उपाध्याय, श्रेष्ठ इतिहास पृ0-1, आर्य बुक डिपो, 30- नाईवाला, करौल बाग, दिल्ली-प्रथम सं0-1973 ।
 - 6- एक प्लेट सैलाब, मन्नू भंडारी, संग्रह यही, पृ0-32, अक्षर प्रकाशन, 2136-अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, प्र0 सं0-1968 ।
 - 7- संबंध- ज्ञानरंजन, फॉस के इधर और उधर, पृ0-113, अक्षर प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली- प्र0 सं0-1968 ।
 - 8- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक , राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र0 सं0-1971 ।

बदलते हुए मूल्य का इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय राष्ट्रीय जीवन में जो बहुमुखी परिवर्तन आया उसने पारिवारिक जीवन पर भी व्यापक प्रभाव डाला । प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानियों में परिवार के अन्तर्गत जो विविध अन्तर्विरोध, रूढ़ियाँ और विषमताएँ अपना समाधान माँग रही थीं । उनको सकारात्मक रूप में देखने परखने का पूरी चेष्टा स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखकों में पाई जाती है । प्रेमचन्द, कौशिक, बनुरसेन आदि कहानी लेखकों ने नारी-पीड़ा, शोषण और घुटन को अपनी कहानियों का विषय बनाया था । उनका दृष्टिकोण सुधारवादी था, वे नारी के प्रति अधिक उदार होने पर बल देने थे पर नारी-पुरुष के समानाधिकार जैसे प्रश्न को वस्तुपरक रूप में उन्होंने नहीं उठाया । इसके अतिरिक्त संबंधों और पारिवारिक समस्याओं में भी प्रेमचन्द युग से लेकर आज तक बहुत बड़ा अन्तर आया है । स्वातंत्र्योत्तर पारिवारिक संबंधों और समस्याओं को व्यक्तिपरक एवं समाजपरक दोनों ही रूपों में इन कहानियों में चित्रित किया गया है ।

- स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे देश में जिस मध्यम वर्ग का विकास हुआ उसमें पूँजीवादी व्यवस्था का विशेष योगदान है । दूसरे पूँजीवादी देशों की अपेक्षा भारत की स्थिति, इस दिशा में कुछ भिन्न है । भारत सदियों तक पराधीन रहा । अतः यहाँ पूँजीवादो पद्धति का विकास अन्य देशों की भाँति स्वस्थ ढंग से नहीं हुआ, फलस्वरूप अर्धविकसित पूँजीवाद का प्रभाव मध्यवर्ग पर अधूरे रूप में पड़ा और समानान्तर रूप में मध्यवर्ग के अपेक्षाकृत संपन्न और दामतापूर्ण लोग उच्चमध्यवर्ग के रूप में स्थापित होते गये । उच्चमध्यवर्ग जीविका, शिक्षा तथा समाज को अन्य सुविधाओं को उपलब्ध करने में मध्यवर्ग की अपेक्षा इसलिये अधिक समर्थ होता है कि आमदनी के स्रोत उसको अधिक सुलभ होते हैं । इस वर्ग को पारिवारिकता का विकास प्रायः नगरबोध के अन्तर्गत होता है । पुरातन सामन्तवादी परिवारों के सदस्य
-

गांव और कस्बों में भी उच्चमध्यवर्ग की सुख सुविधायें प्राप्त कर लेने हैं ।

सामाजिक क्षेत्र की परिवर्तित स्थितियों के कारण दाम्पत्य संबंध आज सबसे बड़ी समस्या बन गये हैं । उच्चमध्यवर्ग के अनेक दम्पति अतृप्त संबंधों और मानसिक तनाव के बीच जो रहे हैं । साथ रहते हुये भी उन्हें अकेलापन महसूस होता है । तनाव की पत्नी अतृप्ति का शिकार है । वह फूट-भूट की रोगिणी बनकर पति को समीप बुलाना चाहती है । पगडंडिया¹ कहानी की मिसिज जोशी अपने ठण्डे पति से संतुष्ट नहीं हो पाती । इसलिये उसे चपल और कामुक मिस्टर सेन से स्कान्त में रोमांस लड़ाना अनुचित नहीं प्रतीत होता । अलग और विपरीत² में पति-पत्नियाँ के संबंध असमान वर्णियों के कारण विकृत हो रहे हैं । संपन्न परिवार की लड़की, मामूली सी नौकरी करने वाले पुरुष की पत्नी बन जाने पर पति को अपना गुलाम बना लेना चाहती है । वह उसकी नौकरी छुवाकर घर दामाद बना देती है और अपनी ऊँची नौकरी तथा आभिजात्य का पूरा दबाव अपने पति पर डालती है । यह पति दीन हीन सा लगता है । भावनात्मक मैच न मिलने के कारण पति-पत्नी दोनों ही मानसिक व्यथा को भोगते हैं । फौलाद का आकाश³ का लेबर अफसर पति अपनी पत्नी मीरा को मानसिक तृप्ति नहीं दे सका । यही कारण है कि मीरा को राजकृष्ण मिनिस्टर की भेंट में कुछ निराला ही अनुभव हुआ और पति उसकी हंरकत को रोक नहीं सका ।

1- पगडंडिया- गिरिराज किशोर- पैपरबैट, पृ0-25, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6 ।

2- अलग और विपरीत- रमेश उपाध्याय, शेषा इतिहास, पृष्ठ-63 ।
आर्य बुक डिपो, 30-नाईवाला, करौल बाग, नई दिल्ली-5, प्र0 सं0- 1973 ।

3- फौलाद का आकाश- मोहन राकेश, क्वार्टर, पृ0-121, राजपाल एण्ड सन्स, शमीरी गेट, दिल्ली, प्र0 सं0-1972 ।

4- तनाव- राजेन्द्र यादव, टूटना- पृ0-85, अक्षर प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1966 ।

पश्चिमी प्रभाव और नव जागरण की चेतना के परिणाम स्वरूप तलाक जैसा कानून बनाया गया । साथ ही बिना तलाक के भी पति-पत्नी अलग-अलग रहकर अपनी-अपनी तरह से जिन्दगियाँ बिताने की हूट भी पा गये । टूटना¹ और प्रतिध्वनियाँ² दोनों कहानियों में उच्चमध्यम वर्ग के दाम्पत्य का विघटन होते - होते तलाक तक पहुँच गया है ।

✓ तलाक एक कानूनी माध्यम है परन्तु इसके अलावा भी दम्पति अलग-अलग हो जाने हैं क्योंकि पति-पत्नी में से किसी की भी शंकालु प्रवृत्ति अहम्पन्यता, यौन अराजकता आदि आदतें एकाकी परिवार के भी टुकड़े टुकड़े कर देती हैं । भग्न प्राचीर³ के विद्वान पति वज्रनामुक्त आधुनिक जीवन में जीने हुए भी पत्नी पर प्रतिबन्ध लगाने हैं और स्वयं मिस गौयल से प्रेमाचार करते हैं । परिणाम यह होता है कि उन्हें अपनी पीढ़ित और दामन पत्नी का दुर्लभता का सामना करना पड़ता है ।

विभिन्न पारिवारिक समस्याएँ :-

उच्चमध्यमवर्ग:- यौन संबंधों की अराजकता और सैक्सगत स्थितियों के नाना रूप विवेच्य युगीन कहानियों में बहुलता से पाये जाते हैं । विवाह पूर्व यौन-संबंध स्थापित करने का एक उदाहरण एक कमजोर शाख⁴ में विद्यमान है । मीता तीन वर्षों तक एक पुरुष से प्रेम का नाटक रचाकर अन्त में

-
- 1- टूटना- राजेन्द्र यादव, एक दुनिया समानान्तर, पृ०-297, संपादक राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, दरियार्गज, दिल्ली - द्वि० सं०-1970
 - 2- प्रतिध्वनियाँ- उषा प्रियंवदा- कितना बड़ा-भूँठ, पृ०-23, राजकमल प्रकाशन, 8-नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली, द्वि० सं०-1974 ।
 - 3- भग्न प्राचीर- शिव प्रसाद सिंह (कर्मनाशा की हार) पृ०-120, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी, प्रथम सं०-1958 ।
 - 4- एक कमजोर शाख- सुरेश सिन्हा, विकल्प कथा साहित्य विश्लेषक, पृ०-535- संपादक, शैलेश मटियानी, विकल्प कार्यालय, मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद, नवम्बर, 1969 ।

किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर लेती है। इसमें उसको तनिक भी अनौचित्य नहीं दिखलाई देना। सैक्स अराजकता का एक सर्वथा भिन्न रूप त्रिकोण¹ में मिलता है। यहाँ त्रिकोण पति-पत्नी और प्रेमिका का है। प्रत्येक की मनःस्थिति बदली हुई है। पत्नी को अन्य पुरुष के साथ संभोगरत देखकर पति तनिक भी विवर्लित नहीं हुआ अपितु उसने स्वीकृति सूचक प्रतिक्रिया ही दिखलाई। यौन बुद्धि का सशक्त रूप परिणति² में भी है जहाँ जवान पत्नी के होने हुए पति अन्य स्त्री से इश्क लड़ाता है।

सारांश यह है कि प्रेम और हार्दिक संबंध अब अपनी अर्थवत्ता खो चुके हैं। ये कहानियाँ वैयक्तिक नैतिकता की कहानियाँ हैं।

आत्म निर्भर और नौकरीपेशा महिला ने स्वतंत्र व्यक्तित्व का ज्वलन्त प्रश्न ही नहीं उपस्थित कर दिया अपितु उसका उत्तर भी उसने खोज निकाला है। उच्चमध्यम की पत्नी की जीविका ने परिवार से संबंधित तमाम समस्याओं को उभार दिया है। अपने पति की अपेक्षा ऊँची नौकरी करने वाली पत्नी ने स्थिति को और भी भयावह बना दिया है। फ्रांक वाला घोड़ा निकर वाला साईस³ की डिप्टी सेक्रेटरी पत्नी अपने बर्क पति पर हावी हो गई है। पति को खामोशी से इस पत्नी की सभी हरकतों को सहन करता है। दूसरी स्थिति यह भी होती है कि ऊँची नौकरी वाले पति के कारण पत्नी को अपनी नौकरी छोड़नी पड़ जाती है⁴

1- त्रिकोण- कृष्ण बलदेव वैद- दूसरे किनारे से - पृष्ठ-16, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

2- परिणति- हिमांशु जोशी, अन्ततः- पृष्ठ-60, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण-1973।

3- फ्रांकवाला घोड़ा और निकरवाला साईस- गिरिराज किशोर- पेपरबेट- पृष्ठ-95-राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्र0सं0-1970।

4- नई नौकरी- मन्तू मंडारी, एक प्लेट सौलाब, पृष्ठ-1, अक्षर प्रकाशन, प्र0लि0-2136-अंसारी रोड, दिल्ली, प्र0 सं0-1968।

पर ऐसा करने के बाद क्या उसे शान्ति मिल पाई ? शायद नहीं !

वस्तुतः आज के समाज में पारिवारिक सुरक्षा और व्यक्तित्व दो विरोधी चीजें हो गई हैं । पूँजीवादी पद्धति और पश्चिमी प्रभाव की एक देन है - प्रदर्शनप्रियता की प्रवृत्ति । रहन-सहन, केश-भूषण, खान-पान, बोल-चाल आदि सभी में आधुनिक परिवारी जन दिखावा करना पसन्द करते हैं । सेफ्टीपिन¹ की मिसेज सक्सेना मूठी शान में मरी जा रही है, उन्हें² उपन्यास सुनाने के लिये एक व्यक्ति चाहिए । एक समर्पित महिला की³ नायिका श्रीमती शीला अपना नाम शैला - ढोलक पर थाप³ कहानी में पूरा परिवेश अंग्रेजी सभ्यता से परिचालित है । अफसराना अदबों आदाब, अंग्रेजी का निबन्ध प्रयोग, गोल्फ, ड्रिंक, विदेशी नृत्य के स्टेप्स के प्रति⁴ मोह कहानी के पात्रों में अधिकता से पाया जाता है । खण्डित सन्दर्भ⁴ में⁵ क़ोटा भाई बड़े भाई को *गृह ईवनिंग* करता है । उद्दीपन की एक रात में क्लब, पार्टी, ड्रिंक, ट्विस्ट के माध्यम से आधुनिक फैशन का उद्घाटन हुआ है ।

उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियाँ आज के परिवार को बौद्धिक और भावनात्मक दोनों ही स्तरों पर विघटित कर रही हैं । एक समस्या से दूसरी समस्या उत्पन्न हो रही है । इस प्रकार समस्याओं के विभिन्न कोण अपना उत्तर माँग रहे हैं ।

- 1- सेफ्टीपिन- मोहन राकेश- फौलाद का आकाश, पृ०-१११, अक्षर प्रकाशन, २१३६, अंसारी रोड, दिल्ली, पृ० सं०-१९६६ ।
- 2- एक समर्पित महिला- नरेश मेहता- संग्रह यही-- पृ०-५५, भारतीय ज्ञानपीठ कलकत्ता ।
- 3- ढोलक पर थाप- विष्णु प्रभाकर, मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-८२, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०- १९७० ।
- 4- खण्डित सन्दर्भ- से०रा० यात्री, दूसरे चेहरे- पृ०-१०९, नीलाम प्रकाशन, ५-सुसरोबाग रोड, इलाहाबाद, पृ० सं०-१९७१ ।
- 5- तलाश- कमलेश्वर- मेरी प्रिय कहानियाँ-पृ०-१२८, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- द्वितीय सं०- १९७४ ।

मध्यमध्यमवर्ग:- मध्यमध्यमवर्गीय परिवार येन केन प्रकारेण अपनी मर्यादा का निर्वह करने हुए तरह-तरह की विहम्बनापूर्ण स्थितियों से गुजर रहा है। यदि इस वर्ग के नारी जीवन पर ही विचार करें तो वैधव्य, अनमेल विवाह, वेश्याचरण यौनाचार, आदि अनेक सामाजिक आयाम उसके जीवन का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत कर देते हैं।

आज की विधवा नारी पर पुरुष से प्रेम करने को पाप नहीं मानती। तलाश¹ की विधवा जो एक जवान बेटा की माँ भी है, अपने अधिकारों से संबंध स्थापित कर लेती है और उसकी बेटी भी माँ के साथ पूरी सहानुभूति रखती है। अपनी मुक्ति² की विधवा सीधा-सादा जीवन विताना चाहती है पर अन्त में अपनी सुरक्षा और सैक्स को भुल मिटाने के लिये वह एक नौजवान की बगल में निश्चित होकर सो जाती है।

अनमेल विवाह करना भारतीय परिवार की परम्परागत और घृणित आदत है। आज भी वह दुष्प्रवृत्ति नारी-जीवन में कटुता पैदा कर रही है। उर्मिल जीवन³ को सत्रह वर्षीया नीरू अपने विधुर और प्रौढ़ जीजा की पत्नी बनने के साथ ही साथ नन्हीं कृष्णा की माँ भी बन जाती है। उसे लगता है जैसे जीवन तत्व ही निःशेष हो रहा है। एक रोमैन्टिक कहानी⁴ की रुक्मिणी को घोसे से मिरगीवाले रोगी से ब्याह दिया जाता है। वह निरन्तर संघर्ष करती हुई अपने गृहस्थ को सुख-शान्तिपूर्ण बनाना चाहती है पर संबंधियों की गुणहागर्दी और उपेक्षा ने उसे हताश और समाजविमुख बना दिया।

1- तलाश- कमलेश्वर- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ0-128, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- द्वितीय सं0-1974।

2- अपनी मुक्ति- राजेन्द्र अवस्थी, मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ0-77, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम सं0-1975।

3- उर्मिल जीवन- राजेन्द्र यादव, पहचान- पृ0-72, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दरियार्गज-दिल्ली- द्वितीय सं0-1974।

4- एक रोमैन्टिक कहानी- भीष्म साहनी- भटकती राख, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- प्रथम सं0- 1966।

वेश्यावृत्ति या वेश्याचरणा केवल कोठे पर बैठने वाली औरत नहीं करती और यह भी आवश्यक नहीं है कि परित्यक्ता कुमारी अथवा विधवा औरत ही शरीर-व्यापार करे। आर्थिक सामाजिक तथा पारिवारिक आधारों से पीड़ित नारी को शरीर बेचने का नारकीय व्यापार करना पड़ता है। सब ठीक हो जायेगा¹ में एक विवाहिता स्त्री रुग्ण पति के घर पर रहते हुये धन्धा करती है और जब पति मर गया तब मकान मालिक से अपमानित होकर दूसरे मकान में जाकर यही काम करने लगी। विधवा होना स्वयं में एक अभिशाप है फिर पति की मृत्यु के बाद दूसरों² के ऋण के बोझ से दबो हुई मध्यवर्ग की स्त्री क्या करे ? मांस का दरिया³ की जुगनू स्वयं बीमार है पर बेसहारा पहाड़ सी जिन्दगी को काटने के लिए धन्धा करती है। ये विवश नारियाँ समाज के लिये चुनौती हैं। स्त्री वेश्यावृत्ति करती है जो पुरुष वेश्यागामिता का शिकार होता है। आलोच्य युगीन अनेक कहानियों में पुरुष की वेश्यागामिता की पृष्ठ-भूमि में नरुण पीढ़ी को निरुद्देश्य, और निष्क्रिय जटिल स्थितियाँ निहित दिखलाई गयी हैं। इधर पश्चिमी भोगवाद और हिप्पीवाद ने भी भारतीय युवावर्ग को भटकाया है। सितम्बर की एक शाम³ कटघरे में सांस⁴, कुत्तेगिरी⁵ आदि कहानियों में औरतबाज पुरुषों के विभिन्न रूप चित्रित हैं।

- 1- सब ठीक हो जायेगा- दूधनाथ सिंह, सपाट चेहरेवाला आदमी पृ०-51-अक्षर प्रकाशन, प्रा०लि० दरियागंज, दिल्ली, प्रथम सं०-1967।
- 2- मांस का दरिया, कमलेश्वर, संग्रह यही-- पृ०-32, अक्षर प्रकाशन प्रा०लि०-2136 दरियागंज, अंसारी रोड, दिल्ली।
- 3- सितम्बर की एक शाम- निर्मल वर्मा, परिन्दे, पृ०-122, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली-6।
- 4- कटघरे में सांस, मणिमधुकर, हवा में अकेले, पृ०-149, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज दिल्ली- संग्रह- 1972।
- 5- कुत्तेगिरी- महेन्द्र भल्ला, तीन चार दिन, पृष्ठ-56, रचना प्रकाशन, 45-ए खुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्रथम सं०-1972।

उच्चमध्यवर्ग के समान ही मध्यमध्यवर्ग के पति-पत्नी भी यौन अराजकता के शिकार होते हैं। स्वांत्रता के बाद यह प्रवृत्ति इसलिये अधिकता से फैली कि युगों की दासता से उन्मुक्त नारी जुली हवा में सांस लेती हुई जब आधुनिक सभ्यता की उन्मुक्तता में प्रविष्ट हुई तब उसने प्रणय और परिणय के दोत्रों में जैसा चाहा वैसा किया। दूसरी ओर अस्तित्ववाद का समर्थक पुरुष पश्चिम की यौन-मुक्ति से प्रभावित होकर सैक्स अराजकता को जीवन की आवश्यकता के रूप में देखने लगा।

हरी हुई औरत¹ की पत्नी अपने पति का इतवार को भी घर पर रहना पसन्द नहीं करती। वह अपने मित्र लुशवन्त के साथ उस दिन को बिताना चाहती है। अपने - अपने दायरे² का पति अपनी पत्नी और जवान बेटों की जानकारी में ही रात को अपनी आया से इश्क लड़ाने उसके कमरे में पहुँचता है। एक थी विमला³ की कुमारी लज्जा ने नये-नये प्रेमियों के द्वारा अपने और परिवार के जीवन की सुख सुविधा संपन्न बना लिया। अग्निखोर⁴ की नायिका का पता ही नहीं चलता कि वह विवाहिता है, परित्यक्ता है या विधवा। तरह-तरह के लोगों से उसकी बदनामी जुड़ी हुई है।

- 1- हरी हुई औरत- रवीन्द्र कालिया, नई कहानी कथ्य और शिल्प (शोधग्रन्थ) पृ०-२१२, डा० सन्तबरश सिंह, अभिनव भारती प्रकाशन, ४२-सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-१९७३।
- 2- अपने - अपने दायरे- मेहरुन्निसा परवेज, आदम और हव्वा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली- पृ० सं०-१९७२।
- 3- एक थी विमला- कमलेश्वर, खोई हुई दिशाएं, पृ०-८४, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं०-१९६२।
- 4- अग्निखोर- फणीश्वरनाथ रेणु- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-११८, राजपाल एण्डसन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम सं०- १९७३।

बदलती हुई परिस्थितियों ने नारी को रुढ़ियों और जर्जर मान्यताओं से मुक्त होने का साहस प्रदान किया है। संघर्ष की नायिका रेणु को जब ज्ञात होता है कि उसका विवाह उसके माँ-बाप एक दुहेजू वर से करने वाले हैं तब वह अपने भावी पति को विरोध - पत्र लिखनी है और फलस्वरूप उस वर को दामा मांगनी पड़ती है। मुरब्बो वाली¹ में नई पीढ़ी के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी भी रुढ़ि-विद्रोह करती है। जब नानी को यह ज्ञात होता है कि उसकी नातिनी अपने अन्तर्जातीय प्रेमी से विवाह करने का संकल्प कर चुकी है तब वह जाकर उसी का साथ देती है और परिवार के लोगों को उसके आगे झुकना पड़ता है। लकड़हारा² में चेतन्य आधुनिक युवती ने दहेज के लालची वर को झुकरा दिया।

नारी की जीविका ने उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है। साथ ही व्यक्तित्व प्रतिष्ठा के प्रश्न ने उसके जीवन में अनेक छोटी-बड़ी समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। रखाने आकाश नाई³ की लेखा कलकत्ते से अपनी ससुराल इसलिये जाती है कि अवकाश के कुछ दाणों में उसे शान्ति मिलेगी लेकिन जिठानी के व्यंग्य वाण, सास की अर्थ लोलुपता और पूरे परिवार के माहौल में लेखा अपने को सहजस्ट नहीं कर पाती। जीती बाजो की हार⁴ की नारी अच्छे साथी की तलाश में नौकरी करते - करते

- 1- मुरब्बो वाली- अमृता प्रनीतम, वह आदमी, वह औरत-पृ०-36, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974।
- 2- लकड़हारा, राजेन्द्र यादव, जहाँ लक्ष्मी कैद है, पृष्ठ-100, अक्षर प्रकाशन, प्रगति-2136-अंसारी रोड, दिल्ली।
- 3- रखाने आकाश नाई-- मन्नू मंडारी- मन्नू मंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ, अक्षर प्रकाशन, प्रगति-2136-अंसारी रोड, दिल्ली-6।
- 4- जीती बाजो की हार- मन्नू मंडारी, मैं हार गई, पृष्ठ-35, अक्षर प्रकाशन, प्रगति-2136-अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली- अक्षर संस्करण-1973।

प्राँढ़ होने लगती है । ऐसी स्थिति में वह किसी भी पुनरुण के साथ घर बसा लेती है पर घर का आरम्भ ही ऊब और थकान से होता है । धिरे हुये दाण¹ की आत्मनिर्भर नायिका का पति अपनो पत्नी के पर पुरुषों से मिलने जुलने पर अत्यंत चिंतित रहता है । ईष्या, अविश्वास और शंकाओं के कारण पति पत्नी के बीच दूरी और कलह बढ़ने लगती है । धागे², घर³, ईसा के घर इन्सान⁴ आदि कहानियाँ नौकरी करने वाली नारी की संक्रान्त स्थितियों को व्यक्त करती हैं ।

स्वाधीनोत्तर कहानी में मध्यवित्त परिवार को नगरबोध ने विकराल रूप से प्रभावित किया है । महानगर और नगर-जीवन की संवेदन शून्य स्थितियाँ अनेक कहानियों में अंकित हुई हैं । पारदर्शिक⁵ - दिल्ली में एक मौत,⁶ और नये-नये आने वाले⁷ कहानियाँ मृत्युबोध, भावनाहीनता और स्वार्थपरता के उन रूपों को उजागर करती हैं जो नगर-जीवन का अंग बन चुकी हैं ।

1- धिरे हुये दाण, महीप सिंह, हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा-

सविता जैन-पृष्ठ-127 (लेख) समकालीन हिन्दी कहानी और मूल्य, संघर्ष का दिशा- संपादक- रामदश मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्राम सं०- 1970 ।

2- धागे- निर्मल वर्मा- पत्नी गर्भियों में, पृष्ठ-7, राजकमल प्रकाशन, प्रा०लि० नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-प्रथम संस्करण- 1968 ।

3- घर-सुधा अरोड़ा-हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा-पृष्ठ-103- नौकरी पेशा स्त्री की संक्रान्त स्थितियों- सविताकिरण बजाज- सं० डा० रामदश मिश्र- डा० नरेन्द्र मोहन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1970 ।

4- ईसा के घर इन्सान, मन्मू मंडारी- नई कहानी की उपलब्धियाँ- धनंजय वर्मा- पृ०-103- नई कहानी -दशा दिशा संभावना- सं० श्री सुरेन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर प्रथम सं०- 1966 ।

5- पारदर्शिक-महीप सिंह, घिराव, राजपाल एंड संस- कश्मीरी गेट, दिल्ली ।

6- दिल्ली में एक मौत- कमलेश्वर, खोई हुई दिशारं-पृ०-30, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गा कुण्ड मार्ग- वाराणसी ।

7- नये-नये आने वाले, राजेन्द्र यादव, कोटे-कोटे ताजमहल, पृ०-10, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, दूसरा संस्करण-1972 ।

दासगा की घुटन से मुक्त होने के बाद जिस भारतीय प्रजातांत्रिक परिवेश में नई पीढ़ी को रहना पड़ रहा है उसमें उसके रंगीन स्वप्नों और स्वणिमि कल्पनाओं के प्रसाह चकना चूर हो रहे हैं। मध्यवित्त परिवार के तरुण बेटे बेरोजगारी और बेकारी के दौर से गुजरते हुये अपनी आस्था मूलक मनोवृत्ति को खोते जा रहे हैं। तेरी मेरी जिन्दगी¹ का नवयुवक, आसक्ति² का भाई, आखिरी रात का पति,³ कमर से ऊपर⁴ के दो मित्र साक्षात्कारों के चक्रव्यूह में घिरे हुये पूंजीवादी व्यवस्था और वर्गविषम्य की भयावहता को फोड़ने को विवश हैं। बुझे हुये चेहरे और निराश मन से ये युवक आत्म परायेपन की पीड़ा सहते हैं।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से उत्पन्न वर्ग विषमता और आर्थिक असमानता ने पूरे परिवार को भयंकर उलफटन में डाल दिया है। सिमटा हुआ दुःख⁵ का पिता अपनी नौकरी के रैक्स्टेंशन पाने हेतु अपनी जवान बेटी को अपने बौस की अंशायिनी बनाने को ले जाता है। मध्यवर्ग का एक लैब्लर अपने पुश्तैनी जमीन मकान की परम्परा नहीं करवा पाता, अपनी खूबसूरत

-
- 1- तेरी मेरी जिन्दगी, प्रेमचन्द सहजवाला, तेरी मेरी जिन्दगी पृ०-115 युनाइटेड बुक हाउस-4872, चाँदनी चौक, दिल्ली- प्रथम संस्करण-1975।
 - 2- आसक्ति- कमलेश्वर- ब्यान- पृष्ठ-152- लोकभारती प्रकाशन, 15-ए-महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, पृ० सं०-1972।
 - 3- आखिरी रात- काशीनाथ सिंह, लोग बिस्तरों पर- पृष्ठ-17, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, यूनिवर्सिटी मार्ग, इलाहाबाद- पृ० सं०-1968।
 - 4- कमर से ऊपर- रमेश बक्षी, विकल्प कथा साहित्य विशेषांक- पृ०-463- संपादक-शैलेश मटियानी, विकल्प कार्यालय, मोतीलाल नेहरू नगर इलाहाबाद-1, नवम्बर- 1969।
 - 5- सिमटा हुआ दुःख- हिमांशु जोशी, अज्ञेयः, पूर्वोदय प्रकाशन- 718, दरियागंज-दिल्ली, प्रथम सं०- 1973।
 - 6- पुराना मकान- राधाकृष्ण सहाय- जालीदार- पदों की धूप- पृष्ठ-28, 15-ए, लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1970।

पत्नी को पति बड़े-बड़े लोगों के पास भेजने में संकोच नहीं करता क्योंकि उसके बलपर उसे ठेका¹ मिल जाता है। बाँस को लुप्त करने के लिए और तरकी पाने के लिये एक बेटा अपनी माँ को बेकार सामान की तरह घर के एक कोने में छिपा देता है²। आर्थिक विषमता जन्य पीड़ा और मूल्य भंग होने का यथार्थ चित्रण इन कहानियों में मिलता है।

आलोच्य युगीन कहानियों में एक नवीन और विशिष्ट संदर्भ जो दिखलाई देता है वह है बालमनोविज्ञान की पकड़। पारिवारिक उलझनों और जटिलताओं को बालक और किशोर भी समझने लगते हैं। माँ-बाप की परेशानियों से वे भी प्रभावित हुये बिना नहीं रहते। इन्हीं तथ्यों को तस्वीर³, पुराना मकान⁴, घरती अब भी घूम रही है⁵, तथा एक वह⁶ कहानियों में सशक्तता के साथ उद्घाटित किया गया है।

- 1- ठेका- विष्णु प्रभाकर, घरती अब भी घूम रहा है- पृष्ठ-70, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली- प्रथम सं०- 1959।
- 2- बापू को दावत - भीष्म साहनी- एक दुनिया समानान्तर- पृ०-223, संपादक- राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन- प्रिण्टिग, 2136- अंसारी रोड- दरियागंज- दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1970।
- 3- तस्वीर- भीष्म साहनी- पटरियाँ- पृष्ठ-9, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली।
- 4- पुराना मकान, राधाकृष्ण सहाय, जालीदार पदों की घूम- पृ०-28 लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद- प्र० सं०-1970।
- 5- घरती अब भी घूम रही है, विष्णु प्रभाकर संग्रह- यही-- पृ०-5 राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र० संस्करण- 1959।
- 6- एक वह- रामदरश मिश्र, एक वह, पृष्ठ-85, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 23-दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1974।

निम्नमध्यवर्ग:- सामाजिक और आर्थिक विषमता से उत्पन्न दारुणता याता, बेकसो, अवसाद, कुण्ठा और समझौते जैसी दयनीय परिस्थितियाँ निम्न मध्यवर्गीय परिवार के सदस्यों को सबसे अधिक फेलने पहुँची है। निम्नमध्यवर्ग का व्यक्ति जिन अन्तर्विरोधों और भयावह परिस्थितियों से गुजर रहा है उसकी मूल धुरी अर्थ-संकट है। यह मेरे लिये नहीं¹ के माँ-बेटे तथा दायरा² का केन्द्रीय पात्र पारिवारिक ममत्व से कटे हुये हैं क्योंकि अर्थभाव के कारण ये लोग सहज संबंध नहीं निभा पाते। मृत्यु शय्यापर पड़े हुये पिता का इलाज न करा पाने के कारण बेटी को बनावटों नाटक अपनी माँ के सामने करना पड़ता है। वह कहती है कि डाक्टर ने जबाब दे दिया है। बच्चों को बाबूजों को जरूरत नहीं रहता। यह वस्तुस्थिति अर्थभाव से जुड़ी हुई है। अगर मैं आज³ का देसराज सवासौ रुपये की नौकरी और बीमार पत्नी तथा दमे के मरीज बाप के बीच तालमेल नहीं बिठला पाता। वह इस बात को सोचकर एक विदूष हँसो हँसता है कि अगर मैं नहीं रहूँगा तो क्या होगा? पति पत्नी की सुख शाम⁵ केवल इसलिये कटुता से भर जाते हैं कि पत्नी द्वारा अपनी एक मित्र को चाय पिलाने का प्रस्ताव, पति को अपनी आर्थिक दशा पर किया गया व्यंग्य प्रतीत होता है। सीसीफस⁶ के कमर टूटे पिता जानवर की तरह घिसटते हैं, विवश और अर्थ संकट से घिरा

1- यह मेरे लिये नहीं- धर्मवार भारता, बन्द गली का आखिरी- मकान, पृ0-51, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-5, पृ0 सं0-1969।

2- दायरा- राम कुमार - समुद्र, पृ0-51, राजकमल प्रकाशन, प्रा0लि0, दिल्ली- पृ0- प्रथम संस्करण- 1968।

3- खास पाहुना-सुदर्शन चौपड़ा- सद्क दुर्घटना, पृष्ठ-34, नीलाम प्रकाशन, 5-दुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं0- 1972।

4- अगर मैं आज- कृष्ण बलदेव वैद, मेरा दुश्मन, पृ0-89, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6।

5- शाम- अमरकान्त- समकालीन कहानी मूल्यांकन को दिशाएं- आदश नारायण श्रीवास्तव- हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- पृ0-112, संपादक- डा0 रामदरश मिश्र, डा0 नरेन्द्र मोहन, नेशनलपब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम सं0- 1970।

6- सीसीफ- हृदयेश, छोटे शहर के लोग, पृ0-93, अक्षर प्रकाशन, पृ0 सं0-72।

पुत्र चेष्टा करने पर भी सौ नहीं पाता, प्राइमरी में पढ़ाने वाली पुत्री पचास रुपये घर में देकर केवल 10 रुपये जेबखर्च से काम चलाती है। पूरे परिवार के लोग एक जगह एकत्रित होकर मानों आनेवाले संकट पूर्ण जीवन को देखने के लिये उत्कण्ठित रहते हैं।

बेरोजगारी के आघात से पिटे हुये निम्नमध्यवर्ग के पात्र नाना अनचाही स्थितियों से समझौता करते हैं और कुंठित जिन्दगी जीने के लिये मजबूर रहते हैं। नया जन्म¹ का बेकार माई अपनी जवान बहन की शादी अड़तालीस साल के काले कलूटे विधुर से इसलिए कर देता है कि वह धनी है। साया² का बेकार तरुण पुत्र जिन्दगी से ऊँकर आत्म हत्या कर लेता है। डिप्टी कलक्टर के सारे स्वप्न बूर-चूर हो जाने पर वही पुराना मकान और पुरानी मजबूरियाँ निम्नमध्यवर्ग का मामूली आदमी आवास समस्या से अत्यधिक पीड़ित रहता है। एक कमरे का घर³ का पति कोटे से घर में मानसिक तनाव की स्थिति में पत्नी की अधीर प्रतीक्षा करता है। साया⁴ के नवदम्पति अपनी मधु यामिनी दूसरे के मकान में व्यतीत करने को मजबूर हैं। सिफारिशी चिट्ठी⁵ तथा बड़ी कृपा है⁶ आदि के पात्र

-
- 1- नया जन्म- सुरेश सिन्हा, कई आवाजों के बीच, पृ0-174, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद- प्र0 संस्करण- 1968।
 - 2- साया- हृदयेश, कोटे शहर के लोग- पृष्ठ-65, अक्षर प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली- प्रथम सं0- 1972।
 - 3- डिप्टी कलक्टर- अमरकान्त- मौन का नगर- पृ0-51, रचना प्रकाशन, 45-ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद- प्रथम सं0-1972।
 - 4- एक कमरे का घर- शानी- मेरी प्रिय कहानियाँ- राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975।
 - 5- साया- हृदयेश, कोटे शहर के लोग- पृ0-65, अक्षर प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली- प्रथम सं0- 1972।
 - 6- सिफारिशी चिट्ठा- भीष्म साहनी- भटकते राल- पृ0-125, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली।
 - 7- बड़ी कृपा है- राजेन्द्र यादव, जहाँ लक्ष्मी कैद है-पृ0-45, अक्षर प्रकाशन, ग्रा0 लि0-2136, अंसारी रोड, दरियागंज-दिल्ली-6।

ऊपरी धरातल पर टिके हुये हैं। नई पीढ़ी की विभ्रान्तता और निराशा की यथार्थ दृष्टि इन कहानियों में सजीवता से उभरी है।

निम्नवर्ग:- निम्न वर्ग का परिवार निम्नस्तरीय जीवन यापन करने को मजबूर है। स्वाधीनता की लम्बी अवधि के उपरान्त भी गरीब गरीब हो रह गया इतना ही नहीं वह और गरीब होता जा रहा है क्योंकि अमीर और अधिक अमीर होता जा रहा है। निम्नवर्ग की विधवा इन्हें भी इन्तजार है¹ में दर-दर भीख माँगने लगती हैं तो जिन्दगी और जोंक² का रजुवा समाज की आर्थिक विवशता से पीड़ित होकर जीने के लिये मिथ्यावृत्ति करता है। गरीबी के कष्टों से अन्धकूप³ की सोनी मामी कुर्रें में कूद कर आत्म हत्या कर लेती है।

कई वैवाहिक की भयावह विपत्तियाँ फोलने फोलने निम्न वित्त पात्र विविध और दीन स्थितियों से गुजरने को मजबूर होते हैं। मैं हार गई⁴ का मुख्य पात्र बहन के इलाज के लिये चोरी करने को विवश हो जाता है। जमींदार के कारिन्दों से मुठभेड़ लेने के कारण उसे अपने पिता की मृत्यु देखने को मिलती है। अपने-अपने- बच्चे⁵ की माँ पति द्वारा

-
- 1- इन्हें भी इन्तजार है- शिवप्रसाद सिंह- इन्हें भी इन्तजार है, पृ०-63, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी- प्र०सं०-1961।
 - 2- जिन्दगी और जोंक- अमरकान्त- मौत का नगर, पृ०-97, रचना प्रकाशन, 45-ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्रथम सं०-1973।
 - 3- अन्धकूप- शिव प्रसाद सिंह-इन्हें भी इन्तजार है, पृष्ठ-241, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय- वाराणसी, प्रथम सं०-1961।
 - 4- मैं हार गई- मन्नू भंडारी- मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ- पृष्ठ-145, अक्षर प्रकाशन- प्रा०लि०-2136- अंसारी रोड, दरियागंज- दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1975।
 - 5- अपने-अपने बच्चे- भीष्म साहनी, पटकती राख, पृष्ठ-194, राजकमल प्रकाशन, 8-फैज बाजार- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966।

क्रोध दिये जाने पर अपने चार बर्णिय बेटे को लेकर घर-घर कोटी-मोटी नौकरों करती - फिरती है । जिन्दगी गरीब को भी प्यारी है पर उसे चलाने के लिये विवश व्यक्ति को जो अमानवीय और नारकीय व्यवहार सहना पड़ता है उसे देख सुनकर किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जायेगा । प्यास कहानी के समा पात्र गले से दायरे में रहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है इसे बेहतर जिन्दगी गुजारने का उनको अधिकार नहीं है । भूखे प्यासे³, मकलियां⁴, बर्थे⁵ और चित्रफलक⁶ में भी विपन्नता और अथिभाव का दैन्य चित्रित है । इन पात्रों में एक नये शोषणाविहीन सुखी परिवार और समाज की उमंग पाई जाती है ।

परिवर्तित संबंधों का स्वरूप - पति-पत्नी:--- स्वातंत्र्योत्तर कहानी में पारिवारिक संबंधों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है । आज के परिवार में जो कुछ घट रहा है, रिश्तों के निर्वह की जो औपचारिक, अनात्मोय और अरुचिकर प्रक्रिया चल रही है उस पर अधिकारी कहानीकारों ने सूक्ष्म दृष्टि डाली है । संयुक्त परिवार टूट रहा है । पुराने पारिवारिक मूल्य क्षिन्न-भिन्न हो रहे हैं और नवीन मूल्यों का

-
- 1- प्यास- शैलेश मटियानी, दो दुखों का एक सुख- पृष्ठ-40, किताब महल, 56-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1966 ।
 - 2- भूखे प्यासे- द्विजेन्द्र नाथ मिश्र, कहानी, जनवरी- 1955 ।
 - 3- मकलियां- शानी- कहानी- आस्त- 1960 ।
 - 4- बर्थे है- श्रीमती चन्द्र किरण सोनरिका, कहानी, जनवरी- 1958 ।
 - 5- चित्रफलक-

उदय हो रहा है। दो पीढ़ियों का टकराव कई कहानियों में देखा जा सकता है। पिता¹, शीष्कि हीन², पीढ़ियाँ³, बिरादरी बाहर⁴ में पुराना और नई पीढ़ी के जीवन मूल्यों का संघर्ष है। पुरानी पीढ़ी पराजित हो रही और एकाकीपन या समझौतावाद को स्वीकार कर रही है।

पति-पत्नी संबंधों में भारी परिवर्तन आ गया है। प्रेम चन्दौतर युग में यशपाल ने नारी स्वतंत्रता और उसके समानाधिकार को जिस संवेदना को अपनी कहानियों में सामाजिक, पारिवारिक स्थितियों तथा यौन संबंधों को आधार बनाकर चित्रित किया था उसी का अग्रिम और परिष्कृत रूप इस युग की कहानियों में दृष्टिगत होता है। ग्लास टैंक⁵ के छैठी सुनते हुए भी नहीं सुनते और अखबार में आंख गढ़ाये वे (पत्नी के मित्र) तीसरे⁶ व्यक्ति से दिखावटी बातचीत भी कर लेते हैं। एक प्रामाणिक फूठ⁶ में

- 1- पिता- ज्ञानरंजन, फॉस के इधर और उधर- पृष्ठ-77, अक्षर प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली- प्र० सं०-1968।
- 2- शीष्किहीन, गंगाप्रसाद विमल- कोई शुरुआत-पृष्ठ-101, फौजबाजार- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1973।
- 3- पीढ़ियाँ- राजेन्द्र अवस्थी- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-44, राजपाल एण्ड संस-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1975।
- 4- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृष्ठ-110, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०- 1971।
- 5- ग्लास टैंक- मोहन रादेश, क्वार्टर- पृष्ठ-80, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०- 1972।
- 6- एक प्रामाणिक फूठ- रवीन्द्र कालिया- नौ साल की पत्नी, पृष्ठ-82 अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847-यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

पत्नी अपने पति को कोड़कर मित्र के घर चली जाती है और पति को महसूस होता है कि जिस्म में अलकोहल की कमी हो गई है। वे दोनों² में पति-पत्नी परस्पर संतुष्ट दिखाई देने हैं जबकि पति अपनी प्रेमिका को निःसंकोच घर भी ले आता है और उसके साथ रोमांस करता है। पंचा² कहानों में पति पत्नी ने सुहागरात को ही तलाक ले सकने की कानूनी दिक्कतों पर बात कर ली थी।

नौकरी पेशा पत्नी ने आत्मनिर्भर बनकर देश के इतिहास में एक स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ा है लेकिन आज की व्यवस्था जन्म विकृतियों ने उसके समक्ष अनेक समस्याएँ खड़ी कर दी हैं। दृष्टिदोष³, अलग और विपरीत⁴, तथा कंटीली क्रांति⁵ कहानियाँ इसी प्रकार की हैं।

सास-बहू:- जब पति-पत्नी के संबंध ही इतने विषम और विचित्र हो चुके हैं तब सास-बहू के संबंधों का तो कहना ही क्या है? आज एकाकी परिवार में रहने की अभ्यस्त पत्नी सास को अपने निर्देशन में रखती है। आर्द्रा⁶ की सास आकर कुछ दिन बैठे बहू के पास रहती है पर बहू के संकोच से आत्म

1- वे दोनों- विष्णु मोहन सिंह, टट्टू सवार, पृष्ठ-45, रचना प्रकाशन, 45-ए सुल्तानबाद, इलाहाबाद।

2- पंचा- सुदर्शन चोपड़ा- सन् साठ के बाद की हिन्दी कहानों - उत्कर्ष विशेषांक- 1966-संपादक यशपाल, गोपाल उपाध्याय।

3- दृष्टिदोष- उषा प्रियंवदा-जिंदगी और गुलाब के फूल-पृष्ठ-105, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेतार्जी सुभाष मार्ग, दिल्ली।

4- कंटीली क्रांति- उषा प्रियंवदा, जिंदगी और गुलाब के फूल- पृष्ठ-76, भारत भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-6, तृ० सं०-1971।

5- अलग और विपरीत-रमेश उपाध्याय, शेष इतिहास-पृष्ठ-63, आयु बुक डिपो-30 नाईवाला, करौल बाग, नई दिल्ली- प्र०सं०-1973।

6- आर्द्रा- मोहन राकेश-कहानों विविधा- हा० देवीशंकर अवस्थी, पृष्ठ-144, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-13वीं आवृत्ति-1944।

परायापन अनुभव करती है। वह बेटे से भी खुला व्यवहार नहीं कर पाती। सब कुछ उसे औपचारिक लगता है। गीता सहस्त्रनाम की सास बहू की उपेक्षा से पीड़ित है। वह प्रताप की सी स्थिति में अपना दैन्य प्रकट किया करती है। कुछ लेखकों ने पुरातन पन्थों सासों के चरित्र को भी निरूपित किया है जिनके द्वारा बहुओं का शोषण और दमन किया जाता है। सावित्री नम्बर दो², अरुन्धती³ तथा अगर मैं आज⁴ में प्राचीन भारतीय परिवार की क्रूर और कठोर सासों अपनी बहुओं के प्रति बुरे से बुरा व्यवहार करने में नहीं बूकतीं।

पिता-पुत्र:- पिता पुत्र संबंधों में भी तनाव, विरोध और विद्रोह पाया जाता है। स्वाधीनता प्राप्ति के कुछ सालों तक पितृवर्ग के प्रति पुत्रों की आस्था, आदर और विनम्रता का व्यवहार पाया जाता रहा लेकिन बाद में उत्तरोत्तर स्थिति बदलती गयी। अब और नहीं⁵ के पुत्र के मन में कभी-कभी ही पिता के प्रति ममता जागती है। शेष होते हुये⁶ में पिता-केन्द्रित समग्र परिवार बिखर रहा है। खास पाहुना⁷ में बेरोजगार पुत्र की अर्थ संकूल

-
- 1- गीता सहस्त्रनाम- भीष्म साहनी- भटकती राख- पृष्ठ-207, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1966 ।
 - 2- सावित्री नम्बर दो- धर्मवीर भारती- बन्दगली का आखिरी मकान, पृष्ठ-21- भारती ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वि०सं०-1973 ।
 - 3- अरुन्धती- शिव प्रसाद सिंह, मुदी सराय-पृ०-15, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन-दिल्ली, प्रथम सं०-1966 ।
 - 4- अगर मैं आज- कृष्ण बलदेव वैद, मेरा दुश्मन, पृष्ठ-89, राजकमल प्रकाशन, प्ला०लि०-दिल्ली, प्रथम सं०-1966 ।
 - 5- अब और नहीं- कमलेश्वर - ब्यान-पृष्ठ-178, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गान्धी मार्ग- इलाहाबाद- प्रथम सं०- 1972 ।
 - 6- शेष होते हुये- ज्ञानरंजन- फॉस के इधर और उधर-पृ०-62, अक्षर प्रकाशन, 2136-अंसारी रोड, दिल्ली-प्रथम सं०- 1968 ।
 - 7- खास पाहुना- सुदर्शन बोपड़ा, सड़क दुर्घटना, पृ०-34, नीलाम प्रकाशन, खसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1972 ।

परिस्थिति के कारण रोगी पिता इलाज के अभाव में मर जाता है ।
 दायरा¹ में पिता-पुत्र की अजनबियत का चित्रण है । बीमार पिता का
 भार तथा अपने और पिता के परिवार का बोझ न उठा सकने के कारण
 पुत्र दिग्भ्रामेत्सा स्टेशन पर बैठा हुआ सोचता है वह किस गाड़ी को पकड़े ?

विवेच्य युग में पिता पुत्रों के बीच प्रतिद्वन्द्विता और विद्रोह
 जैसी स्थितियों को उभारने वाली भी अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं ।
 वापसी², एकस्थिति³, सड़क दुर्घटना⁴, शीर्ष्कहीन⁵ में पिता-पुत्र संबंधों
 का पदार्पण करे हुये दो तथ्यों को स्पष्टतः उजागर किया गया है ।
 पहला तथ्य यह है कि पुरानी पीढ़ी पूर्वग्रहों और अपनी मान्यताओं को
 नई पीढ़ी से बलात स्वीकार करवाना चाहती है और दूसरा तथ्य यह कि
 पिता-पुत्र की दो पीढ़ियों की खाई अलंघ्य हो गई है । पुत्रों का व्यवहार
 अनास्था मूलक होने से भी और आगे बढ़ गया है ।

पिता-पुत्री:- संबंधों के बदलने के कारण और परिस्थितियाँ प्रायः
 एक ही होती हैं । पिता-पुत्री संबंधों में एक विशेष बात अवश्य देखने में आती
 है कि स्वातन्त्र्योत्तर बेटी नई चेतना और आत्म विश्वास के साथ अपने

-
- 1- दायरा- रामकुमार- समुद्र- पृष्ठ-136- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
 - 2- वापसी - उषा प्रियंवदा- जिवन्मगी और गुलाब के फूल- पृष्ठ-119-
 भारतीय ज्ञानपीठ ।
 - 3- एक स्थिति- राम कुमार- समुद्र, पृष्ठ-135, राजकमल प्रकाशन,
 दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968 ।
 - 4- सड़क दुर्घटना- सुदर्शन चोपड़ा संग्रह यही-- पृष्ठ-89, नीलाम प्रकाशन,
 5-खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1972 ।
 - 5- शीर्ष्कहीन- गंगा प्रसाद विमल- कोई शुरुआत- पृष्ठ-101, राजकमल
 प्रकाशन- प्र०लि०- फौजबाजार- दिल्ली-6 ।

विषय में सोचने लगी है। बिरादरी बाहर¹ की बेटी पिता के विरोध के बावजूद अन्तर्जातीय प्रेम-विवाह कर लेती है। पीढ़ियाँ² की बेटी स्वेच्छा से अपने प्रेमी से कोर्ट मैरिज कर लेती है जिसका पता पिता को बहुत दिनों बाद लगता है।

आर्थिक मजबूरी से दबा हुआ पिता जब परिवार के लिये कुछ नहीं कर पाता तब उसे अनाज की बोखियों के लिये अपनी बेटी के शारीरिक व्यापार को स्वीकार करना पड़ता है³। अमावगुस्त रुग्ण पिता की बेटी को दाय⁴ में उन सारी परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है जिन्हें वह पहले पसन्द नहीं करती थी।

आधुनिक वातावरण में पलने वाली बेटी स्वतंत्र रहना चाहती है इसलिये खण्डित कथा⁵ की बेटी कालेज के बहाने काफी समय बाहर बिताती है। वह अपने चुस्त कुत्ते के पिछले⁶ बटन अपने बाप से लगवाने में तनिक भी संकोच नहीं करती। शीष्किहोन की विवाहिता बेटी अपने पिता के विषय में जिस प्रकार की बातें करती है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसका वह

-
- 1- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक, पृ0-166 राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1971।
 - 2- पीढ़ियाँ- राजेन्द्र अवस्थी, तलाश- पृष्ठ-34, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली प्रथम संस्करण- 1970।
 - 3- फरिश्ते- मणिमधुकर- हवा में अकेले, पृष्ठ-33- राधाकृष्ण प्रकाशन, 2-अंसारी रोड, दरियागंज- दिल्ली।
 - 4- दाय- मन्नु मंडारी- मन्नु की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ0-71, अक्षर प्रकाशन, प्रा0लि0 दरियागंज-दिल्ली-6, संस्करण- 1975।
 - 5- खण्डित कथा- सुदर्शन चोपड़ा- सड़क दुर्घटना, पृष्ठ-125, नीलाम प्रकाशन, खुरारो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं0-1972।
 - 6- शीष्किहोन- गिरिराज किशोर- रिश्ता तथा अन्य कहानियाँ, पृ0-9 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, संस्करण- 1969।

पिता एक प्रेमी जैसा है । कलह¹ और बूहे² कहानियां भी पिता-पुत्री के विचार वैभिन्न्य को व्यक्त करती हैं ।

माता-पुत्र:- माता-पुत्र संबंधों को कहानियां दो प्रकार की पाई जाती हैं ।
कुछ कहानियों में प्रेमचन्द युगीन मातृत्व और पुत्र-प्रेम के दर्शन होते हैं पर
अधिकांश में मां-बेटा अलग-अलग टूटने बिखरते संबंधों के मध्य विवृत³ हो
गये हैं । कर्मनाशा की हार³, देवा की मां⁴ तथा आद्रा⁵ आदि कहानियां
आदर्श मूलक छेय को व्यक्त करती हैं ।

पुरानी और नई पीढ़ी का द्वन्द्व, यौन संबंधों की स्वतंत्रता,
आर्थिक संकट, और विपन्नता जन्य स्थितियों के संदर्भ में पुरानी और नई
लकीरें⁶, रिश्ता⁷, संबंध⁸, इन्तजार⁹ आदि कहानियां महत्वपूर्ण हैं ।

-
- 1- कलह: ज्ञानरंजन फौंस के इधर और उधर- पृष्ठ-25, अक्षर प्रकाशन,
2136-अंसारी रोड, दिल्ली- प्रथम सं०- 1968 ।
 - 2- बूहे- गिरिराज किशोर- पेपरबैट, पृष्ठ-9, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
प्रथम सं०- 1970 ।
 - 3- कर्मनाशा की हार- शिवप्रसाद सिंह, संग्रह यही-- भारतीय ज्ञानपीठ,
प्रकाशन, दुर्गाकिण्ड मार्ग, वाराणसी, प्रथम सं० - 1958 ।
 - 4- देवा की मां- राजा निरबंसिया- कमलेश्वर , संग्रह यही- भारतीय
ज्ञानपीठ प्रकाशन- वाराणसी- द्वितीय सं०- 1966 ।
 - 5- आद्रा- मोहन राकेश, क्वार्टर- पृ०-62, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी
गेट, दिल्ली- प्रथम सं०-1972 ।
 - 6- पुरानी और नई लकीरें- सोमावारा- समकालीन हिन्दी कहानी और
मूल्य संघर्ष की दिशा - सविता जैन पृ०-124, हिन्दी कहानी दो दशक
की यात्रा, संपादक- डा० रामदरश मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन, पृ०-124
नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, पृ० सं०- 1970 ।
 - 7- रिश्ता- गिरिराज किशोर-रिश्ता और अन्य कहानियां- पृ०-160
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6 ।
 - 8- संबंध- गंगाप्रसाद विमल, कोई शुरुआत, पृ०-80, राजकमल प्रकाशन,
दिल्ली-6, प्रथम सं०- 1973 ।
 - 9- इन्तजार- सुदर्शन चोपड़ा, सड़क दुष्टना, पृष्ठ-137, नीलाम प्रकाशन,
खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम सं०- 1972 ।

T2065

माता-पुत्री:- माता-पुत्री संबंधों का पृष्ठभूमि में नारी शिक्षा नारी
 जीविका, समा-सोसायटी की गतिविधियाँ, पिकनिक, सेमिनार आदि
 नाना संदर्भों का हाथ है। पिता का अपेक्षा बेटों की सहानुभूति माँ से
 अधिक होती है। इसका प्रमाण तलाश¹ और ग्लास टैंक² कहानियाँ हैं।
 तलाश की सुम्मी माँ को जन्मदिन पर नर्गिस के फूलों का गुच्छा भेंट करती
 है और ग्लासटैंक³ की नोरू सोई हुई मम्मी की आँखों में उभरे आँसुओं को
 हल्के से पोंक देती है। माँ के संबंध तीसरे व्यक्ति से हैं, इस बात पर इन
 बेटियों को न गुस्सा आता है न लज्जा आती है।

जीविकारन पुत्री ने माँ पर बेटे से भी अधिक अधिकार जमा
 लिया है। जिन्दगी और गुलाब के फूल⁴ की बेटों घर की संचालिका है।
 खास पाहुना⁵ की बेटों जीवन से मरण तक को अपने घर की सभी क्रिया-
 प्रक्रियाओं में अपनी दखल रखती है क्योंकि घर का अर्थ सूत्र उसके हाथों में है।
 दोनों ही कहानियों के बेकार भाई गौण पात्र लगते हैं। आर्थिक संकट को
 कम करने के लिये कमलेश्वर की एक थी विमला⁶ की कुन्ती अपनी मुस्कराहट

- 1- तलाश- कमलेश्वर- माँस का दरिया- पृष्ठ-17, अक्षर प्रकाशन,
दरियागंज, दिल्ली।
- 2- ग्लास टैंक- मोहन राकेश- क्वार्टर- पृष्ठ-80, राजपाल एण्ड संस,
कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम सं०- 1972।
- 3- ग्लास टैंक- ,, ,, -- वही-- ,, ,,
- 4- जिन्दगी और गुलाब के फूल, उषा प्रियंवदा, संग्रह- यही-- पृ०-130
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-6, तृतीय संस्करण- 1971।
- 5- खास पाहुना- सुदर्शन चोपड़ा- सड़क दुर्घटना- पृष्ठ-34, नीलाम
प्रकाशन, खसरो बाग रोड, शलाहाबाद, प्रथम सं०- 1972।
- 6- एक थी विमला- कमलेश्वर- खोई हुई दिशाएँ- पृष्ठ-84, भारतीय
ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं०- 1966।

फैककर रुपये उधार ले आती है। आया गीत गा रही थी¹ की बेटी अपनी माँ के अश्लील संबंधों को पूरी तरह से जानती है। दूसरे का भोग² की पुत्री उसी व्यक्ति के प्रति आकर्षित होने लगती है जिसने उसकी माँ के संबंध हैं। आधुनिक बदले हुए परिवेश में माँ-बेटी के इन बदलते हुए मूल्यों को अस्वाभाविक इसलिए नहीं कहा जा सकता कि ये व्यक्ति और समाज की वस्तु परकता को प्रमाणित करते हैं।

माई-बहन:- भारतीय परिवार में माई की स्थिति बहन से सदा उच्चतर मानी जाती रही है लेकिन स्वतंत्रता के बाद नारी शिक्षा, कानूनों उत्तराधिकार, व्यक्ति चेतना और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे उपलब्धियों ने बहन को जागरूक बना दिया है। अब हीनत्व और दैन्य जैसा रूप उसके व्यक्तित्व से विलीन होता जा रहा है। माँ-बाप भी लड़की का महत्व समझने लगे हैं। ऐसी कहानियाँ भी मिलती हैं जहाँ बहन की नौकरी से घर का काम चलना है और माई बेरोजगारी की पीड़ा भोगता रहता है। आसक्ति³ जिन्दगी और गुलाब के फूल⁴ तथा खास पाहुना⁵ में बहन, माई की अपेक्षा परिवार के लिये महत्वपूर्ण है। उसका शासन सब मानते हैं।

- 1- आया गीत गा रही थी- रमेश वदानी- मेज पर टिका हुई कोहनियाँ, पृष्ठ-17, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी- प्रथम सं०- 1963।
- 2- दूसरे का भोग- गुंठा प्रसाद विमल- कोई शुरुआत राजकमल प्रकाशन पृ. 69 - ट. खेज बाजार, दिल्ली प्रथम सं० 1963
- 3- आसक्ति- कमलेश्वर-बयान- पृष्ठ-153, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1972।
- 4- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा- संग्रह यही, पृ०-130 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- तृ० सं०-71
- 5- खास पाहुना- सुदर्शन चोपड़ा- सहक दुर्घटना, पृष्ठ-34, नीलाम प्रकाशन, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्र० सं०-1972।

माई-माई:- पूंजीवादी जीवन प्रणाली ने जिस नौजवान को बेकार
 अराजक और निरुद्देश्य जिन्दगी जीने को बाध्य कर दिया है वह किसी
 ऐसी बहन का माई भी है जो माई की इच्छाओं को पूरा करने के लिये शरीर
 का घन्धा करती है। माई को बहन की जिस्म की कमाई खाने में बुरा नहीं
 लगता।¹ एक डाक्टरों प्राप्त माई रोज़गार न मिलने पर विवशता में अपनी कोटी
 बहन को प्रौढ़ तथा विधुर पुरुष से व्याह देता है क्योंकि वह पुरुष उसके
 घर को सहारा देगा और अर्थ संकट को दूर कर देगा।² माई-माई संबंधों के
 रक्त संबंधों पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। आदमी³ और पारदर्शक दीवारें⁴ के
 माई-माइयों के बीच आर्थिक असमानता के कारण दूरियाँ और बिगड़
 विद्यमान हैं।⁵ त्रास का कोटा माई बड़े माई की बरसी पर पहुँचने से पहले
 सादू के साथ शराब पीने लगता है तो सुबह का ढर में माई अपने आसन्न
 मृत्यु माई के पास आकर पान जड़ें की और अपने सोने की ज्यादा परवाह
 करता है। संबंध का बड़ा माई अपने कोटे माई की हत्या के विषय में

-
- 1- काला रोज़गार- मोहन राकेश- जानवर और जानवर- राजपाल एण्ड
 सस- कश्मीरी गेट, दिल्ली।
 - 2- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई आवाज़ों के बीच, पृष्ठ-104,
 लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
 - 3- आदमी- मोहन राकेश- कहानी विविधा- संपादक- डा० देवीशंकर
 अवस्थी- पृष्ठ-44, राजकमल प्रकाशन, प्रान्ति- फौजबाजार, दिल्ली
 13वीं आवृत्ति- 1974।
 - 4- पारदर्शक दीवारें- महीप सिंह- सुबह के फूल- पृष्ठ-110, हिन्दी
 भवन- जालन्धर।
 - 5- त्रास- से०रा०यात्री- सानवें दशक की हिन्दी कहानियाँ- पृष्ठ-168,
 अपरा प्रकाशन प्रान्ति- नारायण स्ट्रीट, कलकत्ता-1।
 - 6- सुबह का ढर- काशीनाथ सिंह, संग्रह यही- पृष्ठ-70, रचना प्रकाशन,
 45-ए बुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्र० सं०-1975।
 - 7- संबंध- ज्ञानरंजन, फौंस के उधर और उधर- पृष्ठ-113, अक्षर प्रकाशन
 प्रान्ति-2136- अंशारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण-1968।

सोचना है ।

बहन-बहन:- आलोच्य युग में बहन-बहन के संबंधों को स्पष्ट करने वाली कहानियाँ अधिक नहीं मिलती लेकिन जितनी कहानियाँ उपलब्ध हैं उनसे बहनों के अन्तर्विरोध, वैमनस्य और अलगाव की भावनाएँ पर्याप्त रूप से स्पष्ट हो जाती हैं । सावित्री नम्बर दो¹ में बड़ी बहन की लम्बी बीमारी में कोटी-बहन जीजा जी की देखभाल करने लगती है और जीजा की भावी पत्नी के रूप में वह परिवार में स्थान बना लेती है । उसे बहन से संवेदना इतनी नहीं है जितनी अपने जीजा से । दहलीज² और हास्यरस³ में दो बहनों के संबंधों में यौन कुण्ठा और वैमनस्य की प्रवृत्ति पाई जाती है । रेस⁴ और दो बहनें⁵ में क्रमशः बड़ी बहन की अशुन्दरता और विवाह के लिये एक ही पुरुष पर दोनों की दृष्टि का निरूपण करते हुये संबंधों की अनात्मियता को अंकित किया गया है ।

उपर्युक्त पारिवारिक समस्याओं और संबंधों के विविध आयामों का अनुशीलन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आलोच्य युगीन कहानी ने संक्रान्त कालीन परिवेश, नवीन जीवन मूल्य, आर्थिक असमानता, वर्ग वैषम्य, यौन संबंधों की स्वच्छन्दता, नगरबोध, अस्तित्ववाद और

-
- 1- सावित्री नम्बर दो-धर्मवीर भारती- बन्द गली का आखिरी मकान, पृष्ठ-21- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय सं०- 1971 ।
 - 2- दहलीज- निर्मल वर्मा- मेरी प्रिय कहानियाँ- राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1973 ।
 - 3- हास्य रस- ज्ञानरंजन- सातवें दशक की हिन्दी कहानियाँ- संपादक- शरद देवड़ा, पृ०-57, अपरा प्रकाशन- नाराद व स्ट्रीट, कलकत्ता-1 ।
 - 4- रेस- अन्विता अग्रवाल- मुठ्ठीभर पहवान, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2-अंसारी रोड, दरियागंज-दिल्ली- प्रथम सं०- 1969 ।
 - 5- दो बहनें- शिवानी- करिए किमा- पृष्ठ-62, शिवानी प्रकाशक- 2203-गली उकौतान तुर्कमान गेट, दिल्ली- द्वि० सं०- 1973 ।

पश्चिमी सभ्यता के अन्वयानुकरण जैसे नाना नवीन घटकों और विषयों को निरपेक्ष दृष्टि से विश्लेषित किया है। आवास समस्या और बाल मनोविज्ञान पर भी कहानीकारों ने सूक्ष्म दृष्टि डाली है। चिरन्तन परम्परा वाली नारी आज नई तरह से यथार्थ के घरातल पर खड़ी होकर समस्त चुनौतियों का सामना कर रही है। स्वाधीनोद्गम कहानी का ये उपलब्धियाँ नई संभावनाओं के द्वितीज का संकेत करती हैं। इन सभी का विस्तार से विवेकन शोध ग्रंथ में किया गया है।

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी-कहानी में परिवार का स्वरूप (१९४७ से १९७५ तक)

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की पी-एच० डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध



शोधकर्त्ता :

कुमारी सुधा

निर्देशक :

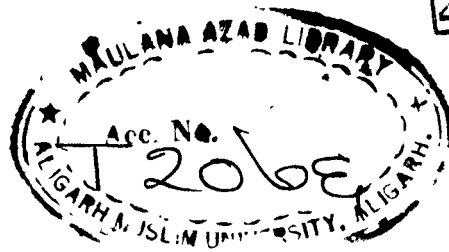
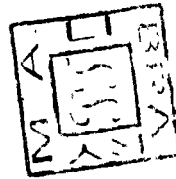
प्रो० हरबंशलाल शर्मा

अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली ।

(१९७८)



T2076



257

CHECKED-2002

CHECKED 1996-97

-: दो शब्द :-

कहानी के प्रति बचपन से ही मेरा लगाव रहा । एम० ए० में अध्ययन करते समय भी मैं सोचा करती थी कि यदि कभी शोध का सुअसर मिला तो कहानी से संबंधित विषय ही चुनूंगी । यही कारण है कि जब शोध की योजना बनी तो मैंने 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप' विषय को शोध का विषय चुना । इस पुनीत कार्य की समाप्ति पर जीवन का एक बड़ा लक्ष्य पूरा हुआ है । वतः प्रसन्नता होना स्वामाविक ही है । इस सुसद अक्सर पर मैं उन माननीय सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन करना चाहता हूँ जिनके सहयोग के वम तव मैं यह सारस्वत यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता था ।

सर्व प्रथम मैं अपने निदेशक अक्षय प्रोफेसर हरकां लाल शर्मा (भूतपूर्व अध्यक्ष- हिन्दी विभाग एवं डीन कला संकाय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, सम्प्रति अध्यक्ष- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली) के प्रति नतमस्तक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य दुर्लभ समय में से समय निकालकर मेरे शोध-कार्य को निरन्तर निदेशन दिया । निदेशन के साथ ही उनकी पितृ-तुल्य बत्सलता भी मुझे मिलती रही जिसकी अनुभूति मुझे बाजीवन रहेगी । उनके कुशल निदेशन के बिना यह कार्य पूरा हो ही नहीं सकता था । उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने में मुझे अति संकोच हो रहा है ।

मैं अपने सम्माननीय विभागाध्यक्ष प्रोफेसर प्रेमस्वरूप गुप्त के प्रति भी अनुगृहीत हूँ जिन्होंने मेरे शोध-विषय की अनवरतता बनाये रखने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया और समय-समय पर बाने वाली मेरी कठिनाइयों को सुना और उनका समाधान भी किया ।

इस पावन अवसर पर मैं उन सभी कहानीकारों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करना अपना परम कर्तव्य समझती हूँ जिन्होंने पत्राचार तथा विचार-विमर्श द्वारा अपने अमूल्य सुझाव देकर मेरी सीख को दिया है। माननीय शिव प्रसाद सिंह, श्री ज्ञानार्जन, श्री गंगाप्रसाद विमल, श्री से० रा० यात्री, श्री रवीन्द्र कालिया, श्री काशीनाथ सिंह, श्री राजेन्द्र किशोर, श्री विवेकी राय, मणिमङ्गल की मैं विशेष आभारी हूँ।

मीलाना बाबाद पुस्तकालय के हिन्दी विभाग के इन्चार्ज यक्षिमा भाई तथा हिन्दी विभागीय सेमिनार के मूलपूर्व संयोजक श्री ज्ञानेन्द्र कृपाल और वर्तमान संयोजक श्री रामदत्त गच्छूही के प्रति भी मैं विनम्र आभार व्यक्त करती हूँ।

अपनी स्नेहशीला माँ हा० सीमाग्यवती (प्रवक्ता-हिन्दी विभाग, टीकाराम कन्या महाविद्यालय, बलीगढ़) की सतत प्रेरणा और सहयोग के बिना मेरा यह कार्य पूर्ण होना अत्यंत कठिन था। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरी मूर्खता ही होगी।

बिरबविद्यालय अनुदान आयोग की काब्रवृत्ति प्राप्त होने के कारण यह कार्य सुगमता से पूरा हो सका है अतः आयोग भी बन्धुबादाई है।

मैं यथाशक्ति विद्यार्थ्याभ्युप इस ग्रन्थ की छिन्ने में परिश्रम किया है किन्तु इसकी पूर्णता का बिस्वास मैं नहीं दिहा सकती। विद्वत्जन के आलोचन की आकांक्षा के साथ ----

सुधा

वि ण या नु क्र म णि का

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप
(सन् 1950 से सन् 1975 तक)

पृष्ठ- संख्या

1-7

प्रथम अध्याय:

विषय प्रवेश :

- (क) विषय विश्लेषण ।
- (ख) विषय पर उपलब्ध सामग्री और उसकी विवेचना ।
- (ग) विषय की सीमारं, शोध का स्वरूप, संभावित मौलिकता ।

द्वितीय अध्याय:

8-30

(1) स्वातन्त्र्योत्तर युगीन परिस्थितियाँ ।

- (क)-राजनीतिक परिस्थितियाँ ।
- (ख)-वार्षिक परिस्थितियाँ ।
- (ग)-सामाजिक परिस्थितियाँ ।

(2) बाह्य युगीन परिस्थितियों का 'परिवार' पर प्रभाव ।

तृतीय अध्यायः

स्वतंत्रता के पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप तथा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप । 31-67

- (1) परिवार की परिभाषा ।
- (2) परिवार के विभिन्न वर्ग- परिभाषा ।
परिवार के मुख्य वर्ग :-
 - (1) उच्च वर्ग
 - (2) मध्यम वर्ग :- (क) उच्चमध्यमवर्ग
(ख) मध्यममध्यमवर्ग
(ग) निम्नमध्यमवर्ग
 - (3) निम्न वर्ग ।
- (3) स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप :-
 - (क) प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप ।
 - (ख) प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप ।
 - (ग) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप ।
- (4) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप ।

चतुर्थ अध्यायः

68-149

- (1) हिन्दी कहानी : एक विवर्धित दृष्टि :
 - (क) प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी ।
 - (ख) प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी ।
 - (ग) स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी कहानी ।
 - (घ) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी ।

- (2) स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का वर्गीकरण ।✓
 (3) स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानीकारों का परिचय ।

पंचम अध्याय : विभिन्न पारिवारिक सम्बन्ध : 150 - 241

- (1) पति-पत्नी के सम्बन्ध ।
 (2) सास-बहू के सम्बन्ध ।
 (3) पिता-पुत्र के सम्बन्ध ।
 (4) पिता-पुत्री के सम्बन्ध ।
 (5) माता-पुत्र के सम्बन्ध ।
 (6) माता-पुत्री के सम्बन्ध ।
 (7) माई-बहन के सम्बन्ध ।
 (8) माई-माई के सम्बन्ध ।
 (9) अन्य सम्बन्ध :-
 (क) देवर-भाभी के सम्बन्ध ।
 (ख) ननद-भाभी के सम्बन्ध ।
 (ग) साले-बहनोई के सम्बन्ध ।
 (घ) ससुर-पुत्र-बहू के सम्बन्ध ।
 (च) देवरानी - जिठानी के सम्बन्ध ।

षष्ठम अध्याय : बालीय युगीन परिवार की समस्याएँ : 242 - 313

- (क) उच्चमध्यमवर्ग की समस्याएँ ।
 (ख) मध्यममध्यमवर्ग की समस्याएँ ।
 (ग) निम्नमध्यमवर्ग की समस्याएँ ।
 (घ) निम्नवर्ग की समस्याएँ ।
 (च) समस्याओं का समेकन ।

सप्तम् अध्याय : उपसंहार :

313-323

- (क) प्रस्तुत विषय की उपलब्धियाँ तथा समावनारं ।
- (ख) निष्कर्ष ।

परिशिष्ट : सहायक ग्रन्थ :

323-340

- (1) शीघ्र ग्रन्थ ।
- (2) कहानी-संग्रह ।
- (3) संपादित कहानी-संग्रह ।
- (4) बालीचनात्मक ग्रन्थ (स्वतंत्र) ।
- (5) बालीचनात्मक ग्रन्थ (संपादित) ।
- (6) संस्कृत ग्रन्थ ।
- (7) बालि माणा के ग्रन्थ ।
- (8) चक्र-पत्रिकारं ।

: प्रथम अध्याय :

विषय - प्रवेश:-

-: विषय - प्रवेश :-

हिन्दी कहानी ने पिछले सात दशकों में अपने स्वरूप को बहुत विकसित किया है। जितनी तीव्रता से हिन्दी साहित्य में कहानी विधा का विकास हुआ है उतना अन्य किसी विधा का विकास नहीं हुआ। सन् 1901 में प्रकाशित किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा लिखित 'हनुमती' हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी मानी जाती है। उस युग को देखते हुए निस्सन्देह यह एक महत्वपूर्ण कृति है जिसमें मनुष्य के रागात्मक संबंधों की अत्यन्त मौलिक प्रस्तुति है। 'हनुमती' के पश्चात् चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत 'उसने कहा था' कहानी बहुचर्चित रही क्योंकि इसके कथ्य और शिल्प दोनों ही प्रभावशाली हैं। प्रेमचन्द के आविर्भाव के साथ ही कहानी विधा में आमूलचूल परिवर्तन हुआ और वह एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हुई। प्रेमचन्द का हिन्दी साहित्य में प्रवेश सन् 1916 ई० में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित 'पंच परमेश्वर' कहानी के माध्यम से हुआ। तब से कहानी शनैः शनैः विकास की ओर अग्रसर होती गई। इस प्रकार सन् 1916 से सन् 1947 ई० तक कहानी विधा का अत्यंत महत्वपूर्ण विकास क्रम हमें दिखाई देता है, किन्तु विकास के इस स्वरूप को हम प्रायः बाह्यात्मक ही कह सकते हैं क्योंकि इन कहानियों में समस्याओं का चित्रण स्थूल रूप से ही हुआ है।

सन् 1947 ई० के बाद की कहानी को हम स्वतंत्रांतर कहानी की संज्ञा दे सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद देश की परिस्थितियों में बहुत बड़ा प परिवर्तन आया। देश के परिवेश में परिवर्तन हुआ और इस परिवर्तन को स्वतंत्रांतर कहानीकारों ने पूरी संवेदना के साथ ग्रहण किया तथा उसे बाणी दी। इस अर्थ में स्वतंत्रांतर कहानी अपने पूर्ण रूप से नितान्त भिन्न है। उसके कथ्य के साथ - साथ उसके शिल्प में भी वह भिन्नता

देसी जा सकती है। स्वातंत्र्योत्तर कहानी के विकास क्रम में 'नई कहानी' का उद्भव हुआ जिसे स्वातंत्र्योत्तर कहानी की उपलब्धि के रूप में मूल्यांकित किया जा सकता है।

स्वातंत्र्योत्तर काल की अधिकांश कहानियाँ 'परिवार' के इर्द गिर्द घुमराती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् जो स्वप्नर्षी की स्थिति उत्पन्न हुई, जो संक्रान्तिकाल आया उसके प्रभाव से धिरे हुए परिवार का चित्रण स्वातंत्र्योत्तर कहानी की केन्द्रीय वस्तु बनी है।

स्वतंत्रता के पश्चात् 'परिवार' के स्वरूप में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। आज परिवार का पुरातन स्वरूप समाप्त हो गया है। उसकी समस्याओं में अत्यंत भिन्नता आ गई है। परिवार की जिन समस्याओं और संबंधों का आकलन स्वातंत्र्योत्तर कहानिकारों ने किया है वह अतिरंजित नहीं कहा जा सकता क्योंकि हमारे आस पड़ोस के कितने ही परिवारों में हम उन बदलते संबंधों और समस्याओं के अच्छे-बुरे परिणामों को प्रतिदिन देखते हैं। एक ही परिवार की दो पीढ़ियों के पारिवारिक बोध में अन्तर आ गया है। दादा-दादी यदि जवान बेटे की शादी शीघ्र करने के पक्ष में होते हैं तो माँ-बाप उसकी शिक्षा को अधिक आवश्यक समझते हैं। माँ-बाप बहू को पदों में रसना पसन्द करते हैं तो बेटा-बेटी इसका विरोध करते हैं। स्वीय नवागता बहू सास की पुरानी मान्यताओं का विरोध करती देखी जाती है। अपनी शादी के विषय में आधुनिक बेटे - बेटियाँ माँ-बाप से अधिक अपने मित्रों की महत्व देते हैं और माँ-बाप भी इस विषय में बच्चोंकी राय लेना पसन्द करते हैं। इतना ही नहीं अनेक परिवारों में बच्चों की राय को ही प्राथमिकता दी जा रही है। पहले ऐसा नहीं होता था। पुरानी पीढ़ी के कितने ही ऐसे दम्पति मिल जायेंगे जिनके सगाई संबंध नाई-ब्राह्मणों ने ही संवन्न कराये थे। पहले पति-पत्नी को विवाह से पूर्व एक दूसरे के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं होती थी और न इसकी

आवश्यकता ही समझी जाती थी किन्तु आज की परिवर्तित परिस्थिति में प्रेम-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, अन्तर्प्रजातीय विवाह आदि को भी माता-पिता स्वीकृति दे रहे हैं।

संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं। शहरों में ही नहीं ग्रामों में भी चार भाइयों के चार बूढ़े जल रहे हैं। माँ-बाप को बुढ़ापे में कौन अपने पास रखे, यह एक समस्या बन गई है। बुढ़ा माता-पिता अपने बुढ़ापे को व्यर्थताप समझते हैं। बहू के कहने में बेटे को जलते देकर घर के बुढ़ा मीन होकर, उन्हीं की हॉ में हॉ फिलाने के लिए बिकल हो गए हैं। पहले पुत्र पिता के सामने संकौपी और विनम्र रहता था किन्तु अब जब वह पिता के परिवार से निकल कर अपने एकाकी परिवार का स्वामी बन जाता है तो जमीन जायदाद और सम्पत्ति के बंटवारे को लेकर पिता की हत्या करने तक की बात सोचने लगता है। भाई-भाई का कत्ल कर देता है। पति कम दहेज छाने पर पत्नी तक की हत्या कर देता है जयबा ऐसी स्थिति निर्मित कर देता है जिनमें पत्नी स्वयं आत्मघात करने को बिकल हो जाती है।

स्वतंत्र भारत की शिक्षित व नौकरीपेशा नारी ने परिवार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। अधिक कमाने वाली बहन से भाई बच कर रहता है। पुत्रों की तरह पुत्रियाँ परिवार के पूरे बोझ को उठाती हैं। स्वतंत्रतापश्चात् परिवार में लड़कियाँ भी लड़कों की तरह स्वतंत्र रूप से घूमने फिरने, नये-नये मित्र बनाने, नये फैशन अपनाने में लक्ष्मि होती हैं। शिक्षित महिला समानाधिकार के महत्व को समझी ही नहीं है उसका उपयोग भी कर रही है।

स्वतंत्रता के बाद यौन आजाकता, बेरबाबरण, सराबसोरी, जैसी प्रवृत्तियों का और अधिक विकास हुआ है। बेरोजगारी, नई वैवाह्य, पहावात, अफसरशाही, जातिवाद, भाई-भतीजावाद जैसी सामाजिक और वार्षिक विस्तृतिर्यो ने आलोच्ययुगीन परिवार में विभिन्न समस्याएं लड़ी कर दी हैं।

और इन समस्याओं के कहुवे तीसरे परिणामों ने संबंधों की बुनियाद को फकफोर ढाळा है। जिस वृद्धा का मूल ही दुबल और रुग्ण होगा उसकी शाखाओं से हरितिमा की आशा कैसे की जा सकती है।

परिवार के इसी परिवेश का निकट से अध्ययन करके मैंने पाया कि यही सब स्वार्तंत्र्योत्तर कहानी में चित्रित हुआ है। स्वतंत्र रूप से परिवार की इन समस्याओं और संबंधों पर अथावधि शोधकार्य नहीं किया गया जिसकी की नितान्त आवश्यकता थी। उसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 'स्वाधीनोत्तर परिवार का स्वरूप' जैसे ज्वलन्त विषय को मैंने शोधकार्य हेतु चुना-। अपने विषय को निर्धारित करने में मुझे अनेक ग्रन्थों से सहायता प्राप्त हुई। ये ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :-----

(क) शोध ग्रन्थ:-

- 1- हिन्दी कहानी: उद्भव और विकास- सुरेश सिन्हा, अर्शोक प्रकाशन, नई सहक, दिल्ली-6, प्र० सं०-1965।
- 2- प्रेमबन्धोत्तर कथा साहित्य- (1937 से लेकर 1967 तक)- डा० राधेश्याम गुप्त, विमल प्रकाशन तेलीपाड़ा, जयपुर-3 प्र० सं०-1967।
- 3- नई कहानी: कथ्य और शिल्प- डा० सन्त बल्ल सिंह, अधिनब भारती प्रकाशन, 42-सन्तुलन मार्ग, इलाहाबाद, प्र० सं०-1973।
- 4- कहानी की संवैबन्शीलता: सिद्धान्त और प्रयोग (नई कहानी के सन्दर्भ- में)- डा० भगवानदास वर्मा- ग्रन्थम रामबाग, कानपुर-13, संस्करण-1972।

(ख) स्वतंत्र ग्रन्थ:-

- 1- हिन्दी कहानी(अपनी ज़बानी)- इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली- प्र० सं०-1968।

- 2- हिन्दी कहानी पहचान और परस- संपादक- इन्द्रनाथ मदान,
लिपि प्रकाशन, ई-10।4, कृष्णनगर, दिल्ली, प्र० सं०-1973 ।
- 3- हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान- डा० रघुवर दयाल बाबू,
पाण्डुलिपि प्रकाशन ई-11।5, कृष्णनगर, दिल्ली-51, प्र०सं०-1971 ।
- 4- समकालीन कहानी: दिशा और दृष्टि- संपादक बर्नज्य , अभिव्यक्ति
प्रकाशन-847- यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, संस्करण-1970 ।
- 5- आधुनिक हिन्दी कहानी: समाजशास्त्रीय दृष्टि- डा० रघुवीर सिन्हा
वकार प्रकाशन- 2।86, कसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, संस्करण-1967
- 6- आधुनिकता और समकालीन रचना सन्दर्भ- डा० नरेन्द्र मोहन, वादर्श
साहित्य प्रकाशन वेस्ट सलीमपुर, दिल्ली, प्र० सं०- 1973 ।

उपर्युक्त शोध ग्रन्थों तथा स्वतंत्र आलोचनात्मक ग्रन्थों का निरीक्षण करने पर डा० मगवानदास वर्मा द्वारा लिखित 'कहानी की संवेदनशीलता और प्रयोग' शोध पुस्तक अपने विषय के कुछ निकट लगी । इस ग्रन्थ में नई कहानी की संवेदनशीलता का वर्गीकरण नई जीवन दृष्टि के आधार पर किया गया है । इस ग्रन्थ में स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में बनी मुक्त स्वतंत्र नारी, स्त्री-पुरुष संबंधों का नया कोण, स्थापित नैतिक बंध का विघटन, नारी समस्या का नया रूप, संक्रान्ति के संकट बंध से घिरा व्यक्ति, आदि वर्गों में रस कर नई कहानी को वर्गीकृत किया गया है ।

दूसरा स्वतंत्र ग्रन्थ है जो विषय को पुष्ट करने में सहायक हुआ वह है -- डा० रघुवीर सिन्हा द्वारा लिखित- 'आधुनिक हिन्दी कहानी: समाजशास्त्रीय दृष्टि' । इस ग्रन्थ में समाजशास्त्रीय दृष्टि से आधुनिक कहानी का मूल्यांकन किया गया है ।

किन्तु इन दोनों ग्रन्थों में भी परिवार को मुख्य रूप से केन्द्र बना कर उसके संबंधों और समस्याओं का विश्लेषण और मूल्यांकन नहीं किया गया है । अन्य ग्रंथों में भी यह अभाव स्पष्ट है । इस अभाव की पूर्ति करने का तुल्य प्रयास प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में किया गया है ।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ की विराट् संवेदना को विश्लेषित करने हेतु निम्नलिखित रूपरेखा आकलित की गई है। विवेच्य शोध ग्रन्थ को सात अध्यायों में विभक्त किया है।

- 1- प्रथम अध्याय में विषय का महत्व, उस पर उपलब्ध सामग्री तथा उस सामग्री का विश्लेषण, मुख्यार्थ प्रस्तुत किया गया है। अन्य ग्रन्थों से प्रस्तुत शोध ग्रन्थ की वैभिन्नता को भी स्पष्ट किया गया है।
- 2- द्वितीय अध्याय में आलोच्ययुगीन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है। समकालीन सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण देते हुए उनका आलोच्य विषय पर पड़े प्रभाव को इस अध्याय में दर्शाया है।
- 3- प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के तृतीय अध्याय में 'परिवार' शब्द की उत्पत्ति उसकी समाजशास्त्रीय परिभाषा तथा उसके विभिन्न वर्गों का विश्लेषण किया गया है। स्वार्तक्षोचर कहानी में चित्रित परिवार को मुख्य रूप से इन वर्गों में विभक्त किया है--

क- उच्च मध्यमवर्ग, ख- मध्य मध्यमवर्ग, ग- निम्नमध्यमवर्ग
 घ- निम्न वर्ग। मध्यवर्ग को उपवर्गों में इसलिए विभक्त किया क्योंकि विभिन्न उपवर्गों की समस्याएँ भिन्न हैं। एक बात यहाँ दृष्टव्य है कि स्वार्तक्षोचर कहानी में हमें उच्चवर्गीय परिवार के दर्शन नहीं होते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि स्वार्तक्षोचर कहानी के सच्चे मुख्य रूप से मध्यवर्ग के ही हैं।

- 4- प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के चतुर्थ अध्याय में हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास दिताते हुए स्वार्तक्षोचर हिन्दी कहानी तथा स्वार्तक्षोचर कहानी (1950-1975) की गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। इसी अध्याय में कथ्य के आधार पर कहानी को वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है साथ में स्वार्तक्षोचर कथाकारों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

- 5- पंचम अध्याय में स्वार्तश्रयोत्तर कहानी में चित्रित परिवार के विभिन्न संबंधों पर दृष्टि डाली गई है। ये संबंध हैं-- पति-पत्नी के संबंध, सास-बहू के संबंध, पिता-पुत्र के संबंध, पिता-पुत्री के संबंध, माता-पुत्र के संबंध, माता-पुत्री के संबंध, भाई-बहन के संबंध, बहन-बहन के संबंध, भाई-भाई के संबंध इत्यादि। इन संबंधों के अतिरिक्त अन्य संबंधों में-- देवर-माथी के संबंध, ननद-माथी के संबंध, साले-बहनोई के संबंध, ससुर और पुत्रबहू के संबंध, देवरानी जिठानी के संबंध इत्यादि। स्वार्तश्रयपूर्व और स्वार्तश्रयोत्तर परिवार के संबंधों की मिन्नता को भी इस अध्याय में स्पष्ट किया है।
- 6- विवेक्य ग्रन्थ के षष्ठ अध्याय में स्वार्तश्रयोत्तर परिवार की समस्याओं को विश्लेषित किया गया है। इन समस्याओं को परिवार के वर्गों के अनुसार विभाजित किया गया है यथा-- उच्चमध्यमवर्ग की समस्याएं, मध्यममध्यमवर्ग की समस्याएं, निम्न मध्यमवर्ग की समस्याएं तथा निम्नवर्ग की समस्याएं। समस्याओं का समेकन में साथ-साथ किया गया है।
- 7- सप्तम अध्याय में बालीव्ययुगीन परिवार की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है तथा स्वार्तश्रयोत्तर परिवार के भावी स्वरूप की संभावनाओं को सोजने का भी यत्न किया गया है।

इस प्रकार शौक्यग्रन्थ की सामग्री को सात भागों में विभक्त करके स्वार्तश्रयोत्तर कहानी में चित्रित परिवार का सर्गीर्षा विश्लेषण और अनुशीलन करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया गया है।

द्वितीय अध्याय

- (1) स्वतर्त्तृयोत्तर युगीन परिस्थितियाँ ।
 - (क)- राजनीतिक परिस्थितियाँ
 - (ख)- आर्थिक परिस्थितियाँ
 - (ग)- सामाजिक परिस्थितियाँ
- (2) बालौच्य युगीन परिस्थितियों का "परिवार" पर प्रभाव ।

द्वितीय अध्याय

(1) *वालोच्यकालीन परिस्थितियाँ*

(क) राजनीतिक परिस्थितियाँ:--

प्रत्येक युग अपने पूर्ववर्ती युग की जगली कड़ी बन कर उमरता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का स्वतंत्र्योत्तर काल भी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की सापेक्षा का प्रतिफल है। द्वितीय महायुद्ध (1939-1945) की समाप्ति के लगभग एक वर्ष बाद 15 अगस्त 1947 को जब भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ तो उसके आधुनिक इतिहास का एक दौर समाप्त हो गया। ईसा की 19 वीं शताब्दी में पूर्व और पश्चिम का जो संघर्ष हुआ और जिसके फलस्वरूप राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गान्धी, महामना मदनमोहन मालवीय, योगी अरविन्द, रमण-महर्षि आदि विभूतियों का जन्म हुआ और फिर इण्डियन-नेशनल काँग्रेस (1885) का, बंग मंग आन्दोलन (1903-1904) होम्सल आन्दोलन (1917), आतंकवादी आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन (1921) तथा उसके साथ-साथ हुए अन्य आन्दोलन दाँढ़ी कूच (1930) विभिन्न किसान मजदूर आन्दोलन और अन्त में भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) और गाँधी जी के 'करो या मरो' आदि के एक लंबे संघर्ष और बलिदान के बाद और द्वितीय महायुद्ध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न विषम घरेलू आर्थिक परिस्थितियों के कारण जब 1947 को इंग्लैण्ड की मजदूर सरकार के नेता लार्ड एटिली भारत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शिकंसे से मुक्त करने को बाध्य हुए तो देश में चारों ओर उत्साह की लहर दौड़ गई। ऐसा होना स्वाभाविक था क्योंकि हजारों भारतीयों ने इस आजादी के यज्ञ में अपने को होम कर दिया था। ब्रिटिश सरकार जाते-जाते एक कूटनीति यहाँ चरु गई जिससे हमारे देश की अखंडता सन्निहत हो गई और देश 'हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान' (1947) दो टुकड़ों

में बंट गया । इसके परिणाम स्वरूप देश में अशान्ति का बातावरण छा गया और पीछाछाई नर संहार हुआ । देश के विभाजन के फलस्वरूप देश में शरणार्थी आबास की समस्या उभर कर सामने आई । अपनी रोजी रोटी और कल अकल सम्पत्ति को छोड़ कर जो जन-समुदाय भारत आया उसकी आबास समस्या ने भारत के अर्थ को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया । इसके साथ ही साथ हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य का ऐसा बीज फूटा कि देश को आज तक भी वह आंशिक रूप में प्रभावित किये हुए है । दूसरी विपत्ति देश पर जब आई जननायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की (30 जनवरी 1948) हत्या कर दी गई ।

विभाजन के द्वारा उत्पन्न भयंकर परिस्थिति के अतिरिक्त दूसरी समस्या यह भी थी कि अधिक देशी रियासतों को भारतीय संघ में मिलाना और देश का राजनीतिक एकीकरण करना था । ब्रिटिश शासन के अंतर्गत देश 'ब्रिटिश भारत' और 'देशी भारत (देशी रियासतों)', इन दो भागों में नाममात्र को बंटा हुआ था । देशी रियासतें ब्रिटिश भारत के अंतर्गत नहीं मानी जा सकती थीं । अनेक प्रकार की संधियों और पट्टे परवानों द्वारा उनका ब्रिटिश सरकार के साथ संबंध जुड़ा हुआ था । सब तरह से वे अंग्रेजों के अंकुश में थीं । वे न सेनाएं रख सकती थीं और न उनकी कोई वैदेशिक नीति थी । राजनीति से तो उनका कोई संबंध नहीं था । भारत जब स्वतंत्र हुआ तो देशी रियासतों का भी ब्रिटिश शासन से संबंध समाप्त हो गया और उन्हें यह निर्णय लेने की छूट दी गई कि वे स्वतंत्र भारत से संबंध स्थापित करें या न करें । यदि वह भी नहीं करतीं तो देश अनेक टुकड़ों में विभाजित हो जाता । इस महान उद्देश्य की पूर्ति में सरदार वल्लभभाई पटेल की भूमिका अत्यंत सशक्त रही । इस प्रकार छः सौ रियासतों ने अपना संबंध भारतीय संघ से जोड़ लिया ।

26 जनवरी 1950 को नया संविधान बना और संविधान के अनुसार भारतवर्ष पूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रीय गणराज्य घोषित किया गया और यद्यपि अब भी ब्रिटिश कामनवेल्थ ऑफ नेशन्स का सदस्य है तो भी वह अपने में पूर्ण स्वतंत्र है। नूतन संविधान के अनुसार सभी वयस्क (21 वर्ष तक) नागरिकों को अपने-अपने मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ और सभी घमों के नागरिकों को अपने-अपने घमों को स्वीकार करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई। इस प्रकार भारत घमनिरपेक्षा राष्ट्र के रूप में उभरा।

स्वतंत्रता के तत्काल बाद नेहरू और पटेल दोनों राजनेताओं के दो पृथक्-पृथक् दल बन गए और सत्ता का संघर्ष आरंभ हुआ। सरदार पटेल की मृत्यु के उपरान्त यह संघर्ष समाप्त हो गया। पंडित जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। सन् 1952 में भारत का प्रथम आम चुनाव हुआ जिसमें 17 करोड़ से भी अधिक मतदाताओं ने अपने अधिकार का प्रयोग किया। इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी को बहुमत मिला। सन् 1954 में कांग्रेस पार्टी ने देश के सामने समाजवादी व्यवस्था का लक्ष्य प्रस्तुत किया।

इसी समय की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ भी साहित्य को प्रभावित करती रहीं। 1950 के आस-पास अमेरिका और रूस जो विश्व की दो महाशक्तियाँ हैं, उनमें तनाव बढ़ा। भारत ने प्रारंभ से ही गुट-निरपेक्षा की नीति अपनायी। साम्राज्यवादी देशों ने जब सैंटो और नेटो जैसी संधियों की परंपरा शुरू की तो पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इसकी कड़े शब्दों में मत्सर्ना की। भारत के विभाजन से पाकिस्तान जो अलग देश बन गया था उसे बड़े-बड़े देशों ने शस्त्रास्त्रों से सज्जित करना प्रारंभ कर दिया। आगे चल कर पाकिस्तान सीटों, और सैंटो जैसे सैनिक गुटों का सदस्य

बना किन्तु भारत ने अपनी वैदेशिक नीति में फूँक-फूँक कर कदम रखा । सन् 1950 को कोरिया का युद्ध प्रारंभ हुआ जिससे साम्राज्यवादी देशों के प्रति तटस्थ देशों के मन में घृणा का भाव उत्पन्न हो गया । 26 अप्रैल 1954 को जेनेवा में चार बड़े राष्ट्रों का सम्मेलन हुआ जिसमें जनवादी चीन को भी आमंत्रित किया गया । उधर फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों को देश से सदेह देने के लिए बियतनाम ने युद्ध छेड़ दिया । साम्राज्यवादियों के सम्मेलन के समानांतर ही बर्मा, लंका, इंडोनेशिया, भारत और पाकिस्तान ने कोलम्बो में सम्मेलन बुलाया जिसमें साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध करने और तटस्थता की नीति अपनाने का संकल्प लिया गया । विश्व के समस्त शान्तिप्रिय देश नेहरू द्वारा प्रतिपादित 'पंचशील' सिद्धान्त के समर्थक बन कर सामने आये । इस समय तक लंका, बर्मा, इंडोनेशिया, स्वतंत्र हो चुके थे ।

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का प्रभाव भारत पर भी पड़ा । सन् 1957 के द्वितीय आम चुनाव में विशेष घटना यह हुई कि कैरल में कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार बन गई । विधान सभा और लोक सभा दोनों में ही साम्यवादी दल के सदस्यों की संख्या बढ़ गई । कांग्रेस का प्रभाव स्पष्ट रूप से कम हुआ ।

1960 में इसी बीच एक घटना यह घटित हुई कि महाराष्ट्र तथा गुजरात

नामक राज्य बम्बई राज्य में से बन गए ।

1961 में पाण्डिचेरी, चंडनगर जैसी कुछ फ्रांसीसी और गोवा, दमन, द्यू जैसी

पुर्तगाली छोटी-छोटी विदेशी बस्तियों को सैनिक-शक्ति से मुक्त करा कर भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का अंग बना लिया गया ।

1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया जिसका घातक प्रभाव देश पर

पड़ा जिसके परिणाम स्वरूप तत्कालीन रक्षामंत्री श्री कृष्णामेनन को त्यागपत्र देना पड़ा ।

1968 में नागालैंड राज्य की स्थापना हुई । अभी भारत चीन के पहले

 आक्रमण द्वारा बिड़ी आर्थिक स्थिति को संभाल भी नहीं पाया
 था कि 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया ।
 1965 में ही लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु हुई । इंदिरा गांधी प्रधान-
 मंत्री बनी । 1966 में पंजाब दो हिस्सों में विभक्त हुआ--पंजाब व
 हरियाणा । कांग्रेस पार्टी में दो शिविर बन गए थे और पहले जैसी
 एकता नहीं रह गई थी इसका आभास तब मिला जब सन् 1967 में
 वाम चुनाव में कांग्रेस पार्टी को बहुमत नहीं मिला । यह निश्चय ही
 कांग्रेस के पतन का संकेत था । कांग्रेस के अन्दर दो तरह की विचार-
 धाराएं (दक्षिणपन्थी तथा वामपन्थी) बनपने लगीं थीं । कांग्रेस
 में विचारधारा के संघर्ष के कारण सन् 1969 में श्रीमती इंदिरा
 गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस के एक बड़े दल ने नई कांग्रेस के नाम से अपना
 अलग दल बनाया और वह कांग्रेस से अलग हो गया । दूसरी और
 शेषा बचे दल ने 'संगठन कांग्रेस' नाम से अलग पार्टी बनायी । सन्
 1971 के मध्यावधि लोकसभा चुनाव में नई कांग्रेस ने आशाक्षित
 सफलता पाई, प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने यह चुनाव
 प्रगतिशील समाजवादी नीतियों के आधार पर जीता । इस चुनाव
 में संगठन कांग्रेस जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी, और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी
 चार दलीय संयुक्त मोर्चा बना कर लड़ी किन्तु उसे हार का मुंह
 देखना पड़ा । मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी स्वतंत्र चुनाव लड़ी और
 अपने को बढ़ाया जब कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी कांग्रेस के सहयोग
 से चुनाव लड़ी और उसमें अपनी सदस्य संख्या को बढ़ा लिया ।

इस प्रकार चुनाव परिणामों ने स्पष्ट कर दिया कि दक्षिण-
 पन्थी दलों का कोई भविष्य नहीं है ।

सन् 1972 में विभिन्न राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव हुए जिसका परिणाम कांग्रेस के पक्ष में गाय । यह उसकी प्रगतिशील नीतियों का परिणाम था । इससे पूर्व हमारी सरकार ने बांग्लादेश के एक पृथक देश के निर्माण (1971) में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । वहाँ से वापस 1 करोड़ शरणार्थियों से वाश्रय भारत ने दिया । सन् 1972 में द्रविड़मुन्नेत्रकड़घम नामक पार्टी वांतरिक संघर्ष के कारण मुन्ना द्रविड़ मुन्नेत्रकड़घम तथा द्रविड़ मुन्नेत्र कड़घम नामक दो सण्डों में विभाजित हो गई ।

सन् 1974 में 7 पार्टियों ने मिलकर भारतीय लोकदल का निर्माण किया ।

सन् 1974 के शुरू में ही उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, मणिपुर और नागालैंड तथा केन्द्रशासित पांडिचेरी की विधानसभाओं के चुनाव हुए जिसमें कांग्रेस पार्टी की सरकारें बनीं ।

1974 में इसी समय बिहार में सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण ने

“संपूर्ण क्रांति” का नारा दिया जिससे बहुत बड़े प्रदर्शन और आंदोलन बिहार की भूमि पर हुए । जयप्रकाश नारायण का मुख्य उद्देश्य था दलविहीन लोकतंत्र की स्थापना । यद्यपि यह नारा उस परिदृश्य में और उन परिस्थितियों में असंपूर्ण नारा था किन्तु बहुत सारे युवक तथा विद्यार्थी उनके इस नारे से प्रभावित हुए और बिहार के विभिन्न शिक्षा संस्थान बन्द हो गए ।

सन् 1974 में ही गुजरात में चिमनमाई पटेल के मुख्य मंत्रित्व वाली कांग्रेस सरकार का पतन हो गया और वहाँ राष्ट्रपति शासन लागू हो गया । मोरारजी देसाई ने वहाँ विधान सभा का चुनाव कराने के लिए दीर्घकालीन वनश्न किया और अन्त में सन् 1975 में वहाँ विधान सभा का चुनाव हुआ जिसमें बहुमत कांग्रेस को न मिलकर विरोधी दल को मिला ।

गुजरात के चुनाव के बाद सन् 1975 में दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी। इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला 12 जून जिसमें प्रधानमंत्री के चुनाव को वैधानिक घोषित कर दिया गया। तथा सुप्रीम कोर्ट में अपील करने तक कार्य करने की कूट दी गई। इससे पूर्व सन् 1975 में ही उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया था। सुप्रीम कोर्ट में इंदिरा गांधी जीत गई। इस प्रकार उन्हें प्रधानमंत्री बने रहने की वैधानिक स्वीकृति मिली। किन्तु इन सब घटनाओं से घबड़ा कर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 26 जून 1975 को आपात्काल की घोषणा कर दी तथा इसके साथ ही 18 जुलाई 1975 को 20 सूत्री वार्षिक कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें विभिन्न प्रगतिशील नीतियों की घोषणा की गई थी। इसी वर्ष संजय गांधी की 'यूथ कांग्रेस' का भी जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 1975 भारत के इतिहास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और राजनीतिक उथल-पुथल का वर्ष रहा जिसने दूरगामी प्रभाव भारत की राजनीति पर डाला। इस वर्ष का महत्व इसलिए भी है कि क्योंकि इसी वर्ष तत्कालीन प्रधानमंत्री के पुत्र संजय गांधी को उमराने के लिए सरकारी तंत्र का उपयोग किया गया। उनके द्वारा घोषित 8 सूत्री कार्यक्रम को भी 20 सूत्री कार्यक्रम जोड़ दिया गया।

लगी रहने के कारण सरकार के विरोध में जरा सी बात कहने वालों को जेल का मुंह देखना पड़ा। सारे विरोधी दल के नेताओं को जेल भेज दिया गया। समाचार पत्रों, तथा वापत्ति जनक साहित्य पर सरकारी नियंत्रण कायम हो गया। इससे जनता बास्तविकता से अपरिचित रही, इसके साथ ही शासकीय तंत्र के शिकंजे से घबड़ा कर नौकरशाही भी प्रधानमंत्री और सरकार की विरोधी हो गई जिसका ज्ञान श्रीमती इंदिरा गांधी को उस समय न ही सका। उधर जेलों में बन्द विरोधी दल के नेताओं ने विभिन्न विरोधी दलों को मिलाकर 'जनता मोर्चा' की घोषणा की। वागे चलकर इसी मोर्चे को बहुमत मिला। इसको दूसरी आजादी की संज्ञा दी गई।

(ख) वार्थिक परिस्थितियाँ:--

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश पर एक गंभीर जिम्मेदारी यह आ गई कि वह अपने अर्थतन्त्र को चुस्त दुरुस्त करे । क्योंकि जो जनता बाग्यों से देश की आजादी का स्वप्न देख रही थी वह स्वतंत्रता के बाद अपनी सरकार से यह अपेक्षा करने लगी कि यह सरकार उनके वार्थिक कष्टों को भी दूर करेगी । महात्मा गांधी ने कहा था--² मैं समझता हूँ कि बाग्यों तक भारत को ऐसे कानून बनाने पड़ेंगे जो शोणितों और दलितों को उस गड्ढे से निकालें जिसमें उन्हें पूँजीपतियों, जमींदारों और ऊँचे कहे जाने वाले लोगों ने धकेल दिया है । अगर हम इन लोगों को इस दलदल से निकालना चाहते हैं तो भारत की राष्ट्रीय सरकार का यह आवश्यक कर्तव्य होगा कि वह अपने घर को ठीक करे और बराबर इन लोगों को ऊँचा ध्यान दे और उनको इस बोझ से उबारें जिसके नीचे वे पिसे जा रहे हैं ।³

किन्तु शताब्दियों से जर्जरित और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा शोणित इतने बड़े देश के दलित लोगों का 'उबारने' का कार्य स्वयं राष्ट्रीय सरकार के लिए लोहे के बने चबाने जैसा ही था । कृषि के विकास के साथ-साथ उद्योग धन्धों का विकास और इनके साथ-साथ बिजुत, सिंचाई, स्वास्थ्य, परिवहन, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों पर वार्थिक लड़ाई लड़नी थी । इसके अतिरिक्त भूमिहीनों को भूमि प्राप्त कराना, बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध कराने की भी महती जिम्मेदारी राष्ट्रीय सरकार पर थी । एक दीर्घकालीन पराधीनता और द्वितीय महायुद्ध के परिणामों और प्रभावों ने देश के सामने विकट समस्याएँ उपस्थित कर दी । इन सब उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए सरकार ने पाँच पंचवर्षीय योजनाएँ प्रस्तुत कीं । अब तक

1- डा० लक्ष्मीसागर बाण्णैय- द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य, पृ०-18
राजपाल रंज सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र०सं०-1973

तीन पंचवर्षीय योजनाएं (1951-56) (1956-61) (1961-1966) पूर्ण हो चुकी हैं। तीसरी योजना को पूर्ण करने में क्योंकि बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसलिए वह देर से पूर्ण हो सकी और चौथी योजना (1969-74) देर से लागू हो सकी। चौथी योजना में एक-एक वर्ष का कार्यक्रम बना कर उस पर अमल किया गया। पांचवी योजना (1974-79) का कार्य आरंभ हो गया है। इन योजनाओं का कार्य अर्थशास्त्रियों, उद्योगपतियों किसान और मजदूर संस्थाओं के प्रतिनिधियों तथा परस्पर संसद सदस्यों के परस्पर विचार विनिमय द्वारा संपन्न किया गया। हमारी सरकार का लक्ष्य प्रजातान्त्रिक समाजवाद द्वारा जनजीवन का चौमुखी विकास करना है। उत्पादन संस्थानों में वह निजी उद्योग घरों के अतिरिक्त सार्वजनिक या सरकार द्वारा संचालित उद्योग घरों को भी प्रोत्साहन देने के पक्ष में है।

पंचवर्षीय योजनाओं के कार्यक्रम के लागू करने में सरकार को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। 1962 में चीन ने उस पर आक्रमण किया जिससे देश के अर्थतंत्र पर बहुत प्रभाव पड़ा क्योंकि हम इस आक्रमण के लिए तैयार न थे। इसका परिणाम यह हुआ कि हम उस युद्ध में हारे, साथ-साथ इस युद्ध के पश्चात बहुत बड़ी धनराशि हमें अपने रक्षा विभाग, सेनाओं को अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करने में व्यय करनी पड़ी। इससे अन्व सचों में कटौती करनी पड़ी। 1965 में फिर 1971 में पाकिस्तान के आक्रमणों ने हमारे आर्थिक ढाँचे को प्रभावित किया। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधाएं उपस्थित हो गईं। सन् 1960-61 से 1966-69 तक हमारा सुरक्षा व्यय तीन गुना बढ़ गया। इसके अतिरिक्त कभी अनावृष्टि कभी अतिवृष्टि ने भी हमारी कृषि योजनाओं को प्रभावित किया। जनसंख्या में वृद्धि, हड़ताल आदि से भी राष्ट्र की आर्थिक दाति हुई। हमारा देश जब तक आत्मनिर्भर नहीं हो जाता जब तक हम प्रगति को अपना नहीं कह सकते क्योंकि अभी भी राष्ट्र पर अरबों रुपये का विदेशी ऋण है जिससे उसे मुक्त होना है।

इन पंचवर्षीय योजनाओं की उपलब्धि ग्रामीण जीवन में हमें दिखायी देती है। वे अब अपने अधिकारों के प्रति सतर्क हैं। अब स्थिति 1947 वाली नहीं है और ग्रामों का वह रूप अब नहीं रहा है। ग्रामों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सफाई का स्तर पहले से अधिक उठा है।

उद्योग धंधों में भी पहले से अधिक प्रगति हुई है जिस औद्योगिक क्षमता को औजारों ने नष्ट कर दिया था वह फिर बन रही है। देश के कोने-कोने में कल-कारखाने स्थापित हो रहे हैं। तारापुर और राजस्थान में राणाप्रताप सागर में दो अणुशक्ति के केन्द्रों की स्थापना हुई। तीसरा मद्रास के निकट और नरौरा (कुलन्दशहर) में बनने को है। इस बीच में राष्ट्र एक परमाणु-विस्फोट कर चुका है जिसका उद्देश्य शांतिपूर्ण है।

5 जून 1966 को रुपये का अवमूल्यन हुआ। अवमूल्यन से शुद्ध देशी माल से बनी चीजों के दाम तो नहीं बढ़े किन्तु विदेशों से मंगाई गई या विदेशी सामान से तैयार की गई चीजों के दाम अवश्य बढ़ गए। देश के कारखानों को चलाने और उत्पादन बढ़ाने के लिए भारत ने पर्याप्त विदेशी सहायता ली है और अब भी ले रहा है ताकि हम स्वयं आत्मनिर्भर हों और विदेशों से माल कम आयात करना पड़े।

सन् 1969 में केन्द्रीय सरकार ने 14 बड़े बैंकों के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की। इससे उद्योग धंधों और व्यापार में जनता को विशेषतः छोटे-छोटे कामगारों और व्यापारियों को लाभ पहुंचाने की वाशा व्यक्त की गई। जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों का राष्ट्रीयकरण एक महत्वपूर्ण कदम था। बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद गांव - गांव में बैंक लौले गए और उसमें जमा धनराशि में भी वृद्धि हुई। यद्यपि बैंकों के राष्ट्रीयकरण से राजनीतिज्ञों के दो दल हो गए। एक पदा बैंकों के राष्ट्रीयकरण की उचित मानता था और दूसरा पदा इसकी अनुपयोगी

समकता था । बैंकों का राष्ट्रीयकरण एक ऐसा कदम था जो समाजवादी के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा ।

इसके बाद केन्द्रीय सरकार ने एक वीर साहसपूर्ण प्रगतिशील कदम उठाया सन् 1971 में, मूलपूर्व रियासतों के नरेशों के विशेषाधिकार और राजपूता समाप्त करके 1970 में ही लोकसभा ने ये विशेषाधिकार और राजपूता बिल्कुल समाप्त कर दिये थे किन्तु राजन्य वर्ग ने सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर कर अपने अधिकारों को पुनः प्राप्त करने में विजय हासिल की । सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से ये विशेष सुविधाएं और अधिकार उन्हें पूर्ववत् अवश्य प्राप्त हो गए किन्तु मार्च 1971 के मध्यावधि चुनावों के बाद भारतीय संविधान में यथोचित परिवर्तन कर उन्हें हमेशा के लिए समाप्त कर दिया । यह कदम तत्कालीन सरकार की समाजवादी विचारधारा का द्योतक था । इस प्रकार सामाजवादी व्यवस्था का अन्त हो गया । इसके बाद जमींदारी उन्मूलन के लिए एक सीमा से अधिक भूमि के लिए 'सीलिंग' का कानून तत्कालीन सरकार ने बनाया ।

इसी बीच एक ऐसी घटना घटित हुई जिससे देश की वार्थिक स्थिति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा । 1971 में पाकिस्तान में से एक हिस्से ने अलग होकर बांग्लादेश के नाम से अलग देश का निर्माण किया जिसका नेतृत्व स्कान्धि बाबन्धु शैल मुजीबुर्रहमान ने किया । इस महान् उद्देश्य की पूर्ति में भारत ने महान् योगदान दिया । भारत ने अपनी सेनाएं वहां भेजीं । भारतीय सेनाओं के बल पर ही 'बांग्लादेश' का निर्माण हो सका । 1 करोड़ शरणार्थी हमारे देश में आये जिनके आवास और भोजन का व्यय भारत सरकार ने किया । इससे हमारे वार्थिक बजट का संतुलन बिगड़ा, किन्तु हमारे देश का महत्त्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बढ़ा ।

हमारे देश की वर्तमानवस्था इसलिए भी ठीक नहीं हो पाती क्योंकि हमारे देश की जनसंख्या बहुत अधिक है । 60 करोड़ जनसंख्या वाले देश की

वार्थिक समस्याओं का समाधान करना सरल कार्य नहीं है । इसके लिए सरकार ने 'परिवार नियोजन' कार्यक्रम चलाया और 'छोटा परिवार-सुखी परिवार' का नारा दिया और केन्द्रीय सरकार के इस निर्णय का प्रभाव जनता पर पड़ा ।

केन्द्रीय सरकार ने हरित् क्रांति का नारा भी दिया जिससे कृषि पर अधिक ध्यान दिया जा सके । किसानों को बीज, खाद, वैज्ञानिक कृषि उपकरण उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने विविध प्रयत्न किये । और सरकार के प्रयास से कृषि के क्षेत्र में हमारे देश ने प्रगति की ।

हमारी सरकार का लक्ष्य समाजवाद है । इसलिए वह नहीं चाहती कि अमीर और अमीर होते जायें और गरीब और गरीब होता जाये और देश की पूँजी कुछ परिवारों में सीमित होकर रह जाये । इससे समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधा उत्पन्न होगी । इसलिए सरकार छोटे उत्पादकों, सरकारी प्रतिष्ठानों को भी संरक्षण प्रदान कर रही है । सरकार का एक लक्ष्य यह भी है कि देश के सभी क्षेत्रों-महानगरों और पिछड़े इलाकों में तरह-तरह के कारखाने खोले गए हैं और औद्योगिक बस्तियाँ बनायी जा रही हैं । भ्रम कल्याण और रोजगार के दफ्तर खोले जा रहे हैं किन्तु समस्या इतनी विशाल है कि अब तक किये गए उपायों से देश की समस्या का स्पर्श मात्र ही हो सका है क्योंकि बीच-बीच में उसे चीन और पाकिस्तान से संघर्ष करना पड़ा । इसके अतिरिक्त हड़तालों, अंतरिक कलह, सरकारी अफसरों में कर्तव्यनिष्ठा का अभाव आदि विभिन्न बिग्न-बाधाओं का सामना करना पड़ा है ।

हमारे देश में शिक्षा की समस्या भी अभी नहीं सुलझ सकी है । विशाल जनसंख्या होने के कारण शिक्षा प्राप्त करने के लिए इच्छुक व्यक्तियों की संख्या भी विशाल है । स्वतंत्र देश के नागरिक को उसकी योग्यतानुसार

शिक्षा प्राप्त होनी ही चाहिए। स्वतंत्रता के पश्चात् गाँवों और शहरों में पहले से कई गुना अधिक स्कूल, कॉलिज खुले हैं। विश्वविद्यालयों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की भी स्थापना सरकार ने की है। तकनीकी शिक्षा के प्रसार के लिए तकनीकी स्कूल, कॉलिज खोले गए हैं। इन सब प्रयत्नों से स्कूल, कॉलिज और विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या पहले की अपेक्षा चौगुनी हो गई है। दुर्भाग्य हमारे देश का यह है कि शिक्षा का ढाँचा अभी भी वही है जो कि ब्रिटिश शासनकाल में था। स्वतंत्र देश की आवश्यकताओं के साथ उसे बदला नहीं गया है। यद्यपि इस संबंध में राधाकृष्णन रिपोर्ट, मुदालियर रिपोर्ट, कोठारी रिपोर्ट, आदि कई रिपोर्ट प्रकाश में आ चुकी हैं कि उनके अनुसार क्रियान्वयन नहीं हुआ। यही कारण है कि आज पूरे देश के विभिन्न प्रान्तों में शिक्षा का ढंग अलग-अलग है। पूरे देश में शिक्षा का स्तर सामान नहीं है। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी विषय विशेष में चाह कर भी योग्यता प्राप्त नहीं कर पाता। परीक्षा प्रणाली एक जुए के समान है। इस सबके बाद सबसे बड़ी समस्या विद्यार्थी के सामने तब आती है जब वह विश्वविद्यालय से डिग्री लेकर बाहर आता है और रोजगार ढूँढता है और बहुत प्रयत्न के बाद भी उसे रोजगार नहीं मिलता, इसलिए अच्छे-अच्छे इंजीनियर, तकनीशियन, शिक्षा प्राप्त करके घर बैठ जाते हैं। एम0 ए0 और पी-एच0डी0 वालों की तो गिनती बहुत बाद में होती है। वस्तुतः यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हम अपने देश के नवयुवकों और नवयुवतियों में कुण्ठा पैदा कर रहे हैं। यह एक बहुत बड़ी वार्षिक समस्या उन नवयुवकों के सामने है जो अपनी शिक्षा पूर्ण कर चुके हैं।

(ग) सामाजिक परिस्थितियाँ:--

स्वतंत्रता के पश्चात् केंद्रीय सरकार ने पिछड़े जगों में नवीन चेतना उत्पन्न करने के प्रयत्न किये हैं। उन्हें सुरक्षा प्रदान करने के लिए

अनेक सरकारी प्रयत्न किये गए हैं। इस दिशा में स्त्रियों की दृष्टि से हिन्दू लोह एक महत्वपूर्ण कदम था। इस कानून से स्त्री-पुरुषों के अधिकारों में समानता ला दी गई। तलाक की कानूनी मान्यता प्राप्त हो जाने से स्त्रियों में स्वतंत्र व्यक्तित्व का जन्म हो रहा है। द्विविवाह और बहुविवाह पर नियंत्रण लग जाने से स्त्री अब अधिक सुरक्षित अपने को अनुभव करने लगी है। पारिवारिक संपत्ति के उत्तराधिकार की दृष्टि से भी स्त्री को अब पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हो गए हैं। दहेज-प्रथा कानून के द्वारा अवैध घोषित कर दी गई है। अब तक पुरुष ही किसी बच्चे को गोद ले सकता था किन्तु अब स्त्री भी बच्चे को गोद ले सकती है। बढ़ती हुई जनसंख्या और स्त्री के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए गर्भपात को वैध घोषित हो गया है। इसी प्रकार अस्पृश्यता को लेकर समाज में जो अन्याय और उत्पीड़न प्रचलित था उसे 1955 के अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम द्वारा रोक दिया गया है। विधार्थियों को और अधिक सुविधाएं देने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ सरकार द्वारा प्रदान की जाती हैं। कर्मचारियों को बेकारी, ज़्यादावस्था, बीमारी या अन्य किसी तरह के कष्ट में कर्मचारी राज्य बीमा योजना और कर्मचारी निवृत्ति निधि योजना के अंतर्गत आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। गाँव-गाँव में बिजली और सड़क पहुँचाने के प्रयत्न सरकार द्वारा किये जा रहे हैं। गाँवों में स्वास्थ्य केन्द्र बनाये जा रहे हैं। शिक्षा के प्रसार के लिए स्कूलों को बढ़ाया जा रहा है। लोक जीवन में सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करने की चेष्टा भी सरकार द्वारा गिरन्तर की जाती रहती है। इस दृष्टि से फिल्मों, पुस्तक निर्माण एवं प्रकाशन (राष्ट्रीय- बुक ट्रस्ट) आदि का उपयोग किया जा रहा है। अच्छी फिल्मों के निर्माताओं और कलाकारों को राष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाते हैं। इसी प्रकार अच्छी लेखी करने वाले को कृषि पण्डित की उपाधि से विभूषित किया जाता है। अच्छी शिल्पाधियों को वज्र पुरस्कार

दिये जाते हैं। साहित्यकारों को प्रोत्साहन देने के लिए राज्यसभा में उनके लिए स्थान सुरक्षित रखे जाते हैं। इसी प्रकार हरिजनों तथा अनुसूचित जातियों की प्रगति को ध्यान में रख कर शिक्षा संस्थानों, विभिन्न नौकरियों, विधान सभा और लोक-सभा में उनके लिए स्थान सुरक्षित रखे जाते हैं। सारांशतः राष्ट्रीय जागरण के लिए विविध प्रयत्न राष्ट्रीय सरकार द्वारा किये गए हैं।

सरकार के इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप आज भारतीय समाज का नक्शा शनैः शनैः बदल रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व की स्थिति और आज की सामाजिक स्थिति में बहुत बड़ा अन्तर आ गया है। आज नारी पुरुष के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्र में उसके साथ चल रही है। विभिन्न सामाजिक मूल्यों के परिवर्तित हो जाने के कारण तथा औद्योगिकरण के कारण एवं स्त्री के शिक्षित और आत्मनिर्भर होने के कारण संयुक्त परिवारों का स्थान स्काकी परिवार ले रहे हैं।

गांवों में जमींदारी प्रथा का अन्त हो जाने के कारण हरिजन और कमजोर वर्ग के लोग पहले जैसे मयभीत नहीं हैं यद्यपि यह मय मूलतः समाप्त नहीं हुआ है। आज भी सबर्णों द्वारा हरिजनों को जिन्दा जला देने की घटना प्रतिदिन सुनने को मिल जाती है। यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है।

शहरों में भी कारखानों के मालिक श्रमिकों का शोषण निरन्तर कर रहे हैं। देश की समस्त पूँजी उत्पन्न संस्थक परिवारों में संचित रहने के कारण पूँजीपतियों का वार्तक निरन्तर बना रहता है। इसी कारण हमारे यहाँ बड़े स्तर पर वर्ग बैधाय्य देखने का मिलता है।

शिक्षा की गलत प्रणाली, बेरोजगारी की समस्या तथा परिवर्तित जीवन मूल्यों के कारण आज युवा-पीढ़ी कुण्ठा से ग्रसित है वह पश्चिमी सभ्यता में आमूलबूल डूबी हुई है। क्लबों, रेस्टोरेंट, सिनेमा घरों में युवा वर्ग की आकांक्षाएं भटक रही हैं।

शिद्घात युवतियों के सामने भी समस्या है। प्रथम संघर्ष तो उन्हें परिवार में करना पड़ता है। अपनी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए और दूसरा संघर्ष उन्हें शिक्षा पूर्ण करने के बाद समाज से करना पड़ता है। अधिक शिक्षित होने के कारण उपयुक्त जीवनसाथी का मिलना कठिन हो जाता है। दूसरी ओर छिड़ी हाथ में होने पर भी उन्हें नौकरी नहीं मिल पाती ऐसी स्थिति में वे अपने को बोझ समझने लगती हैं।

राजनैतिक और वार्थिक स्थितियों में संतुलन न होने के कारण हर स्तर पर प्रष्टाचार और वराकता आज समाज में विद्यमान है।

वस्तुतः यह काल भारत का संकुमण काल है। हर क्षेत्र में उथल-पुथल हो रही है। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री बी० बी० गिरि का कथन इस संदर्भ में सही जान पड़ता है ---* भारत आज विकट परिस्थितियों से गुजर रहा है। वतः उसे कठिन प्रयास से प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सदा जागरूक रहना है। वे पुराने संगठन जिनमें समाज अभी तक अविच्छिन्न था अब टूटते जा रहे हैं। उनका स्थान लेने के लिए कोई ठोस कार्यक्रम नजर नहीं आ रहा है, न कोई सामाजिक उत्तरदायित्व की मानना जो समयानुकूल हो, पनप रही है। परिणाम स्वरूप सामाजिक विघटन के चिह्न दिखाई पड़ रहे हैं¹।

देश की राजनीति, अर्थ व्यवस्था और सामाजिक तंत्र ने मध्यम कौ सार्वजिक चिन्तनीय स्थिति में डाल दिया है। वर्तमान बढ़ती हुई मंछाई ने तो उसकी कमर ही तोड़ दी है। प्रष्टाचार तथा कालाबाजारी के कारण पूँजी का लाभ केवल गिने-बुने पूँजीपतियों को ही उपलब्ध हो रहा है। सामान्य जनता उससे कौसों दूर है। एक नवीन त्रिकोणात्मक शोणण का चक्र स्वतंत्रता के पश्चात् निरन्तर चल रहा है। *स्काधिकार व्यवस्था व्यावसायिक

1- श्री बी०बी० गिरि के माणण का कौ-- नवभारत टाइम्स-

क्षेत्र में पनप रही है। कृषि व्यवस्था के सुधारों में निहित स्वाधों के साथ शासन की समझौतावादी नीति चल रही है और शहरी क्षेत्र में आय और सम्पत्ति की सीमा का निर्धारण अभी तक नहीं हो सका है।¹

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि पिछले 25 वर्षों में देश ने जीवन के विविध क्षेत्रों में उन्नति की है। देश की औसत आय बढ़ी है, शिक्षा-संबंधी सुविधाओं के कारण लोगों की आय बढ़ गई है। साधन का उत्पादन बढ़ गया है। अनेक कारखाने खुल गए हैं। छात्र-छात्राओं की संख्या में कई गुना वृद्धि हो गई है। विज्ञान के क्षेत्र में भी हम आस्ट्रेलिया, कनाडा आदि देशों से पिछड़े हुए नहीं हैं। इस सबके होते हुए भी स्वतंत्र भारत में जितनी उन्नति होनी चाहिए थी, उतनी नहीं हुई है। आज 25 वर्षों के बाद भी हमें लाखों प्राणी भूख, नंगे सड़कों पर दिखायी देते हैं। आज भारत के युवा वर्ग पर के बेहरे पर भी तारुण्य की लालिमा नहीं है जिससे उसके सुखी और संतुष्ट होने का प्रमाण कहा जा सके। अभी तक अर्थविश्वास समाप्त नहीं हुए हैं। अभी समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त करना बहुत असंभव सी बात लगती है।

(2) *वास्तविक परिस्थितियों का प्रभाव*

किसी भी देश की परिस्थितियों का प्रभाव वहाँ के साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। स्वतंत्र्योत्तर कहानी साहित्य में स्वतंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब

-
- 1- डा० कृष्ण बिहारी मिश्र-- आधुनिक सामाजिक आन्दोलन और आधुनिक हिन्दी साहित्य, पृ०- 818, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, पृ० सं०- 1972।

दृष्टिगोचर होता है। स्वार्तत्र्योत्तर कहानीकार ने इन परिस्थितियों को स्वयं भोगा है। इसलिए उनका कटु किन्तु यथार्थ अनुभव उनकी कहानियों का केन्द्र बना है।

स्वार्तत्र्योत्तर भारत की परिस्थितियों का अवलोकन करने से यह तो स्पष्ट हो गया है कि किसी भी क्षेत्र में चाहे वह राजनीतिक हो या वार्थिक अथवा सामाजिक, हम उस बिन्दु पर नहीं पहुँच पाये हैं जहाँ स्थिति को सन्तोषजनक कहा जा सके। इस असंतोष की फलक हमें आलोच्यकालीन कहानियों में दिखाई देता है। यही नहीं बदलते हुए जीवन-मूल्यों का चित्रण भी आज की कहानी करती है। देश की विभिन्न समस्याएँ भी आज की कहानियों में उठाई गई हैं। समाज में बदलते हुए स्त्री-पुरुष के संबंध आलोच्यकालीन-कहानी में चित्रित हुए हैं। सारांशितः समाज का कोई पक्ष, कोई बिन्दु कहानीकार की दृष्टि से अछूता नहीं रहा है।

स्वार्तत्र्योत्तर काल की परिवर्तित परिस्थितियों का सर्वाधिक प्रभाव परिवार पर पड़ा है। आज परिवार का पुराना रूप बदल गया है। पारिवारिक संबंध बदल गए हैं। आज वार्थिक पक्ष दुर्बल होने के कारण बहन-भाई, बाप बेटे आदि सभी रिश्तों में अनायास परिवर्तन आ जाता है। इस कटु यथार्थ का चित्रण 'बापसी' ¹ 'जिंदगी और गुलाब के फूल' ² में हुआ है। आज की परिस्थितियों का ही प्रभाव है कि आज पत्नी मात्र धर्मपत्नी नहीं है अपितु वह पति के समान स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। पति उसके लिए देवता नहीं है अपितु सुल-दुल में समान भागीदार साथी है, वह पत्नी को सिर्फ भोग्या मात्र न समझे इस नये जीवन मूल्य को 'ऊँचाई' ³

1- बापसी- उषाप्रियंवदा-- जिंदगी और गुलाब के फूल, पृ०-119

भारतीय ज्ञानपीठ, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, दिल्ली- 110002-1971।

2- ----- बही----- ,, ,, पृ०-180

3- ऊँचाई- मन्मथ मंडारी-- एक प्लेट सैलान- पृ०-126, अक्षर प्रकाशन, 2136 अंतारी रोड, दरिबार्गज दिल्ली, पृ० सं०-1968।

में चित्रित किया गया है। आज नारी घर की चार दीवारी में बन्ध रहने वाली भारतीय लड़ना मात्र नहीं है बरन ¹ 'टाइपिस्ट' भी है।

जीविकारत अविवाहित युवती के सामने भी आज अनेक समस्याएं हैं। ² 'प्रतीक्षा' और ³ 'सुहागिनी' की युवतियां भी इन समस्याओं को फँस रही हैं।

दायित्व जीवन में भी विभिन्न समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं अपने बदले हुए रूप में। ⁴ 'कंटीली झाँह' में यह समस्या चित्रित हुई है।

आज की परिस्थितियों के फलस्वरूप बेरोजगारी की समस्या भी व्यक्ति के सम्मुख वा लड़ी हुयी। ⁵ 'वासक्ति' ⁶ 'डिप्टी कलकटरी' ⁷ 'नया जन्म' कहानियों में यह समस्या बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित हुई है।

- 1- टाइपिस्ट- महीप सिंह-- सुबह के फूल- पृ०-128, हिन्दी मवन, इलाहाबाद, जालंधर।
- 2- प्रतीक्षा- राजेन्द्र यादव- किनारे से किनारे तक-- पृ०-17, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, नयी दिल्ली, प्र० सं०-1971।
- 3- सुहागिनी- मोहन राकेश-- एक और जिंदगी- पृ०-15, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, नयी दिल्ली, सं०--
- 4- कंटीली झाँह-- उषाप्रियंवदा-- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ०-76 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली, तृ० सं०-1971।
- 5- वासक्ति- कमलेश्वर- क्यान - पृष्ठ-158, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्र० सं०-1972।
- 6- डिप्टी कलकटरी-- अमरकान्त- जिंदगी और जॉक-- पृ०-9, नया साहित्य, प्रकाशन, 2-डी मिंटो रोड, इलाहाबाद, संस्करण- फरवरी 1968।
- 7- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई बाबाजों के बीच-पृ०-104, लोक भारती प्रकाशन, 15- ए महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद- प्र० सं०-जन०-1968।

वालीच्युगुनि परिस्थितियों के फलस्वरूप आज संयुक्त परिवार व्यवस्था टूट रही है। पति-पत्नी, भाई-बहिन, पिता-पुत्र, माँ-पुत्र, के सहज संबंधों की अपेक्षा औपचारिक दिलावा और स्वार्थ बढ़ रहा है। परिवार की इन समस्याओं पर विविध कोणों से हिन्दी कहानीकार ने लिखा है और उसकी समस्याओं के हर पहलू को बाँकने का प्रयास किया है।
 * एक शिकायत सबकी¹ * * रक्तबन्धन² * * टुकड़े जो जुड़ नहीं सकते³ * * एक शिल्पहीन कहानी⁴ * * राजा निरबंसिया⁵ * * एक कुलीन बेहरा⁶ * * आदि अनेक कहानियाँ परिवार की अनेक समस्याओं को स्पष्ट करती हैं।

समाज में व्याप्त पारिवारिक समस्याओं के अतिरिक्त रिश्तखोरी (आखिरी सामान⁷) पदापात, सिफारिश, अविश्वास आदि बुराइयों

- 1- एक शिकायत सबकी-- नई कहानी, दिसंबर-1960।
विधासागर नौटियाल।
- 2- रक्तबन्धन- स्वरूप ठाँठियाल, कहानी अक्टूबर- 1960।
- 3- टुकड़े जो जुड़ नहीं सकते-- बलबन्त सिंह-- कहानी- अक्टूबर-1960।
- 4- एक शिल्पहीन कहानी-- द्विजेन्द्र नाथ मिश्र निर्गुण-- नई कहानियाँ- फरवरी-1962।
- 5- राजा निरबंसिया- कमलेश्वर- राजानिरबंसिया- पृष्ठ-79, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 9-अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-27, दिसंबर-1966।
- 6- एक कुलीन बेहरा- सुरेन्द्र कुमार मल्होत्रा-- साप्ताहिक हिन्दुस्तान- 16 सितंबर- 1962।
- 7- आखिरी सामान- मोहन राकेश-- एक-एक दुनिया- पृष्ठ-40
राधाकृष्ण प्रकाशन-, 2- अंसारी रोड, दिल्ली-संस्करण-1969।

* अपने ही शहर¹ में * का चित्रण भी स्वातंत्र्योत्तर कहानीकार ने किया है ।

विद्यार्थियों और नवयुवकों से संबद्ध बेकारी, उनमें बढ़ती अनुशासनहीनता, अनुसरवायित्व, नौकरियां प्राप्त करने के लिए तिकड़मबाजी, सुशामद वादि वनेक पहलुओं पर वाज की कहानी प्रकाश डालती है ।
 * एक बुतकिशन का² जन्म * * शिदादानी का³ अन्त * * जीवन-क्कु⁴ * * चीफ⁵ की दाबत * * रोज की बातें⁶ * * दिन⁷ * * अंगीठी के कोयले⁸ * वादि वनेक कहानियों में इन समस्याओं का चित्रण हुआ है ।

भारत पाकिस्तान विभाजन से उत्पन्न विषम परिस्थितियों का चित्रण स्वातंत्र्योत्तर कहानी में मिलता है इससे स्पष्ट होता है कि प्रत्येक घटित हो रही घटना का प्रभाव कहानीकार ग्रहण करता है । * मलबे का मालिक⁹ * एक ऐसी ही सशक्त कहानी है जिसमें भारत पाकिस्तान विभाजन की कृत्रिमता और उससे उत्पन्न नये मानव मूल्यों का चित्रण अत्यंत संवेदनशीलता के साथ हुआ है ।

- 1- अपने ही शहर में-- रमेश उपाध्याय- शेष इतिहास- पृ०-1
 वायु बुक डिपो, 30 नाईबाला, करौल बाग, दिल्ली- पृ० सं०-1973 ।
- 2- एक बुतकिशन का जन्म-- श्रीमती विजय-बाहन- नई कहानियां- अक्टू०-1960
- 3- शिदादानी का अन्त- मन्मथनाथ गुप्त- कहानी (नववर्षांक) जनवरी-1958 ।
- 4- जीवन-क्कु- कमल जोशी- कहानी (नववर्षांक) जनवरी- 1958 ।
- 5- चीफ की दाबत- भीष्म साहनी-- ,, ,, ।
- 6- रोज की बातें-- शत्रुघ्न लाल- कहानी- अक्टूबर- 1960 ।
- 7- दिन-- शानी-- कहानी- अक्टूबर- 1960 ।
- 8- अंगीठी के कोयले-- प्रह्लाद नारायण मिश्र- नयापथ- सितंबर- 1953 ।
- 9- मलबे का मालिक- मोहन राकेश-- कहानी- जनवरी- 1958 ।

भारत के लिए सन् 1962 से 1971 तक का समय बहुत संकटपूर्ण रहा है। इस बीच उसे चीन के साथ तथा दो बार पाकिस्तान के आक्रमणों का सामना करना पड़ा है। कहानीकार ने देश की इस पीड़ा का भी अनुभव किया है। *दरार¹* कहानी का नायक अपनी वासन्त प्रसबा पत्नी को छोड़ कर मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्धभूमि की ओर चल पड़ता है।

इसी प्रकार राजनीतिक प्रपंच, स्वार्थ साधना पर *वाटे का सिपाही²* *मैंने योजना बनाई³* *माइ डियर कैनेडी⁴* *बापू के बारिसों के नाम⁵* *वादि कहानियों में तीखा व्यंग्य किया गया है।

सारांशतः स्वार्तत्रयोत्तर कहानी अपने युग की परिस्थितियों और घटनाओं का ही प्रतिबिम्ब है। चाहे स्वार्तत्रयोत्तर परिवार के संदर्भ हों अथवा समाज के बदलते जीवन मूल्य अथवा राजनीतिक घटनाएं हों हरेक बिन्दु को व्यर्थत सजगता के साथ आलोच्य-युगीन कहानीकार ने पकड़ा है।

- 1- दरार-- बेद राही-- दरार- पृ०-86, उमेश प्रकाशन, नाथ-मार्केट, नई सड़क, दिल्ली- संस्करण- 1970।
- 2- वाटे का सिपाही-- आनंद प्रकाश जैन- कहानी- जनवरी- 1958।
- 3- मैंने योजना बनाई-- हरिश्चंद्र परसाई-- ज्ञानोदय - जनवरी-1959।
- 4- माइ डियर कैनेडी- लक्ष्मीचन्द्र जैन-- ज्ञानोदय - फरवरी- 1961।
- 5- बापू के बारिसों के नाम--- लक्ष्मीचन्द्र जैन-- ज्ञानोदय- अगस्त-1958।

तृतीय अध्याय

स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप
तथा
स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कहानी में परिवार का रूप

(क)- परिवार की परिभाषा

(ख)- परिवार के विभिन्न वर्गों की परिभाषा

परिवार के मुख्य वर्ग-- (1) उच्च वर्ग (2) मध्यम वर्ग--

क- उच्च मध्य वर्ग, ख- मध्य मध्यम वर्ग, ग- निम्न मध्यम वर्ग । (3) निम्न वर्ग ।

(ग) स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप--

1- प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का रूप

2- प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी में परिवार का रूप

3- प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कहानी में परिवार का रूप

(घ) स्वतंत्रता के बाद हिन्दी कहानी में परिवार का परिवर्तित स्वरूप ।

* परिवार और उसका सामान्य स्वरूप *

परिवार मानव समाज की एक महत्वपूर्ण और कल्याणकारी संस्था है। सृष्टि के आदिकाल से आज तक इसकी अनिवार्यता सर्वत्र पाई जाती है। समाज का संरक्षण और संबंधीन परिवार पर अवलंबित है। मानव के विकास का इतिहास परिवार से जुड़ा हुआ है।

परिवार शब्द परि उपसर्ग पूर्वक वृ घातु और घ प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है--'चारों ओर से अच्छी तरह आवरण युक्त'। इस प्रकार परिवार समाज की वह छोटी इकाई है जो अच्छी तरह संगठित रूप से एक घर में रहती है, रक्त द्वारा संबंधित होती है और पारस्परिक कर्तव्य बोध की भावना रखती है। भारतीय धर्मशास्त्रों के अंतर्गत परिवार या संयुक्त कुटुम्ब का जो वर्णन मिलता है उससे परिवार शब्द का अर्थ पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। हिन्दू धर्मग्रंथों में विधान है कि पुत्र विवाह के उपरान्त अपनी स्त्रियों और सन्तानों सहित पिता के साथ एक ही घर में रहते हैं, अन्यत्र यह उल्लेख भी मिलता है कि माई पिता के जीवन काल में एक साथ ही रहें¹।

लैटिन शब्द *Famulus* से *Family* (परिवार) के अर्थ पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। *Famulus* शब्द का अर्थ है सेवक या सेवा करने वाला। इस प्रकार परिवार ऐसे व्यक्तियों का लघुतम समूह है जो रक्त संबंधों और सेवा की भावना से एक दूसरे से संबंधित होते हैं। परिवार में यौन संबंध केशनाम और बच्चों के पालन-पोषण की एक निश्चित व्यवस्था रहती है।

समाज शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान मैकाइवर और पेज के मत के अनुसार 'परिवार उस समूह का नाम है जो यौन संबंधों पर आश्रित है और

1- आपस्तम्ब धर्मसूत्र । 2। 6। 14। 19। प्रातृणां जीवतो पित्रोः सहवासो विधीयते । मि०शंख सवि०-351 ।

इतना छोटा और शक्तिशाली है जो सन्तान के उत्पादन और पालन-पोषण की व्यवस्था करता है ।¹

हाउ डीउ एनउ मजूमदार का मन्तव्य है कि -----

*परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक मकान में रहते हैं, रक्त द्वारा संबंधित हैं और स्थान, स्वार्थ तथा पारस्परिक कर्तव्य बोध के आधार पर समान होने की चेतना या भावना रखते हैं ।²

उपर्युक्त परिभाषा से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार में निम्न प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं :---

विवाह संबंध-- यह संबंध समाज द्वारा स्वीकृत होता है । इसके आधार पर पति-पत्नी के यौन संबंधों से जो सन्तान होती है उसे भिलाकर परिवार का निर्माण होता है । यह संबंध आजीवन बना रहता है यदि बीच में विवाह विच्छेद (तलाक) या मृत्यु के कारण टूट न जाये ।

वंश व्यवस्था:-- प्रत्येक परिवार में कोई वंश नाम निश्चित करने का एक नियम होता है जिसके अनुसार परिवार के बच्चों का उपनाम (Surname) या वंशनाम निर्धारित होता है और उसके वंशजों के पहचानने में मदद मिलती है । यह वंशनाम वास्तविक रक्त संबंधों पर आधारित होता है । सम्य समाजों में यह पिता के नाम पर तथा असम्य समाजों में (जैसे- सारी, गौरा आदि जातियों में) माता के नाम पर उपनाम होता है ।

1-

हिन्दी-समाज-शास्त्र की रूपरेखा, एस0 पी0 गुप्त- जी0 के0 अग्रवाल,
साहित्य भवन, आगरा- 1972, पृ0-131 ।

2-

वर्ष व्यवस्था:-- प्रत्येक परिवार में कुछ न कुछ वर्षाव्यवस्था जीवन-निर्वाह के लिए अनिवार्य होती है। यह व्यवस्था आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराती है जिससे परिवार के सदस्यों का पालन-पोषण होता है।

एक सामान्य निवास या घर:-- प्रत्येक परिवार में सदस्यों के रहने के लिए एक घर होता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पति न पत्नी के घर रहता है न पत्नी पति के घर वरन् वे दोनों ही एक नया घर बनाकर रहने लगते हैं। आधुनिक समय में प्रायः पति-पत्नी नया घर बना या लेकर रहने लगे हैं।

भारत के प्राचीन इतिहास में परिवार का सुलभता हुआ रूप वैदिक काल में दिखायी देता है। वैदिक परिवार में प्रायः तीन पीढ़ी तक के सदस्य सम्मिलित होते थे। यजुर्वेद के एक मन्त्र में पिता, पितामह और प्रपितामह को नमस्कार करते हुए उनसे प्रार्थना की गई है कि वे अपने वंशज को शुद्ध करें¹। वैदिक परिवार में पितृ परम्परा से संबद्ध व्यक्ति ही रहते थे। एक परिवार में रहने वालों का मूल पूर्वज एक पुरुष होता था। समाज-शास्त्रियों ने मानव समाज के परिवारों का जिन दो मुख्य भागों में विभाजन किया है-- पितृवंशी परिवार और मातृवंशी परिवार। इनमें मातृवंशी परिवार का वैदिक साहित्य में स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता। पितृवंशी परिवार की ही चर्चा अनेक स्थलों पर मिलती है। इस परिवार में स्वामाजिक अथवा कृत्रिम रूप (वक्तृ आदि विधि) से बनाये हुए वंशज परदादा, दादा या पिता के अनुशासन में रहते हैं। सामाजिक विधान चाहे कुछ भी हो किन्तु इस परिवार में मुखिया निरंकुश रूप से शासन करता है। पिता शब्द की व्युत्पत्ति 'पति

- 1- पितृम्यः स्वधायिम्यः स्वधा नमः। पितामहेम्यः, स्वधायिम्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेम्यः स्वधायिम्यः स्वधा नमः। पुनन्तु मा पितरः सौम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः। यजुर्वेद--

रक्षात्पत्यं यः सः पिताः¹ * से भी इस बात की सूचना मिलती है कि पिता परिवार का पालन पोषण तथा रक्षा करने वाला होता है। इसी आधार पर पितृ परम्परा से संबद्ध पिता, पुत्र, पौत्रादि पितृबन्धुपिता के शासन और संरक्षण में रहते थे। पारिवारिक संपत्ति पर उसका पूर्ण वैयक्तिक अधिकार था। वह अपनी इच्छा से पुत्रों में इस संपत्ति का बंटवारा करता था।

वैदिक युग का पितृकेंद्री परिवार संयुक्त परिवार था। इस संयुक्त परिवार में पिता और उसके वंशज रहते थे। भारतीय सामाजिक संगठन में संयुक्त परिवार का बहुत महत्व है। समाज में व्यक्ति की स्थिति को निर्धारित करने, उसके कर्तव्यों को निश्चित करने तथा सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने का काम संयुक्त परिवारों द्वारा ही किया जाता रहा है। वैदिक-युगीन संयुक्त कौटुम्बिक प्रथा की अनवरत श्रृंखला मध्य युग में भी पायी जाती है। 13 वीं शती के प्रारंभ से दिल्ली में इस्लामी शासन स्थापित हुआ। हिन्दुओं ने अपनी रक्षा के लिए कच्छपवृत्ति का अवलम्बन किया और कुटुम्ब को एक जगह जोड़ कर रसने में ही अपना हित समझा। 'सयै शक्तिः कलौयुगे' का मंत्र ही घरे और समाज की रक्षा के लिए प्रधान साधन था। सम्मिलित कुटुम्ब की व्यवस्था आर्थिक दृष्टि से अत्यंत उपयुक्त थी क्योंकि परिवार की मूल संपत्ति अखण्ड तथा अविभाज्य रहती थी। एक परिवार में रहते हुए सब सदस्य एक ही घर गृहस्थी के साधनों का उपयोग करते थे अतएव अल्प व्यय में अपना काम चला लेते थे। बेकार होने पर भी परिवार का एक सदस्य संयुक्त कुटुम्ब के व्यय से फलता था। आधुनिक युग में शासन और राज्य की ओर से अपने कर्मचारियों और अधिकारियों के बुढ़ापे की सुविधा हेतु पेन्शनों और बीमा आदि की व्यवस्था की जाती है। निधन और अमाकृस्त व्यक्तियों के लिए दरिद्र गृहों (

का निर्माण हो रहा है पर पुराने संयुक्त परिवार में उनकी दामता के अनुसार कोई काम दिया जाता था और वे परिवार के संयुक्त व्यय से पलते थे । इसमें भ्रम विभाजन का सिद्धान्त काम करता था । परिवार के सदस्य अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार कार्य करते हुए भरण-पोषण पाते रहते थे । आज भी प्रायः गाँवों में संयुक्त परिवार का प्राचीन स्वरूप बना हुआ है । किसानों के परिवारों में सामर्थ्य के अनुसार पुरुष छल्लाते, बीज बीते, खेतों में पानी देते और खेतों में दाय देते हैं । फसल काटने में परिवार की स्त्रियाँ पूरी सहायता करती हैं । इससे मजदूरी का भार, सब बच जाता है ।

सम्मिलित कुटुम्ब, परिवार के अनार्यों और विधवाओं का शरण स्थल रहा है । किसी बच्चे के लिए अनाथ होना सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात है । इसी प्रकार स्त्री के लिए वैधव्य से बढ़कर कोई दुःख नहीं है । इन दोनों का परित्राण संयुक्त परिवार से होता था । बच्चों को मिदनाबुधि का आश्रय नहीं ग्रहण करना पड़ता था¹ । स्त्रियों को उदर पूर्ति के लिए सतीत्व बेचने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी² ।

वाधुनिक युग में संयुक्त कुटुम्ब की प्रथा में विघटन की प्रवृत्ति प्रकट हो रही है । बाजीबिका के नये-नये साधन, यातायात की सुविधा, शहरीकरण, नारी-जागरण एवं जीवन संघर्ष की उग्रता जैसे तत्त्वों ने संयुक्त परिवार

- 1- प्रेमचन्द ने इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए 'अलम्पोका' कहानी में अनाथ होने पर परिवार द्वारा पोषित एक पात्र कैदार से कहलाया है-- 'मैया ने जिला न लिया होता तो आज या तो मर गए होते या कहीं भीस मार्ग रहे होते ।'

प्रेमचन्द- अलम्पोका- मानसरोवर भाग-1, ईस प्रकाशन, इलाहाबाद-
11 वाँ संस्करण- 1972- पृ0-13 ।

- 2- --- उपर्युक्त कहानी--- प्रेमचन्द-- मानसरोवर भाग-1- पृ0-31 ।

को विघटित कर दिया है। पश्चिम की नई विचारधारा ने भी भारतीय संगठित परिवार पर गहरा प्रभाव डाला है। स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों की घोषणा ने समष्टिवाद को व्यक्तिवाद का रूप दे दिया है। फलतः संयुक्त कौटुम्बिक स्वरूप एकाकी परिवार या लघु परिवार की संदिग्ध सीमा में बाध हो गया है।

एकाकी परिवार को मूल परिवार भी कहा जा सकता है जिसमें प्रायः विवाहित पति-पत्नी और उनके विवाहित बच्चे रहते हैं। यद्यपि ग्रामीण समाज में आज भी संयुक्त परिवार का प्राचीन रूप बहुत कुछ देखने को मिलता है पर शहरों में इसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। प्रेम विवाह, विवाह-विच्छेद, गर्भ-निरोध, परिवार-नियोजन तथा विवाहित रहने की प्रवृत्ति ने एकाकी परिवार के धरातल को सुदृढ़ बना दिया है। पति-पत्नी दोनों की समानता की इच्छा के कारण सन्तान पर पिता के अधिकार कम हो गए हैं और साथ ही माया या जाया का पावन रूप भी नष्ट हो गया है।

मविध्य में परिवार जैसी संस्था का क्या रूप होगा -- यह निश्चित रूप से बताया नहीं जा सकता परन्तु भारतीय पारिवारिक जीवन को देखने से यह स्पष्ट होता है कि आज सामाजिक मूल्य टूट रहे हैं और पुरानी मान्यताएं व संबंध जर्जर हो रहे हैं। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, माई-बहन के पुराने रिश्ते बदल गए हैं। पुत्र अपने पिता से औपचारिक नाता निमाता है और माबादेश में पिता की हत्या भी कर देता है। माई-बहन के परम्परानुमोदित स्वामाजिक स्नेह तन्तु बिच्छिन्न हो रहे हैं। पितृर्षा के प्रति नई पीढ़ी में विद्रोह का भाव परिब्याप्त है। परिवार का आर्थिक और धार्मिक महत्त्व समाप्त हो चुका है। परिवार के अन्दर माता-पिता बच्चों का उत्तरदायित्व स्वरूप न उठा कर नौकर या शिक्षकों पर डोढ़ देते हैं इसलिए सन्तान का उचित निर्देशन न होने के कारण वह विवेकहीनता और अराजकता की ओर अग्रसर होती जा रही है।

वाधुनिक परिवार और समाज में नारी विशिष्ट स्थान रखती है। स्वतंत्रता से पूर्व नारी की दशा अच्छी नहीं थी पर शनैः शनैः स्थिति को सुधारने के लिए कदम उठाये गए और अब शिक्षित नारी परिवार और समाज दोनों में साधिकार प्रतिष्ठित हो चुकी है। वह जीविका के क्षेत्र में पुरुष की समकक्षता पा रही है तथा कोई भी कार्यभार संभालने में पुरुष के साथ सही है।

उपरोक्त विवेचन का यह अभिप्राय नहीं है कि भारतीय नारी-समाज पूर्णरूप से जागरूक और चैतन्य हो चुका है। आज भी स्त्री-जाति का बहुत बड़ा भाग गाँवों में, पिछड़े प्रदेशों में और परिगणित तथा अनुसूचित जातियों में ऐसा है जो शिक्षा और नवीन सभ्यता से सबंधित पृथक और अछूता है। मजदूर स्त्रियाँ दिन भर मजदूरी करके सही कठिनाई से अपना और अपने बच्चों का पालन-पोषण करती हैं। उनके निम्नतम और मेहनतकश जीवन को सुहाल बनाने का कार्य अभी शेष है।

शिक्षित नारी की सुरक्षा की समस्या भी सुलझनी चाहिए। जाति प्रथा, दहेज प्रथा जैसी रूढ़ियों ने नारी के महत्व को गिरा रखा है। बुजुर्गों द्वारा लड़कों का महत्व अधिक वाँकने के कारण नारीत्व और विवाह की गरिमा समुचित रूप में प्रतिष्ठित नहीं हो पा रही है। बाये दिन बलात्कार और अत्याचार की घटनाएँ सुनने को मिलती रहती हैं। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि भारतीय परिवार इस समय संक्रमण के दौर से गुजर रहा है।

परिवार के विभिन्न कर्तव्य

मानव समाज की कल्पना के साथ ही कर्तव्य का स्वरूप हमारे मन में स्वतः जागृत हो उठता है। मानव विकास के प्रारम्भिक काल से ही व्यक्तियों

की योग्यता व कुशलता के आधार पर उन्हें समाज में एक विशेष स्थिति प्रदान करने के लिए सदैव प्रयत्न होते रहे हैं। समाज शास्त्र में इसे सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। सामाजिक स्तरीकरण का उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक स्थिति प्रदान करना तथा प्रत्येक व्यक्ति में अपने कर्तव्यों को पूरा करने की प्रेरणा उत्पन्न करना है। जाति व्यवस्था इस स्तरीकरण का एक रूप है जिसमें सदस्यों की स्थिति जन्म से निश्चित होती है। स्तरीकरण का दूसरा रूप विभिन्न सामाजिक वर्गों के रूप में प्रकट होता है। मैकाइवर तथा पेज समाजशास्त्रियों ने वर्गों की परिभाषा करते हुए कहा है--¹ 'किसी वर्ग का अर्थ ऐसे श्रेणी अथवा प्रकार से है जिसके वर्तमान व्यक्ति अथवा समूह आते हैं'।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री जॉर्ज वर्नर लिखते हैं---² 'एक वर्ग के वर्तमान ऐसे सदस्य होते हैं जो एक ही वर्ग से उत्पन्न हो, एक से व्यक्तियों में लगे हों, जिनकी शिक्षा समान हो, जो धन की दृष्टि से समान स्तर रखते हों और जिनके जीवन स्तर का ढंग भी एक सा हो। ऐसे सभी सदस्यों के विचार, भावनाएं, प्रवृत्तियां और व्यवहार समान होते हैं'।³ इसी राज्य क्रान्ति के प्रणेता एवं महान् विचारक लेनिन के अनुसार--⁴ 'वर्ग व्यक्तियों के बड़े-बड़े दल होते हैं। ये दल एक-दूसरे से भिन्न होते हैं, जिनकी भिन्नता का आधार व्यक्ति की सामाजिक उत्पादन पद्धति के अनुसार निश्चित किया जाता है। इस अन्तर को उत्पादन के साधनों (जिन्हें अधिकार वर्गों में कानून द्वारा निर्मित किया जाता है) से ज्ञात कर सकते हैं। यह अन्तर कुछ तो श्रमजीवियों के संगठन के कार्यों पर आधारित होता है और कुछ

- 1- वार0 एम0 मैकाइवर एवं-पेज--(सी0एच0 पेज0)- सौसायटी, पृ0-348
मैकमिलन कम्पनी लिमिटेड, लन्दन संस्करण-1957।
- 2- इन्साइक्लोपीडिया आफ दि सोशल साइन्सेज भाग-3-4, पृ0-536।
- 3-

सामाजिक धन के वर्जित करने के उपायों से भी ज्ञात किया जा सकता है।¹ इस प्रकार उक्त समाजशास्त्रियों की दृष्टि में वर्ग का निर्णायक व्यक्ति या समूह के वार्षिक एवं सामाजिक स्तरों की भिन्नता पर आधारित होता है। यही कारण है कि एक विशिष्ट प्रकार के वार्षिक और सामाजिक स्तर वाले व्यक्ति एक समूह में बंध कर एक विशिष्ट वर्ग का निर्माण करते हैं। कुछ समाजशास्त्रियों ने विशिष्ट वर्गों के व्यक्तियों की परिभाषा और सीमाओं को निर्दिष्ट करने का भी प्रयत्न किया है। मिल्टन एम० जोर्डन के अनुसार--² धन, आय, व्यावसायिक स्तर, सामुदायिक शक्ति, दल की विशिष्टता, उपभोग का स्तर और पारिवारिक पृष्ठभूमि² व्यक्तियों को उनके वर्गों में प्रतिष्ठित करने वाले वांछ्य तत्त्व हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करें तो वाधुनिक युग में वर्ग भावना को एक विशिष्ट सामाजिक प्रक्रिया का रूप देने का श्रेय कार्ल मार्क्स को है। मार्क्स के अनुसार आदिम समाज में वर्ग भावना नहीं थी क्योंकि उत्पादन इतना अल्प होता था कि मनुष्य आवश्यकताओं की पूर्ति भर ही कर पाते थे। बचाने का प्रश्न ही नहीं था। शनैः शनैः उत्पादन बुद्धि के साथ लोगों ने संपत्ति संग्रह करना शुरू किया और इस प्रकार वैयक्तिक संपत्ति की भावना बढ़ने लगी और इस वैयक्तिक संपत्ति की भावना के साथ ही साथ वर्गों की भावना भी समाज में बढ़ती गई। यहीं से वर्ग संघर्ष की भावना भी उत्पन्न हुई। अपनी सूक्ष्मदर्शी बुद्धि के कल पर मार्क्स ने न केवल वर्ग संघर्ष को वैज्ञानिक रूप से स्पष्ट किया बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों का नामकरण करते हुए उसने प्रमुख रूप से तीन वर्गों की कल्पना की है -- पहले वर्ग को मार्क्स ने 'बोर्जुआ' या शोणक वर्ग कहा है और दूसरे को-

1- फण्डामेन्टल्स आफ मार्क्सिज्म लेनिनिज्म - मैन्सुल- पृ०-150

फॉरेन लैंग्वेज पब्लिशिंग हाउस, मास्को संस्करण-1963।

2- मिल्टन एम० जोर्डन- सोशल क्लास इन अमेरिकन सोसायटी- पृ०-3
ह्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, सोशियोलॉजिकल सीरीज, संस्करण-1958।

‘पोलेटेरियट’ या शोणित कर्मी की संज्ञा दी है। शोणक और शोणित कर्मी के संघर्ष से ही कालान्तर में एक तीसरा कर्मी उभरा जिसे मार्क्स ने मध्य कर्मी कहा। कर्मी की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर व्यक्ति अपनी वार्षिक स्थिति, योग्यता, व्यक्ताय आदि के आधार पर किसी विशेष कर्मी को प्राप्त करता है। कर्मी एक वस्थिर संगठन है क्योंकि घन, पेशा, शिक्का आदि की सुविधाओं के साथ कर्मी के रूप में परिवर्तन होता रहता है। यही कारण है कि समाज में हमें मिन्न-मिन्न कर्मी दिखायी देते हैं जिनकी सुविधाओं का स्तर मिन्न-मिन्न है। एक तरफ ऐसे व्यक्ति भी दिखायी देने हैं जो कार और स्कूटरों पर कौलिज जाते हैं और दूसरी तरफ ऐसे भी व्यक्ति हैं जिन्हें कार पाना तो दूर की बात दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता है। इन्हीं संपन्नताओं को और अंशों को दृष्टिपथ में रखते हुए हम भारतीय परिवार को हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं--- 1- उच्च कर्मी, 2- मध्य कर्मी (उच्च-मध्यम-निम्न), 3- निम्न कर्मी।

(1) उच्च कर्मी:- यह कर्मी उन व्यक्तियों का है जो सब प्रकार से वार्षिक रूप से निर्दिष्ट हैं, समाज में जिनका सम्मान है जिनका वार्षिक स्तर उनके व्यक्ताय, व्यापार पर निर्भर करता है जिनसे अभाव कोसों दूर पागते हैं। इनमें भी दो प्रकार के व्यक्ति आते हैं-- प्रथम प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो गांवों में रहते हैं तथा जमींदार कहलाते हैं तथा अपना पैसा ब्याज पर उठाते हैं तथा बिना परिश्रम के पैतृक संपत्ति पर ही समस्त सुख सुविधाओं का उपभोग करते हैं, यद्यपि यह कर्मी समाप्त प्रायः है क्योंकि देश के ढाँचे में जबदस्त ढंग से परिवर्तन हो रहे हैं, जमीन पर सीलिंग लगाने से जमींदारों के पुराने खतबे भी समाप्त होते जा रहे हैं किन्तु फिर भी इसकी जड़े गहरी हैं और संपूर्ण रूप से समाप्त होने में लम्बा समय लगेगा। दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जो शहरों में रहते हैं और वर्जित या पैतृक संपत्ति से फँकड़ी या

बड़े कारखाने सौल लेते हैं और अधिकों के परिश्रम का शोषण कर अपनी सम्पत्ति में वृद्धि करते हैं। शहरों में इस वर्ग को पूंजीपति वर्ग कहते हैं। राज का यह उच्च घनी वर्ग किलास और ऐश्वर्य में डूबा है, किसी प्रकार का कष्ट इन्हें नहीं है। भारत की 60 करोड़ की विशाल जनसंख्या को देखते हुए इनकी संख्या नगण्य प्रायः ही है। इसी वर्ग को कार्ल मार्क्स ने 'बुर्जुआ' या 'शोषक वर्ग' कहा है।

(2) मध्य वर्ग:- इस वर्ग का समाज में व्यापक प्रभाव है। यह वर्ग अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच की कड़ी का कार्य करता है। इस वर्ग की कोई निश्चित परिभाषा देना अत्यंत कठिन है क्योंकि कहीं तो यह उच्च वर्ग के भित्कुल समीप दिखता है और कहीं इसकी स्थिति निम्नवर्ग के निकट की है। डा० धीरेन्द्र वर्मा का विचार है-- 'मध्य-वर्ग सामंजस्यवादी व्यवस्था में नहीं पाया जाता था क्योंकि उस समय जमींदार तथा किसान का सीधा संबंध था किन्तु पूंजीवादी व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल बना दिया है कि एक मध्य वर्ग की भी आवश्यकता हुई जो इस जटिल व्यवस्था के संघटन सूत्र को संभाल सके। इस वर्ग में- नौकरी-पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतः बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रान्ति के प्रायः समस्त विचारों का सूत्रन मध्यवर्ग में होता है।¹ इस प्रकार मध्यवर्ग पूंजीवादी वर्णव्यवस्था की देन है। समाजवादी व्यवस्था में ऐसा कोई वर्ग दिखायी नहीं देता। इस वर्ग समाज का निर्माण करने में बहुत बड़ा योगदान होता है क्योंकि सारे बुद्धिजीवी, डाक्टर, क्लर्क, इंजीनियर, शिक्षक, विद्यार्थी, पुलिस अधिकारी इत्यादि सभी इसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। इस वर्ग का भी यदि हम सूक्ष्म निरीक्षण करें तो निम्नलिखित स्तर दृष्टिगोचर होंगे:-----

(क) उच्च मध्यम वर्ग: इस वर्ग की आर्थिक स्थिति इतनी सुदृढ़ होती

1- संपादक डा० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमंछल लिमिटेड बनारस, प्रथम संस्करण, संवत्- 2015 ।

है कि यह अपने को उच्च वर्ग में या उसके बिल्कुल समीप समझता है किन्तु वस्तुतः यह प्रतिनिधित्व उच्चमध्यम वर्ग का ही करता है। यदि यह अपनी कोई फैक्ट्री या कारखाना खोलना चाहे तो नहीं खोल सकता क्योंकि इतनी बड़ी पूंजी इस वर्ग के पास नहीं होती। जैसे- अपनी कोठी, कार, तथा घर में फ्रिज, टी०वी० सेट, रिकार्ड फ्लेयर इत्यादि सारे ऐश्वर्य के साधन इस वर्ग के पास होते हैं। बड़े डाक्टर, अच्छे वकील, बड़े इंजीनियर बड़े अधिकारी, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रोफेसर इत्यादि व्यक्ति इसी वर्ग के अंतर्गत रखे जा सकते हैं। इस वर्ग को उच्च वर्ग में नहीं रखा जा सकता क्योंकि इस वर्ग की जीवन-निर्वाह के लिए अपनी कमाई पर निर्भर रहना पड़ता है।

(ख) मध्य मध्यम वर्ग:- उच्च मध्यम वर्ग से थोड़ी कम सुविधाओं में जीने वाले वर्ग को हम मध्य मध्यम वर्ग में रख सकते हैं। इस वर्ग के पास जीवन-यापन के समस्त साधन होते हैं। वस्तुतः यह समाज का सबसे अधिक बौद्धिक और सशक्त वर्ग है। कुछ लोग इस वर्ग को निम्न मध्यम वर्ग भी कहते हैं किन्तु स्पष्ट रूप से इसे मध्य-मध्यम वर्ग कहना ही श्रेयस्कर है। इस वर्ग में ही आज के सामाजिक जीवन की सारी समस्याएं पायी जाती हैं। इसका कारण यह है कि यह वर्ग अपने को उच्च वर्ग के समकक्ष पहुँचाना चाहता है, अपनी दैनिक आवश्यकताओं को बढ़ाता है तथा समस्त ऐश्वर्य साधनों को प्राप्त करना चाहता है किन्तु उसकी वार्षिक स्थिति उसे ऐसा करने की स्वीकृति नहीं देती। इस प्रकार यथार्थ और कृत्रिमता का अन्तर्विरोध इस वर्ग में दृष्टिगोचर होता है। ऐसी परिस्थिति में यह वर्ग आत्म कुण्ठा से ग्रसित हो जाता है। डा० रामगोपाल सिंह चौहान के शब्दों में---"शिक्षित होने के कारण उसमें ही आज जीवन के यथार्थ की सबसे अधिक और स्पष्ट प्रतिक्रिया घटित हो रही है जिससे यह वर्ग संस्कारों, विश्वासों, मर्यादाओं

वीर जीवन मूल्यों की एक मयंक संक्रान्ति से गुजर रहा हो।¹ इस सबके होते हुए भी यह वर्ग समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बिश्वविद्यालय के लैक्चरर, कौल, डाक्टर, पुलिस अधिकारी, डिग्री कौलज के शिक्षक, मध्य स्तर के सरकारी अधिकारी, हैड क्लर्क इत्यादि व्यक्ति इसी वर्ग के अन्तर्गत रहे जा सकते हैं।

(ग) निम्न मध्यम वर्ग:- उच्च मध्यम वर्ग और मध्य मध्यम वर्ग की अपेक्षा इस वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय है। कहीं-कहीं तो यह निम्न वर्ग ही प्रतीत होता है। इसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं होती, बस किसी तरह से गुजारा मर कर पाता है। हाई-स्कूल या इण्टर पास करके किसी सरकारी दफ्तर में बाबू बन जाता है किन्तु आजकल तो बैंक के चपरासी तक होने के लिए ग्रेजुएट होना आवश्यक हो गया है। ऐसी स्थिति में यह लगभग निम्न वर्ग की स्थिति में आ जाता है किन्तु फिर भी इस वर्ग के व्यक्ति को हर महीने में एक निश्चित बंधी तनखाह मिलती है और अपनी थोड़ी बुद्धि और योग्यता के बल पर यह मध्य वर्ग में ही बना रहता है। प्राइमरी स्कूल व माटेसरी स्कूल के शिक्षक, छोटे क्लर्क, छोटे इंस्पेक्टर, इत्यादि व्यक्तियों को हम निम्न मध्यम वर्ग में रख सकते हैं।

(घ) निम्न वर्ग:- उच्च वर्ग समाज में प्रतिष्ठा वर्जित करता है इसके विपरीत इस निम्न वर्ग के लिए समान तो दूर की वस्तु है अपितु दो वक्त का खाना भी मयस्सर होना मुश्किल होता है। वस्तुतः इस वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय है। इसके सामने केवल रोजी-रोटी की समस्या रहती है। शिक्षा का इस वर्ग के लिए कोई महत्व नहीं है क्योंकि इस वर्ग की आय केवल इसके शारीरिक त्रम पर आधारित है। अच्छे मकान और अच्छे वस्त्रों की बात इस वर्ग के लिए स्वप्न सदृश है। इस वर्ग में किसी प्रकार की महत्वाकांक्षा नहीं होती इसलिए यह वर्ग सारी कृत्रिमताओं, वीचनारिकाताओं

से अलग बिल्कुल सहज जीवन जीता है। यह कर्मी सबसे अधिक धन करता है और सबसे कम वेतन पाता है और उसी पर संतोष कर लेता है। दफ्तरों के चपरासी, दुकान स्कूल, कौलियों के नीकर गांव का सैतिहर मजदूर, मकान चिन्ने बाँले, लुहार, मोबी, घोबी, चौका बर्तन साफ करने वाली स्त्रियाँ, मंगी, भित्तारी इत्यादि इसी कर्म के वर्तनीत जाते हैं। यही कर्म समाज में क्रांति करने वाला सशक्त दस्ता है। इस कर्म की दशा वर्तमान शोचनीय है। इस कर्म की स्थिति स्वतंत्रता से पूर्व वर्तमान दयनीय थी किन्तु स्वतंत्रतापश्चात् परिवेश ने इस कर्म में एक नई वेतन पैदा की है। इसीलिए यह कर्म अपनी आवाज उठाने लगा है। इस कर्म की प्रगति के लिए सरकार द्वारा विभिन्न नीकरियों, शिक्षा संस्थाओं आदि में स्थान आरक्षित कर दिये हैं। इस कर्म के बहुत से परिवार आज भी प्रायः एक वक्त खाना साकर ही गुजर करते हैं क्योंकि यह कर्म रोज खाने और सोने वाला होता है यदि मजदूरी नहीं मिली तो घर में बूल्हा जलना भी मुश्किल होता है, किन्तु यही कर्म भारत की असली तस्वीर पेश करता है। विभिन्न कर्मों की दृष्टि से स्वतंत्रतापश्चात् हिन्दी कहानी में चित्रित परिवार का मूल्यार्कन जब हम करते हैं तो हम पाते हैं कि विवेच्य युगिन कहानीकारों ने परिवार के उच्च मध्यम कर्म, मध्य-मध्यम कर्म निम्न मध्यम कर्म के अतिरिक्त परिवार के निम्न कर्म को भी अपनी कहानी का केन्द्र बनाया है। सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक संदर्भों की संपूर्ण प्रवृत्तियों को स्वतंत्रतापश्चात् कहानी में चित्रित किया है। उच्च मध्यम कर्म की स्वच्छन्दता *कमजोर शास* *फ्रांक वाला घोड़ा और निकर वाला साईस*² *प्रदर्शनप्रियता*³ *फगंडहिया*³

-
- 1- कमजोर शास -- सुरेश सिन्हा-- विकल्प कथा ब्रिजार्क नवम्बर 1969-
संपादक- शैलेश मटियानी, विकल्प कार्यालय, मोतीलाल नेहरू नगर, इलाहाबाद-2
- 2- फ्रांकवाला घोड़ा निकर वाला साईस- गिरिराज किशोर-- पेपरबैट-
पृ०- 104 राजकमल प्रकाशन - नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली- प्र०सं०-1967 ।
- 3- फगंडहिया- गिरिराज किशोर- पेपरबैट- पृ०- शैल- उपर्युक्त विवरण ।

डेकौरेशन पीस¹ *पारिवारिक सभ्यता का अधानुकरण* एक शाम की
बात²* *ढोलक पर थाप³* में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है।

मध्य मध्यम वर्ग के पारिवारिक खोले संबंध--*एक और जिंदगी⁴
नारी जीवन की किंगतियां, *टूटना⁵* *मग्न प्राचीर⁶* नारी के नाना
रूप *मांस का दरिया⁷* *चांद चलता रहा⁸* बेरोजगारी की मयावहता-
मिस्टर भाटिया⁹ *कमर से ऊपर¹⁰* *राज की तरह¹¹* में देखी जा सकती है।

- 1- डेकौरेशन पीस-हृदयेश- छोटे शहर के लोग- पृ0-254 अक्षर प्रकाशन
2136 अंसारी रोड, दरियार्गज दिल्ली प्रथम संस्करण- 1972।
- 2- एक शाम की बात- देवेन्द्र इस्सर- काले गुलाब की सलीब- पृ0-29,
शारदा प्रकाशन, महरौली, नयी दिल्ली, पृ0 सं0-1975।
- 3- ढोलक पर थाप- विष्णु प्रभाकर- मेरी प्रिय कहानियां पृ0-82 राजपाल
रंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम सं0-1970।
- 4- एक और जिंदगी- मोहन राकेश - एक और जिंदगी पृ0-135, राजपाल
रंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वि0 सं0-1970।
- 5- टूटना-- राजेन्द्र यादव- टूटना और अन्य कहानियां, पृ0-136, अक्षर
प्रकाशन, दरियार्गज, अंसारी रोड, दिल्ली, पृ0 सं0-1966।
- 6- मग्न प्राचीर- शिव प्रसाद सिंह- कर्मनाशा की हार- पृ0-19, भारतीय
ज्ञानपीठ प्रकाशन, बाराणसी, प्रथम सं0-1958।
- 7- मांस का दरिया- कमलेश्वर- मेरी प्रिय कहानियां- पृ0-73, राजपाल
रंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वि0 सं0-1974।
- 8- चांद चलता रहा- उषा प्रियंवदा- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ0-94
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-तृ0 सं0-1971।
- 9- मिस्टर भाटिया- मोहन राकेश- बारिस पृ0-92, राजपाल रंड संस,
कश्मीरी गेट, द्वि0 सं0- 1974।
- 10- कमर से ऊपर- रमेश बक्षी- विकल्प कथा साहित्य विशेषार्क-नवंबर-1969
संपादक-शैलेश भट्टियानी, पृ0-486, विकल्प कार्यालय, मोतीलाल नेहरू नगर
इलाहाबाद-2।
- 11- राज की तरह- रमेश उपाध्याय- शेष इतिहास, पृ0-31, जार्ज बुक डिपो,
30-नाईबाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5।

इसी प्रकार निम्न मध्यम वर्गीय परिवार की कुण्ठा ¹ 'साया' • 'मूले हुए' ² •
जिजीविषा ³ 'दाय' • कहानियों में देसी जा सकती है। निम्न मध्यम वर्ग
निराशा और विवशता का भी चित्रण 'स्कीबासी' ⁴ • 'सास पाहुना' ⁵ •
आदि कहानियों में किया गया है। निम्न वर्ग की प्रवृत्तियों को जैसे
मिदगावृत्ति को 'जिंदगी और जॉक' ⁶ • 'संगीत बांसू और इन्सान' ⁷ •
में चित्रित किया गया है इसके अतिरिक्त निम्न वर्ग के अभाव ग्रस्त जीवन
का चित्रण 'अन्धकूप' ⁸ • कहानी में मिलता है तथा निम्न वर्ग के शोषण

- 1- साया- हृदयेश- छोटे शहर के लोग पृ०-65, अक्षर प्रकाशन, 2।36-
असारी रोड, दरियागंज, दिल्ली- पृ० सं०-1972 ।
- 2- मूले हुए- शानी- युद्ध-पृ०-55, विधा प्रकाशन मंदिर दरियागंज, दिल्ली-6 ।
- 3- दाय- मन्नु मंहारी- श्रेष्ठ कहानियाँ- पृ०-71, अक्षर प्रकाशन 2।36 -
असारी रोड, दरियागंज दिल्ली सं०-1975 ।
- 4- स्कीबासी- दुधनाथ सिंह- हिन्दी कहानी सातवाँ दशक- प्रह्लाद अग्रवाल
पृ०-86 मैकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड दिल्ली- द्वि० सं०-1977 ।
- 5- सास पाहुना- सुदर्शन चौपड़ा- सहक दुर्घटना पृ०-84, नीलाम प्रकाशन,
45-ए सुल्दाबाद, इलाहाबाद- पृ० सं०-1972 ।
- 6- जिंदगी और जॉक- अमरकान्त - मौत का नगर- पृ०-88, 45-ए,
सुल्दाबाद , इलाहाबाद, पृ० सं०-1973 ।
- 7- संगीत बांसू और इन्सान- मार्कंडेय- पानफूल- पृ०-101, नया साहित्य
प्रकाशन, 2-डी-मिन्टो रोड इलाहाबाद, तृ० सं०-1961 ।
- 8- अन्धकूप- शिव प्रसाद सिंह- इन्हें भी इंतजार है- पृ०-241, हिन्दी
प्रचारक- पुस्तकालय, वाराणसी, पृ०सं०-1961 ।

और मजबूरी को 'मैं हार गई'¹ 'सात बच्चों की माँ'² तथा निम्न वर्ग की विवशता का चित्रण 'अपने-अपने बच्चे'³ आदि कहानियों में दिखायी देता है ।

यह बात उल्लेखनीय है कि विवेच्य युगिन कहानीकारों ने उच्च वर्गीय परिवार को केन्द्र बना कर कहानियाँ नहीं लिखीं हैं । इसका मूल कारण हमारे विचार से यह है कि विवेच्य- युग के कहानीकार मध्यम वर्ग में जन्मे और पले हैं, इसी वर्ग की संपूर्ण परिस्थितियों, परिकेस को फेले हुए उन्होंने अपनी कहानियाँ लिखी हैं । आज की स्वार्तंत्र्योत्तर कहानी तथा कथित प्राचीन आदलों में, रुढ़ियों में जकड़ी हुई कहानी नहीं है अपितु यथार्थ के धरातल पर सही कहानी है फले ही यह कंकरीला पथरीला है । इसीलिये यह कहानी मूलतः मध्यमवर्गीय और निम्नवर्गीय परिवार की कहानी है । कभी-कभी स्वार्तंत्र्योत्तर कहानी से संबंधित आलोच्य पुस्तकों में, उच्च मध्यम वर्ग के क्लिष्ट जीवन, उसकी भौतिक संपन्नता, ऐश्वर्य और उसकी महत्वाकांक्षाओं को देख कर भ्रम बस उसे उच्च वर्ग के रूप में चित्रित किया गया है जबकि सामाजिक स्तरीय दृष्टि से वास्तुतः वह उच्च मध्यम वर्ग ही है ।

- 1- मैं हार गई- मन्नु मंडारी- मैं हार गई- पृ०-145, अक्षर प्रकाशन 2।36 बंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6, दि० सं०-1973 ।
- 2- सात बच्चों की माँ- मार्कण्डेय- पानफूल, पृ०-121 नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी- मिन्टो रोड, इलाहाबाद, तृ० सं०- 1961 ।
- 3- अपने-अपने बच्चे- भीष्मसाहनी- मटकती रास- पृ०-194, राजकमल प्रकाशन-8-नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-पृ० सं०-1966 ।

स्वातंत्र्यपूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप

(क) * प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी में परिवार का स्वरूप *

प्रेमचन्द से पूर्व की हिन्दी कहानी अपनी शैशव अवस्था से गुजर रही थी इसलिए युगिन समस्याओं और सामाजिक अन्तर्दृष्टियों का सुनिश्चित परिचय उनमें नहीं मिलता। उस समय के कहानीकारों के समक्ष कोई परम्परागत, क्रमबद्ध कथ्य-परम्परा नहीं थी। कहानी के नाम पर कथात्मक निबन्ध और स्वप्न कथाओं की रचना की जा रही थी। मारतेन्दु युग में और सरस्वती के प्रकाशन से पूर्व (सन् 1903) हिन्दी कहानी की अनुप्राप्ति और अभिव्यक्ति दोनों ही अस्थिर और अपरिपक्व दशा में थी। जीवन सत्य का उद्घाटन उन कहानियों में वार्षिक और एक देशीय रूप में मिलता है क्योंकि जीवन की गति मन्द थी और प्रेरणा स्रोत सीमित थे।

विवेच्ययुगिन कहानीकारों के सम्मुख कहानियों के हेतु वातावरण और पाठक की तैयारी करने की समस्या मुख्य थी। यही कारण है कि तत्कालीन कथाकारों ने कहानी साहित्य के प्रति जीत्सुक्य और आकर्षण पैदा करने के लिए रोमांचकारी, कौतुहलजनक और विस्मयबोधक घटनाओं और प्रसंगों को अपनी कहानी का विषय बनाया।

पारिवारिक जीवन की समस्याओं का प्रस्तुतीकरण और समाधान जैसी प्रवृत्तियाँ आज़कल की कहानियों के समान तत्कालीन कहानियों में सौजना अनुचित होगा। उस समय का परिवार एक पुराने और रुढ़िबद्ध ढाँचे पर चलने वाली संस्था मात्र थी। संयुक्त कुटुम्ब के वर्तमान पत्नी पुरुष की दासी तथा मौग्या मात्र थी। परिवार का सबसे बड़ा पुरुष घर का स्वामी और शासक होता था और उस शासक पुरुष की पत्नी की इच्छानुसार परिवार की अन्य स्त्रियों को व्यवहार करना पड़ता था। आलोच्ययुगिन

जो पारिवारिक कहानियाँ अल्पमात्रा में पाई जाती हैं वे हिन्दू गृहस्थ और संयुक्त कुटुम्ब के सीमित दायरे तक ही केन्द्रित दिखायी देती हैं। सामाजिक और साहित्यिक दोनों ही दृष्टियों से वह सुधारवादी युग था इसलिए तथा-कथित परिवार संबंधी कहानियों में जादूशूबादित, नैतिकता, और उपदेशात्मकता के उद्देश्य को प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

19 वीं शती के अंतिम चरण में पण्डित गौरीदत्त शर्मा ने 'देवरानी जिठानी की कहानी'¹ में जादूशी पति सेवा, सन्तान-पालन वादि की नैतिक शिक्षा देने का प्रयत्न किया गया है। श्री गोपाल राम गहमरी की कहानी 'ननद मौजाई'² में परिवार में होने वाले जायदाद संबंधी झगड़े का भण्डाफोड़ करती है संपत्ति और जायदाद के लिए वर्तमान समय में जैसी कलह और द्वेष की मनोवृत्ति मिलती है ठीक वैसी ही मनोवृत्ति इस कहानी में दिखाई देती है। अन्तर केवल इतना है कि इस कहानी में माँ की जादूशी रूप में प्रस्तुत किया गया है। माँ की बहन के प्रति उत्पन्न दुर्भावना को समाप्त करने वाली माँ अपने भाँजे के नाम जायदाद करवा देती है। इसी प्रकार 'संकट में शिक्षा'³ कहानी में सौतेली माँ के चरित्र का चित्रण है। सौतेली माँ का नाम सबूत बदनाम है किन्तु इस कहानी में सौतेली माँ का व्यवहार अपनी सौत की सन्तान के प्रति वात्सल्यपूर्ण और ममत्वपूर्ण रहा है। कहानीकार ने मातृत्व की महिमा को प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयत्न किया है। 'प्लेग की जुहूल'⁴ कहानी में अंधविश्वासी पति की मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है जिसमें पति अपनी रुग्ण पत्नी

1- देवरानी जिठानी की कहानी: गौरीदत्त शर्मा हरदेव सहाय, ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ, जून- सन् 1870।

2- ननद मौजाई- गोपाल राम गहमरी-- गल्पपंचक।

3- संकट में शिक्षा-- गोपाल राम गहमरी- गल्प पंचक।

4- प्लेग की जुहूल- मास्टर मगवानदास बी०ए० सरस्वती पत्रिका - सितम्बर सन् 1902 भाग-3, संख्या-9, पृ०-207।

को चुँड़ल समक कर तमच्चा मारता है । प्रयोग काल की यह कहानी हिन्दू परिवार के गार्हस्थ जीवन का उद्घाटन बहुत सुन्दर ढंग से करती है ।

पंडित और पंडितानी¹ पति-पत्नी के स्वभाव-विरोध के साथ ही दाम्पत्य आकर्षण का चित्रण करती है । *हृदय की कसक²* में नवयुवक नवयुवतियों के उच्छ्वसल प्रेम की अस्तित्व-मनोवृत्ति के स्थान पर सहज प्रेम की प्रतिष्ठा की गई है । इसी प्रकार *फलमला³* कहानी में पारिवारिक जीवन के विशिष्ट रूप का चित्रण किया गया है ।

निष्कर्ष रूप में प्रेमचन्द से पूर्वकालीन हिन्दी कहानी प्रयोगकाल से गुजर रही थी । हिन्दी कहानी के आविर्भाव काल में लेखक मनोरंजन तथा आदर्श की रक्षा में सचेष्ट थे । पारिवारिक जीवन की अभिव्यक्ति इस समय की कहानियों में सीमित रूप में हुई है । प्रयोगकालीन कहानीकारों ने पारिवारिक जीवन से संबंधित जो कहानियाँ लिखीं वे भावी कहानीकारों के लिए नई दिशा देने वाली सिद्ध हुई । कहानी के इस प्रारम्भिक सूत्रपात ने प्रेमचन्द युग के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया । कहानी का यह युग सन् 1910 में समाप्त हो जाता है ।

(स) प्रेमचन्द युगीन कहानी में परिवार का स्वरूप :-

प्रेमचन्द से पूर्व की कहानी में जो आदर्शवादी मान्यताएं और नैतिक शिक्षा देने की भावनाएं निहित थीं उसी का विकसित और व्यवस्थित रूप प्रेमचन्द युग में देखने को मिलता है । वस्तुतः यह कहानी साहित्य का

- 1- पंडित-पंडितानी - गिरिजादत्त बाजपेयी- सरस्वती- सितंबर- 1903
भाग-4, संख्या-3 ।
- 2- हृदय की कसक- विनोद शंकर व्यास- इन्दु- कला-8, किरण-3
- 3- फलमला- पदुमलाल पुन्नालाल बरूही- सरस्वती- भाग-17, संख्या-5
सन् 1916 पृ०-289 ।

विकास काल था। सन् 1911 से लेकर सन् 1980 (स्वातंत्र्य संग्राम तक) के हिन्दी कहानी साहित्य में मानव चरित्र की भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियाँ, समाज की व्यापक परिस्थितियाँ तथा परिवार के विविध प्रसंगों का यथेष्ट विश्लेषण हुआ है। जीवन और मानव समाज के विभिन्न पक्षों की व्याख्या करने का इन कहानियों में ठोस प्रयत्न किया गया है। जैसा कि इस युग के नामकरण (प्रेमचन्द युग) से ही विदित है। प्रेमचन्द इस युग के प्रबर्तक और प्रथम उन्नायक थे। वे प्रथम कहानीकार थे जिन्होंने कहानी के माध्यम से वैयक्तिकता के स्थान पर सामाजिकता की प्रवृत्ति को स्थापित किया। उन्होंने कहानी में जन समस्याओं, जन समान्य की भावनाओं को, उलझनों का विशिष्ट अनुशीलन प्रस्तुत करने की पल्ल की। प्रेमचन्द विवाह संस्था, नारी मनोविज्ञान और पारिवारिक जीवन के मूल्य और महत्व को अच्छी तरह समझते थे। उनकी कहानियों में परिवार के विभिन्न पक्षों की चित्रण हुआ है। यथार्थ के घातल पर उन्होंने जीवन की कटु वास्तविकता को स्वीकार करते हुए उसे मधुर और रसमय बनाने की कामना से उसे उच्चावशों की ओर उन्मुख किया।

प्रेमचन्द की कहानियों का परिवार संयुक्त परिवार है। संयुक्त कुटुम्ब के माध्यम से उन्होंने समकालीन, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया है। संयुक्त परिवार की सबसे बड़ी शक्ति पारस्परिक संगठन, अनुशासन और सामूहिक जीवन की भावना है। 'बड़े घर की बेटा' में प्रेमचन्द ने सिद्ध किया है कि जब परिवार में पाँच-सात सदस्य होते हैं तो कहासुनी हो ही जाती है। इस कहानी में भी संयुक्त परिवार की कलह का कारण मतविभिन्नता है किन्तु आनन्दी की समझदारी परिवार का विघटन होते-होते रूक जाता है। यहाँ कहानीकार ने संयुक्त

1- बड़े घर की बेटा- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-7 पृ०-142, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद- नवीन संस्करण- 1971।

परिवार प्रथा का समर्थन किया है। दूसरी तरफ ¹ *अलग्योहना* कहानी में संयुक्त परिवार के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। इस कहानी की नायिका मुलिया के हठ के कारण रघू का संयुक्त परिवार टूट जाता है। पिता की मृत्यु के बाद रघू ने अपने सौतेले भाइयों को पुत्रवत् पाला। उसकी इस सज्जनता से बिमाता पन्ना भी प्रभावित होती है किन्तु रघू की पत्नी मुलिया के जाते ही शान्ति मग्न हो जाती है। वह हठ करके पति के साथ परिवार से अलग रहने लगती है इसी दुःख से रघू प्राण त्याग देता है। निराश्रित मुलिया को फिर पन्ना ही वागृहक धर भुला लेती है और वह फिर सास, देवरों के साथ रहने लगती है इस प्रकार संयुक्त परिवार टूटने से बच जाता है।

प्रेमचन्द ने संयुक्त परिवार के विघटन का चित्रण करते हुए स्पष्ट किया है कि उच्च मध्य एवं निम्न सभी वर्गों में संयुक्त परिवार टूट रहा है इसका प्रमुख कारण है व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना। मध्यवर्ग का संयुक्त कुटुम्ब आर्थिक-परिस्थितियों के कारण विभ्रंश हो रहा है। गर्ब में पारस्परिक फूट, संकीर्णता, स्त्री-कलह के कारण कृष्णक परिवारों में टूटन बढ़ती जा रही है। प्रेमचन्द परिवार के विभिन्न पक्षों पर दृष्टि डाली है जैसे - दाम्पत्य संबंध, पुरुष की क्लेशिता, सपत्नी-कलह, ससुराल में जामाता की स्थिति, भाई-भाई में ईर्ष्या-द्वेष, सास-बहू के संबंध इत्यादि का चित्रण भी अपनी कहानियों में किया है। ² *जीवन का शाप* में दो दम्पतियों का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि

- 1- अलग्योहना- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-1, रूस प्रकाशन-इलाहाबाद- 11 वां संस्करण- जुलाई- 1970, पृ०-18।
- 2- जीवन का शाप- प्रेमचन्द - मानसरोवर भाग-2, पृ०-220, रूस- प्रकाशन - इलाहाबाद- नवीन संस्करण- 1972।

वर्तिलय सम्पदा और वर्तिलय दरिद्रता दोनों ही जीवन के लिए शाय है ।
 उन्माद¹ कहानी में एक भारतीय पत्नी के त्याग और सेवाभाव की तुलना
 में एक पाश्चात्य पत्नी की स्वाधीनता उभर कर सामने आती है । *सीत²*
 और *अग्नि समाधि³* कहानियों में लेखक ने स्पष्ट किया है कि सपत्नियों
 की पारस्परिक ईर्ष्या के कारण पारिवारिक जीवन नष्ट हो जाता है ।
 इन कहानियों में बहु विवाह प्रथा के प्रति आक्रोश और निन्दा का भाव
 विद्यमान है । ससुराल में रहने वाले जामाता का सम्मान शनैः शनैः कम हो
 जाता है और पूरा परिवार उसे हीन दृष्टि से देखने लगता है । *घर-
 जमाई⁴* में हरिधन विमाता के व्यवहार से दुखी होकर ससुराल में जाकर
 रहने लगता है --किन्तु कुछ ही दिनों में वह अनुभव करने लगता है--* पहले
 वह देवता था, फिर घर का बादमी और अन्त में घर का दास हो गया *
 बड़े माई साहब⁶ और *ईदगाह⁷* कहानियों में बाल-व्यक्तित्व के निर्माण
 की समस्या उठाई गई है तो *गृहनीति⁸* में सास-बहू के संबंधों पर प्रकाश

- 1- उन्माद- प्रेमचन्द- मानसरोवर- भाग-7, पृ0-80, ईस प्रकाशन-
 इलाहाबाद- संस्करण-1971 ।
- 2- सीत- प्रेमचन्द- मानसरोवर- भाग-8, पृ0-258, ईस प्रकाशन-इलाहाबाद,
 संस्करण- 1978 ।
- 3- अग्नि समाधि- प्रेमचन्द- मानसरोवर-भाग-5, पृ0-171- ईस प्रकाशन-
 इलाहाबाद- ।
- 4- घर-जमाई- प्रेमचन्द- मानसरोवर-भाग-1, पृ0-148, ईस प्रकाशन-
 इलाहाबाद- 11 वां संस्करण-1970 ।
- 5- --- वही---- ,, ,, पृ0-150- ,, ।
- 6- बड़े माई साहब- प्रेमचन्द- मानसरोवर-भाग-1, पृष्ठ-90, ईस-
 प्रकाशन- इलाहाबाद- 11 वां संस्करण- 1970 ।
- 7- ईदगाह- प्रेमचन्द- मानसरोवर- भाग-1, पृ0-85, ,, ,, ।
- 8- गृहनीति- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-4, पृ0-5, ईस प्रकाशन-
 इलाहाबाद- 10 वां संस्करण- 1965 ।

हालते हुए स्पष्ट किया गया कि यदि सास अपनी बहू को अपनी लड़की के ही समान स्नेह दे और बहू भी सास को अपनी माँ के समान सम्मान दे तो परिवार की शान्ति सुरक्षित रह सकती है। *दो माई¹* में दो माहर्यों के वापसी द्वेष का जीवन्त चित्रण किया गया है।

कलह और अलगाव की समस्या कुटुम्ब विच्छेद से भी सुलभ सकती है पर यह प्रेमचन्द को स्वीकार नहीं है। उनके द्वारा चित्रित परिवार अलग होते हैं, कहीं नैतिक आधार पर तो कहीं संपत्ति के आधार पर किन्तु प्रेमचन्द ने सर्वत्र, अलगाव और विच्छेद की इस प्रवृत्ति को पलायन-वादी मार्ग बताया है। वस्तुतः प्रेमचन्द ने व्यक्ति को सामाजिक संबंधों के बीच स्थापित किया है।

प्रेमचन्द के सम्प्रामाणिक कहानीकारों में श्री विश्वम्भरनाथ शर्मा *कौशिक* का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने अत्यंत सूक्ष्मता से अपनी कहानियों में हिन्दू गृहस्थ का अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनकी बहुचर्चित कहानी *ताई²* हिन्दू परिवार के घरेलू बातावरण और निस्सन्तान मातृत्व के हृदय के अन्तर्द्वन्द्व को सूक्ष्म रूप से उद्घाटित करती है। पति-पत्नी के कलह का एक कारण संतान का अभाव भी होता है। इस तथ्य को कौशिक जी ने सशक्त रूप से उभारा है। निस्सन्तान रामेश्वरी देबरानी के बच्चों से द्वेष और घृणा करती है पर अन्त में बच्चे के हत से गिरने पर ऐसी स्थिति आती है कि उसका वात्सल्य भाव उमड़ पड़ता है और उसे पश्चात्ताप तथा अनुपात होता है कि उसने अपने देसते और जानते हुए भी मनोहर को गिरने से क्यों नहीं रौका। वह बच्चे को प्यार करने लगती है। यहाँ हिन्दू परिवार की रुढ़िग्रस्त अशिष्टाचार नारी का प्रतिनिधित्व रामेश्वरी करती है। इसके पति

1- दो माई- प्रेमचन्द- मानसरोवर- भाग-7, पृ०-215, ईस प्रकाशन- इलाहाबाद, नवीन संस्करण-1971।

2- सुमित्रा शर्मा- कौशिक जी का कथा साहित्य, पृ०-41, साहित्य प्रकाशन मोतीबाड़ा, दिल्ली-6, संवत् - 2024।

रामजीदास आधुनिक तथा शिद्दात हैं पर प्रातृत्व का माब उनमें पुरानी पीढ़ी के माइयों जैसा सहज और सुदृढ़ है । *माता का हृदय¹ * तथा *सोटा बेटा² * में माता-पुत्र तथा पिता-पुत्र के व्यावहारिक प्रेम संबंधों पर दृष्टिपात किया गया है । *मातृ-मक्ति³ * में कौशिक जी ने सास-बहू के वैमन्य की दशा को निरूपित किया है जिसके अन्तर्गत मातृमक्त बेटा शिव-नारायण बिना सोचे समझे माता का पदा लेकर मातृमक्ति का आदर्श प्रस्तुत करता है । इसी प्रकार का आदर्शवादी दृष्टिकोण *माई⁴ * कहानी में देखने को मिलता है । मातृप्रेम की नैतिकता दिखलाते हुए कौशिक जी सक्थी प्रेमचन्द के अनुरूप ही आदर्शोन्मुख हो गए हैं ।

समाज और परिवार को प्रखर दृष्टि से देखने वाले पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने अनेक पारिवारिक समस्याओं को अपनी कहानियों में चित्रित किया है । उग्र जी का नारी समाज वैवाहिक रुढ़ियों का शिकार है । अनमेल विवाह, बाल-विवाह, वैधव्य और पुरुष के शोषण से पीड़ित नारियाँ उनकी कहानियों का मुख्य विषय हैं । यद्यपि ये समस्याएँ सामाजिक कुरीतियों पर आधारित हैं परन्तु इनके द्वारा परिवार का वह यथार्थ स्वरूप सामने आ जाता है जिसमें पुरुष का एकाधिकार और स्वायत्तता का बोलबाला है । *वाँसों में वाँसू⁵ * की लक्ष्मी बिना सोचे समझे स्कॉ पाने की अमिलाणा में अपने को नरक में धकेल देती है । *काने का ब्याह⁶ * और *हत्थारा⁷ * समाज में अनमेल विवाह के दुष्परिणाम पर अग्र्य करने वाली कहानियाँ हैं । *मो को चुनरी की साथ⁸ * बाल-विवाह और विधवा-विवाह की किडम्बना पर लिखी हुई एक बहुचर्चित कहानी है । बीसवीं शती के तृतीय दशक में जैसी कहानियाँ लिखी जा रही थीं उनका यह एक सुन्दर

1-2-3-4- सुबन्नित्रा शर्मा- कौशिक जी का कथा साहित्य, पृ०-३३, साहित्य-प्रकाशन- मोतीबाड़ा, दिल्ली-६, संवत्-२०२४ ।

5-6-7-8- डा० सुरेश सिन्हा- हिन्दी कहानी उद्भव और विकास- पृ०-३८५, अशोक प्रकाशन, नयी दिल्ली- पृ० सं०-१९६७ ।

उदाहरण है। इस कहानी में एक और बाल-विवाह पर व्यंग्य है तो दूसरी ओर वैधव्य जीवन के प्रति विद्रोह। तुलसा का बार-बार 'मो को झूनी की साथ' कहना जहाँ विधवा विवाह का आग्रह करता है वहाँ हाहाकार करती हुई माता का कथन वैधव्य रूढ़ि का विरोध करता है। उग्र जी द्वारा लिखित- 'करुण¹ कहानी' एक शोणित नारी के चरित्र को उजागर करती है। सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विरोध- प्रदर्शन के लिए उन्होंने 'उसकी माँ और मेरी माँ' कहानियाँ लिखीं जिनमें शीघ्र और साहसपूर्ण मातृत्व की प्रतिष्ठा की गई है।

इसी धारा में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का नाम भी उल्लेखनीय है। उनकी 'ज्योतिर्मय'² कहानी में विधवा-विवाह और दहेज प्रथा की समस्या को उभारा गया है तो 'पद्मा और लिली'⁴ में अन्तर्जातीय समस्या को उठाया गया है। 'श्रीमती गजानन्द शास्त्रिणी'⁵ में उपेक्षित प्रेम की हुंकार गूँजती है।

मावती प्रसाद बाजपेयी ने पारिवारिक विस्तृलता पर अनेक कहानियाँ लिखीं हैं। 'उद्धार'⁶ और 'सूखी लकड़ी'⁷ कहानियों में उन्होंने वैधव्य जीवन पर आँसू बहाये हैं। नारी के दर्द, शोषण, प्रेम और निराश्रय की संवेदनाओं को अपनी कहानी का कथ्य बनाया है। अनपेक्षित विवाह को लेकर 'दुग्धपान'⁸ 'शैतान'⁹ 'जहाँ सभ्यता साँस लेती है'¹⁰ 'एक प्रतीक्षा'¹¹ आदि कहानियाँ लिखी गई हैं। शोषण को आधार बनाकर 'सत्य की कहानी'¹²

1- 2- डा० सुरेश सिन्हा- हिन्दी कहानी-उद्भव और विकास पृ०-385,
अशोक प्रकाशन- नयी दिल्ली- पृ० सं०-1967।

3-4-5- डा० रघुवर दयाल बाष्पाय : हिन्दी कहानी- बदलते- प्रतिमान-
पृ०-64-65, पाण्डुलिपि प्रकाशन-ई-11/5, कृष्ण नगर, दिल्ली-
110051, पृ० सं०-1975।

6-7-8-9-10-11-12- -- वही---- ,, ,, पृष्ठ- 66-67।

*संबंध¹ * *रेशम के फन्दे² * *आत्म-घात³ * *जब सत्य ने काट साया⁴ *
 *वैवाह्य⁵ * आदि कहानियाँ लिखी हैं। बिखरते हुए परिवार रुढ़िवाद
 विवाह-पद्धति आदि सभी ने नारी जीवन को तौड़ कर रख दिया है।
 बाल-विवाह के कारण वह किशोरी बनने से पूर्व नारीत्व जोड़ने के लिए
 विवश है और जब तक उमंग का साक्षात्कार उसे हो तब तक वह पति गृह
 की कूटनीति और उत्पीड़न का शिकार हो जाती है। विधवा होने पर
 उसका रहा सहा सम्बल भी जाता रहता है।

सुमद्रा कुमारी चौहान ने नारी जाति की विभिन्न समस्याओं
 को अंकित करने वाली पारिवारिक कहानियाँ लिखी हैं। *किस्मत⁶ * *नारी
 हृदय⁷ * *एकादशी⁸ * *असमंजस⁹ * और *कल्याणी¹⁰ * में विधवा स्त्रियों की
 करुण गाथा है। *अमराई¹¹ * *गुलाबसिंह¹² * *दृष्टिकोण¹³ * *महुर की
 बेंटी¹⁴ * में माई-बहन के पारस्परिक प्रेम की पावनता है। *विआहा¹⁵ *
 में भारतीय नारी के निश्कल विश्वास का चित्रण किया गया है।

कमला देवी चौधरी ने गृहस्थ जीवन का वैविध्य दाम्पत्य-प्रेम
 अमावस्य परिवारों का संघर्ष पूर्ण दयनीय जीवन विधवा जीवन, देवर-
 माफी, संबंधों पर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। इनकी *प्रम¹⁶ * *प्रियमणि की
 धिटिया¹⁷ * *मेरी रानी¹⁸ * *कक्करी¹⁹ * *त्याग²⁰ * *कैलाश दीदी²¹ * *वरमाला²² *
 *त्याज्या²³ * *रूपा²⁴ * *मातृहीना²⁵ * *रौना²⁶ * *करुणा²⁷ * आदि
 कहानियों में समाज के और परिवार के विभिन्न संबंधों और समस्याओं पर

1 से 15 : डा० रघुवर दयाल बाष्पाय- हिन्दी कहानी - बदलते प्रतिमान-
 पृष्ठ-66-67-68, पाण्डुलिपि प्रकाशन- ई-11।5- कृष्ण नगर,
 दिल्ली-, 90 सं०-1975।

16 से 27 : ----- वहीं----- ,, ,, ,, पृ०-70।

प्रकाश डाला गया है। इनकी विधवाएं जहां मर्यादित और पुनीता हैं वहां वे पतिता और चरित्रहीन भी हैं। ये पतितारं या तो विद्विष्ट हो जाती हैं या आत्म हत्या कर लेती हैं। उन्होंने ऐसी नारियाँ को अपनी कहानियों में सम्मानपूर्ण स्थान दिया है जो निर्धन होकर भी अपने स्त्रीत्व की रक्षा करती हैं।

होमवती देवी ने विधवा का पीड़ित जीवन विधवा और विधुर के पुनर्विवाह, अभावपूर्ण परिवार की निराशा भारतीय पत्नी की सहिष्णुता, आदि विषयों पर कहानियाँ लिखीं--¹*स्मृति बिह्न*²*कान का बुन्दा*³*नारीत्व*⁴*सलून का त्यौहार*⁵*पीतल की बूढ़ियाँ*⁶*मन की साध* आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं जिनमें परिवार की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया गया है।

प्रेमचन्द कालीन लेखकों में श्री उपेन्द्र नाथ अशक ने भी परिवार और नारी जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर लिए हैं।⁷*पिंजरा* नामक कहानी में स्त्री के सीमित क्षेत्र, वर्ग, भावना, बहुत समस्या एवं धनी-निर्धन आदि विभिन्न जीवन की समस्याएँ उमरी हैं।⁸*सिलाने* नामक कहानी में चार माहियों के पारिवारिक विच्छेदन का स्वरूप सशक्त पृष्ठभूमि के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में बूढ़ा बाप चारों माहियों की फौजदारी में मौत का शिकार हो जाता है।⁹*गोसू* कहानी में दहेज प्रथा की समस्या को उठाया गया है। दहेज कम लाने के कारण इस कहानी की नायिका मनसा को तड़पा-तड़पा कर मार दिया जाता है।¹⁰*पत्नीव्रत*

1-से 5 : डा० रघुवर दयाल बाण्यौय- हिन्दी कहानी- बदलते प्रतिमान- पृष्ठ-70।

6 से 10 : डा० रघुवर दयाल बाण्यौय - हिन्दी कहानी- बदलते प्रतिमान- पृष्ठ-99।

कहानी में नारी की पत्नीव्रत धर्म की परबलता को स्पष्ट किया गया है ।

(ग) *प्रेमचन्दोत्तर कहानी में नारी और पुरुष के नये संबंध -

सूत्रों का उद्घाटन :--

प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को सामाजिक यथार्थ की दिशा प्रदान की थी । भारतीय साहित्य में एक नये युग का जो सूत्रपात प्रेमचन्द युग में लक्षित होने लगा था, वही प्रेमचन्दोत्तर काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया जिसे हम भारतीय पुनरुत्थान काल के नाम से अभिहित करते हैं । प्रेमचन्द ने व्यक्ति को सामाजिक इकाई के रूप में निरूपित किया परन्तु उनके समसामयिक और परवर्ती कहानीकारों ने व्यक्तिवादी दृष्टिकोण, पलायनवादी मनोवृत्ति, मनोविश्लेषणवाद तथा अन्तर्चेतनावाद के सूक्ष्म अध्ययन के साथ मानव की समस्याओं का मूल्यांकन किया । प्रेमचन्द व विश्वम्भरनाथ 'कौशिक' आदि के समय भौतिकवादी दृष्टिकोण की वास्तविकता इतनी तीव्रता से नहीं आँकी जा रही थी जितनी कि प्रेमचन्दोत्तर काल में । ऐसे जीवन के सामाजिक पक्ष तथा युगबोध की भावना का विकास जिस रूप में इस समय हुआ वह प्रेमचन्दयुगीन सामाजिकता का विकसित और व्यापक रूप ही है ।

विवेच्य युग में पारिवारिक जीवन पर अज्ञेय ने *ग्रीन¹* और *रोज²* जैसी कहानियाँ लिखीं । *ग्रीन* कहानी में अज्ञेय ने सर्वप्रथम परिवार के अन्दर उत्पन्न कुण्ठा, विरक्ति, जड़ता और नीरसता का अध्ययन प्रस्तुत किया है । एकाकी परिवार के सीमित दायरे में मालती अनुभूतिहीनता की अभ्यस्त हो गई है । जीवन के यौवन में ही उस पर मथानक छाया मँडरा

1- ग्रीन- अज्ञेय- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ- 88, राजपाल रंढ सम्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975 ।

2- रोज- वीम प्रभाकर- अज्ञेय का कथा साहित्य- पृष्ठ-111 ।

रही है। दैनिक जीवन में देर से भोजन करना, बच्चे का गिरना, पति का देर-देर तक हिस्सेसारी में रहना आदि को मालती सहजता से स्वीकार कर चुकी है। विवाहोपरान्त वह अपने विवाह पूर्व के माई यामिज से मिलने पर किसी प्रकार की उत्सुकता या उमंग का भाव प्रदर्शित नहीं करती मानी वह रोज की अनियमित स्थिर और रुकी हुई जिन्दगी से तादात्म्य कर चुकी है। लेखक ने एक ऐसी नारी के चरित्र का विश्लेषण इस कहानी में किया है जो जीवन के परिवर्तित रूप को पंगु और निष्क्रिय होते हुए भी अनिवार्य मान लेती है। सामान्य मध्यमवर्गी की एकाकी परिवार में रहने वाली अनेक नारियाँ मालती की ही तरह परिवार की नीरस और उदासी भरी स्थिति से समझौता कर लेती हैं। वे इस वास्तविकता को मूल जाती हैं कि उनके चारों ओर पास पड़ोस के समाज में भी कुछ है। मानसिक कुण्ठा की पृष्ठभूमि में बदलते हुए परिवार के जीवन का प्रस्तुतीकरण 'रोज' कहानी में बड़ी सतर्कता से किया गया है। अज्ञेय की कहानी 'हन्दु की बेटी' में भी पति-पत्नी के नये पुराने संबंधों पर भी दृष्टिपात किया है। शादी के दो वर्ष बाद ही रामलाल और हन्दु के संबंधों का नयापन पुरानेपन में बदल जाता है। शिद्धिपति पति रामलाल को अशिद्धिपति पत्नी हन्दु की बोलचाल, स्वभाव और चेष्टाएं सभी अक्षरती हैं परन्तु हन्दु के मरणोपरान्त वह एक परित्यक्ता अवैध बच्ची को पुत्रीवत् पालता है और हन्दु की निशानी मानता है। इस कहानी में अज्ञेय जी ने सन्तान कामना और दाम्पत्य संबंधों के घात प्रतिघातों के माध्यम से भारतीय गृहस्थी की सामयिक और युगनिर्दिष्ट दशा का चित्रण किया है।

प्रेमचन्द युगिन सामाजिक समस्याओं में जो परिवर्तन आया उसे यशपाल की कहानियों में सर्वत्र देखा जा सकता है। यशपाल ने नारी जीवन, सेक्स, संबंध, पारिवारिक रीति-रिवाज आदि पुराने मानमूल्यों से हटा कर

नूतन मूल्य प्रदान किये हैं। प्रगतिशील और मार्क्सवादी लेखक होने के कारण उन्होंने नैतिकता और पुरातनता के प्रति तीव्र विरोध किया है। यही विद्रोह उनकी पारिवारिक कहानियों में प्रतिबिम्बित है।

बिरकाल से उच्चर्ण और मध्यमर्ण के साधन रूप वेश्यारूप का उल्लेख करके उन्होंने स्त्री-पुरुष के नये संबंध की व्याख्या की है। *दुसी-¹ दुसी * *हलाल का टुकड़ा*² *बावरु*³ *गंहेरी*⁴ *बादमी या पैसा*⁵ *बादि कहानियों में मध्यमर्ण की नारी-समस्या चित्रित की गई है। जो कहने को तो गृहस्वामिनी है पर बन्धनों में जकड़ी हुई रुढ़िगस्त, बच्चा पैदा करने की मशीन मात्र है। *ज्ञानदान*⁶ *कुछ समझ न सकी*⁷ *अमिश्रित*⁸ *हलिया नारी*⁹ * *रिजक*¹⁰ *बादि में ऐसी नारियों का चित्रण है जो अपने बच्चों को प्यार नहीं कर पातीं क्योंकि उन्हें वे मजबूरी में पैदा करती हैं।

यशपाल शिद्घात स्त्रियों को भी अपनी कहानी का विषय बनाया है। वे जीवन में पुरुषों के समकक्ष हैं पर उनकी अलग समस्याएं भी हैं। वे आशातीत आदर और संवेदना की आशा में घुल रही हैं। *पिंजरे की उड़ान*¹¹ * ऐसी ही कहानी है। *चित्र का शीर्षक*¹² * *तुमने क्यों कहा था कि मैं सुन्दर हूँ*¹³ * कहानियों में नारी की संवेदनाओं को चित्रित किया गया है।

स्तरमेद से निम्नर्ण और मध्यमर्ण की अनेक समस्याओं को यशपाल ने यथार्थ रूप में व्यक्त किया है। निम्नर्ण तो आर्थिक परेशानी का शिकार है ही पर मध्यमर्ण भी कम संकट में नहीं है। इस संकट को *कर्मफल*¹⁴ *

1 से 20 : सुरेशचन्द्र तिवारी- यशपाल और हिन्दी कथा-साहित्य- पृ०-145, सरस्वती प्रेस, बनारस, सन् 1969।

11-12-13-14 : डा० सन्तबल्ल सिंह सिंह- हिन्दी कहानी- कथा और शिल्प पृ०-13, अमिनब भारती प्रकाशन, 42-सम्प्लेन मार्ग, इलाहाबाद, पृ० सं०-1973।

बादमी या पैसा¹ आदि कहानियों में उजागर किया गया है ।

आलोच्ययुगीन कहानीकार इलाचन्द्र जोशी ने मनोविश्लेषणात्मक और स्वप्न प्रणाली के आधार पर कई परिवार संबंधी कहानियों की रचना की है । मध्यम-वर्गीय परिवार के हासोन्मुख जीवन को स्पष्ट करने वाली कहानियों जैसे-²*चरणों की दासी*³*होली*⁴*परित्यक्ता*⁵*पतिव्रता या पिशाची* में पुरुष का प्रबल अहम् और नारी की पीड़ा को मुखरित किया गया है । पुरुष की बौद्धिकता ज्यों-ज्यों विकसित और तीव्रतर होती जा रही है वैसे-वैसे उसकी अहम्पन्यता भी प्रबल से प्रबलतर रूप धारण करती जा रही है । फलतः पुरुष की बाँखलाहट और अशान्ति बहुत बढ़ती जा रही है । जोशी जी ने व्यक्तिवादी जीवन दर्शन से पुरुष को जितना प्रभावित दिखाया है उतना स्त्री को नहीं दिखाया । वे नारी का पक्ष लेकर अपने आदर्शवादी दृष्टिकोण का परिचय देते हैं । उनकी कहानियाँ यही संदेश देती हैं कि भावी नारी, पुरुष के अहम् का शिकार नहीं बनेगी⁶ *चिट्ठी-पत्री* कहानी में एक ऐसी आधुनिक शिक्षिता लड़की की कहानी है जो विवाह के पश्चात् रुढ़िग्रस्त परिवार में पहुँच कर चुपचाप आधुनिक सभ्यता का विरोध करने लगती है । उसकी मानसिक शक्ति की दुर्बलता को लेखक ने मनोविज्ञान के आधार पर परखा है ।

जैनेन्द्र जी ने विवाह संबंध, नारी जीवन, समाज तथा व्यक्ति का यथार्थ चित्रण करते हुए अनेक उत्कृष्ट कहानियाँ लिखी हैं । अथपि जैनेन्द्र में मनोवैज्ञानिक-धरातल पर व्यक्ति का सूक्ष्म विश्लेषण करने की प्रवृत्ति ही प्रधान रही है किन्तु व्यक्ति के जीवन के अध्ययन के समय जिन घटनाओं और समस्याओं को उन्होंने चित्रित किया है वे परिवार के परिवेश और

1- यशपाल- चित्र का शीर्षक- विप्लव कार्यालय, 21-शिवाजी मार्ग, लखनऊ, अगस्त - 1966 ।

2 से 6: सुरेश सिन्हा- हिन्दी कहानी- उद्भव और विकास-पृ0-510, अशोक प्रकाशन, दिल्ली- प्र0 सं0-1965 ।

वार्तिक रूप को पूर्णतया स्पष्ट कर देती है। *जाह्नवी¹* में एक प्रेमी और प्रेमिका के विवाह करने की विधि की सशक्त आलोचना की गई है। *रेल² में* कहानी एक दुश्चरित्र पति की पत्नी का नग्न रूप दिखाया गया है।

ग्रामोफोन का रिकार्ड³ में पारिवारिक स्तर पर पति-पत्नी के असमंजस से उत्पन्न अतृप्त काम वासना का सफल चित्रण हुआ है। *पत्नी⁴* कहानी में भारतीय गृहस्थों की सामान्य किन्तु महत्वपूर्ण समस्या का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मिलता है। सुनन्दा अपने पति कालिन्दी के व्यवहार से असंतुष्ट और अतृप्त रहती है क्योंकि वह एक बार भी उससे यह नहीं पूछता कि- *तुम क्या खावोगी* पर बाद में प्रसन्न भी हो जाती है। यद्यपि प्रायः जेनेन्द्र जी के पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका की अवतारणा यथार्थ की भूमि पर हुई है।

राजेश राघव की *नरक* साँफ के शिकारी* अंठ के करबट⁵* मुफ्त का झगड़ा⁶* *अंगारे न बुझें⁷* आदि कहानियों में समाज के सौंसेले आदर्शों, हृदय के कुरूप और सुरूष अंशों को बड़ी समर्थता से प्रस्तुत किया गया है। *नारी का विद्रोह⁸* एक ऐसी सभ्य सुशिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री की कहानी है जो विवाहोपरान्त पति की इच्छाओं से बंध जाती है। वह आगे बढ़ नहीं सकती। साइकिल पर चढ़ नहीं सकती। अन्य पुरुषों से बात भी नहीं कर सकती। अधिक रात गए तक पढ़ने पर भी बर्हा अंकुश है। गाँव के लड़के उसे पतुरिया कहते हैं। वह उस दमघोटू बातावरण के प्रति बिद्रोह कर देती है और माई के यहां इलाहाबाद जाकर अध्यापन कार्य करने लगती है तथा स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने लगती है। लेखक की नारी के प्रति सहानुभूति है।

1-2-3: डा० ब्रह्मदत्त शर्मा- हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन, पृ०-277, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा- शोध प्रबन्ध- 1958।

5 से 8: डा० रघुवर दयाल बाण्योय- हिन्दी कहानी- बदलते प्रतिमान-पृ०-101, पाण्डुलिपि प्रकाशन, ई-11।5, कृष्ण नगर-दिल्ली।

प्रेमचन्दोत्तर काल की कहानियों के काल को कथा और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से उत्कर्ष काल कह सकते हैं। इस काल में फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक चिन्तन से प्रभावित जैनेन्द्र, अश्वमेध व इलाचन्द्र जोशी रंगिय राघव ने परिवार और समाज के बाह्य और आन्तरिक रूप को मनोवैज्ञानिक सचाई के साथ प्रस्तुत किया है। भारतीय जीवन के मूल में स्थि नैतिकता, सत्यता, अहिंसावाद, करुणा आदि सूक्ष्म बृत्तियों की व्याख्या जैनेन्द्र जी ने विस्तारपूर्वक की है। अश्वमेध की कहानियों में पतनीन्मुख समाज और व्यक्ति की आलोचना पश्चात्त्य यौनवाद के आधार पर की गई है। इलाचन्द्र जोशी के कहानी साहित्य में व्यक्ति के अहं पर बौद्धिक प्रहार किया गया है। रंगिय राघव की कहानियों मार्क्सवादी दार्शनिकता का पुट मिलता है। मार्क्सवाद से पूर्ण प्रभावित होने पर भी उन्होंने इसमें देशकाल के अनुसार परिवर्तन कर दिया है। इन सब कथाकारों के कथानकों में स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया मिलती है।

(घ) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में बदलता हुआ परिवार :

व्यक्ति और परिवार में परिवर्तन प्रत्येक युग में होता है। आज परिवर्तन द्रुतगामी गति से हो रहा है। फलस्वरूप प्राचीन मान्यतारं एवं मूल्य शीघ्रता से नष्ट होते जा रहे हैं और उनका स्थान नये जीवन मूल्य लेते जा रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर परिवेश के परिवर्तित हो जाने के कारण भारतीय परिवार के ढाँचे में बहुत बड़ा परिवर्तन आ गया। पुराने संबंध समाप्त होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी का संबंध उभर रहा है तथा परिवार अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। परिवार के इन समस्याओं को, संबंधों को स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने अपनी कहानी का केन्द्र बनाया है।

वाज बह स्थिति है *जब बहन माई एक दूसरे के प्रति इन्दी दिसायी देते हैं। यहाँ तक कि लड़कियाँ पापा की बीमारी से बीर हो जाती हैं और *किशन के नाम से उन्हें एलजी¹ है*। *संबंध² कहानी के माँ-बेटे के स्नेह के मूल्यों में एक वजीब सा परिवर्तन आ गया है* जो पहले माँ लगती थी अब कभी-कभी ही माँ लगती है या माँ का क्रम। *पिता³ कहानी में पिता-पुत्र के द्वन्द्व का चित्रण है। पुरानी पीढ़ी के प्रति वादर और सम्मान के मूल्य लुप्त हो गए हैं तथा बुजुर्गों के प्रति एक आक्रोश का भाव है। *वापसी⁴ कहानी में गजाघर बाबू नौकरी से रिटायर्ड होने पर पारिवारिक सुख की अफ्लाणा में घर वापस आते हैं परन्तु परिवार में पुत्र-पुत्री, पत्नी सभी को घर में उनकी उपस्थिति नागवार लगती है। उनकी स्थिति घर में के समान है। *रिश्ता⁵ कहानी में मानवीय रिश्तों की विहम्बना मन की और गिरघारी के प्रेम में दिखलाई पड़ती है जहाँ माँ-बेटे के संबंध का पता ही नहीं चलता।

पहले माई बहनों में परस्पर अत्यधिक प्रेम रहता था किन्तु वाज आर्थिक परिस्थितियाँ दोनों के मध्य कटुता ला देती है इसका सशक्त चित्रण *जिंदगी और गुलाब* के फूल* में हुआ है। वाज भ्रातृत्व, मित्रता

- 1- एक प्लेट सैलाब- मन्नु भंडारी- एक प्लेट सैलाब, पृ०-32, अक्षर प्रकाशन, 2136 अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- पृ० सं०-1968।
- 2- शानरंजन - फोन्स के इधर और उधर- पृ०-113, अक्षर प्रकाशन- 2136-अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- पृ० सं०-1968।
- 3- शानरंजन- फोन्स के इधर और उधर- पृष्ठ-77, शेष--- , , , ।
- 4- उषा प्रियंवदा- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ०-119, भारतीय ज्ञानपीठ, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- तृ० सं०-1971।
- 5- गिरिराज किशोर- *रिश्ता और अन्य कहानियाँ* पृ०-145, राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार - दिल्ली- सं०-1969।
- 6- उषा प्रियंवदा- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ०-130, भारतीय ज्ञानपीठ, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- सं०-1971।

में माधुर्य आदि से कौश के शब्द बन गए हैं । *बाइस-¹का* में मित्र भी यदि पराये शहर में जाता है तो ठहरने और खाने का किराया देता है ।

बाज के दाम्पत्य संबंध पुरानी मान्यताओं पर आधारित नहीं हैं । नारी चाहे पति के पत्नी हो उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी है । पति पत्नी के लिए देवता ही नहीं *ऊँचाई²* में वह सुख-दुःख का आधा भागीदार भी है ।

इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय राष्ट्रीय जीवन में जो बहुमुखी परिवर्तन आया उसने पारिवारिक जीवन पर भी व्यापक प्रभाव डाला । प्रेमचन्दोत्तर युगिन कहानियों में परिवार के अंतर्गत जो नाना क्लिष्टताएँ, रुढ़ियाँ और विषमताएँ अपना समाधान माँगती थीं उनको सकारात्मक रूप में देखने का प्रयास स्वतंत्र्योत्तर कहानियों में पाया जाता है । प्रेमचन्द तथा दूसरे कहानीकारों ने नारी पीड़ा और घुटन को अपनी कहानियों का विषय बनाया था । उसके साथ अधिक उदार व्यवहार पर बल दिया था परन्तु नारी को पुरुष के समान अधिकार दिलाने के प्रयास पर बल नहीं दिया था । इसके अतिरिक्त पारिवारिक संबंधों और पारिवारिक समस्याओं में प्रेमचन्द युग से लेकर बाज तक बहुत बड़ा अन्तर आ गया है । स्वतंत्र्योत्तर पारिवारिक संबंधों और समस्याओं की व्याख्या अग्रिम अध्यायों में प्रस्तुत की जायेगी ।

1- दूधनाथ सिंह- एक दुनिया समानांतर- सं०- राजेन्द्र यादव- पृ०-

2- ऊँचाई- मन्मू मंडारी- एक प्लेट सैलाब- पृ०-126, अक्षर प्रकाशन
2136-अक्षरी रोड, दरियागंज-दिल्ली-6, पृ० सं०-1968 ।

चतुर्थ अध्याय

(1) हिन्दी कहानी एक विहंगम दृष्टि

- (क) प्रेमचन्द पूर्वी हिन्दी कहानी
- (ख) प्रेमचन्द युगिन हिन्दी कहानी
- (ग) स्वतंत्र्य पूर्वी हिन्दी कहानी
- (घ) स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी

(2) स्वतंत्र्योत्तर कहानी का वर्णिकरण

(3) स्वतंत्र्योत्तर कहानीकारों का परिचय

बालोच्च कालीन कहानी का परिचयात्मक अध्ययन

कहानी का अस्तित्व किसी न किसी रूप में प्राचीनकाल से ही भारत में विद्यमान रहा है। हिन्दी पूर्वी कहानी-परम्परा को निम्न रूपों में देखा जा सकता है :---

- (1) ऋग्वेद के संवाद सूक्त
- (2) उपनिषदों की रूपक कथा
- (3) वात्स्यानक काव्य तथा पौराणिक कथारं
- (4) जातक कथारं
- (5) संस्कृत का परवर्ती कथा साहित्य
- (6) प्राकृत और अपभ्रंश में कथा
- (7) चारण साहित्य में कथा
- (8) लोकगाथाएं
- (9) मध्यकालीन हिन्दी वात्स्यानक काव्य
- (10) वातर् साहित्य की धार्मिक कथारं

ये पौराणिक प्राचीन उपाख्यान मुख्य रूप से उपदेशात्मक थे जिनकी मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता था जिससे पाठकों पर उसका प्रभाव पूरी भाँति पड़ सके। कहानी की यह विशेषता *बृहत्कथा मंजरी* *बैताल पच्चीसी* *परचरित्र* आदि सभी में पाई जाती है। इनमें नीति की बात को मनोरंजक शैली में प्रस्तुत किया गया है जिसमें मनुष्योत्तर प्राणियों की गणना भी की गई है। आगे चलकर मध्यकाल में लाकर बीरों की कहानियाँ प्रचलित हुईं जिनमें पृथ्वीराज रासो, बालहा-ऊदल आदि की कथारं प्रमुख हैं।

इस कथाधारा के पश्चात् मुसलमानों के आगमन के कारण भारतीय कथा साहित्य को प्रभावित करने वाली दूसरी धारा बरबी -फारसी

के कथा साहित्य की है। शीरीं फ़ारहाद, लैला मजनूँ के प्रेम विषयक किस्से काफी प्रचलित हुए।

प्रश्न हिन्दी कहानी के प्रादुर्भाव का है। अधिकांश विद्वानों ने किरीरी लाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती' (1900 ई०) से हिन्दी कहानी का प्रादुर्भाव स्वीकार किया है किन्तु विरोधी विद्वानों ने उसे शैक्सपीयर की 'टैमैस्ट' का अनुवाद मात्र कह कर उसकी अवहेलना करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह बर्षों का समय' (1903 ई०) कहानी को प्रथम कहानी की उपाधि दी। मणवती प्रसाद बाजपेयी ने जंग महिला की 'दुलाई वाली' को सप्रथम मौलिक रचना होने का दावा किया है। यह सत्र सम्मत मत है कि हिन्दी कहानी का आरंभ 1900 ई० के आस-पास हुआ। इसके बाद तो कहानियों का जाल सा बिछ गया। स्वप्न शैली में लिखित केशव-प्रसाद सिंह की कहानी 'आपत्तियों का पहाड़' कौतुहल और रोचकता से युक्त प्रथम पुरुष में लिखी हुई कहानी है। 'दामीर राव की आत्मकथा' (कार्तिक प्रसाद खत्री) हिन्दी की प्रथम आत्मकथात्मक कहानी है। लाला पार्वती नन्दन की 'प्रेम का फुहारा' घटना प्रधान कहानी है। 'चन्द्रहास का अद्भुत आस्थान' (पं० सूर्य-नारायण दीक्षित) 'एक अशर्मा की आत्मकथा' (पं० कैटेश नारायण) 'मूठपुलिया' (चतुर्वेदी) 'राजपूतानी' (भट्टाचार्य) 'पंडित और पंडितानी' (पं० गिरिजादत्त बाजपेयी) आदि प्रमुख कहानियाँ पूर्णतः मौलिक न होने पर भी विकास क्रम में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। हिन्दी कहानियों को लोकप्रिय बनाने तथा उसकी कला को विस्तार देने में 'हिन्दी गल्प माला' (प्रवर्तिका कौशल्या देवी अगस्त-1918 ई०) ने बहुत बड़ा योग दिया है। इसी माला के दूसरे बर्ष के आठवें अंक में श्री इलाचन्द्र जोशी की कहानी 'सजनबा' प्रकाशित हुई। इस माला के अगले अंकों में प्रसाद जी की 'पत्थर की पुकार' 'करुणा की विजय' 'उस पार का योगी' 'संडहर की लिपि' 'प्रतिमा' 'पाप की पराजय' आदि कहानियाँ प्रकाशित हुईं।

कहानी की इस यात्रा की पीठिका में मारतेन्दु युग में विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ भी अपना विशेष स्थान रखती हैं। इस युग की कहानियाँ 'हरिश्चन्द्र मणजीन' (1873 ई०) 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' (1874 ई०) 'हिन्दी प्रदीप' (1877 ई०) 'ब्राह्मण' (1888 ई०) आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। 1911 ई० 'हन्दु' का प्रकाशन हुआ जिसमें जयशंकर प्रसाद की प्रथम कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द हिन्दी कहानी के क्षेत्र में 1916 ई० में अवतीर्ण हुए।

प्रेमचन्द के आगमन के साथ-साथ हिन्दी कहानी ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया। प्रेमचन्द युग हिन्दी कहानी साहित्य की गतिविधि का दूसरा सौपान है। ऐयारी और तिलस्म की भूल भुलैया तथा कल्पना की कौरी उड़ान में मटकते कहानी साहित्य को जीवन के वास्तविक पर ला सड़ा करने का श्रेय मुँशी प्रेमचन्द को ही है। वेही हिन्दी कहानी के जनक हैं। प्रेमचन्द के अतिरिक्त इस युग के लगभग सभी कहानीकारों ने जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण कहानी में किया। इस काल में कहानी कला का नेतृत्व प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद दोनों ने ही प्रमुख रूप से किया। इन दोनों कलाकारों ने हिन्दी कहानी को दो श्रेणियों में विकसित करने में योगदान दिया। जहाँ प्रेमचन्द यथार्थवादी वादश को अपनी कहानियों में चित्रित किया तो वहीं जयशंकर प्रसाद ने अपनी कहानियों में वादशोन्मुख यथार्थवाद को प्रश्रय दिया। इस प्रकार हिन्दी कहानी प्रेमचन्द शिविर और प्रसाद शिविर, दो मार्गों में विभक्त हो गई।

प्रेमचन्द शिविर: इसमें प्रेमचन्द युगीन प्रेमचन्द की विचारधारा के अनुसार कहानी लिखने वाले कहानीकारों की गणना की जा सकती है। 'प्रेमचन्द के आगमन के साथ ही साथ हिन्दी कहानी की स्वतंत्र सचा बन गई थी वह भावुकता प्रधान न रह कर वास्तविकता का चित्रण करने लगी थी।

प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को प्रगतिशील वास्तविकता के चित्रण का मार्ग बिखलाया तो प्रसाद ने उसे भावपूर्ण गंभीर चिन्तन का माध्यम बनाया । प्रथम महायुद्ध से लेकर तीसरे दशक की समाप्ति तक हिन्दी कहानी पर ये दोनों प्रभाव हैं ।¹ *

प्रेमचन्द और उनके समकालीन कहानीकारों की कहानी का विषय समाज से संबंधित था । प्रेमचन्द की लेखनी राजा के प्रसाद से लेकर रंक की कुटिया तक का चक्कर लगा आई । *प्रेमचन्द की कहानियों में मूल चेतना बिन्दु है कौई सामाजिक वादशी जो सामाजिक समस्याओं और यथार्थ के तनावों के भीतर से गुजरता हुआ स्थापित होना चाहता है । इसीलिए इन कहानियों का परिवेश सामाजिक या पारिवारिक यथार्थ है जो संबंधों, मूल्यों, जमावों के जटिल सूत्रों से बुना गया है ।² *

कहानी कला की दृष्टि से इस युग में आकर कहानी का चरम विकास हुआ । कहानी के सभी तत्व इस युग में कहानी में समाहित हो गए । चरित्र-चित्रण तथा वातावरण का चित्रण विशेष प्रभावोत्पादक रहा । प्रेमचन्द लेख के वर्तमान कहानी का विकास तीन धाराओं में हुआ--- पहली धारा में कहानी का मूल स्वर वादशीवादी था-- प्रेमचन्द की *बड़े घर की बेटी *नमक का दरौगा *पंच परमेश्वर * परीक्षा * वादि कहानियों में धरातल वादशीवादी है ।

दूसरी धारा अधिक महत्वपूर्ण इस दृष्टि से रही कि इसमें कहानियों का फुकाव वादशी से यथार्थ की ओर था तथा शिल्प की दृष्टि

1- श्री चन्द्र गुप्त बिघार्लकार- हिंदी कहानी- 1960, पृ०-83-
हिन्दी बाणिकी- 1967 ।

2- डा० रामदरश मिश्र- हिन्दी कहानी की पूर्वापीठिका और प्रस्थान बिंदुलेख-
हिन्दी कहानी : दो दशक की यात्रा, सं० डा० रामदरश मिश्र, डा०
नरेंद्र मोहन ।

से भी कहानी निखरी । जहाँ पहले कहानी में निष्कर्ष का तत्त्व अनिवार्य था इस युग में आकर कहानी चरमसीमा पर ही आकर समाप्त हो गई । *प्रेम प्रसून*, *प्रेम पचीसी*, *स्त्री*, *विरोध*, *सेवा-मार्ग*, *आत्माराम*, *आभूषण*, *शतरंज के खिलाड़ी* आदि कहानियाँ इसी प्रकार की हैं जो चरमसीमा पर ही आकर समाप्त हो गई । इस धारा की कहानियों में यथार्थता और स्वाभाविकता की ओर प्रेमचन्द का ध्यान अधिक रहा है । इस धारा की कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद मिलता है ।

तृतीय धारा के अंतर्गत प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी पूर्णतः यथार्थवादी हो गई जिसमें मनोविज्ञान का भी पुट मिला । इस धारा की कहानियों में संवेदनात्मकता, मनोवैज्ञानिकता, यथार्थवादिता आदि विशेषताएँ समाहित हो गई । प्रेमचन्द की *अलग्गोफा*, *नया विवाह*, *गुल्ली-डंडा*, *कफ़न*, *बड़े भाई साहब* इसी धारा की कहानियाँ हैं ।

प्रेमचन्द के शिविर में इस युग के अन्य कहानीकारों में विश्वम्भरनाथ शर्मा *कौशिक*, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन इत्यादि नाम उल्लेखनीय हैं ।

प्रसाद शिविर: यह दूसरी श्रेणी प्रसाद जी की तथा उनकी कथाधारा के अनुयायियों की है । इसमें यथार्थ की उपेक्षा भाव जात का वाश्रय लेकर कहानियों का गठन किया गया है । प्रसाद मूलतः कवि कहानीकार हैं अतः कविता की रंगीनी, कलात्मकता, भावात्मकता आदि का समावेश स्वाभाविक रूप में उनकी कहानियों में हो गया है । यद्यपि प्रसाद जी मूलतः आदर्शवादी हैं किन्तु यथार्थ को उन्होंने कहीं उपेक्षा नहीं की है । उनकी कहानियाँ प्राचीन, मध्ययुगीन समाज का चित्रण करती हैं ।

जहाँ तक शिल्प का संबंध है। प्रसाद की कहानियों में पर्याप्त प्रौढ़ता है। कहानी के समस्त तत्वों का समावेश उनकी कहानियों में मिलता है। उनकी कहानियों का प्रारंभ प्रायः बहुत ही नाटकीय ढंग से हुवा है। *आकाशदीप* कहानी का आरंभ बड़े ही सुंदर ढंग से हुवा है। *गुंठा* और *देवरथ* कहानी-रूप चित्रण से प्रारंभ होती है वहीं-**पुरस्कार** कहानी प्रकृति चित्रण से आरंभ होती है -- आर्द्रा नदात्र, आकाश में काले बादलों की घुमड़ जिसमें देवदुन्दुभी का गर्भीर घोषा प्राची के एक निरप्र कोने से एक स्वर्ण पुरुष का किकने लगा---- *। इसी प्रकार उनकी कहानियों का अन्त भी बड़े कौतुहलपूर्ण ढंग से होता है। प्रसाद के जीवन के अंतिम चरण की समस्त कहानियाँ प्रसाद के कथा-साहित्य में ही ब्या, हिन्दी के कहानी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। *मधुवा* *धीसू* *बेड़ी* *विजया* *मील* *सन्देह* आदि कहानियाँ यथार्थवादी हैं।

पात्रों के चरित्र-चित्रण में प्रसाद जी बड़े कुशल हैं। मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण करके पात्रों के चरित्र-चित्रण में चार चांद लगा दिए हैं। उनके संवाद नाटकीय हैं तथा पात्रों के चरित्र-चित्रण पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

कवि कहानीकार होने के कारण कविता की भाँति उनकी कहानी की भाषा भी कवितामयी है। संस्कृत के तत्सम शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। उनकी भाषा अलंकृत और रोमांटिक है जिसमें भावुकता का तीव्र प्रवाह है। सुदर्शन, वाचस्पति पाठक, चण्डी प्रसाद आदि इस शिबिर के प्रमुख कहानीकार हैं।

प्रेमचन्दोत्तर युगः

इस युग का आरंभ प्रेमचन्द की मृत्यु (1937) से होता है। इस युग में हिन्दी कहानी का आशातीत विकास हुवा। इस युग की

कहानियाँ पर पारचात्य प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस युग के कहानीकारों ने युग की समस्याओं को अपनी दृष्टि से देखा, व्यक्ति के अन्तर्मीन से समझाया किया। यशपाल, अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी आदि इस युग के प्रमुख नाम हैं। इस युग में दो तरह की कथा धाराएं दिखाई देती हैं----- सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कहानियाँ।

सामाजिक कहानियों की धारा: इस कहानीधारा को हम कड़ी के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इस धारा की कहानियों को हम कड़ी के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इस धारा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण है। यशपाल, अमृतलाल नागर, रागिय राघव, मगबती चरण बर्मा, मीरव प्रसाद गुप्त, विष्णु प्रभाकर, बलबन्त सिंह, आदि कहानीकार सामाजिक यथार्थवादी कहानीकार हैं। इनकी कहानियों में समाजवादी यथार्थ, दूसरे शब्दों में मार्क्सवादी दर्शन का प्रभाव पड़ा है। मार्क्सवादी दर्शन का मुख्य सिद्धान्त साध्यवादी भावना है। इस दर्शन के अनुसार समाज में पूर्णता का समान वितरण होना चाहिए। सबकी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएं प्राप्त होनी चाहिए। इसी दर्शन से इस युग की कहानियों की एक धारा प्रभावित हुई। इस युग के प्रारंभ में समाज सुधार जैसे अछूतोंद्वारा, विधवा-विवाह, बाल-विवाह, संबंधियों की स्वायत्तवृत्ति आदि कहानी कैबिणय थे।

समाजवादी कहानियाँ कथानक की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक कहानियों की अपेक्षा अधिक स्थूल हैं। ये कहानियाँ अधिकतर घटनात्मक हैं जिनमें जीवन की संवेदना को और युगबोध को चित्रित किया गया है। इस धारा की कहानियों का प्रारंभ प्रायः निम्नलिखित ढंग से होता है---

* ज्योतिषियों ने अमृतपूर्व देवी प्रकोपों और मर्यक घटनाओं से व्यापक संहार की भविष्यवाणी की थी। फरवरी के प्रथम सप्ताह में बाठ परस्पर ग्रह एक रेखा में आ रहे हैं। इनके प्रभाव से प्रकृति के तत्व और

महामतियों के मन्त्रित्व भी विचलित हो जायेंगे । विश्वास भीरु लोग
काँप रहे थे क्या नहीं हो जायेंगे¹ ।*

इस प्रकार की कहानियों का विकास स्थूलता के साथ होता
है क्योंकि इनमें जीवन के यथार्थवादी दृष्टिकोण का चित्रण होता है । ये
कहानियाँ चरमसीमा पर जाकर ही समाप्त हो जाती हैं । कहीं-कहीं
उपसंहार भी होता है पर वह भी केवल चरमसीमा को अधिक प्रभावपूर्ण
बनाने के लिए होता है । समस्या का समाधान प्रस्तुत नहीं किया जाता ।
कहानी कथानक के सहारे गतिशील होती है । संवाद नाटकीय होते हैं ।
बातावरण का चित्रण सूक्ष्मता के साथ होता है ।

इस धारा के अग्रणी यशपाल हैं । इस धारा की कहानियाँ
जीवन का समग्र चित्रण करती हैं ।

मनोवैज्ञानिक कहानियों की धारा:

समाजवादी धारा के अतिरिक्त इस युग में इसी धारा के
समकालीन चलने वाली दूसरी कथा धारा मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषणावादी
कहानियों की है जिसमें जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अक्षय का नाम विशेष
उल्लेखनीय है ।

*मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद यद्यपि बाह्य जगत की सत्ता को
वहनीकारता है पर मानव मन के अन्तर्जगत, उसकी बौद्धिकता एवं
भावनात्मकता को ही अधिक बल प्रदान करता है । वह व्यष्टि चेतना
की गहनता की माप एवं चेतनमन के आधारभूत अवचेतन एवं वचेतन का
रहस्योद्घाटन करता है ।

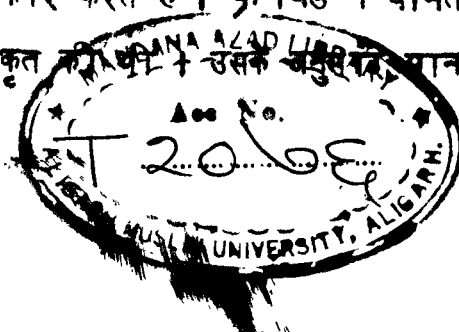
1- यशपाल- फलित ज्योतिष, सारिका-42, पृ०-15, बम्बई ।

मानव मन की सभी भावनाओं का चित्रण मनोवैज्ञानिक
यथार्थवाद का मूल विषय है। हमारे यहाँ कहानी की यह धारा
पाश्चात्य प्रभाव के फलस्वरूप आई है। फ्रायड, एडलर, युंग से इस
युग के कहानीकारों ने विशेष रूप से प्रेरणा ग्रहण की है। मनोवैज्ञानिक
कहानियों की धारा को समझने के लिए तीनों विद्वानों के मत को जान
लेना अनिवार्य है :-

फ्रायड का सिद्धान्त:- फ्रायड का सिद्धान्त स्वप्न सिद्धान्त कहलाता
है। यह एक वासना को ही मुख्य रूप से स्वीकार करते हैं। 'फ्रायड' का
मनोविज्ञान का सिद्धान्त इसी पर आधारित है। उसके अनुसार मनुष्य की
काम संबंधी इच्छाएं स्वाभाविक एवं अनिवार्य हैं---। मनोविश्लेषण पद्धति
के अनुसार व्यक्ति का अस्तित्व उसकी पीड़ाएं निराशा आदि कुंठाजन्य
परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होती हैं। ये कुंठाएं व्यक्ति के अचेतन
में संग्रहीत होती हैं और मानव जीवन को संचालित करती हैं। मनुष्य
इसलिए उसके हाथों में अक्सर सा जीवन व्यतीत करता है। मनुष्य के आंतरिक
जगत का अध्ययन ही साहित्य में मनोविश्लेषणवाद कहलाता है।

इस प्रकार फ्रायड का सिद्धान्त कामवासना से संबंधित है।
अचेतन मन में पड़ी कुंठाओं तथा इच्छाओं का चित्रण ही साहित्यकार का
विषय होना चाहिए। फ्रायड इसी बात को स्वीकार करते हैं।

एडलर का सिद्धान्त:- एडलर प्रभुत्व भावना को जीवन का प्रेरक तत्त्व
मानते हैं। इसके अभाव में मनुष्य हीन ग्रंथियों का शिकार हो जाता है।
इस अभाव की पूर्ति मनुष्य स्वप्न या कल्पना के माध्यम से करना चाहता है।
इनका सिद्धान्त यद्यपि फ्रायड के सिद्धान्त से भिन्न है पर यह भी कामवासना
के महत्व को स्वीकार करते हैं। फ्रायड ने दमित शमित कामवासनाओं की
क्रियाशीलता स्वीकृत की है। उसके अनुसार मानसिक संतुलन इसलिए



समाप्त हो जाता है क्योंकि दमित-शमित कामवासनाएं अवैतन से मुक्त हो चेतन के साम्राज्य में घोर वराजकता और प्रबल अशान्ति उत्पन्न कर देती हैं किन्तु स्टलर ने मानसिक-वृत्तियों का कारण अपने का अत्यन्त श्रेष्ठ और सबकी श्रद्धा का पात्र बनाने की जिस जीवन शैली का निर्माण मनुष्य के अन्दर हुआ है-- उसमें सामाजिक और वैयक्तिक वादशों का सामंजस्य संभव नहीं हो सकता । इस जीवन - शैली का निर्माण सभी में होता है क्योंकि सभी हीनता की भावना से पीड़ित होते हैं ।

कहने का अभिप्राय यह है कि मनुष्य अपने को ऊँचा सिद्ध करना चाहता है, जब वह ऐसा करने में समर्थ नहीं होता तो उसमें हीन भावना जन्म ले लेती है जिसके अभाव की पूर्ति वह किसी दूसरे माध्यम से करता है । ऐसे ही व्यक्तियों का चित्रण मनोवैज्ञानिक विचारधारा वाली कहानियों में हुआ है ।

युग का सिद्धान्त:- इनके अनुसार जीवित रहने तथा अमर रहने की भावना ही जीवन को प्रेरित करती है । मनुष्य ऐसी वृत्तियों का निर्माण करता है जिससे वह अमर रहे । इनके सिद्धान्त में भी कामवासना को स्थान मिला है इन्होंने मनोविश्लेषणवादी व्यक्तियों को दो मार्गों में बाँटा है --- अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी ।

अन्तर्मुखी व्यक्ति अपने आप में ही संतुष्ट रहता है । उसमें सामाजिकता की भावना अत्यन्त सीमित होती है । इसके विपरीत बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक अधिक होता है और वह समाज से संबंध स्थापित करना चाहता है ।

इन तीन सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य पारंपार्यवादों और सिद्धान्तों ने इस युग की कहानियों को प्रभावित किया । गेस्टाल्टवादी मनोविज्ञान, व्यक्तिवादिता, वादि प्रवृत्तियों भी प्रेमचन्दोत्तर कहानी में

देखने को मिलती हैं। पार्श्ववाच्य दर्शन ने इन सब कहानीकारों को प्रभावित किया है। इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र, सच्चिदानन्द हीरानन्द-वात्स्यायन 'वशेष' आदि मनोविश्लेषणवादी धारा को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए।

प्रेमचन्दोत्तर युगीन कहानियाँ जिनकी कि एक धारा मनोवैज्ञानिक कहानियों की है-- आत्मपरक दृष्टिकोण को लेकर लिखी गई हैं। इन कहानियों में कथानक का ह्रास दिखाई पड़ता है। इन कहानियों में ही शिल्पगत प्रयोग दिखायी देते हैं। अवचेतन विज्ञप्ति या चेतन प्रवाह-पद्धति, प्रतीक योजना, सांकेतिकता एवं बिम्बों आदि की नवीन शिल्प प्रणालियों का उपयोग भी इन कहानियों में हुआ है। ये कहानियाँ सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होती गई हैं।

इस प्रकार की कहानियों में मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों एवं घात प्रतिघातों का चित्रण हुआ है। कहानियाँ चरमसीमा पर ही आकर समाप्त हो जाती हैं।

वशेष की 'पठार का धीरज' 'साँप' जैनेन्द्र की 'नीलम देश की राजकन्या' 'सेल' 'तत्सत्' इलाचन्द्र जोशी की 'प्लेनवेट' 'कृत विकृत' 'कापालिक' 'दुष्कर्म' आदि कहानियाँ मनोविश्लेषणवादी धारा की कहानियों में प्रमुख स्थान रखती हैं।

स्वतंत्रतापूर्वक हिन्दी कहानी की गतिविधि

सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही देश की परिस्थितियों में त्वरित गति से परिवर्तन होने लगे। मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो उठा, मनुष्य टूट गया, निराशा और कुंठा उसे अपने उन स्वप्नों के बदले में मिली जिन्हें वह स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व संजो बैठा था। औद्योगीकरण और

महानगरीय जीवन की अस्तित्व के कारण रिश्तों में औपचारिकता व कृत्रिमता समा गई। व्यक्ति भीड़ में भी अपने को अकेला महसूस करने लगा। प्रेम, स्नेह, वात्सल्य जैसे शब्द मानी कोश तक ही सीमित रह गए। सहृदय कथाकार ने इस परिस्थिति को फौला, भोगा तथा तदनुरूप उसे वाणी दी। स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी की गतिविधि इसी वर्ष में अपनी पूर्णवर्ति कथाधारा से भिन्न है। डा० लक्ष्मीसागर बाण्णाय के शब्दों में--*वाज का कहानीकार प्रत्यक्ष जीवन को भोगता है--- समाज का रूप---परिवेश, सन्दर्भ सब कुछ नवीन आवरण में साहित्यकार के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है। वाज कहानी ने पुराने परिवेश को त्याग कर नवीन वेश धारण किया है। व्यापक जीवन दृष्टि का प्रभाव कहानी साहित्य पर भी पड़ा। फलस्वरूप वाज की कहानी में वाज की जिन्दगी को चित्रित किया जा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात के परिवर्तन को वात्सल्य से किया जा रहा है¹।*

वाज की कहानी धारा जोशी, अज्ञेय, जैनन्द की घोर वैयक्तिक और दार्शनिकता के आवरणों से बोझिल नहीं है। उसमें सामाजिकता है, जीवन्तता है। मानव मन के अकूते रहस्यों का उद्घाटन भी है। यदि उसमें कहीं व्यक्ति चेतना है भी तो वह उपर्युक्त कथाकारों के समान घोर वात्सल्य केन्द्रित प्रणाली वाली नहीं है। स्वतंत्र्योत्तर दशकों की कहानी साहित्य इस तथ्य का प्रमाण है। स्वाधीनता से पूर्व मुक्ति संघर्ष के पल्लू थे विदेशी दासता से मुक्ति तथा गतानुगत संस्कारों, वंशविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों और व्यक्ति की चारित्रिक दुर्बलताओं से मुक्ति, साथ ही जीवन की विषम परिस्थितियों से जीवन की मुक्ति की आकांक्षा। स्वाधीनता की प्राप्ति

1- डा० लक्ष्मीसागर बाण्णाय-- बीसवीं शताब्दी : हिन्दी साहित्य-
नये संदर्भ- पृ०-273, पृ० सं०-1966 ।

के बाद सांस्कृतिक पुनर्मूल्यांकन तथा स्वतंत्र समाजवादी नये भारत के जीवन मूल्यों के उत्तराधिकारी नये मानव को गढ़ने का दायित्व आया । जीवन एक नई दिशा की ओर चलने लगा । फलस्वरूप हिन्दी की नई कहानी का रूप भी बदलता गया । वस्तु और शैली दोनों क्षेत्रों में क्रांति हुई और दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी कहानी का निरन्तर विकास हुआ, नये प्रयोग हुए, नये दृष्टिकोण बने, इन्हीं सब कारणों से हिन्दी कहानी में मार्क्सवाद, यूनानवाद, मनोविश्लेषणवाद की प्रभुता हो गई । स्वतंत्र्योत्तर कहानी अधिक आत्मचिन्तन, आत्म विश्लेषण और मानसिक ऊहापोह की ओर बढ़ रही है । नागरीय जीवन की अपेक्षा कहानी की दृष्टि लोक जीवन पर केन्द्रित हो गई है । हिन्दी कहानी के प्रथम दशक (1950 से 1960) की गतिविधि में अकस्मात् परिवर्तन आया तथा जिस आंदोलन ने जन्म लिया उसे समीक्षकों ने 'नई कहानी' का नाम दिया । वास्तव में 'आधुनिक' शब्द की भांति 'नया' शब्द भी काल सापेक्ष है । प्रत्येक युग का साहित्य अपने समय में नया और आधुनिक होता है अपने पूर्ववर्ती साहित्य की अपेक्षा ।

वास्तव में जहाँ तक नई कहानी के आंदोलन का संबंध है, इसे आन्दोलन नहीं कहना चाहिए क्योंकि आंदोलन राजनीति का विषय है और नई कहानी आन्दोलन न होकर नये के लिए निरन्तर प्रयोगशील और प्रयत्नशील रहने की प्रक्रिया है । वास्तव में बदली हुई जीवन-दृष्टि की सृजनात्मक प्रतिभा को नई कहानी का नाम दिया गया ।

नए कहानीकारों में कमलेश्वर, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्मू मंडारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मार्कण्डेय, फणीश्वर नाथ रेणु, सेठगो यात्री, निमेष बर्म, रमेश बदाी, दुर्लभ सिंह, महीप सिंह, हृदयेश, सुधा अरोड़ा, गंगा प्रसाद बिमल,

श्रीकान्त बर्मा, गिरिराज किशोर, ज्ञान रंजन, कृष्ण बल्देव बैद, शैलेश मटियानी, शानी, राजेन्द्र अवस्थी, रबीन्द्र कालिया, ममता कालिया इत्यादि नाम उल्लेखनीय हैं ।

नई कहानी मनुष्य के एक-एक दाण्ड , एक-एक मनःस्थिति को पकड़ती है पर इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि वह सामाजिक संदर्भों की उपेक्षा करती है । यह व्यक्ति और सामाजिकता दोनों के मध्य गतिशील रहती है । यह गति व्यक्ति के वहम् को चित्रित करती है तो वह भी सामाजिक कुरता के सन्दर्भ में ही । सामाजिक शोषण, वैषम्य एवं अनास्था का चित्रण करती है तो वह व्यक्ति के वर्ग के संदर्भ में ही ।

कथानक की धारणा नयी कहानी में आकर बिल्कुल परिवर्तित हो गई । *न जाने वाला कल* (मोहन राकेश) *पिछली गर्मियों में* *जलती फाड़ी* (निर्मल बर्मा) *बंद दरारों के साथ* (मन्नु मंहारी) *नये-नये जाने वाले लोग* (राजेन्द्र यादव) *महलियां* (उषा प्रियंवदा) आदि उल्लेखनीय कहानियाँ हैं । इन कहानियों को पढ़ते समय लगता है जैसे किसी Table Talk में सम्मिलित हों ।

स्वातंत्र्योत्तर प्रथम दशक की कहानी कहानी तत्त्वों की किंचित प्ररबाह नहीं करती । सामयिक स्थितियों का चित्रण कहानी की केन्द्रीय वस्तु बना । नई कहानी में जिस यथार्थ का चित्रण है वह वर्तमान का है । नई कहानी में जिस ^{व्यक्ति} और परिवार के लिए नये संदर्भ सूत्रों की तलाश का प्रयास है । परिवार की टूटन और नए परिवेश में भटकते हुए युवकों के उदाहरण नई कहानी में अनगिनत मिल जायेंगे नारी पुरुष के संबंधों पर नयी कहानी ने विस्तारपूर्वक विचार किया । इस युग में जो सामाजिक विवर्तनता है उसका चित्रण भी नई कहानी करती है ।

नई कहानी में जो नारी उभर कर आई है वह आत्मनिर्भर और आत्मनिर्णायक है। यह एक नयी स्थिति का आरंभ है। यहाँ से नारी पुरुष के नये संदर्भ शुरू हो गए हैं। फिर भी नारी अपने को सख्त अनुभव नहीं कर पा रही है जिसके लिए समाज के संस्कार उत्तरदायी हैं। नारी घुटन का चित्रण करने वाली 'प्रतीक्षा' (राजेन्द्र यादव) 'सवाल' (मोहन राकेश) 'एक संधि और' (रमेश बदा) आदि कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं।

पचासौवरी नयी कहानी का एक रूप ग्राम कथा अथवा गाँवलिक कथा भी है। इससे पहले कभी गाँव इतने व्यापक रूप में कथा साहित्य में नहीं आया फणीश्वर नाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, शैलेश मटियानी, शैलर जोशी आदि कहानीकारों ने ग्राम जीवन पर कहानियाँ लिखी हैं।

यह नई कहानी जीवन के अन्तर्विरोधों का सफलता से चित्रण करती है। इसमें संकल्प विकल्प की दुविधा है। पुरातन और नये के बीच की दुविधा है फिर भी यह निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है।

नई कहानी का आंदोलन जहाँ सन् 1950 के आसपास स्वीकार किया गया वहीं 1960 में दूसरा दौर शुरू हुआ और इसे आलोचकों ने विभिन्न नामों से अभिहित किया। इस आंदोलन में कहानी को 'एक कहानी' 'और और' 'सचेतन कहानी' जैसे सम्बोधन दिए गए। वस्तुतः एक कहानी संज्ञा पाश्चात्य *Anti Story* का हिन्दीकरण है। शिल्प और संवेदना की दृष्टि से कहीं यह नई कहानी से भिन्न है और कहीं नई कहानी की ही अगली कड़ी है।

इस कहानी की मुख्य विशेषता इसके आकार की लघुता है। यह कहानी अपनी पूर्ववर्ती कहानी से संक्षिप्त हो गई। यह व्यक्ति परकता से हट कर सामाजिक संदर्भों से अधिक जुड़ी है। सामाजिक विस्फोट, टूटते मूल्यों, वापसी संबंधों की टकराहट, मध्य वर्ग, राजनीतिक विचारधारा, मार्क्सवादी दृष्टिकोण, नारी-पुरुष के नवीन रूप इस कहानी के कथ्य के विभिन्न आयाम हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल के दूसरे दशक तथा उसके बाद (1960-70-75) के कहानीकारों की दृष्टि से लोक जीवन से हट कर नागरीय, महानगरीय जीवन पर केन्द्रित है। आज के भारतीय जीवन के बम्बई और दिल्ली जैसे बड़े शहरों की कथा इस कहानी में कही गई है। आजादी के बाद का विघटन भी यद्यपि नई कहानी में सुनाई देता है। अशक जी के शब्दों में---¹ एक अजीब सा हाइब्रिड कल्चर (दो गला) इनमें रूप धरता दिखाई देता है। कुछ अजीब सा सिनिसिज्म, अनास्था, अनैतिकता, क्रूरता, दिखावा, सारी पुरानी मान्यताओं को तोड़ देने का एमेच्यूर हठ, अंधेरे में टामकटोए मारने वाले आदमी के असींचे प्रयास अपनी घुरी से अलग होकर ग्रह सी उद्देश्यात्मकता यह सब--- दृष्टिगोचर होता है।¹

इस प्रकार यह कहानी जो सत्य निष्ठ है। वह निर्मम क्रूर एवं आवरण रहित है। व्यक्तिगत तथा घरेलू संबंधों में सत्य को मिलापट रहित, निरपेक्षाता के साथ कहानी छटा रहे हैं।

सैक्स जैसे विचार्यों का चित्रण जिस मदेपन एवं खुलेपन से इस युग में हुआ जैसे पहले कभी नहीं हुआ। यह मानव के विघटित मूल्यों के साथ जीवन की अमान्यताओं को बाणी देता रहता है। बात: इसमें आत्म सजगता के साथ-साथ संघर्ष करने का भी प्रयास है।

शिल्प की दृष्टि से इस युग में कहानी सरल और संक्षिप्त है। परम्परागत कहानी के तत्वों की प्रायः अवहेलना कर दी गई है।

बस्तुतः जन्म से लेकर आज हिन्दी कहानी ने विकास की कई मंजिलें पार कर ली हैं। उसकी गति कहीं भी शिथिल नहीं है।

1- उपेन्द्रनाथ अशक- सातवाँ दशक- दशा दशा समावना, पृ०-17

सातवें दशक हिन्दी कहानियाँ- सं० शरद देवड़ा- संस्करण- 1967।

स्वतंत्र्योत्तर काल में जो परिवर्तन आए हैं वे भी हिन्दी कहानी के विकास के चोक्के हैं । निष्कर्षतः कहानी निरन्तर विकासोन्मुख है वह जीवन के साथ समझौता करके आगे बढ़ रही है । अतः कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी कहानी की गतिविधि नित्य नूतन रूप धारण करके और विस्तृत संभावनावर्गों को लेकर आगे बढ़ रही है निरन्तर ---- ।

स्वतंत्र्योत्तर कहानी का क्रांति

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी ने आधुनिक भारतीय व्यक्ति तथा आधुनिक भारतीय समाज के प्रायः समस्त पहलुओं को अपनी सूक्ष्म दृष्टि तथा स्पष्ट अभिव्यक्ति द्वारा एक नया आयाम प्रदान किया । स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को विरासत में जो जीवन-दर्शन मिला, उसके आधार पर बदली हुई जीवन-स्थितियों को मूल्यार्कित करना प्रायः कठिन था । भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व का व्यक्ति स्वतंत्र्योत्तर भारतीय व्यक्ति से भिन्न था-- ऐसी बात नहीं है । किसी भी समाज को कोई एक घटना, कोई एक समय सण्ड अथवा कोई व्यक्ति परिवर्तित नहीं कर सकता । परिवर्तन की प्रक्रिया पर्याप्त मन्द और अमूर्त स्तर पर विकसित होती है , किन्तु इतना निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि भारतीय स्वतंत्रता की अवधारणा ने व्यक्ति को अत्यधिक प्रभावित किया ।

जीवन-पद्धति की दृष्टि से स्वतंत्र्योत्तर काल एक नया काल था । पश्चात्त्य सभ्यता का साया हमारे ऊपर एक लम्बे युग तक रहा, उसने हमारे जीवन के बारीक से बारीक रेशे को प्रभावित किया, यही उसका चरमकाल है । स्वतंत्रता के पश्चात् एक उथल-पुथल, एक हलचल समाज में

फैली। महानगरों का एक ऐसा बॉ था जो रातों रात पार्श्ववात्स्य
सम्यता, संस्कृति, केशभूषा, आचार-व्यवहार एवं भाषा-साहित्य को
अपना लेना चाहता था क्योंकि उसके लिए स्वतंत्रता का अर्थ वही था
और वह किसी भी रूप में पिछड़े हुए, निर्धन देश का नागरिक बना
नहीं रहना चाहता था। इस प्रवृत्ति से निश्चित रूप से मनुष्य के बन्धन
अजनबीपन की भावना पनपी और व्यक्ति को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व
की, अस्तित्व की चिन्ता सताने लगी। वार्षिक विधायकता इतनी बढ़ने
लगी कि संयुक्त परिवार के ध्वंसावस्था भी शेष न रह गए। फलतः
एक व्यक्ति सिमट कर अपने में एक इकाई बन गया, एक संस्था बन गया।
इस महत्वपूर्ण परिवर्तन का प्रभाव संवेदनशील व्यक्ति पर पड़ना अवश्यम्भावी
था। फलतः स्वतंत्र्योत्तर काल ने कहानीकार को एक नयी दृष्टि दी।

स्वतंत्रता के पश्चात् 'परिवार' नारी, विवाह, जैसे घटक
सामन्तवादी प्रभाव से निकल कर शनैः शनैः पूँजीवाद और पश्चिमी व्यक्तिवाद
के शिकार होते गए। सामन्तवाद ने पुरुष प्रधान समाज के माध्यम से
परदा बाल-विवाह, बेमेल-विवाह, दासी-प्रथा, बहुविवाह जैसे शोणक
प्रवृत्तियों को जन्म दिया जिनके अन्तर्गत नारी सदैव दबती और कुचलती
रही। स्वतंत्र्योत्तर काल की यह उपज है कि दो पीढ़ियों के मध्य एक
अन्तराल एक अप्रत्यक्ष सघर्ष जो विद्यमान था वह अब प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर
हुआ। स्वतंत्र्योत्तर काल ने व्यक्ति को सोचने के लिए नवीन दृष्टि दी,
नये वाक्याम दिए, उसने अनुभव किया कि उसके दुश्मन कहीं दूसरे देश के
नहीं थे वरन् अपने ही संबंधी, अपने ही घर के लोग थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक एक मोहमग्न की स्थिति व्याप्त थी।
स्वतंत्रता के पश्चात् वह स्थिति समाप्त हुई, एक मीना सा जो आवरण
था वह हट गया। इस आवरण के हटते ही व्यक्ति की तन्हावस्था समाप्त
हुई और पूर्णतः वह जागृतावस्था में आ गया। इससे नर-नारी के संबंधों

में परिवर्तन आया । रिश्तों की औपचारिकता समाप्त हो गई । पुरुष का परम्परागत अहम् समाप्त हो गया ।

स्वार्तत्रयोत्तर काल में प्रेम, स्नेह के मानदण्ड बदल गए । वस्तुतः स्वार्तत्रयोत्तर काल की परिस्थितिजन्य विकसता है । एक तरफ प्रेम के आधार बदले, दूसरी तरफ प्रेम के उन्मीलन की समस्या सही हो गई । संवेदनशील कथाकार इस तथ्य को नकार नहीं सका ।

स्वार्तत्रयोत्तर कहानीकार की दृष्टि केवल नगरों और महानगरों तक ही सीमित नहीं रही वरन् उपेक्षात जन-समूहों पर, ग्रामों पर भी उसने अपनी दृष्टि डाली है । जांचलिक, और ग्रामीण कथारं स्वार्तत्रयोत्तर काल में विशेष रूप से उभर कर आयीं ।

इसके साथ ही साथ नये कहानीकार ने पुराने धरे को भी तोड़ने की कोशिश की है । उसने सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार भी किये हैं ।

स्वार्तत्रयोत्तर काल में एक और पहलू उभर कर आया है बेकारी और बेरोजगारी का । बेकारी से व्यक्ति में मानसिक कुण्ठा, तनाव, अजनबीपन, विज्ञान को पैदा किया है ।

उपरिलिखित स्वार्तत्रयोत्तर युगीन परिवर्तित परिस्थितियों, संबंधों, दृष्टिकोणों के परिप्रेक्ष्य में स्वार्तत्रयोत्तर कहानी का हम इस प्रकार वर्णित कर सकते हैं । यह वर्णिकरण कहानी के कथ्य को आधार बनाकर किया गया है ।

(कथ्य के आधार पर)
 कहानी का वर्णिकरण

।	।	।	।	।	।
।	।	।	।	।	।
पीठियों के संघर्ष	परिवर्तित परिवेश	प्रेम के बदलते	निम्न वर्णिय	सामाजिक रुठियों	भेकरी, मंछाई
को चित्रित करने	में दाम्पत्य संबंधों	दुर मानदण्डों	जीवन पर दृष्टि	पर, सामाजिक	से उत्पन्न
वाली कहानियां	की चित्रित करने	को चित्रित करने	ढालने वाली	किर्तितियों पर	कुण्ठा, संक्रास
	वाली कहानियां	वाली कहानियां	कहानियां	प्रहार करने वाली	को चित्रित
				कहानियां	करने वाली
					कहानियां

(1) पीढ़ियों के संघर्ष को चित्रित करने वाली कहानियाँ :-

स्वतंत्र्योत्तर काल में एक प्रवृत्ति बहुत उमर कर सामने आई है-- पीढ़ियों का संघर्ष । वस्तुतः संक्रमण काल में पुराने प्रतिमानों के स्थान पर नये मूल्यों का उभरना स्वाभाविक ही है । पुरानी पीढ़ी नये मूल्यों को, नवीन प्रवृत्तियों को बहुत अविश्वास और आशंका की दृष्टि से देख रही है । ऐसी स्थिति में दोनों पीढ़ियों में संघर्ष होना स्वाभाविक है, जिसका अन्त पुरानी पीढ़ी की पराजय ही है । कहीं-कहीं संघर्षों को जबरन ढोया भी जा रहा है । स्वतंत्र्योत्तर कालीन कथाकार प्रायः नई पीढ़ी के ही हैं इसलिए पीढ़ियों के संघर्ष का चित्रण बहुत बेबाकी के साथ किया है । इस वर्ग में निम्नलिखित कहानियाँ को रखा जा सकता है :---

यह मेरे लिए नहीं (धर्मवीर मारती), पास-फौल-(राजेन्द्र यादव), जंगला-(मोहन राकेश), देवा की मां-(कमलेश्वर), सुबह होने तक-(सुरेश सिन्हा), एक अविवाहित पृष्ठ-(सुधा जरोड़ा), पीढ़ियाँ-(राजेन्द्र यादव), कील-(महीप सिंह), खास पाहुना -(सुदर्शन चौपड़ा), सीसीफस-(मणि मधुकर), बीच का दरवाजा-(कृष्ण बल्देव वैद), शीर्षकिहीन-(गंगा प्रसाद विमल), सण्डित कथा-(सुदर्शन चौपड़ा), कलह-(ज्ञानरंजन), चूहे-(गिरिराजकिशोर), बाप-बेटी-(भीष्म साहनी), रक्तपात-(दूधनाथ-सिंह), संघर्ष-(ज्ञान रंजन), पुरानी और नई लकीरें-(सोमा वीरा), रिश्ता-(गिरिराज किशोर), दायरा-(राम कुमार), इन्तजार-(सुदर्शन-चौपड़ा), शेष होते हुए-(ज्ञान रंजन), जहाँ लक्ष्मी कैद है तथा बिरादरी बाहर-(राजेन्द्र यादव), कटघरे-(भीष्म साहनी), दूसरे का मोग-(गंगा प्रसाद विमल), एसाने वाकाश-नाई-(मन्मू ढंढारी), बाया गीत गा रही थी-(रमेश बदा), सुरंग-(उष्मा प्रियंवदा), एक सेंटीमेंटल डायरी की मौत -(सुधा जरोड़ा) आदि कहानियाँ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं ।

(2) परिवर्तित परिवेश में दाम्पत्य संबंधों को चित्रित करने वाली कहानियाँ:-

स्वातंत्र्योत्तर परिवेश ने व्यक्ति को प्रभावित किया है, संबंधों को भी प्रभावित किया है। दाम्पत्य संबंध भारतीय समाज के चिरन्तन विश्वास और वास्था के द्योतक माने जाते हैं। 'विवाह' और 'संयोग' तो ऊपर वाला ही बनाता है, इस धारणा से ग्रसित भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता के पश्चात एक बिल्कुल नई चेतना ने जन्म लिया है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रगतिशीलता के कारण पति परमेश्वर की परिकल्पना को तो थक्का लगा ही है साथ ही पत्नी की आत्म-निर्भरता ने पति को नवीन ढंग से सोचने को बाध्य किया है। इन सब स्थितियों का चित्रण करने वाली कहानियाँ निम्नलिखित हैं:---

सावित्री नं०-2-(धर्मवीर भारती), अनबीता व्यतीत- (नरेश मेहता), टूटना- (राजेन्द्र यादव), ग्लास टैंक-(मोहन राकेश), तीसरा बादमी-(मन्नू भंडारी), ये दोनों- (विजय मोहन सिंह), एक कमजोर लड़की की कहानी-(राजेन्द्र यादव), तीन चार दिन- (महेन्द्र मल्ला), छरी हुई औरत - (रवीन्द्र कालिया), नौ साल छोटी पत्नी- एक प्रामाणिक फूठ- (रवीन्द्र कालिया), बाबूरी-रात-(काशीनाथ सिंह), धीरे धीरे दण्डा- (महीप सिंह), साथ-(श्रीकान्त वर्मा), हास्य रस- (ज्ञान रंजन), सुखान्त- (दुधनाथ सिंह), प्रायश्चित्त-(शिवप्रसाद सिंह), अंधेरे में- (निर्मल वर्मा), दृष्टि-दोष-(उष्मा प्रियंवदा), एक और जिन्दगी-(मोहन राकेश), पैचा- (सुदर्शन बोपड़ा), अलग और बिपरीत-(रमेश उपाध्याय) आदि कहानियाँ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं।

(3) प्रेम के बदलते हुए मानदण्डों को चित्रित करने वाली कहानियाँ:-

स्वातंत्र्योत्तर काल ने जिसे नई चेतना का विकास हुआ, उसमें नारी का एक सशक्त अवस्था विकसित हुआ है। वह आज आर्थिक रूप से

स्वाकलम्बी बन गयी है इसलिए आज उसका एक स्वतंत्र अस्तित्व बन गया है। नारी के इस स्वतंत्र अस्तित्व का प्रभाव जहाँ दाम्पत्य संबंधों पर पड़ा वहीं प्रेम संबंधों पर भी इसका प्रभाव पड़ा। प्रेमी और प्रेमिका दोनों ही अपने अस्तित्व को मिटाना नहीं चाहते उसके प्रति प्रत्येक क्षण सचेत रहते हैं, फिर भी प्रेम को बनाये रखने के लिए वे एक दूसरे के साथ सामंजस्य बनाये रखना चाहते हैं किन्तु उस विशेष बिन्दु को वे दोनों पार नहीं करना चाहते। यह प्रेम का नया यथार्थ आज की कहानियों में उभर कर आया है----। निम्नलिखित कहानियाँ इसी वर्ग की कहानियाँ हैं :---

लक्ष्मी परिन्दे *- (निर्मल वर्मा), बासना की छाया में- (मोहन राकेश), यही सच है- (मन्नू मंडारी), तीसरा गबाह- (निर्मल वर्मा), छोटे-छोटे ताजमहल- (राजेन्द्र यादव), पाँचवे माले का फ्लैट- (मोहन राकेश), गन्ध- (महीप सिंह), एक कमजोर शास- (सुरेश सिन्हा), एक कमजोर लड़की की कहानी- (राजेन्द्र यादव), वे दोनों- (विजय मोहन सिंह), परछाइयाँ- (गिरिराजकिशोर), प्रतिपदा- (मणिमधुकर), ऊँचाई- (मन्नू मंडारी), ग्लास टैंक- (मोहन राकेश), दृष्टि-दोष- (उषा प्रियंवदा), बंधे में- (निर्मल वर्मा), मग्नप्राचीर- (शिवप्रसाद सिंह), टेबुल- (फणी- श्वरनाथ रेणु), मिस पाल- (मोहन राकेश), बन्द दरवाजों के साथ- (मन्नू मंडारी), एक कमजोर लड़की की कहानी- (राजेन्द्र यादव), कोई नहीं- (उषा-प्रियंवदा), लुले पल टूटे हैं- (राजेन्द्र यादव), धीरे धीरे क्षण- (महीप सिंह), त्रिकोण- (कृष्ण बल्देव वैद) आदि कहानियाँ इस वर्ग में रखी जा सकती हैं।

(4) निम्नवर्गीय जीवन पर दृष्टि डालने वाली कहानियाँ:

मानव समाज के विकास की धुरी निम्नतम वर्ग है। युग की समस्त संभावनाओं का निष्णातिक सबंधारा है। अतः उसे साहित्य से रचित

रखा कर जो साहित्य रचा जायेगा वह युग की सर्वोच्च नैतिकता और युग की सारी अतिरिक्त शक्ति से रहित और सोसला होगा। नये कहानीकार ने इस तथ्य को ध्यान में रखा है और उसने निम्न वर्ग को भी अपनी कहानियों का विषय बनाया है। इस निम्न वर्ग में वह व्यक्ति तो है ही जो शारीरिक श्रम से प्रतिदिन अपनी जीविका के लिए धन अर्जित करता है साथ ही भारतवर्ष का एक निम्नतम वर्ग वह भी है जो अपनी जीविकोपार्जन लोगों के सम्मुख अपनी विचित्र कलात्मक विशेषताओं को प्रस्तुत करके देखता है। इस वर्ग में निम्नलिखित कहानियाँ रखी जा सकती हैं :---

‘बार-बार की माला’-‘सपेरा’-‘पाप-जीवी’-‘बिन्दा महाराज’ : (शिव प्रसाद सिंह), रस-प्रिया- (फणीश्वरनाथ रेणु), दो दुःखों का एक सुख- (शैलेश मटियानी), तीसरी कसम उर्फ मारें गये गुलफाम- (फणीश्वरनाथ रेणु), डब्लू मर्ल - रहमतुल्ला- (शैलेश मटियानी), अपने-अपने बच्चे- (मीष्म साहनी), गुलदुपहरिया के पौधे- (हृदयेश), इन्हें भी इन्तजार है- (शिव प्रसाद सिंह), मटकती रात- (मीष्म साहनी), जिन्दगी और जॉक- (अमरकान्त), सेलर- (राम कुमार), मन्दी- (मोहन राकेश), अन्धकूप- (शिव प्रसाद सिंह), एक दिन- (हृदयेश), हँसा जाह अकेला- माही- डूब और दबा - (मार्कण्डेय), बदबू-समर्पण- (शैलेश जोशी) इत्यादिक कहानियाँ इसी वर्ग की हैं।

(5) सामाजिक रुढ़ियों पर, सामाजिक किसंगतियों पर प्रहार करने वाली कहानियाँ:-

स्वातंत्र्योत्तर काल में सामाजिक किसंगतियों, सामाजिक रुढ़ियों पर नये कहानीकार ने कटु प्रहार किये। यह किसंगति चाहे धार्मिक पाखण्ड जनित हो जैसे विधवा का दारुण जीवन या अर्धजन्य बिकसता हो- देखने से

पीड़ित परिवार या मद्यपान से उत्पन्न कटु वातावरण हो, सबको नये कहानीकार ने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। केशवावधि की समस्या हो यौनाचार की या किशोर अपराध की सभी स्वार्तन्त्र्योत्तर कहानी का वण्य विषय बनी है :---

* दुनिया बहुत बड़ी है--(कमलेश्वर), बेहया--(शिव प्रसाद सिंह), तस्वीर--(भीष्म साहनी), दूसरे का भोग-- (गंगा प्रसाद विमल), रैसा का माग्य--(राजेन्द्र किशोर), लकड़हारा--(राजेन्द्र यादव), सब ठीक हो जायेगा-- (दूधनाथ सिंह), बिना दीवार का घर-- (शिव प्रसाद सिंह), चांद चलता रहा-- (उष्मा प्रियंवदा), मांस का दरिया--(कमलेश्वर), काला रोजगार-- (मोहन राकेश), कटघरे में--सांस-- (मणिमधुकर), वासना की छाया में-- (मोहन राकेश), त्रास-- (सेठराध्यात्री), एक स्थिति-- (रामकुमार), नया-मकान--(भीष्मसाहनी), कुँआरी--(निर्मल वर्मा), तीन चार दिन-- (महेन्द्र मल्ला), अरुन्धती -मग्न प्राचीर--(शिव प्रसाद सिंह), रानी माँ का चबूतरा-- (मन्नू मंडारी), पति परमेश्वर-- (राजेन्द्र किशोर), वेतन के पैसे-- (महीप सिंह), रचना प्रक्रिया-- (ज्ञान रंजन), गलत पते पर-- (रमेश उपाध्याय), पगहंडिया--(गिरिराज किशोर), एक बदबूदार गली--(कृष्ण बल्देव वैद), सितम्बर की एक शाम-- (निर्मल वर्मा), टूटे तारे--(शिव प्रसाद सिंह), नये बादल गुनाह बेलज्वर-- (मोहन राकेश), गीता सहस्रत्र नाम-- (भीष्म साहनी), संस्था के पार - (मन्नू मंडारी), कितना बड़ा फूँट-- (उष्मा प्रियंवदा), दुनिया बहुत बड़ी है--(कमलेश्वर), किराये का काम-- (राजेन्द्र यादव), जहाँ लक्ष्मी कैद है-- (राजेन्द्र यादव), प्रेमिका-- (कमलेश्वर) इत्यादि कहानियाँ इस वर्ग में आ सकती हैं।

(6) बेकारी, मल्लवाई से उत्पन्न कुण्ठा, संत्रास को चित्रित करने वाली कहानियाँ:-

पुराने और नये कहानीकार के अलगाव बिन्दु को रेखांकित करते हुए विजय मोहन सिंह ने लिखा है--*पुराना कहानीकार समस्याओं

को सुलझाता था क्योंकि वह समस्याओं से बाहर होता था। वह उन्हें सुलझाना अपना कर्तव्य समझता था लेकिन आज का कहानीकार समस्या के भीतर है इसलिए उसे सुलझाता नहीं 'सफर' करता है। तब वह इस अर्थ में 'सामाजिक' कैसे हो सकता है—एक मूल से मरता हुआ 'इन्सान' और असामाजिक है क्योंकि वह मूल से मरने के अलावा समाज के विकास में कोई योग नहीं देता¹। वस्तुतः नए कहानीकार ने स्वतंत्रता के पश्चात् की स्थितियों को मोगा है क्योंकि अधिकांश कहानीकारों ने स्वतंत्रता के पश्चात् अपने नेत्र खोले हैं, उन्होंने मूल से सिकुड़े हुए पेट देखे हैं, उन्होंने बेकारी की स्थिति में उद्भ्रान्त व्यक्ति को देखा है, उन्होंने पैसे के लोभी व्यक्ति को बिकते हुए देखा है, इज्जत को देखा है। स्वतंत्रतायुक्त युग की अधिकांश कहानियों में बेकारी-बोध के दर्शन होते हैं, उसकी प्रतिक्रिया से उत्पन्न अजनबीपन, आत्महीनता, कुण्ठा, संत्रास, सोस्लेपन के दर्शन भी स्वतंत्रतायुक्त काल में लिखित कहानियों में होते हैं--- इस वर्ग में निम्नलिखित कहानियाँ आती हैं :---

मन्दी- (मोहन राकेश), जिन्दगी और गुलाब के फूल-(उष्मा प्रियंवदा), नया जन्म-(सुरेश सिन्हा), वासक्ति-(कमलेश्वर), राज की तरह-(रमेश उपाध्याय), इण्टरव्यू-(अमरकान्त), स्कावासी-(दुषनाथ सिंह), छोटे शहर के लोग-(हृदयेश), चाल-(रवीन्द्र कालिया), आतिरी रात-(काशीनाथ-सिंह), बेकार आदमी-(कमलेश्वर), मान्य रेला-(मीष्म साहनी), मिस्टर माटिया-(मोहन राकेश), बयान-(कमलेश्वर), *मविष्य बक्ता नये-नये बाने वाले* गुनाह बेलज्जत-*पाँचदे माले का फ्लैट*-(मोहन राकेश), खलनायक- ह्रिपल्ली-(अमरकान्त), सितम्बर की एक शाम, कुत्ते की मौत-(निर्मल बर्मा), सेलर, एक चेहरा-(राम कुमार), खोई हुई दिशाएं-(कमलेश्वर), सुशबू-(राजेन्द्र यादव)

- 1- परिवर्तन की प्रक्रिया- विजय मोहन सिंह- समकालीन कहानी : दिशा-
बीर दृष्टि से उद्भूत- संपादक- डा० धर्मजय, पृ०-129 ।

सिमिट्री- (रामकुमार), बदबू- (शैलर जोशी), एक वन्यकूप- (शिव प्रसाद सिंह), छिप्टी कलहारी- (अमरकान्त), राज की तरह- (रमेश उपाध्याय), हत्यारे- (अमरकान्त), एक काला दायरा- (मार्कण्डेय), नीराजना- (राजेन्द्र यादव), एक दिन- (हृदयेश) इत्यादि कहानियाँ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं ।

यह वर्गीकरण बिल्कुल पूर्ण अंतिम नहीं कहा जा सकता क्योंकि हमारा अभीष्ट शोध के विषय के माध्यम से कहानियों को वर्गीकृत करना था, न कि नई कहानी का सूक्ष्मतम विवेचन करना, इसीलिए यहाँ शिल्प पक्ष को बिल्कुल छोड़ दिया गया है क्योंकि इससे विषय के विस्तृत होने का भय है ।

यदि सन्तुलित दृष्टि से देखा जाय तो उपर्युक्त वर्गीकरण में सभी प्रकार की कहानियाँ को स्थान मिला है । फिर भी यह वर्गीकरण अंतिम नहीं कहा जा सकता । इसका कारण है कि आधुनिक हिन्दी कहानी ने पर्याप्त उन्नति कर ली है । स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी में कहानियाँ केवल विनोद के लिए लिखी जाती थीं । उनका साहित्यिक मूल्य क्षीण न था परन्तु कृमशः कहानी के कथ्य और शिल्प में विकास होता गया और धीरे-धीरे कहानी भी एक साहित्यिक रूप की श्रेणी में जा गई । आज के परिवेश में, जीवन संबंधी जटिलताओं में कहानी को भी नये-नये परिवेश में बदल कर सामने आना पड़ रहा है । उसका कार्य-विषय बदल गया है । वर्गीकरण के कठघरे में वस्तुतः कहानी को सड़ा नहीं किया जा सकता क्योंकि कहानी कोई स्थिर विधा नहीं है । वह विकास के पथ पर है और विकास की कोई सीमा नहीं है । डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा का मत उचित ही है--* इसलिए वह (शैलीगत वर्गीकरण) किस सीमा तक परिमित हो रहेगा, पर प्रतिपाद्य पक्ष को लेकर चलने वाला वर्ग-विभाजन आना प्रकार

का हो सकता है । वतएव उसका रूप-विस्तार अनिर्यक्ति हो उठता है ।
 उसके कर्णिकरण में विचारक स्वतंत्र रहता है । जिस ढंग को भी चाहे
 वह स्वीकार करे और जिस स्थूल और सूक्ष्म पद्धति को चाहे अपनाये¹ ।*

1- डा० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा : हिन्दी कहानियाँ-(एक बालोचनात्मक
 अध्ययन) से उद्धृत : डा० श्री कृष्ण लाल, डा० नैमिचन्द्र जैन, पदम-
 बुक कम्पनी, जयपुर, पृ०-६९ ।

स्वातन्त्र्योत्तर कहानी के कहानीकार :

स्वातन्त्र्योत्तर कहानी जिसे 'नयी कहानी' से पुकारा गया, वस्तुतः बदले हुए परिवेश की कहानी है। 'नयी कहानी' शब्द का प्रथम प्रयोग 1950 में प्रकाशित श्री शिवप्रसाद सिंह की कहानी 'दादी माँ' में निर्दिष्ट किया गया¹। इसलिए नयी कहानी का प्रारंभ शिवप्रसाद सिंह से माना जा सकता है। किन्तु अनेक कथाकार ऐसे हैं जिन्होंने इस नयी कहानी अथवा स्वातन्त्र्योत्तर कहानी के विकास में उसके गठन में अपना भरसक योग दिया है जैसे--- यशपाल, अश्व, उपेन्द्रनाथ अहक, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, भावती चरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर वादि। ये लेखक पहले ही स्वतंत्रता से पहले तथा प्रेमचन्द युग के बाद से ही कहानियाँ लिखते आ रहे हैं किन्तु स्वतंत्रता के बाद भी नये परिवेश के नये तैवरों की पहचान कर भी उन्होंने अपनी कहानियाँ लिखी हैं। इसीलिए इनमें से सक्की तो नहीं किन्तु कुछ कहानीकारों की कहानियों को इस शोध ग्रन्थ के विभिन्न अध्यायों में लिया गया है। इसलिए इन कहानीकारों का परिचय इस अध्याय में देना भी समीचीन होगा।

यशपाल: यशपाल के प्रमुख कहानी संग्रह हैं--'पिंजरे की उड़ान', 'बो दुनिया', 'तर्क का लूफांग', 'ज्ञानदान', 'अभिशात', 'मस्माबुत चिन्मारी', 'फूलों का कुर्सी', 'धर्मयुद्ध', 'उत्तराधिकारी', 'चित्र का शीर्षक', 'तुमने क्यों कहा था कि मैं सुन्दर हूँ', 'उत्तमी की माँ', 'बो मैरवी', 'सच बोलने की मूल', 'खज्जर और बादमी'। यशपाल की मर्मभेदी दृष्टि केवल सामाजिक अत्याचारों, विमीशिकाओं, कुरूपताओं,

-
- 1- सूर्य प्रकाश कीर्तिदात- नयी कहानी अकहानी और सचेतन कहानी, हिन्दी कहानी : दो बरस की यात्रा- सं०- ८१० रामवरस मिश्र, ८१० नरेन्द्र मोहन पृ०-188, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2135-बन्सारी रोड, दरियार्गव, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970।

वर्षाविरवासी, धार्मिक आर्थिकों तथा नैतिक वाचरणों का साहित्य के माध्यम से मग्न प्रदर्शन करने तक ही सीमित नहीं होती बल्कि वह उन पर कठोर प्रहार करती है। वाधुनिक होने के कारण उनकी रुचि अतीत से पूर्ण भिन्न है।

‘रौटी का मोल’, ‘मक्की या मक्की’, ‘महादान’ आदि कहानियों में वर्ग वैषम्य का चित्रण है जबकि ‘दर्पण’, ‘दो मुँह की बात’, ‘ज्ञान दान’, ‘पराया सुत’, ‘जबरदस्ती’ आदि कहानियों में नारी समस्या और यौन समस्या को चित्रित किया गया है। ‘सच्चा और आदमी’, ‘भिठो के आँसू’, आदि कहानियों में परम्पराओं और हठियों का विरोध किया गया है।

जैनेन्द्र:--- (जन्म- 1905)-- जैनेन्द्र ने मुख्यतः मनोवैज्ञानिक आधार पर अपनी कहानियाँ लिखी हैं। इन मनोवैज्ञानिक कहानियों के पात्र अन्तर्मुखी घात प्रतिघात अन्तर्द्वन्द्व से युक्त हैं। ये पात्र शक्तिशाली होने पर भी परिस्थितियों के दबाव में आकर कोमल हो जाते हैं। ‘तत्सत्’ दार्शनिक आधार पर लिखी कहानी है तो ‘जय सन्धि’ राजनीतिक आधार पर लिखी कहानी है तो ‘मास्टर जी’ कहानी जैनेन्द्र ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर लिखी है। ‘क्या हो’, ‘मत्नी’, ‘ग्रामीफोन का रिकार्ड’ उनकी अनुसूतिपरक कहानियाँ हैं।

‘बाताका’, ‘नीलम देश की राजकन्या’, ‘दो बिड़िया’, ‘स्यदा’, ‘पुन-यात्रा’, ‘पापेव’, ‘एक दिन’, ‘कॉसी’ और ‘जयसन्धि’।

बंश:- बंश के कहानी संग्रह हैं--'विपत्तियाँ', 'परम्परा', 'ज्यदोल', 'ये तेरे प्रतिरूप', 'कोठरी की बात', 'अमर वस्त्रों तथा अन्य कहानियाँ', 'होड़ा हुआ रास्ता', 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से जितनी भी सामाजिक नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामुदायिक समस्याओं को उठाया है उन सभी का अध्ययन उन्होंने व्यक्तिगत पहलुओं के आधार पर करने का प्रयत्न किया है। किन्तु बंश की धीरे व्यक्तिवादी नहीं हैं इसीलिए उन्होंने सामाजिक यथार्थ से कथानक लेकर उसे प्रगतिवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। 'गैंग्रीन' या 'राज' उनकी बहुचर्चित कहानी है जिसमें एक स्त्री की ऊब, एकाकीपन को चित्रित किया गया है। वह सारे कामों को प्रतिदिन एक ही तरह से दोहराती है उसमें वह कर्तव्य की भावना का अनुभव नहीं करती।

'सितीन बाबू', 'सायं', 'बदला', 'वे दूसरे', 'जीवन शक्ति', 'होली- बॉन् की बत्तें', आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

मगवतीचरण वर्मा :- मगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ 'सिलते फूल', 'इन्स्टालमेंट', 'दो बकि' आदि संग्रहों में संगृहीत हैं।

वैचारिक दृष्टि से वे बुद्धिवादी हैं अतः ज्ञान के अतिरिक्त किसी अन्य देवता पर वे विश्वास नहीं करते। किसी कहानी में उन्होंने वर्तमान सभ्यता और आधुनिक समाज के सौसल्येपन पर प्रहार किया है, किसी में नारी जीवन के टूटे फूटे संबंधों को उभारा है। शौणिक वर्ग के अत्याचार अनाचार एवं शौणिक वर्ग की कारुणिक अवस्था भी उनकी कहानियों का विषय बनी है। 'सिसकन' कहानी में नारी की सिसकियाँ हैं 'तो प्रवेन्ट', 'उत्तरदायित्व' में आधुनिकता पर व्यंग्य किया गया है।

1- गैंग्रीन- बंश-- मेरी प्रिय कहानियाँ-- पृ०-38, राजपाठ रंठ सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1975।

प्रायश्चित्त, *दो बक्के*, *मुंगलों की सस्तनत बस्ती दी* उनकी सफल व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ हैं। हास्य एवं मनोरंजन सदैव उनके साथ रहता है और दृष्टांत देने में वे पूर्ण पारंगत हैं।

उपेन्द्रनाथ अशक:- इनके कहानी संग्रह हैं--*ऊँकुर*, *पिंजरा*, *छीटे*, *काले साहब*, *जादुई शाम का गीत*, *झान का पीथा*, *कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुत्र*, *पलंग*, *वाकाशचारी*, *उबाल और अन्य कहानियाँ*।

उपेन्द्रनाथ अशक ने अपनी कहानियों के विषय समाज के निम्न मध्यवर्ग अथवा निम्नवर्ग से चुने हैं। इसीलिए उनकी कहानियों में समाजगत विह्वलनाओं, कुप्रथाओं, कुरीतियों, कुसंस्कारों एवं विभीषिकाओं का उन्मुक्त चित्रण हुआ है। *अमर सौज*, *माया*, *पिंजरा*, *दो जाने की मिठाई*, *माई*, *माँसी*, *कुलाँब*, *निशानियाँ*, उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

विष्णु प्रभाकर:- विष्णु प्रभाकर के प्रमुख कहानी संग्रह हैं--*वादि और अन्त*, *रहमान का बेटा*, *जिन्दगी के थपेड़े*, *संघर्ष के बाद*, *भरती अब भी घूम रही है*, *मेरी प्रिय कहानियाँ* वादि।

विष्णु प्रभाकर ने मानवतावादी कहानियाँ लिखी हैं। द्वितीय विश्व महायुद्ध के बाद की वीमत्सता, हिंसा, अकाल, नारकीयता का चित्रण बिना किसी घृणा के साथ विष्णु प्रभाकर ने सफलता के साथ किया है। इस चित्रण में गहन संवेदना समाहित है। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक सभी प्रकार की कहानी लिखी हैं। ये आधुनिक बोध के भी सशक्त कहानीकार हैं।

शरीर से परे, *गृहस्थी*, *बहुरी कहानी*, *बाब्रिता*, *रहमान का बेटा*, *ढोलक पर थाप*, *भरती अब भी घूम रही है* वादि आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

: नये कहानीकार :

शिव प्रसाद सिंह:- (जन्म- 1929)- शिवप्रसाद सिंह सन् 50 के बाद के कहानीकारों में प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी कहानियों में बीच की दीवार*, *सैरा पीपल कमी न डोले*, *बरीकरणा*, *शासामूल*, *बरागद का पेड़*, *जंकूप*, *सुबह के बादल*, *कमीनाशा की हार*, *प्रायश्चित्त*, *केवड़े का फूल*, *शहीद दिवस*, *बिन्दा महाराज*, आदि कहानियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में परिवार के भीतर के अन्तर्व्यक्तिक संबंध उभरते हैं जिनमें वे नये मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। उनकी कहानियों में तनाव और तीक्ष्ण दर्द होता है। *बार-बार की माता*, में उन्होंने इस अवस्था के प्रति तीक्ष्ण व्यंग्य व्यक्त किया है जो जीवन में जड़ता उत्पन्न करती है। शिवप्रसाद सिंह की रचनाओं में रोमांटिक यथार्थ, युगीन संक्रमण, युगीन अस्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रश्नबिह्न किन्तु साथ ही उनकी अंतिम परिणति आरोपित आदर्श के बोझ से लदी हुई मिलती है। नई पीढ़ी को उत्तरदायित्वहीन रूप में चित्रित करने के साथ-साथ लेसक पुरानी पीढ़ी को श्रद्धा की दृष्टि से देखता है। सजीव वातावरण चित्रित करने में शिवप्रसाद सिंह जी कुशल हैं। *सुबह के बादल* में दीनू स्वतंत्र भारत में जन्मी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से करता है। शिवप्रसाद सिंह मनुष्य के प्रति प्रतिक्रम हैं। उनकी कहानियों में व्यक्ति की संवेदना का बारीकी के साथ चित्रण सजीव पात्रों की सृष्टि, जीवन के प्रति आश्वासन, अनास्था के बीच आस्था आदि विशेषतः दृष्टिगोचर होती हैं। पारिवारिक अंतर्विरोधों के अतिरिक्त उन्होंने ग्राम जीवन की क्लिष्टताएँ, राजनीति के कुप्रभावों और उनके बीच व्यक्ति की विवशता को भी अपनी कहानियों में उभारा है। *नन्हों* इसका सुन्दर उदाहरण है। शिवप्रसाद सिंह के कहानी संग्रह हैं--

-
- 1- सुबह के बादल-- शिवप्रसाद सिंह- इन्हें भी इन्तजार है-- पृ०-87,
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी- प्रथम संस्करण- 1961।

कर्मनाशा की हार (1958) *इन्हें भी इन्तजार है* (1961)

पुरवा सराय (1966) ।

नरेश मेहता:- (जन्म - 15 फरवरी- 1921)- कहानी दोत्र में

 नरेश मेहता कवि व्यक्तित्व लेकर आए । *तथापि* (1951) कहानी
 संग्रह के बाद उन्होंने कहानीकारों की पंक्ति में भी अपना स्थान बना
 लिया । उनकी कहानियों में स्थान-स्थान पर कवि अनुभूतिशीलता लक्षित
 होती है जिसके प्रमाण - *एक समर्पित महिला* (1967) की कहानियों
 तक में मिलते हैं । कहानी को सूक्ष्म से सूक्ष्मतर बनाने, संश्लिष्ट चरित्रों
 के विधान एवं कथानक के ट्रास तथा कथा-सूत्रों की विवर्धनता, अपूर्व
 प्रतीक विधान एवं व्यंजना रूपों का अधिक्य आदि विशेषताओं को नरेश
 मेहता ने अपनी कहानियों में समाहित किया और *नई कहानी* का
 सशक्त प्रतिनिधित्व किया । वे कहानी को अभिव्यक्ति मानते हैं - घटना
 मात्र नहीं । वाज की कहानी फामूला या सोदेश्य- कहानी कला से आगे
 बढ़ चुकी है । नरेश मेहता का दृष्टिकोण ऐसे तो आत्मपरक है किन्तु
 उनकी सबसे अच्छी कहानियों में वे हैं जो उन्होंने जीवन का यथार्थ लेकर
 लिखी हैं । इनमें *किसका बेटा* , *पुगी* और *बह मर्द थी* महत्वपूर्ण
 कहानियाँ हैं । इन कहानियों को पढ़ कर मानव-जीवन के यथार्थ को
 पहचानने की उनकी अन्तर्दृष्टि एवं उसके परिवेश को अभिव्यक्ति देने
 की उनकी समर्थता का परिचय प्राप्त होता है । उसमें आपक मानव जीवन
 के परिप्रेक्ष्य को संस्पर्श देकर आधुनिकता के नवीन आयामों को उभारने की
 चेष्टा की गई है । उनकी आत्मपरक दृष्टिकोण को लेकर लिखी गई
 कहानियाँ हैं-- *निरा जी* , *बादनी* , *अनधीता अतीत* और
 एक इति श्री इत्यादि । ये ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें व्यक्ति है और
 उसकी मनःस्थितियाँ हैं, उसकी प्रतिक्रियाएँ हैं-- जिन्हें सूक्ष्म अभिव्यक्ति
 देने में नरेश मेहता ने अपूर्व कुशलता दिखाई है । नरेश मेहता की कहानियाँ

में जीवन का झूल पड़ा या बिराटता का बोध चाहे न प्राप्त होता हो किन्तु उन्होंने निष्ठा, गरिमा और मर्यादा का संतुलित चित्रण किया है। अपने पात्रों को उन्होंने पूर्ण सहानुभूति दी है और उन्हें उचित संगति में प्रस्तुत किया है।

धर्मवीर भारती :- (जन्म- 1926)-- डा० धर्मवीर भारती आधुनिक सामाजिक संवेदना के नये कहानीकार हैं। वे नई पीढ़ी के उन कहानीकारों में हैं जिन्होंने निम्न मध्यम वर्ग के जीवन को लेकर आधुनिक कहानी को उसके वास्तविक अर्थ की गरिमा दी है। 'चांद और टूटे हुए लोग' (1967) नामक प्रथम कहानी संग्रह की 'धुंवा', 'मरीज नंबर सात', 'हरिनाकुल का बेटा' तथा बाद की 'गुलकी बन्नी', 'साथित्री नम्बर दो', 'यह मेरे लिए नहीं', तथा 'वन्द गली का आखिरी भ्रम' (1969) आदि कहानियाँ कथ्य एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से उल्लेखनीय रचनाएं हैं। उनकी अन्य उल्लेखनीय कहानियाँ 'मुदों का गाँव', 'कुलटा', 'चांद और टूटे हुए लोग' हैं।

भारती मूलतः कवि हैं और इसलिए उनकी कहानियाँ में भी संवेदनशीलता और काव्य रस सहज स्वाभाविक रूप से व्याप्त हो गया है। चित्रोपम प्रवाहपूर्ण भाषा, बूझी व्यंजनावीं एवं प्रतीक विधानों के माध्यम से उन्होंने प्रगतिशील आधारभूमि पर आधुनिक जीवन की कल्पना, व्यथा एवं विसंगतियों का बूझा चित्रण किया है। भारती की कहानियाँ में नैराश्य एवं कुच्छा की सतही दीवारों की पृष्ठभूमि में जीवन जीने की बदम्य वाकान्क्षा, अपूर्व जिजीविषा, वास्था एवं संकल्प का संकल प्राप्त होता है। नगर का मध्यमवर्गीय जीवन भारती की कहानियों की परिधि है और व्यक्ति की गरिमा की स्थापना उनकी विशेषता। व्यक्ति को उन्होंने समाज के संदर्भ में ही देखा है। उन्होंने मध्यम और निम्नमध्यम वर्ग का टूटता हुआ, भितरता हुआ और कुठन भरा जीवन देखा है, उसकी आशा निराशा देसी है। उनकी कहानियों में मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना, जीवन मूल्यों की सृज,

वायुनिक परिवेश में बनते बिगड़ते संबंध आदि का स्वर, मूल स्वर है। व्यक्ति और समाज के विविध पदार्थों का उन्होंने उद्घाटन किया है किन्तु वास्था-वनास्था, आशा-निराशा, विद्रोह और उदासीनता के बीच डूबते उतराते व्यक्ति को वे वस्तु में नियति के हाथों सौंप देते हैं। 'बाँद और टूटे हुए लोग' नामक प्रथम संग्रह के बाद 'बन्द गली का आखिरी मकान' (1969) उनका एक महत्वपूर्ण संग्रह है जिसमें 'सावित्री नंबर दो', 'बन्द गली का आखिरी मकान', 'गुल की बन्नो' जैसी प्रसिद्ध कहानियाँ संग्रहित हैं।

मोहन राकेश:- (जन्म- 1925- मृत्यु- दिसम्बर 1972)--

'इन्सान के खँडहर' (1950) 'नये बादल' (1957), 'फौलाद का आकाश' (1966), 'एक एक दुनियाँ' (1969), 'बाज के साये', 'क्वार्टर', 'वारिस', 'एक और जिन्दगी', 'मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि मोहन राकेश के प्रमुख कहानी संग्रह हैं। सन् 1950-60 में वे नई कहानी के प्रमुख वक्ताओं में रहे हैं; उनकी कहानियों का धरातल मुख्यतः वै निर्वैयक्तिक सामाजिक शक्तियाँ हैं जिनका मूल केन्द्र व्यक्ति है। उनकी कहानी कला व्यक्ति को उसके यथार्थ परिवेश में देखने की आग्रहीलता को लेकर निर्मित हुई है। उन्होंने व्यक्ति और समाज का कोई विभाजन नहीं किया है और न यथार्थ विमुख होकर व्यक्ति के स्वत्व की प्रतिष्ठा के लिए सामाजिक सन्दर्भों की उपेक्षा की है।

मोहन राकेश की प्रमुख विशेषता मनुष्य को उसके परिवेश में देखने की यथार्थ दृष्टि है। उनके अनुसार मनुष्य 'पूरे' को एक साथ नहीं देख पाता। मोहन राकेश की कहानियों में वास्था एवं संघर्ष स्वानुभूति के स्तर पर छाकर प्रस्तुत किया गया है। 'मलबे का पालिक' कहानी में भारत पाकिस्तान के कृत्रिम विभाजन तथा लोगों के उजड़े हुए जीवन में पीड़ित अनुभूतियों को एक गिरे हुए मलबे के रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

1- मलबे का पालिक- मोहन राकेश- श्रेष्ठ कहानियाँ, नये कहानीकार, संपादक- राजेन्द्र यादव, पृ०-47, राध्याल एंड संस, करबीरी गेट, दिल्ली तृतीय संस्करण- 1970।

मानवी संस्कृति, मुख्य मयदियारं वादि जब मलवे के रूप में ढह जाती हैं तो एक कुत्ता ही उसका मालिक बन जाता है । 'परमात्मा का कुत्ता' में निष्क्रियता को क्रियाशीलता से पराजित दिखाया गया है । 'हक ल्हाल', 'मन्दी', 'बातिरी सामान', 'उसकी रौटी', 'काहा रोजार', वादि कहानियों में व्यक्ति की मनःस्थिति का उजागर करने का यत्न किया गया है । 'बातिरी सामान', 'गुनाहे बेलज्जत', 'ऊमिल जीवन', 'पांचवे माले का फ्लैट' वादि कहानियों ऐसी हैं जिनमें मूल स्वर सैक्स है जबकि 'मिस पाल', 'सुहागिमें', 'सीमारं', 'जीनियस', 'वाट्रा' वादि कहानियों में चरित्र विश्लेषण को प्रमुखता दी गई है । इस प्रकार मोहन राकेश ने समाज के विभिन्न पदार्थों को अपनी कहानी का विषय बनाया है ।

कमलेश्वर :- (जन्म- 6 जनवरी 1932)-- कमलेश्वर के प्रमुख कहानी संग्रह हैं-- 'राजा निर्बंसिया', 'कस्के का आदमी', 'लौई हुई दिशारं' तथा 'ब्यान' । कमलेश्वर ने मुख्यतया मध्यमवर्गीय जीवन के यथार्थ को अपनी कहानियों में अधिव्यक्ति देने की चेष्टा की है । कमलेश्वर प्रगल्भील कहानीकार हैं और प्रारंभ में प्रगल्भील आन्दोलन से घनिष्ठ रूप से संबंधित रहे हैं ।

कमलेश्वर की कहानियों में विराटता का बोध है । जीवन के विविध पदार्थों का संस्पर्श कर उसे यथार्थ अधिव्यक्ति देने का वागृह है और वाचनिक भाव-बोध को स्पष्ट करने की समर्थता है । 'राजा निर्बंसिया' कमलेश्वर

1- परमात्मा का कुत्ता- मोहन राकेश- बारिस- पृ0-80, राजपाठ रंठ सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1974 ।

2- राजा निर्बंसिया -- कमलेश्वर - मेरी प्रिय कहानियां- पृ0-11, राजपाठ रंठ सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- द्वितीय संस्करण-1974 ।

की बहुचर्चित कहानी है जिसमें उन्होंने अपने परिवेश और वातावरण में आधुनिक मूल्यों की सोज की है। यह कहानी दृष्टि की अपेक्षा रूप के परिवर्तन का उदाहरण है। यह दुहरी कथा है-- एक ओर राजा की कथा और दूसरी ओर जापती चन्दा की वस्तुस्थिति। उसमें जीवन की त्रासदी उभर कर सामने आती है और पात्र जीवन के अजनबीपन का शिकार बने रहते हैं। कमलेश्वर की अधिकांश कहानियाँ में परिवर्तनीय अमिष्यव्यक्ति प्रधान रूप से पाई जाती है। वे मानवीय संवेदना की व्यापक परिधि में नवीन नैतिक मूल्य उभारना चाहते हैं। उनके पास या तो तीव्रता व्यर्थ है या फिर कष्टना है। उनकी कहानियाँ में इन्द्रियों के प्रति आग्रह। वे एक नया व्यक्ति रूपायित करना चाहते हैं--- ऐसा व्यक्ति जो परम्परागत नायकों और सलनायकों के सार्चों में फिट नहीं होता। वह नायक और सलनायक दोनों का अद्भुत सम्मिश्रण है। आधुनिक जीवन विद्रूपता का चित्र प्रस्तुत करने वाली ग्यारह कहानियों के 'जिन्दा मुँद' (1969) कहानी संग्रह में कमलेश्वर ने आन्ध्र-शैली के माध्यम से मध्यमवर्ग की कुंठाओं, वर्जनाओं, हताशाओं और आर्थिक विषमताओं का चित्रण, कहीं कम कहीं अधिक संवेदनशीलता के साथ किया गया है। उनके नवीनतम कहानी संग्रह 'बयान' (1972) में जो कहानी संगृहीत हैं उनकी दिशा, दृष्टि पिछली कहानियों से भिन्न है। इस संग्रह की 'बयान' एक अत्यधिक सशक्त कहानी है जिसमें एक स्त्री अपने पति की मृत्यु के बाद कोर्ट में बयान देती है और यह बयान आधुनिक जीवन की समस्त विस्मृतियों और मनुष्य की लाचारियों का बयान है।

नीली मीठ, *कद्वे का बादमी*, *सोई हुई दिशारं*, *ऊपर उठता हुआ मकान* तथा *मांस का दरिया* उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

1- बयान- कमलेश्वर- बयान - पृ०-109, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम सं०- दिसंबर- 1972।

राजेन्द्र यादव:- (जन्म-28 अगस्त 1929)-- राजेन्द्र यादव प्रमुखतः
 सामाजिक संवेतना के कहानीकार हैं। यद्यपि शिल्प के बहुनात्मक प्रयोग के
 प्रति वे विशेष आग्रही रहते हैं पर उसके साथ ही नये सत्य के उद्घाटन
 यथार्थ वन्देनाएँ एवं मानव-मूल्यों की सौज के प्रति भी उनका झुकाव
 रहा है। उनके कहानी संग्रह हैं--'अभिमान की वात्सल्य'--(1959),
 'किनारे से किनारे तक'--(1963), 'सेल सिटीने'--(1954), 'टूटना
 और अन्य कहानियाँ', - (1966), 'अपने पार' - (1968), 'जहाँ
 लक्ष्मी कैद है' - (1971), 'मेरी प्रिय कहानियाँ'--'राजेन्द्र यादव की
 श्रेष्ठ कहानियाँ', 'ढोल और अन्य कहानियाँ' (1972)।

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' (1957) 'लंच टाइम', 'मविष्य वक्ता',
 'विरादरी बाहर', 'पास-फौल', इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं इन
 कहानियों में यथार्थता के साथ जीवन संवेदनाओं की प्रस्तुत किया गया
 है। इसके विपरीत कुछ कहानियों में वात्सल्यनिष्ठता और व्यक्तिमूलक
 भावधारा की अभिव्यक्ति मिली है।

'राजेन्द्र यादव आधुनिक जीवन के सफल कहानीकार हैं।
 प्रारंभ में वे प्रगतिशील अवश्य थे लेकिन धीरे-धीरे वे आधुनिक सामाजिक
 संवेतना से संपन्न तथा सामाजिक दायित्व निर्वह से जीत-प्रीति दिखाई
 देते हैं। वे मध्यम, उच्चमध्यम के पात्रों के सामाजिक यथार्थ के उद्घाटन
 में अत्यंत सफल रहे हैं। उनकी कहानी के पात्र प्रायः समाज के टूटे हुए,
 धके हारे लोग हैं।'

'टूटना'¹ राजेन्द्र यादव की एक प्रमुख रचना है। इस कहानी
 में दो प्रकार के संस्कारों के बीच पिसती युवती छीना की कहानी कही

1- टूटना- राजेन्द्र यादव-- एक दुनिया: समानान्तर- संपादक- राजेन्द्र
 यादव, अक्षर प्रकाशन प्रा० लि० 2136-बंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली,
 द्वितीय संस्करण- 1970।

नई है। यह संबंध किशोर को ऐसा लगता है मानो--'शराबखाने में बूढ़ा मेज पर कोहनी टिकाये किसी से पंजा लड़ा रहा है'-- पंजा नहीं दोनों ने एक दूसरे की खेती को अपनी पकड़ में ले-रखा है, और दोनों ताकत बाँट रहे हैं।¹ पति-पत्नी विचारगत संबंधों के बाद बलम हो जाते हैं और जब पुनः मिलने की स्थिति बनती है तब तक मिलन का उत्साह किशोर में समाप्त हो चुका होता है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी', 'पास-फैल', 'टूटना'; 'बिरादरी बाहर', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'नीराजना' इत्यादि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं जो बहुचर्चित हैं।

निर्मल वर्मा:- (जन्म- 1929, शिवछा)-- निर्मल वर्मा पर अति बाधुनिकता का आरोप समीक्षकों द्वारा लगाया जाता रहा है। डा० लक्ष्मीसागर बाण्यीय का मत है--'निर्मल वर्मा उन कथाकारों में हैं जिनके लिए जीवन का बर्थ विदेश प्रवास, शराब और लड़की है'²। किन्तु निर्मल वर्मा 'नई कहानी' के समर्थ हस्ताक्षर है तथा नगरबोध की कहानियों के श्रेष्ठ कहानीकार हैं। इसका कारण है कि उनका अधिकांश जीवन नगरों में ही बीता है।

निर्मल वर्मा की 'पिछली गर्मियों में', 'ठाबरी के सैत', 'सितम्बर की एक शाम', 'तीसरा गवाह', 'दल्लीब', 'माबादपण', 'परिन्दे', 'जलती काढ़ी', 'कुछ की मौत', 'पिक्कर-पोस्टकार्ड', 'लन्दन की एक रात', उल्लेखनीय कहानियाँ हैं जिनमें बाधुनिक जीवन की 'टूँड' को यथार्थ ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। उनकी

1- टूटना- राधेन्द्र यादव- एक दुनिया: समानान्तर- संपादक-राधेन्द्र यादव, बदर प्रकाशन प्रा० लि०, 2136-जंतारी रोड, दरिबार्गज-दिल्ली, द्वितीयसंस्करण- 1970, पृष्ठ-305।

2- डा० लक्ष्मीसागर बाण्यीय- द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ०-185, राजवाड़ स्टैंड संस, कलमिरी गेट, दिल्ली, प्र०स०-1973

परिन्दे¹ कहानी में भाव विशेष की सूक्ष्मता अपनी संपूर्णता सहामता और कलात्मकता के साथ व्यक्त हुई है। पूरी कहानी संगीतमय है। मानव की निवृत्ति के संघर्ष में उसमें अनेक नये मूल्य उभरे हैं। *जलती काढ़ी²* प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई सुन्दर कहानी है। *लम्बन की रात³* भी गहरी सूक्ष्मता और नया अर्थ लिए हुए कहानी है। छुटन, उदासी, बीस, मय, लिए हुए व्यक्ति निर्मल वर्मा की कहानियों के प्रायः पात्र हैं। निरन्तर बँकेले होते जा रहे व्यक्ति की अनुभूतियाँ उन्होंने टटोली हैं। वातावरण के चित्रण, वर्णन दायता, निर्वाह-कौशल, प्रतीक योजना आदि की दृष्टि से वे सफल हैं। वे रोमांटिक और भावुक हैं और उसकी कहानियाँ एक प्रभाव छोड़ती हैं।

निर्मल वर्मा की कहानियों में अनाम *धै⁴* की सबसे बड़ी भूल काम की है। *जलती काढ़ी⁴*, *बन्तर⁵*, *बहलीज⁶* आदि कहानियों में यह स्नायविक उत्तेजना देती जा सकती है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि उनकी अपनी कहानियों की प्रेरणा अपने विदेश निवास के मध्य मिली हो। इसीलिए कहीं-कहीं उनकी कहानियों में जीवन से पलायन, घोर वास्तविकता, कुण्ठा, निराशा और छुटन को शराब से शान्त करने की कूड़ी ललक दिखाई पड़ती है।

बीच बहस में, *जलती काढ़ी* (1966, *पिछली गर्दियों में* (1968), *परिन्दे* (1970), मेरी प्रिय कहानियाँ (1978) निर्मल वर्मा के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

1- परिन्दे- निर्मल वर्मा- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-20, राजपाल एंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1978।

2- जलती काढ़ी- वही- ,, पृ०- 152 ।

3- लम्बन की एक रात-- वही-- ,, पृ०-116 ।

4- ,, ,, ,, पृ०- 152 ।

5- ,, ,, ,, पृ०- 108 ।

6- ,, ,, ,, पृ०- 11 ।

अमरकान्त:- (जन्म- सन् 1935)-- अमरकान्त ने अपनी कहानियों में संवेदनशीलता के साथ समाज के निम्न तथा मध्यवर्ग के जटिल जीवन का यथार्थवादी स्वरूप अंकित किया है। स्वातंत्र्योत्तर युग के कहानीकारों में अमरकान्त एक प्रमुख स्थान रखते हैं। इनकी कहानियों में एक ऐसा दृष्टिकोण उभरता है जो जीवन से झुकने और विषमता से ऊपर उठकर वास्तव-विश्वास से ओत-प्रोत होने की प्रेरणा प्रदान करता है। "जिन्दगी और जॉक", "दोपहर का भोजन", "हिस्ट्री क्लक्करी", "हत्पारे", "हन्टर बू", "कैले पेसे और मूंगफली", "मीस का नगर", आदि उनकी बहुचर्चित कहानी संग्रह हैं।

"जिन्दगी और जॉक"¹ उनकी बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी का प्रमुख पात्र नौकर रजुआ है जो मरना नहीं चाहता इसलिए जॉक की भाँति जिन्दगी से चिपका रहता है लेकिन छुता है कि जिन्दगी स्वयं जॉक की तरह उससे चिपकी हुई है और धीरे-धीरे उसके रक्त की अंतिम बूँद पी गई। आदमी जॉक है या जिन्दगी- कौन किसका तून बूँस रहा है, यह प्रश्न इस कहानी में उभरा है। इस कलुष स्थिति को अमरकान्त ने बड़े प्रभावशाली ढंग से उजागर किया है। जीवन जीने की कामना को लेकर लिखी गई यह अपूर्व कहानी है। एक दृढ़ व्यक्ति भी अपने जीवन को बर्ण्य समझता है। "दोपहर का भोजन" में निर्धन घर में दोपहर को खाने के समय जब लोग झकट्टे होते हैं उस समय की स्थिति का बहुत ही कलुष और मर्मस्पर्शी चित्र खींचा गया है। यह दयनीय स्थिति असंख्य भारतीय परिवारों की ओर संकेत करती है। इसमें

1- जिन्दगी और जॉक-- अमरकान्त-- जिन्दगी और जॉक--पृ०-118, नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी भिन्टो रोड, इलाहाबाद, सं०- फरवरी-1958।

2- दोपहर का भोजन-- ,, ,, वही ,, ,, पृ०- 51।

यथार्थ के गहरी रंग हैं, व्यंग्य के पैने बाण हैं और मनमोहित पर एक गहरी छाप छोड़ती हैं ।

अमरकान्त सामाजिक संवेतना के सच्चा कलाकार हैं । उनके पास स्वस्थ जीवन दृष्टि है । यथार्थ को समझने की और सत्य तथा नवीन मूल्यों के अन्वेषण की अपूर्व क्षमता है । 'इन्टरव्यू' कहानी में भी उन लोगों पर तीखा व्यंग्य है जो नौकरी देने को एक व्यवसाय बना लेते हैं तथा देश के करोड़ों नवयुवकों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं ।

अमरकान्त की कहानियों में कोई शिल्प प्रयोग नहीं है । वस्तुतः उनकी कहानियों में जीवन के कट्टर यथार्थ को इतनी सशक्तता उभारा गया है कि वहाँ किसी शिल्प या तकनीक विशेष का उन्हें सहारा नहीं लेना पड़ता । उनके प्रमुख कहानी-संग्रह हैं---'जिंदगी और जॉक', 'मीत का नगर' और 'देश के लोग' ।

मार्कण्डेय:- (जन्म- 1932)-- ये मुख्यतया वर्चलिक कहानीकार और इन्होंने अपनी कहानियों में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय ग्रामों में हुए परिवर्तनों को यथार्थता से उजागर करने की चेष्टा की है । ये प्रगतिशील कहानीकार हैं --'हंसा जाई जैला', 'गुठरा के बाबा', 'धूरा', 'रैसाह', 'पान-फूल', संगीत बांसू और इन्सान', सात बच्चों की माँ' आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं ।

'हंसा जाई जैला' मार्कण्डेय की सर्वोत्कृष्ट रचना है जिसमें लघु मानव हंसा की जीवन कहानी है । इस कहानी की वैष्टता कई

1- दीपहर का मौजन-- अमरकान्त-- जिंदगीऔर जॉक-- पृ०-51, नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी-मिन्टो रोड, इलाहाबाद- सं०- फरवरी 58 ।

2- हंसा जाई जैला-- मार्कण्डेय- नई कहानी कथ्य और शिल्प- पृ०-166 डा० सन्तवत्स सिंह- अमिनव भारती प्रकाशन, 42- सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद- पृ० सं०- 1973 ।

दृष्टियों से है। इसकी मानवीय अनुभूति यथार्थ और प्राणवान् है। इसमें कृत्रिमता का समावेश है। इसी प्रकार 'गुलरा के बाबा' भी एक कृत्रिम कथा है। बाबा का जीवन बृहत् सूक्ष्म किन्तु सीधी रेखाओं में उभारा गया है। गुलरा के बाबा जैसे सशक्त व्यक्ति चरित्र के ही नहीं बल्कि बाबा की ऐतिहासिक शक्ति के प्रतीक हैं।

इनकी कहानियाँ में समाजवादी भावना प्रतिफलित हुई हैं। उनकी विचारधारा का मूलाधार है पर वह स्थूल न होकर सूक्ष्म है। उसका उद्देश्य प्रचार न होकर भारतीय जीवन पद्धतियों से उसका सामंजस्य स्थापित कर प्रगतिशील दृष्टिकोण की स्थापना है। वर्ग-वैषम्य, शोषण, असमानता, कठिनाई एवं अंधविश्वासों पर उन्होंने अपनी कहानियों में कठोर प्रहार किए हैं और उनकी अनुपयोगिता सिद्ध करते हुए नवीन परिवर्तनों की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। इन कहानियों में मानवीय संवेदनशीलता है, यथार्थ चित्रण है और सामाजिक दायित्व का निर्वहण है जिसमें वे पूर्णतया सफल रहे हैं। मार्कण्डेय का कहानी कहने का ढंग बहुत रोचक है और अपनी कहानियों के कथानक बड़ी कुशलता से संकलित किए हैं। उनके पात्र यथार्थ जीवन से लिए गए हैं।

उनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं--'मकुर का पैर', 'हँसा जाई जैला', 'मुदान', 'माही' और 'पानफूल'।

फण्णिरवराध रैणु :-- (जन्म- 1921- बीराही, लिंबा, पुण्डिचा)
मृत्यु--11 अप्रैल- 1977)-- रैणु स्वतंत्रता संग्राम के श्रेष्ठ बालिक कथाकार हैं। रैणु ने ग्रामीणों की कुटिलता एवं क्रूरता, लोकगीत तथा लोक जीवन,

-
- 1- गुलरा के बाबा- मार्कण्डेय- पानफूल- पृ०-9, नया साहित्य प्रकाशन,
2-डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद- तृतीय संस्करण- 1961।

परम्पराएं, रुढ़ियां एवं परिवर्तनशीलता, पंचायतें, नीटकी, सड़कों की धूल, हवा, धूप रौशनी आदि बहुत सारी बातों को नये कोणों से गहराई तथा सूक्ष्मता से परखा है।

* तीसरी कसम ऊर्फ¹ मारे गए गुलफाम¹ उनकी बहुवर्धित कहानी है। इसमें अंबल बिशेष के जीवन, लक्ष्मि, प्रवृत्ति को कलात्मक स्वर प्रदान किया है। इसके साथ ही कहानी को मानसिक समस्याओं के गहन विश्लेषण का सक्षम माध्यम बनाया गया है।

कुल मिलाकर रोमांटिक यथार्थ का सर्वाधिक मिसरा हुआ रूप रेणु की कहानियों में मिलता है। अंबल बिशेष के जीवन में वे पूरी तरह रम जाते हैं। * तीर्थोदक², * पंचलाइट³, * सिर पंचमी का सगुन⁴, * ठेस⁵, * छाल पान की भ्रम⁶ आदि कहानियों में भाषा और शिल्प की सशक्तता तो है ही, उनमें जीवन की वदमुत पकड़ भी है। इन्होंने विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भों द्वारा जीवन के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। जीवन के प्रति उन्हें अनुराग है। उनकी कहानियों में धरती की गंध है। औपन्यासिक गुण है। आंचलिक जीवन के लगभग सभी मुहावरे हैं। मिन्न-मिन्न कोणों से उतारें गए जीवन के चित्र हैं।

* एक आदिम रात्रि की मस्क⁷ * रेणु की सशक्त रचना है। कुत्ते का लक कर करमा को देखना, बान के सैतों के बीच से गुजरने वाली पगडंडी पकड़ कर करमा का चढ़ना बान की बालियों का बंधी फूट कर न निकलना आदि ऐसे विषय हैं जो नापीण अंबल के जीवन को साकार करते हैं।

1- तीसरी कसम ऊर्फ¹ मारे गए गुलफाम- फणीश्वरनाथ रेणु-- मेरी प्रिय कहानियां-- पृ०-२२, राज्याल इंड सन्स, कश्मीरी गेट- दिल्ली।

2--६-ठुमरी *, संग्रह-- फणीश्वरनाथ रेणु-- राजकमल प्रकाशन - मैताजी सुमाण मार्ग, दिल्ली संस्करण- 1959।

7- आदिम रात्रि की मस्क-- फणीश्वरनाथ रेणु-- मेरी प्रिय कहानियां-- पृष्ठ-77, राज्याल इंड सन्स, कश्मीरी गेट- दिल्ली।

‘ठुमरी’, ‘वादिम रात्रि की महक’, ‘रस प्रिया’, ‘हाथ का जस और बात का सत’, ‘मेरी प्रिय कहानियाँ’, फणीश्वरनाथ रेणु के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

मीश्व साहनी:- (जन्म- 1915)-- राबलपिण्डी- प0 पाकिस्तान)

मीश्व साहनी प्रगतिशील कहानीकार हैं। उनकी कहानियों में कई वैषम्य और वार्थिक विषमता तथा उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न वारिष्किक वन्तर्विरोध एवं कटुता का स्वर मुखर हुआ है। ‘बीफ की दाबत’, ‘कटघर’, ‘गीता सहस्रनाम’ वादि उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

उनकी कहानियों का मूलाधार प्रायः मध्यवर्ग है। मध्यवर्ग की दिशाएँ की प्रवृत्ति ‘बीफ की दाबत’ कहानी में बहुत सुन्दर ढंग से मुखरित हुई है। कहानी का नायक शामनाथ अपने बास को घर पर दाबत देता है। उसके जाने से पहले वह अपने सारे घर को फिट कर लेता है फिर भी एक फालतू सामान बच रहता है-- उसकी निरपार बुढ़िया माँ जिसे छिपाना ही एक समस्या है और अन्त में वह एक स्टोर में अपनी माँ को छिपा देता है ताकि बास की नजर उस पर न पड़े और उसका ‘इन्वीशन’ सराब न हो जाए। नवीनता यह है कि माँ इस पर नाराज नहीं है क्योंकि वह भी अपने बच्चे के भविष्य के प्रति चिंतित है।

मीश्व साहनी ने अपनी कहानियों में पूरे भारतीय समाज की उसकी समस्त अच्छाई बुराई के साथ ही गृहण किया है तारी व्यक्ति को नहीं। इसलिए न तो वह किसी के लिए अक्लबकी है और न अपने अस्तित्व एवं भिन्नत्व के लिए दिन रात चिंतित। लगभग सभी कहानियों में मध्यवर्गीय

1- बीफ की दाबत-- मीश्व साहनी-- एक दुनिया समानान्तर -

संपादक- रावेन्द्र वादव, पृ0- 223, अरार प्रकाशन प्रा0लि0-

2136- अंतारी रोड , दरियागंज, दिल्ली- द्वितीय सं0- 1970 ।

जीवनमूल्यों पर प्रहार किया गया है और ये तीसरे अंग के माध्यम से उसकी कृत्रिमता और लोचलेपन को उभारा गया है। 'पल्ला पाठ', 'पास-फँस'; 'सिकारिली भिट्ठी', 'मटकती रात', 'बाप-भेटी', 'माई रामसिंह', 'सुनहरी किरण' आदि कहानियाँ इसी तथ्य को स्पष्ट करती हैं। मीन साहनी की भाषा व्यक्तित्व के अनुरूप सादगीपूर्ण है।

'माग्य की रेखा', 'पल्ला पाठ', 'मटकती रात' तथा 'पटरियाँ' उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

उष्ण प्रियंवदा :--- उष्ण प्रियंवदा आज की प्रमुख कहानी लेखिकाओं में हैं। आज के नारी जीवन में स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद जो परिवर्तन आए हैं और जिन नये मूल्यों को वात्सलात करने और पुराने मूल्यों को अस्वीकारने के लिए वह बाकुल हो रही है, उसके क्या-क्या परिणाम हुए हैं उष्ण प्रियंवदा की कहानियों में यह अत्यंत सूक्ष्मता के साथ मुखरित हुआ है। इसके अतिरिक्त वायुनिक मध्यमवर्गीय परिवारों की क्या स्थिति है, उनकी मान्यतारं किस सीमा तक परिवर्तित हो रही हैं और मूल्य मर्यादारं किन विषयताओं और विकृतियों के कारण संछिन्न हो रही है और उस परिवेश में तथाकथित वायुनिक नारी अपनी उच्च शिक्षा एवं अस्तित्व-रक्षा की भावना से बोत-प्रीत किस प्रकार मिसफिट है-- उष्ण प्रियंवदा ने अपनी कई कहानियों में इसका बहुत ही यथार्थ एवं सजीव चित्रण किया है, कुछ कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें पति-पत्नी के संबंधों की वायुनिक परिवर्तित सम्बन्धों में व्याख्या की गई है, कुछ कहानियाँ जो विदेश जाने के बाद लिखी हैं, उनमें वात्सपरक दृष्टिकोण का विकास परिलक्षित होता है। 'थैरम्बुलैटर', 'जाठे', 'पुर्ति', 'एक दिन', 'बापसी', 'बिंदनी और गुलाब के फूल', 'मोहबब', 'हुट्टी का एक दिन', 'एक कोई दूसरा', 'महलियाँ', 'हाँह', 'दृष्टि-दोष' आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं।

बापसी¹ उनकी बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी के नायक गजाधर बाबू घर से दूर रह कर नौकरी करते करते ऊब गए हैं इसलिए रिटायर्ड होने पर अत्यधिक लुप्त हैं क्योंकि जब घर में परिवार के साथ तो रहने को मिलेगा किन्तु जब घर जाते हैं तो पाते हैं घर में वे एक फिजूल सामान के समान है, वे अपने को घर में *मिसफिट* अनुभव करते हैं क्योंकि उनके भेटे-बहू, भेटे-भेटी यहाँ तक कि पत्नी को भी उनका जाना घर में व्यवधान जाने जैसा लगता है। परिणाम स्वरूप वे पुनः वे शहरफाँद्री में नौकरी करने के लिए चले जाते हैं। यह कहानी मध्यवर्गीय परिवार में हो रहे मूल्यों के विघटन की अभिव्यक्ति करती है।

महलिया² उणा प्रियंवदा की दूसरी सशक्त रचना है। इस कहानी में नारी मन के दीर्घत्व को बड़ी कलात्मक सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है। नारी चाहे कितना ही पढ़ लिख ले पर फिर भी वह कोमल मन वाली नारी है। जिसमें प्रेम के साथ ईर्ष्या भी सर्व की गठिरी की भाँति बन में रहता है। तभी तो मुकी विजी और मनीष के प्रेम संबंधों में विषा डाल देती है और बदले की अग्नि में जल रही विजी भी जाते - जाते मुकी और नटरजन के बन रहे नये घर में दरार डाल जाती है। इस कहानी में मुकी और विजी दोनों ही उच्चशिक्षित युवतियाँ हैं।

जिन्दगी और गुलाब के फूल *फिर कस्तूर बाया* ---
 एक कोई दूसरा, *कितना बड़ा फूल* *मेरी प्रिय कहानियाँ*
 उणा प्रियंवदा के प्रकाशित कहानी संग्रह हैं।

- 1- बापसी-- उणा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल-- पृ०-119 ।
 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- तृ०सं०-1971 ।
- 2- महलिया-- उणा प्रियंवदा-- कितना बड़ा फूल- पृ०-98, राकमल
 प्रकाशन, 8-नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- द्वितीय सं०- 1974 ।

मन्मू मँडारी:--- (जन्म- 1931- भागपुरा, राजस्थान)-- मन्मू
मँडारी की कहानियों का मुख्य विषय स्त्री-पुरुष के बन्ध से मरे
संबंध हैं। इन संबंधों की अभिव्यक्ति उन्होंने बहुत ही सहज ढंग से की है।
‘यही सब है’, ‘तीसरा आदमी’, ‘ऊँचाई’, आदि सभी कहानियाँ
स्त्री-पुरुष के संबंधों पर ही आधारित हैं। उनकी कहानियों में
सौंदर्यात्मक अभिरुचियाँ, मनोविज्ञान, विषय बोध की प्रामाणिकता और
कलात्मकता की सहजता से देखा जा सकता है। स्वतंत्र्योत्तर कथा लेखकों
में मन्मू मँडारी का स्थान अग्रणी है। नारी मन की दमता और दुर्बलता
चित्रण उनकी कहानियों का मुख्य प्रतिपाद रहा है। ‘इन्की नारी देवी
और दानवी के दो झोरों के बीच टकराती ‘पहेली’, ‘नहीं’, ‘हाड़ मांस
की मानवी भी है’¹।

‘रानी माँ का चबूतरा’, ‘शाय’, ‘ए साने आकाश नाई’,
‘यही सब है’, ‘ऊँचाई’, ‘बंद दरवाजों का साथ आदि मन्मू मँडारी की
प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। इन कहानियों में नारी की विभिन्न समस्याओं के ओर
संकेत किया गया है।

‘रानी माँ का चबूतरा’² में पास-पड़ोस के सभी लोग गुलाबी
को बुलैल, कल्ला और अन्त में बुरी आदतों की औरत समझने लगते हैं किन्तु
वह नारी विपदाओं की मारी है। अपनी परिस्थितियों से दुःख होकर
बच्चों को पीट-पीट कर भी उनके लिए साने और लौट्टी-लौट्टी हरी बुड़ियों
तथा सिलु रफा केन्द्र को पाँच रुपये की रसीद इकट्ठा करने में बेहोश हो
जाती है। वह तो अपनी नियति से जूझ रही है और सारा समाज उसे रंका
की दृष्टि से देख रहा है।

1- मन्मू मँडारी- श्रेष्ठ कहानियाँ-- सं०- रावेन्द्र यादव, प्रमुक्त स्वर,

पृष्ठ-6, बदर प्रकाशन प्रा० लि०, 2136-बंसारी रोड, दरियागंज,
दिल्ली- सं०- 1975।

2- रानी माँ का चबूतरा-- ,, - यही : ,, पृष्ठ-27।

बाब हर नारी इसी तरह जूना रही है और टूट रही है ।

‘हलाने बाकाश नाई’¹ भी मन्नु मँहारी की चर्चित कहानी है । इस कहानी की नायिका लेसा पढ़-लिख कर नौकरी करने के कारण जैसे अपने घर में ही ‘बाउट साइडर’ हो जाती है । कलकत्ते के व्यस्त और दमघौटू वातावरण से ऊब कर स्वास्थ्य लाभ के लिए अपने घर के दूध, पानी को चलने के विचार से अपने गाँव जाती है पर वहाँ के किसी कोने में भी वह अपने को ‘एडजस्ट’ नहीं कर पाती । माँभी उस पर ध्यान करती रहती है और सास उसके पैसे सत्प करने में लगी रहीं । इस प्रकार कहीं भी उसे आत्मीयता का अनुभव नहीं होता ।

मन्नु मँहारी की कहानियाँ में सहजता और स्वाभाविकता रहती है । उनमें अनुभूति की गहराई के साथ नवीन मूल्य उभारने की क्षमता है । वार्तिक कथनोरियों का उद्घाटन वे अत्यंत कुशलता से करती हैं । उनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं---‘मैं डार गई’, ‘तीन मिगाहों की एक तस्वीर’, ‘यही सच है’, ‘बिना दीवारों के घर’, ‘एक प्लेट सैलाब’, मन्नु मँहारी : श्रेष्ठ कहानियाँ । ‘कील और कसक’, और ‘ईसा के घर इन्सान’ उनकी अब तक की उपलब्धियाँ हैं ।

सुरेश सिन्हा:--- (जन्म- 18 अगस्त 1940, मृत्यु 26 अक्टूबर सन् 1972)-

सुरेश सिन्हा प्रमुखतः प्रगतिशील कहानीकार हैं । बाब की जिस विषय संक्रांति में हम जी रहे हैं-- युगीन चेतना जिस प्रकार नहीं दिशाएं ग्रहण कर रही हैं विमर्श एवं विकास के सौलैं स्वरों के पीछे जिस प्रकार वार्षिक शोषण हो रहा है, परिणामस्वरूप निम्न-मध्यम वर्ग में जो कटुता, रिक्तता और दूरिर्वा व्याप्त हो रही हैं उन्हें यथार्थ ढंग से प्रस्तुत करने में सुरेश सिन्हा की बड़ी सफलता प्राप्त हुई है । सुरेश सिन्हा ने प्रेमचन्द की परम्परा का

1- हलाने बाकाश नाई-- मन्नु मँहारी-- श्रेष्ठ कहानियाँ- संपादक-

राजेश्वर यादव, पृ०-88, अक्षर प्रकाशन- 2136-बंसारी रोड,

परिवर्तन, दिल्ली, संस्करण- 1975 ।

ईमानदारी से निबोह किया है। आधुनिक जीवन के सौतेलेपन कृत्रिमता एवं अजनबीपन, नागरीय जीवन का मृत परिवेश और हास्यास्पद जीवन मूल्यों को भी उन्होंने अत्यंत सूक्ष्म-वस्तुदृष्टि के साथ प्रस्तुत किया है। नवमानवतावाद एवं आधुनिकता का समष्टिगत बाधार् उनमें उस नये घरातल पर प्रतिष्ठित करता है जहाँ उनकी नयी कहानियों में नये मानवमूल्यों, संबंधों एवं प्रगतिशील मानवण्डों की स्थापना की चेष्टा विकसित होती है। उनकी कहानियों में यथार्थ के नये घरातल का उद्घाटन हुआ है। नवीन मूल्यों की स्थापनाएं हैं उनके पात्र संघर्ष करते हुए भी अम्बर से टूटते नहीं हैं। 'कई बाबाजों के बीच', 'जाले', 'कई कुहरे', 'एक अपरिचित वायरा' उनकी प्रमुख कहानियाँ कही जा सकती हैं।

नया-जन्म उनकी बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण सुरेश सिन्हा ने अति यथार्थ ढंग से किया है। इस कहानी का नायक विजय पी-एचडी की डिग्री हाथ में लिए शहर के चकर लगाता फिरता है पर कहीं भी उसे नौकरी नहीं मिलती। एक अविवाहित बहन और माँ का बोझ भी उसके कंधों पर है। उसकी बहन रंजना घर की परेशानियों को समझते हुए और उनका कोई समाधान न मिलने पर सारी समस्याओं का सल ढूँढ़ लेती है -- एक अवैध उम्र के, काले, घुल घुल शरीर वाले छाछा दयालबन्द से शादी करके। और रंजना के विवाह के बाद घर का नक्का ही बदल जाता है। सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं और विजय एक दिन अपनी डिग्रियों को एक यज्ञ करके जला देता है।

साठ के बाद के कहानीकारों में सुरेश सिन्हा का स्थान अग्रणी है।
 कई बाबाजों के बीच उनका प्रमुख कहानी संग्रह है।

1- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई बाबाजों के बीच - पृ०-104,

होमभारती प्रकाशन, 15-ए-महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद- सं०-1968।

गिरिराज किशोर:- (जन्म- 1936)-- गिरिराज किशोर की कहानियाँ का मुख्य स्वर सामाजिक संघर्ष तथा मनोवृत्तियों का है। उनकी दृष्टि केवल यौन कुंठाओं तक सीमित नहीं है बल्कि उनकी कहानियाँ जीवन के व्यापक सन्दर्भों की सफल अभिव्यक्ति हैं। सामाजिक विषमताओं से धीरे मानसिक उलझनों में पटकते मानव मन का सही चित्र इनकी कहानियों में सहजता से उभर गया है। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं-- *बुलक*¹, *टैप*², *बी०आई०पी०*³, *बेहरी*⁴, *बूहे*⁵, *पगलहियाँ*⁶, *नया बरमा*⁷, *पेपरबैट*⁸, *फ्रांक वाला घोड़ा निकर वाला साईस*⁹, *रिशता*¹⁰, *शीर्षक हीन*¹¹, *नायक*¹², *बलग-बलग कद के दो बादमी*¹³ तथा *गाउन*¹⁴ आदि।

उनकी *बूहे*⁵ कहानी नई और पुरानी पीढ़ी के अन्तर की कहानी है। इस अन्तर को माँ बढ़ाती है और पिता क्रम करने का प्रयत्न करता है।

*बुलक*¹ कहानी में मनोवृत्तियों का संघर्ष है। यही संघर्ष *गाउन*¹⁴ कहानी में भी देखा जा सकता है। इस कहानी की सुनीता जी कट्टर पुराणार्थी हैं। जमीन देवरानी काली उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं है क्योंकि वह आधुनिक है।

गिरिराज किशोर नई कहानी के सशक्त लेखक हैं। उनका कथ्य और कथन दोनों ही सशक्त हैं। *बी०आई०पी०*³, *नया बरमा*⁷, *पेपरबैट*⁸ उनकी अन्य कहानियाँ हैं जिनमें आज की राजनीतिक स्थिति पर व्यंग्य है।

1- बूहे- गिरिराज किशोर- पेपरबैट, पृ०-9, राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार, दिल्ली- संस्करण प्रथम, 1970।

2- बुलक- गिरिराज किशोर- रिश्ता और अन्य कहानियाँ- पृ०-31, राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार, दिल्ली- सं०-1969।

3- गाउन- वही-- ,, ,, पृ०-54 ।

उनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं--'बार मोती बाब', 'पेपरबैट',
'रिश्ता तथा अन्य कहानियाँ' तथा 'नीम के फूल'।

दूबनाथ सिंह :--- (जन्म- 1936)-- दूबनाथ सिंह की कहानियों में सामाजिकता के प्रतिबिम्ब देखने को मिलते हैं। उद्देश्य हीनता इनका उद्देश्य नहीं फिर भी उद्देश्य कहानियों पर आरोपित नहीं प्रतीत होते। इन्होंने व्यक्ति के अन्तर्मुख का उद्घाटन किया है और आधुनिकता के नये संदर्भों को अपनी कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है।

उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं--'रक्तपात', 'बाइसवर्ग', 'सपाट चेहरे वाला बाबमी', 'रीह', 'सब ठीक हो जायेगा', 'बिस्तर', 'इन्द्रधनुष', 'सुसान्त', 'प्रतिशोध', 'कोरस' आदि। 'रक्तपात' दूबनाथ सिंह की सशक्त रचना है जिसमें अपने समाज और परिवेश से अलग पड़ गए बाब के व्यक्ति का सही चित्रण है। कहानी में समस्त घटनाएँ जिस वितृष्णा और संत्रास को सामने लाती हैं पाठक उसमें अपने को भी पागीदार समझने लगता है।

'सब ठीक हो जायेगा' कहानी एक विजय करने वाली स्त्री--मिसेज मित्रा का चित्रण है जिसके पति के नाम पर एक फीफट्टे के कैंसर का रौनी, फरिया की सदान में काम करने वाला मजदूर है जो कमी-कमाल उसके पास जाता है। सुबह सोकर उठता तो जैसे जूते लाकर उसका चेहरा सूजा रहता ऊपर छत पर अँलै सीता, दिन भर एक चादर ओढ़े कमरे में बैठा रहता, सिड़की के बाहर बराबर देखता रहता है।

1- रक्तपात- दूबनाथ सिंह- एक सपाट चेहरे वाला बाबमी- पृ०-122,

2।36-बसारी रोड, परिवर्गज- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1967।

2- सब ठीक हो जायेगा- --- वही ----- ,, ,, पृ०-76-93।

रीह¹ दूधनाथ सिंह की बहुचर्चित कहानी है जो सैक्स पर आधारित है। इसमें वर्तित ही संश्रुत मनःस्थितियों का स्वप्निल चित्र चेतना प्रवाह के माध्यम से पूर्ण कलात्मकता के साथ उद्घाटित हुआ है। उनके *एक सपाट बेहरेवाला *बादमी *, *ब * *सुखान्त * प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

ज्ञानरंजन:--- (जन्म- 1936)- ज्ञानरंजन मई पीढ़ी के कलात्मक सुरुचि संपन्न कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ मन को छूने वाली होती हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं--*पिता *, *सैज होते हुए *।

*माँ, बहिन, पिता और माई से अलग होते हुए बाज के बादमी को ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों के माध्यम से वर्तित निकट से देखने का प्रयास किया है। *पिता²* एक ऐसी ही कहानी है जिसमें पीढ़ियों का संघर्ष चित्रित किया गया है। एक पीढ़ी पिता की परम्परा की है और दूसरी पुत्र की--- वाधुनिकता की है। इस संघर्ष में परम्परा वाला पिता अधिक शक्तिशाली प्रतीत होता है लेकिन बाज के सपनों में वह कितना निरर्थक है इसी का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

फँस के इधर और उधर³ बदलते परिवेश की कहानी है। फँस के एक और पुराना जीवन है और दूसरी और नया जीवन। एक और नये जीवन में लड़की का विवाह बिना किसी झुमझाम के ही जाता है तो फँस के दूसरी और उस विवाह की कटु आलोचना होती है।

- 1- रीह--- दूधनाथ सिंह-- एक सपाट बेहरे वाला बादमी-- पृ०-28,
2।36-अंसारी रोड, दरियानग-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967।
- 2- पिता--ज्ञानरंजन-- फँस के इधर और उधर, पृ०-77, अक्षर प्रकाशन,
2।36- अंसारी रोड, दरियानग-दिल्ली- प्र० सं०- 1968।
- 3- फँस के इधर और उधर-- -- बही --- पृ०- 55।

‘शैश होते हुए’¹ • मध्यवर्गीय पारिवारिक संबंधों के अभिशाप का दर्द है जिसे अज्ञात परिणाम वाले मविष्य के लिए वर्तमान दुस्तद परिस्थितियों को पिता से लेकर टीनू तक सभी झेल रहे हैं। पढ़-लिखकर समर्थ हो गए भाई और मामी पास में ही अलग नया मकान बनवाने लगते हैं। सबने अपने अलग-अलग कमरे सजा रखे हैं। ‘माता-पिता’ के कमरे में कुछ नहीं है। उनके लिए किसी को फुरसत नहीं। इस परिवार में कुछ लोग इतने वायुनिक हो गए हैं कि उनके विचार से शुद्ध धी साकर ही लोग बीमार होते हैं। इस प्रकार बिखरते परिवार को जोड़ने के प्रयत्न में माँ घर का सारा काम भी करती है और सक्की घोंस और पति की डाँट भी खाती है। मँकला भी पीने लगा है लेकिन परिवार को जोड़ने के लिए वह भी व्याकुल है।

ज्ञानरंजन ने आत्मपरक शैली में मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं की अभिव्यक्ति अपनी कहानियों की है। ‘फँस के इधर और उधर’ उनका प्रमुख प्रकाशित कहानी संग्रह है।

गंगा प्रसाद बिमल :--- गंगा प्रसाद बिमल ने वायुनिकता-बोध का सफल चित्रण अपनी कहानियों में किया है। चारों ओर का परिवेश उनके लिए उस निर्बलता का प्रमाण है जिसके फलस्वरूप हर व्यक्ति जीने के लिए अभिशप्त है तब उचित अनुचित का प्रश्न समाप्त हो जाता है। उत्साह आनन्द और प्रेरणा जैसे शब्द शून्य लुप्त हो रहे हैं। गंगा प्रसाद बिमल अपने को उस समाज से संपृक्त पाते हैं जहाँ ऐसे शब्दों की अनिवार्यता नहीं है।

- 1- शैश होते हुए-- ज्ञानरंजन- फँस के इधर और उधर, पृ०-६३,
अक्षर प्रकाशन, ३।३६- अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली-५००३०-१९६८ ।

‘कोई शुरुवात’, ‘नाटक बधूरा’, ‘वतीत राग’, ‘संबंध’, ‘दूसरे का मोग’, ‘शीर्ष्कहीन’, ‘अभिशाप’, ‘दूसरा चेहरा’ आदि प्रमुख कहानियाँ हैं।

‘दूसरे का मोग’¹ में माँ बेटी के मध्य संबंधों में अन्तर्बिरोध है। इस कहानी में लड़की इसलिए परेशान है क्योंकि उसकी माँ विधवा होने पर भी एक युवक से प्रेम करती है। माँ लड़की से जिस व्यक्ति का परिचय ‘मामा’ करके कराती है वही उस लड़की की दृष्टि में ‘सहनायक’ प्रतीत होते हैं। माँ की अपनी इच्छाएँ हैं और वह स्वतंत्र चुनाव कर सकती है पर लड़की परेशान है क्योंकि वह माँ की चरित्रहीनता को स्वीकार नहीं कर पाती। बाद में जाकर कहानी इस तरह का आभास देती है कि उस लड़की का संबंध भी उस युवक से जुड़ जाता है। वस्तुतः यह मनोवैज्ञानिक समस्या पर आधारित कहानी है।

‘शीर्ष्क हीन’² कहानी में अत्याधुनिक परिवार का उर्ध्वसूचक जीवन, मध्यवर्गीय ग्रहणियत, अविवाहित यौन की उदात्तता, कामुक पिता का रोमांस भरी जीवनी और असंतुष्ट पति-पत्नी के संबंधों का चित्रण कई बेझीर ठंग से किया है। साथ ही मित्रता के स्वरूप का उद्घाटन भी किया है। मित्र की अनुपस्थिति में पति का मित्र उसकी पत्नी में अधिक रुचि लेने लगता है और अपने मित्र के विषय में औपचारिकतावश ही थोड़ी बहुत बात करता है।

गंगा प्रसाद विमल की कहानियाँ किसी चमत्कार से न तो प्रारंभ होती हैं और न समाप्त। वास्तव में वे जीवन की यथार्थताओं के दस्तावेज

1- दूसरे का मोग- दुर्धनाथ सिंह- कोई शुरुवात-- पृ०- 71, राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973।

2- शीर्ष्कहीन-- गंगाप्रसाद विमल-- कोई शुरुवात-- पृ०-101। राजकमल प्रकाशन, 8-फौजबाजार- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973।

हैं जिन्हें उपस्थित धर कर दिया । इसलिए कोई गढ़न या आरोपण नहीं प्रयासहीनता लक्षित होती है और यह प्रयासहीनता ही उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है ।

“कोई शुरुआत”, “अतीत में कुछ” उनके प्रमुख कहानी संग्रह है ।

रवीन्द्र कालिया :--- रवीन्द्र कालिया की प्रमुख कहानियाँ परिवर्तित जीवन मूल्यों और वास्तविक बोध से संबंधित हैं जिनमें कथानक का हास देखने को मिलता है । इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं---“ठरी हुई औरत”, “नी साल छोटी पत्नी”, “एक प्रामाणिक फूट”, “त्रास”, “कोजी कमीर”, “सिफ एक दिन”, “कहानी” तथा “काला रजिस्टर” आदि ।

तटस्थता वाज के संबंधों की नियति है । पति-पत्नी के संबंधों में एक सदैव तामोशी छाया हुई है । “एक ठरी हुई औरत” में तुलना की नजरों में उसका पति “लैजी हर्बर्ट” है । इतबार के दिन जब पति घर पर रहता है तो पत्नी को गुस्सा आता है और उसे अपने प्रेमी तुलवन्त का अपाव स्तकता है । पति ऐसा है कि पत्नी को तुलवन्त के घर भेजता है और जब वे दोनों वापस आते हैं तो उनके लिए चाय बनाता है ।

“सिफ एक दिन” में एक शिष्टांत योग्य पर बेकार आदमी की नौकरी पाने की असफलता से उत्पन्न अवसाद, धुटन एवं कुण्ठा का रवीन्द्र कालिया ने बड़ी भाविकता एवं पूर्ण संवेदनशीलता के साथ चित्रण किया है ।

1- एक ठरी हुई औरत-- रवीन्द्र कालिया-- नी साल छोटी पत्नी-

पृष्ठ-121, अमिष्यक्ति प्रकाशन, 847-युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2,
प्रथम संस्करण- 1969 ।

2- सिफ एक दिन-- -- वही -- -- पृष्ठ-29 ।

रवीन्द्र कालिया ने सामाजिक यथार्थ को लेकर कहानियाँ लिखी हैं और उनमें समकालीन परिवेश को पहचानने की अपूर्व दायता है।
 नी साठ छोटी पत्नी और *काला रजिस्टर* उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

रमेश बदायि:--- (जन्म- 1936 इन्दौर- मध्यप्रदेश) - रमेश बदायि नयी शिल्प विधा और आधुनिक जीवन दृष्टि के नये कहानीकार हैं। चित्रकला में अभिरुचि के कारण उनकी कहानियाँ चित्रकला के नवीनतम प्रयोगों से प्रतीत होती हैं। इनकी कहानियों में परम्पराओं और रुढ़ियों के प्रति तीव्र आक्रोश है।

किस्सा एक शुतुर्मुख¹ का एक व्यंग्य मरी कहानी है। आज की युवती की दृढ़ता इस कहानी में द्रष्टव्य है। आज भी हर छड़की शुतुर्मुख होती है। उसकी उम्र 25 वर्ष है उसके पति देसने मर के होते हैं वे सुस्मरत और कीमती होते हैं। वे ठरपाक और कायर होती हैं। जब इस शुतुर्मुख का पोस्टमार्टम होता है तो कई कठोर चीजें उसके पेट से निकलती हैं। आज भी यह शुतुर्मुख छड़की पत्थर से मारी मरकम और कठोर चीज-बिबाह को भी पचा गई हैं। सब कुछ करने पर उसे परवाह भी नहीं कि वह बिबाहिता है।

आज अधिकतर पत्नियाँ - धर्म में कैद गुनगुने पानी की तरह हैं जहाँ अन्दर का तापमान बाहर के तापमान से हाथ नहीं मिला सकता पर फिर भी पुरुष मन वारंशित ही रहता है।

पिता दर पिता, *हत्या*, *एक अमूर्त तकलीफ*,

1- धर्म में कुम्कुना पानी-- रमेश बदायि- मेज पर टिकी कहानियाँ--
 पृ०-100, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, प्र०सं०-1963।

बाया नीत गा रही थी, *मेज पर टिकी कुहनियां*-- *बायलिन पर तिलक कामोद बादि बापकी प्रमुख कहानियां हैं।

इनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं---*मेज पर टिकी हुई कुहनियां*, *कटती हुई जमीन*, *पिता वर पिता*, एक वसूत तल्लीफ* ।

राजेन्द्र अवस्थी:--- राजेन्द्र अवस्थी ने ग्राम्य-जीवन और उसमें भी सघन वर्णों में रहने वालों को पवने कथा-लेखन का मुख्य विषय बनाया है।

विधाजन, *लामरौना*, *उलफान*, *पीढ़ियां* *जनसेवा*, *दो जोड़ी बसिं*, *हुली लिङ्की*, *वमर डेर* *लावारिस-लारिं* आपकी प्रमुख कहानियां हैं।

पीढ़ियां कहानी में नये पुराने का संघर्ष उमरा है। कहानी में पिता सुरजीत सिंह पुरानी पीढ़ी के प्रतीक है और पुत्री जसवीर और सतबिन्दर नयी कहानी की प्रतीक है। पहले तो सरदार सुरजीत को हरक पर शक होता है। उसे अपनी बेटी सतबिन्दर की सुरबिन्दर के साथ दोस्ती भी पसंद नहीं है पर धीरे-धीरे वह परिस्थितियों से समझौता कर लेता है और अपनी बेटी से कहता है *जा उसे भीतर बुला ले बेटी* ।

जनसेवा कहानी में स्वतंत्रता के बाद बदली हुई जनसेवा की भावना का सही चित्र प्रस्तुत किया गया है बाज की *जनसेवा* पर अर्थ किया गया है कि किस प्रकार जनसेवाक समूह २०० २०० २० मंत्री की वुत्कारें सह कर

1- पीढ़ियां-- राजेन्द्र अवस्थी-- मेरी प्रिय कहानियां-- पृ०-44,

राज्याल एंड सन्स - कश्मीरी गेट दिल्ली, पहला संस्करण-1975 ।

मंत्री से मिल पाता है। जिस दौत्र में वह मंत्री को बुलाना चाहता है वह उसकी जन्मेबा का दौत्र नहीं है। बड़ी सुतामद से मंत्री को मनाना है पर जनता के बीच में जाकर अपने और मंत्री के गहरे संबंधों की छिन्न हाकिता है।

राजेश्वर अवस्थी की कहानियाँ मार्मिक होती हैं और वे जीवन के विभिन्न पक्षों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं---*फकड़ी के जाले*, *गंगा की लहरें*, *बाम के जाल*, *एक प्यास पहेली*, *दो जोड़ी बर्तें*, *मेरी प्रिय कहानियाँ* आदि।

शैलेश मटियानी:-- (जन्म- 1981 : बाहेलीना-बल्मोड़ा)-- शैलेश मटियानी मूलतः वाचलिक कथाकार हैं। पहाड़ी-जीवन, लोक कथाओं एवं आचार व्यवहार, संस्कृति से उनका निकट का संबंध रहा है। उनकी कहानियों के मूल भाव निम्नवर्ग के व्यक्ति हैं चाहे वह कौड़ी हो, भिखमंगा या अन्य कोई दीन हीन व्यक्ति। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं---*दो दुःखों का एक सुत*, *प्रेतमुक्ति*, *एक कपचा*, *घोड़े*, *अन्त समय*, *प्यास*, *रहमतुल्ला*, *बब्रुमल्ल* तथा *पोस्टमैन* आदि।

दो दुःखों का एक सुत¹ उनकी बहुचर्चित वाचलिक कहानी है। इसमें एक पहाड़ी बलाके के अर्थात् वाचलिक कहानी है। इसमें एक पहाड़ी बलाके के अर्थात् उपेक्षा और तिरस्कृत सूरदास, मिरदुला कानी और कौड़ी-करमिया की पीड़ा की कहानी अर्थात् कलात्मक ढंग से कही गई है।

- 1- दो दुःखों का एक सुत-- शैलेश मटियानी-- दो दुःखों का एक सुत--
पृष्ठ-238, किताब महल, प्रा0 लि0- 56-ए जीरो रोड, बलाहाबाद,
संस्करण- 1966।

इसमें करमिया कौड़ी की पीड़ा का स्वर प्रधान है। एक तो वह कौड़ी था, दूसरी बात यह थी कि एक जमीन में गढ़े कनस्तर में रत्ता बन भी समस्या है, तीसरी प्रमुख पीड़ा थी। 21 बर्णिया युवती मिरदुला कानी की तरफ उसका झुकाव। कौड़ी करमिया सुरदास और मिरदुला को अपनी कौठरी में रहने को ज़ाह दे देता है। एक बार नौटंकी वाले मिरदुला को कुछ दिनों के लिए भाग ले जाते हैं। वे दोनों ही पोशान ही उठते हैं। मिरदुला छोटने पर गमबती है। दोनों करमिया और सुरदास भावी शिशु में अपना - अपना प्रतिबिम्ब देखने की कल्पना करते हैं लेकिन बच्चा तो हाथ पावों का एकदम दीपक जैसी बमबमाती आँसों वाला पैदा होता है।

‘प्रेतमुक्ति’¹ में अनपढ़ किसन राम की रुढ़िग्रस्त भावनाओं का सही चित्र उभारा गया है तथा साथ ही साथ केवलानन्द के धार्मिक संस्कारों, उसकी उदारता और रुढ़िवादिता के बीच संघर्ष भी चित्रित किया गया है तभी तो उसे महसूस हो रहा है कि तर्पण करके उन्होंने तो किसन राम के प्रेत को मुक्ति कर दी लेकिन धार्मिक रुढ़ियों में अटका उनका मन महसूस करता है कि प्रेतात्मा अभी छटकी है।

शैलेश मटियानी की विशेषता उनकी भाषा में नहीं बल्कि उनकी विशेषता उनकी अनुभूति में है। उनके प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं:---
 ‘मेरी तैंतीस कहानियाँ’, ‘दो दुत्तों का एक सुत’, ‘सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ’, ‘सफर पर जाने से पहले’, ‘हारा हुवा’, ‘बतीत तथा अन्य कहानियाँ’।

1- प्रेतमुक्ति-- शैलेश मटियानी-- दो दुत्तों का एक सुत-- पृ०-197,
 किताब मल्ल प्रा० लि०- 56-ए- बीरो रोड- इलाहाबाद- संस्क०-1966।

कृष्णा सौबती:-- कृष्णा सौबती आधुनिक बोध की प्रमुख कहानी ऐतिहासिक है। उनकी कहानियाँ में प्रायः पंजाब देश की मिट्टी की गंध समाई हुई है। इस प्रकार की उनकी सर्वप्रमुख सशक्त कहानी हैं *मित्रो मर जानी*, *यारों के यार*, *तिन पहाड़* और बादलों के घेरे * भी उनकी बहुचर्चित कहानियाँ हैं।

कृष्णा सौबती की सशक्त और विवादग्रस्त रचना *यारों के यार* कही जा सकती है। *इस कहानी को पढ़ते हुए कई बार लगा फर्श बुहारने, दीवारों के रंग की परत उतारने या पृष्ठों के वापस में टकराने में जैसी *धिसधिस* की एक असहनीय आवाज होती है, कुछ वैसी ही बात मन को बार-बार हू जाती है। *वफ़्तरी ज़िन्दगी के भीतर चलने वाले छैन देन ठेके कमीशन के शाही घंघों की परतें सौल कर इस कहानी *यारों के यार* में रसी गई हैं।

तिन पहाड़³ सौबती की भावना प्रधान कहानी है। इसमें कहानी कम कविता अधिक है। जया श्रीकान्त की बाग्दत्ता है किन्तु श्रीकान्त एहीना से विवाह करके स्वदेश लौटता है। पीड़ित जया दार्जिलिंग चली जाती है वहाँ उसकी मुलाकात पुत्रुल की याद में सोर हुए युवक तपन से होती है दोनों परस्पर आकर्षण में बंध जाते हैं। इसी बीच श्रीकान्त जया को मनाने वहाँ वा जाता है और जया तपन और श्रीकान्त के आकर्षणों में लिप्त होती है और अन्तर्द्वन्द्व में प्रह जाता है।

1- आलोचना-- अक्तूबर-दिसम्बर- 1968- पृ०- 107, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

2- यारों के गिर -- कृष्णा सौबती-- यारों के यार--तिन पहाड़- पृष्ठ-1-67, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1968।

3- तिन पहाड़-- ,, - वही- ,, पृ०-67--142।

‘मित्रो मरजानी’ के विषय में डा० इन्द्रनाथ मदान ने लिखा है-- ‘इस रचना की विशेषता को पंजाब की घर की सौधी मंभ में भी वाँका जा सकता है।’

कृष्णा सोबती का लेखन अल्प होते हुए भी महत्वपूर्ण है जो सच्चे अर्थों में नई कहानी के लिए उपलब्धि है। उनका शिल्प अन्य कहानीकारों से बिल्कुल भिन्न है। कृष्णा सोबती के प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं--- मित्रो मरजानी, ‘यारों के यार तिन-पहाड़’।

महीप सिंह:--- (जन्म-- 13 अगस्त 1930, कानपुर- 2050)-- महीप सिंह सचेतन कहानी के सर्वक कहानीकारों में से हैं। उनकी कहानियों में घूमते शहर के लोग, फगड़ते बच्चे, सफर करती हुई मीठ बादि रोज़मर्रा की जिंदगी के यथार्थ चित्र अंकित हुए हैं।

‘सुबह के फूल’, ‘सीधी रेखाओं के बूँद’, ‘गंध’, ‘पारदर्शक’, ‘धिराब’, ‘धिरा हुए दाणा’, ‘पानी और पुल’ बादि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। महीप सिंह की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी कहानियों में कृत्रिमता का अनुभव नहीं वरन् लगता है जैसे अपने साथ घटी घटना को ही पाठक उनकी कहानी में पढ़ रहा है।

‘सीधी रेखाओं के बूँद’ कहानी में दो प्रेमियों की मानसिक स्थिति का कलात्मक चित्रण है। इसमें प्रेमी - प्रेमिका सर्बों को केबिन में डोढ़कर बला जाता है। सर्बी निराश होकर अपनी गृहस्थी जमा लेती है फिर मौका जाने पर कहने से भी नहीं झुकती-- ‘तुमने मुझे कुबला था-- अपमानित किया था, तुम बड़े समझते हो, तुम बड़े महान हो-- तुम

1- हिन्दी कहानी-- अपनी जबानी-- इन्द्रनाथ मदान, पृष्ठ- 129।

समझते ही मैं अभी भी तुम्हारे पीछे उसी तरह दूम खिटाती हुई
घूम रही हूँ। तुम्हारी हर बात को पगवान का बचन मानकर सिर
माथे बढ़ाये फिर रही हूँ *¹।

*गंध*² कहानी में अनुभव का रचनात्मक और संश्लिष्ट
रूप मिलता है। यौनपरक विस्फोटक स्थितियाँ संबंधों में जो तनाव और
हताशा भर देती हैं उसका बोध कराने में कहानी में पूर्ण समर्थ है।

महीप सिंह ने अपनी सभी कहानियों में युगीन सम्वर्ध में जीवन
की विविध विह्वलनावों को विविध दृष्टिकोणों से देखने की चेष्टा की
है। उनकी कहानियों के कथ्य में वैविध्य है। *सुबह के फूल*, *उजाले के
उल्लू*, और *धिराब* महीप सिंह के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

शानी:--- शानी की कहानियों की कथावस्तु मारी जीवन की घुटन, निराशा
तथा दमित बासनावों की विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर खड़ी है।
शानी के शिल्प में सहजता भले ही न हो तो भी शैली की सादगी और
अनुभूतियों का खरापन उनकी कहानियों में दिखाई पड़ता है।

नी, *गंदले जल का रिश्ता*, *मूले हुए*, *एक नाव के
यात्री*, *जहाँ दो रहमत के फरिश्ते बाँकी*, *घटूरे का फूल*,
जली हुई रस्सी उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

*एक नाव के यात्री*³ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसमें माता-
पिता बहन-भाई सब एक मनोबुद्धि के शिकार हैं। यह पारिवारिक विघटन

1- सीधी रैतावों का बूँद-- महीप सिंह-- वर्षायुग, 24 मई, 1970

पृष्ठ- 11 ।

2- गंध- महीप सिंह- विकल्प कथा साहित्य वित्तोर्गिक- पृ0-427,
विकल्प कार्यालय, माँतीछाऊ नैल्ल नगर, इलाहाबाद-2, सं0-1969 ।

3- एक नाव के यात्री-- शानी- युद्ध- पृष्ठ-146, विषा प्रकाशन मंदिर,
1681-दरिबार्गज, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973 ।

की कहानी है। रंजन सात बर्ष बाद विदेश से घर लौटता है जाते ही वह पहले पत्नी के घर जाता है और फिर अपने घर वा जाता है जहाँ उसके माँ-बाप, माई-बहन सभी उसकी प्रतीक्षा व्याकुलता से कर रहे हैं। घर जाने पर भी उसका समय पाटीं और कल्यों में ही अधिक व्यतीत होता है। उसे अपनी पिता की आँसों की ज्योति समाप्त हो जाने की चिन्ता नहीं है। कुछ दिन बाद वह वापस लौटने की तैयारी करने लगता है पर अपने मन की कबौट अपनी बहन कीर्ति से बता ही जाता है।

‘मूँठे हुए’¹ उनकी सशक्त रचना है। इसमें देश के इतिहास के ऐसे अनलिखे पृष्ठ कहानी है जिसमें मध्यवर्ग का एक प्राणी मात्र जीने की आकांक्षा से सिर उठाता है और उसका सिर फूट जाता है। मि० बलुबेदी बहुत दूर तक मविष्य नहीं देख पाते और वर्तमान की परिस्थितियाँ उन्हें तोड़ देती हैं।

शानी के प्रमुख कहानी संग्रह ये हैं---‘छोटे घर का विद्रोह’, ‘बकूल की छाँव’, ‘ढाली नहीं फूँटती’ और ‘युद्ध’।

रामकुमार:--- (जन्म- 1924, शिमला, हिमाचल प्रदेश)-- रामकुमार की कहानियाँ चित्रात्मक बरातल पर लिखी गई हैं। छोटी-मोटी रैतावों के द्वारा उन्होंने अपनी कहानी के प्रत्येक अंश को नाड़े उथले रंग देकर उन्हें उभारने का पूर्ण प्रयास किया है। ‘सेलर’, ‘बोरी’, ‘कितना समय’, ‘रिकाई’, ‘एक बेहरा’, ‘बात्रा’, ‘दायरा’, ‘हर शाम’, आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

1- मूँठे हुए-- शानी- युद्ध-- पृष्ठ- 88, विद्या प्रकाशन मंदिर,
1681-दरिबार्गज-दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973 ।

सेठर¹ रामकुमार की एक सशक्त रचना है जिसमें बाज के निरुपाय आदमी की कहानी कही गई है। इसमें *उसकी* वीर एक हाथ की जीवनी एक साथ कही गई है। मन्नु को पैदा करके उसकी पत्नी मर जाती है तो उसका जीवन बिल्कुल निरुपाय हो जाता है। ससुर के यहाँ उसकी दीन दशा हो जाती है वीर अन्त में वह झुड़ होते मन्नु के साथ टिन के बने स्टोर रूम में पड़ा रहता है।

मनः स्थितियों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करने में रामकुमार पर्याप्त कुशल है। उनकी कहानियों में कथ्य संक्षिप्त वीर सूक्ष्म है किन्तु उसके द्वारा आधुनिक व्यक्ति का पूर्ण स्वरूप उभरा है। चित्रकार होने के कारण चित्रात्मकता भी कहानियों में देखी जा सकती है। इस संदर्भ में उनकी कहानी *साली कैनवास²* देखी जा सकती है। इस कहानी में दो पात्रों (स्त्री-पुरुष) का मानसिक असामंजस्य चित्रित किया गया है। मनः स्थितियों पर लिखी गई कहानियों में इस कहानी का अपना अलग महत्त्व है।

एक बेहरा, *हुस्ना बाबी* वीर *समुद्र* उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

हृदयेश:--- (जन्म- 1920-साहजहापुर- उ०प्र०) -- हृदयेश आधुनिक युग के नये कहानीकार हैं। इन्होंने आर्थिक विहम्बनावों, अज्ञानियों वीर आधुनिक परिवेश में परिवर्तित जीवन मूल्यों को अपनी कहानियों में उमिष्कृत किया है। *डेकोरेशन पीस*, *साया*, *वह वीर जाह*, *बबिरबास*,

1- सेठर- रामकुमार- एक दुनिया समानान्तर-- सं०- राजेन्डु यादव, ५०-825, बहार प्रकाशन- 2136- अंसारी रोड, दरिबार्गज-दिल्ली प्रथम संस्करण- 1970 ।

2- साली कैनवास- रामकुमार- विकल्प कथा साहित्य विशेषार्क- पुष्ठ-121, सं०- शैलेश मटिवानी, विकल्प कायस्थिय, मोतीछाठ नैस-नगर, इलाहाबाद-2, सन् 1969 ।

‘दाम्पत्य’, ‘परतों के नीचे’, ‘गुलदुपहरिया के पीछे’, ‘सीसीफस’ आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

‘डेकोरेशन पीस’¹, आधुनिक बोध और कृत्रिम प्रदर्शन पर आधारित कहानी है। ड्राइंग रूम में सीफों, कुद्दान आम चीजें हैं किन्तु कच्चाई जीवन में वे चर्चा का विषय बन सकते हैं तभी तो इस कहानी में रामदास के पुत्र, नाती, पोते, सभी इसकी चर्चा करते हैं कि रामदास गबनर होते, यदि वे जीवित होते। कोई कहता कि वे गांधीजी के साथ, नेहरू जी के साथ जेल रहे थे। उन सब का वादर्थ केवल रामदास जी हैं लेकिन व्यवहार में वे केवल बातचीत का विषय रह जाते हैं। वे डेकोरेशन पीस की तरह हैं।

‘साया’² कहानी संशय पर आधारित है। संशय से सिरिकिशन वार्तकित है। दादा रामकिशन एक चिट लिख कर रेल से कट कर मर गए कि जीवन किसी काम का नहीं है इसलिए वे मर रहे हैं। इसी संत्रास को सिरिकिशन के पिता बराबर भुगत रहे हैं। सिरिकिशन जब कुँरे में बाल्टी डालता है तो उसके पिता को संशयग्रस्त होने के कारण समझ में नहीं आता। वे पास जाकर लड़े हो गए और फटी-फटी बर्तनों से बेटे को देखने लगे।

‘परतों के नीचे’³ कहानी में कामवासना की स्थिति का चित्रण किया गया है।

1- डेकोरेशनपीस-- हृदयेस-- लोटे शहर के लौग-पृ०-121, अक्षर प्रकाशन
प्रा०लि०-2।36-अक्षरी रोड-दरियार्गज-दिल्ली, पृ० सं०-1972।

2- साया-- बही-- पृष्ठ- 65 ।

3- परतों के नीचे-- बही-- पृ०- 133 ।

‘होटे सहर के लॉग’ हृदयेश का प्रमुख कहानी संग्रह है इसके अतिरिक्त अन्य कहानियाँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

सुधा बरोड़ा:--- (जन्म- 4 अक्टूबर- 1946) -- ये नई पीढ़ी की सफल कहानी लेखिका हैं। यथार्थ की पीढ़ा, नारी जीवन की अस्तित्वगत गहराई, विसंगति, अनुभूति की गहराई इनकी सभी कहानियों में उभर कर आई है।

‘एक सेंटीमेटल डायरी की मौत’, ‘घर’, ‘बाग’
‘अविवाहित पुच्छ’, ‘स्टैपल’, ‘मरी हुई चीज़’ इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

सुधा बरोड़ा की कहानियों में व्यक्ति के जीवन की बेतरतीब कहानी है। उनके पात्रों के पास आधुनिक जीवन की एक वार्तिक छटपटाहट है और यही उनकी कहानियों को कैशोर्य प्रदान करती है। ‘एक सेंटीमेटल डायरी की मौत’ उनकी एक ऐसी ही कहानी है जिसमें बाज की एक भावुक लड़की की मानसिक उथल-पुथल का चित्रण किया गया है।

सुधा बरोड़ा की कहानियों में दूर की कोई एक छोटी सी बात वर्तमान से संबद्ध हो जाया करती है। यह उनकी कहानियों में ‘फ्रैश बैक’ का काम करती है। लेखिका की पंक्ति-पंक्ति में रचनात्मक परिवर्तन दिखाई देता है।

सुधा बरोड़ा की नारी में न तो परम्पराओं के प्रति ही मोह है और न कालित नष्ट परम्पराओं को खनाने की वासना। इनकी

1- एक सेंटीमेटल डायरी की मौत- सुधा बरोड़ा - और-तराशे हुए,
पृ०- 80, इकाई प्रकाशन, 16-पुस्तकालय नगर हिमालय, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण- 1968 ।

कहानियाँ नर्ससता, विश्वासघात, असत्य मुसौरे और घृणित कर्मों के चित्र प्रस्तुत करती हैं। इनमें परिवर्तन के प्रति खुलाहट है। इनमें वैविध्यता, नये कथ्य और कथन की प्रयोगशीलता एवं परिवेश की यथार्थ अभिव्यक्ति देने की वागुत्सीलता है।

‘कीर तराशे हुए’ सुधा बरोड़ा का प्रमुख कहानी संग्रह है।

काशीनाथ सिंह:-- (जन्म- 1927)-- काशीनाथ सिंह आधुनिक बोध के समर्थ कहानीकार हैं। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं-- ‘बासिरी रात’, ‘सुप्त’, ‘सुबह का डर’, ‘लोग बिस्तरों पर’, ‘कच्चा जाल और बादमी’, ‘संकट’ आदि।

उनकी सभी कहानियों में आधुनिक जीवन की विहम्बनाओं, अतृप्त यौन भावना, विविध सामाजिक अभिशापों, भीड़ में लोए हुए इन्सान, आधुनिक जीवन की उकताहट आदि का चित्रण है।

‘बासिरी रात’¹ उनकी बहुचर्चित कहानी है इसमें पति-पत्नी की कहानी है। पत्नी दूसरे दिन अपने पीछर जाने वाली है, दोनों प्रेमालोप में डूबे हैं क्योंकि दोनों सुबह जल होने वाले हैं पर वह प्रेमालोप एक बिन्दु पर आकर टूटता है जब पत्नी मायके में माई के बच्चों के लिए कपड़े आदि ले जानी की बर्बाद करती है, पति बेरोज़गार है।

‘लोग बिस्तरों पर’² शायद आधुनिकता की परंपरा का निबर्ह करने के लिए लिखी गई कहानी है जिसमें लेखक अपना नवीन प्रयोग दर्शित

1- बासिरी रात-- काशीनाथ सिंह- लोग बिस्तरों पर-- पृ०-17,

अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847-यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2, प्र०सं०-1969।

2- लोग बिस्तरों पर-- ,, -- वही -- ,, पृष्ठ-108।

करना चाहता है। इस कहानी को छोड़कर अन्य सभी कहानियों में जीवन की गहन अनुभूति दिखाई पड़ती है। *सुल²* उनकी ऐसी ही कहानी है। *संकट³* में यौन समस्या को चित्रित किया गया है।

काशीनाथ सिंह के कथ्य और शिल्प दोनों में ताकत है।
छोग बिस्तरों पर और *सुबह का डर* उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

कृष्ण बलदेव वैद :--- (जन्म- 1927- ठिंगर, छाहीर पाकिस्तान)- ये
वास्तविक संवेदना के प्रमुख कहानीकार हैं--*बजनबी*, *शैलोज*, *मरी हुई*
मल्ली, *काबान के नाम सिफारिशी बिट्ठी*, *त्रिकोण*, *मेरा दुरमन*,
दूसरे किनारे से आदि वापकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

इनकी कहानियों में गहरे स्तर की कलात्मक अभिव्यक्ति है।
मृत³ कहानी में दम्पत्तियों के बितराने की स्थिति में पति और पत्नी की
सामोशी का चित्रण है। न पति में इतनी शक्ति है कि वह इस सामोशी
का कारण बताये और न पत्नी में। इस प्रकार यहाँ कहानी में अपना
परायापन उभर कर आया है।

ऋण⁴ कहानी में परिवार के टूटने की कथा बड़ी निर्ममता से
चित्रित हुई है। इस कहानी में माँ-बाप का दुल और *धै* का असमर्थ
वात्पत्तैव एक ऐसी कहानी में उल्लेख है जो बारम्बार होकर अन्त तक जाती है।
रात⁵ अति यथार्थवादी शैली में *ऋण* की ही संवेदना उठी है।

1- सुल- काशीनाथ सिंह- छोग बिस्तरों पर- पृ0-55, अभिव्यक्ति
प्रकाशन, 847- यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2, प्रथम सं0- 1969 ।

2- संकट- ,, - वही - ,, पृष्ठ- 9 ।

3- मृत- कृष्ण बलदेव वैद- दूसरे किनारे से-- पृ0-19, राधाकृष्ण
प्रकाशन, दरिबार्गव- दिल्ली - ।

4- ऋण- ,, - वही - ,, पृ0- 30

5- रात- ,, - वही - ,, पृ0- 90

नीला बंधरा¹ में अकेला न रह सकने की कमजोरी के प्रेम की गैर इमानी कहानी बुनी गई है ।

त्रिकोण² में सैक्स की समस्या है । *बीच का दरवाजा³* नये और पुराने विचारों के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी है । पुरानी विचारधारा के पति-पत्नी अन्त में अपने विचारों का दरवाजा खोल देते हैं और दूसरे कमरे में रहने वाले युवक से अपनी बेटी का विवाह करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

मेरा दुश्मन और *दूसरे किनारे से*, *बीच का दरवाजा* उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं ।

से० रा० यात्री:--- ये वाज की कहानी के सशक्त कहानीकार हैं ।
उन्होंने जिन संघर्षों को अपने जीवन में झेला है उन्हीं को अपनी कहानी का विषय बनाया है । वे अकेलेपन को या मृत्यु को ऐसी संतुष्ट स्थिति नहीं मानते जिससे मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति अपने को पूर्णतः इसी पर केन्द्रित कर दे । यात्री जी ने मध्यमवर्गीय परिवार की पीड़ाओं और समस्याओं को अपनी कहानी का विषय बनाया है ।

बोझ, *गंद और गुबार*, *रुक और यमाति*, *टकराते हुए त्रिकोण*, *त्रिकु*, *दूसरे चेहरे*, *हिपी हट का दर्द* इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं ।

1- नीला बंधरा--कृष्ण बलदेव वैद-- दूसरे किनारे से - पृष्ठ- 19,
राधाकृष्ण प्रकाशन, दरिबार्गज- दिल्ली ।

2- त्रिकोण- ,, - वही - ,, पृष्ठ- 11 ।

3- बीच का दरवाजा- कृष्ण बलदेव वैद- बीच का दरवाजा- पृ०-11,
नीलाम प्रकाशन, 8-दुसरी बाग रोड, इलाहाबाद - 1 ।

- * बहाना¹ * कहानी में बाज की व्यवस्था से टूटा हुआ निराश और कुंठित पड़ा लिखा नवयुवक किस प्रकार बाज की परिस्थितियों से वनमिश्र रहता हुआ मनीषित हो बैठता है, इसका चित्रण हुआ है।
- * वस्यदान² * में मृत्युर्बाधग्रस्त अकेले व्यक्ति की व्यथा उमर कर बाई है।
- * अलग-अलग वस्वीकार * कहानी में झेल विचारों वाले दाम्पत्य संबंधों में उत्पन्न होने वाली दरार का चित्रण किया गया है।

इस प्रकार से 0 रा 0 यात्री की कहानियाँ संवेदना से पूर्ण हैं जिनमें बाज की मानसिकता और विविध अनुभवों की सफलता है। शिल्प के उद्धान में से 0 रा 0 यात्री का मोह नहीं है।

* दूसरे बेहरे * और * अलग-अलग वस्वीकार * से 0 रा 0 यात्री के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

महेन्द्र मल्ला :--- महेन्द्र मल्ला ने बाज के जीवन की नवीन स्वीकृतियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में बाधुनिक जीवन के तथाकथित नवीन स्वीकृत मूल्य का यथार्थ चित्रण एवं उसके सौल्लेखन के मुत्तैटे छटाने का प्रयास किया है।

* पीड़ा *, * एक बीज *, * फाँदा *, * ठर *, * एक पति के नोट्स * इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

1- बहाना- अलग-अलग वस्वीकार- से 0 रा 0 यात्री- पृ 0-78, मावना प्रकाशन, 25। 2-रेलवे क्वार्टर्स- माता सुंदरी पैलेस, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1973।

2- वस्यदान- ,, - वही- ,, पृष्ठ- 97।

3- अलग-अलग वस्वीकार- ,, - वही - ,, पृष्ठ- 128।

उन्होंने अपनी कहानियों में वास्तविक परिवेश के यथार्थ पक्ष को बड़े ही मार्मिक और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने व्यक्ति के अस्तित्व की समस्या को व्यापक परिवेश में देखा है इसके लिए वे किसी प्रतीकों का सहारा नहीं लेते इसीलिए उनमें दुर्बलता नहीं दिखाई देती। उनकी बहुचर्चित कहानी 'एक पति के नोट्स' ¹ में केन्द्रीय पात्र अपने में और अपने परिवेश में स्वयं को एक विचित्र पात्र अनुभव करता है। इस कहानी में पति-पत्नी के कोमल संबंधों को एक नया आयाम प्रदान किया गया है। इसी प्रकार 'तीन बार दिन' ² कहानी में पति-पत्नी के संबंधों का मनोवैज्ञानिक स्वरूप उद्घाटित किया है। महेन्द्र मल्ला की कहानियाँ एक और माया शिल्प के साथ यौन-संबंधों को प्रस्तुत करती हैं।

'एक पति के नोट्स' और 'तीन बार दिन' महेन्द्र मल्ला के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

श्रीकान्त वर्मा :--- श्रीकान्त वर्मा क्योंकि कवि भी हैं इसलिए उनकी कहानियों में कविता का पुट होना स्वाभाविक है। इनकी अधिकांश कहानियाँ प्रेम कहानियाँ हैं। उन अविनिर्णीत स्त्री-पुरुषों की कहानियाँ हैं जो प्रेम के बावजूद अकेले हैं। संशय, अविश्वास और अमूर्तता इनकी कहानियों की मनःस्थितियाँ हैं।

'फाड़ी', 'शक्यात्रा', 'ठण्ड', 'संवाद', 'बाँस', 'वरधी' आदि प्रमुख कहानियाँ हैं।

1- एक पति के नोट्स-महेन्द्र मल्ला-- एक पति के नोट्स, पृष्ठ-1-102, राकेश प्रकाशन, 8-पूँज बाजार -दिल्ली-6, प्रथम सं०- 1967 ।

2- तीन बार दिन-- महेन्द्र मल्ला- तीन बार दिन-- पृ०-108, रचना प्रकाशन, 45-ए सुल्तानबाद, इलाहाबाद-1, प्रथम संस्करण- 1972 ।

काढ़ी¹ कहानी परिवर्तित परिस्थितियों में बदलते मूल्यों को उभारा गया है। बेरोजगारी में प्रेम मुहब्बत भी निरर्थक ही प्रतीत होते हैं क्योंकि आज नौकरी का मूल्य प्रेम से अधिक है। आरम्भ में अखिल को महसूस होता है कि नौकरी उसके लिए जाँक ही गई है। वह अपनी नौकरी से थपक कर रह गया है इसलिए आवेश में जाकर वह नौकरी से त्यागपत्र दे देता है पुनः जाकर वह उमा से मिलता है। उसे चूमता है, चाय बनाने को कहता और बताता कि वह हस्तीफा दे आया है। इस बात पर उमा के हाथ से चाय छलक पड़ती है। वह महसूस करता है कि दोनों के बीच एक दीवार खड़ी हो गई है और यह दीवार अब कभी नहीं टूटेगी और अन्त में वह अपना हस्तीफा वापस ले लेता है।

दूसरे के पैर² एक ऐसी कहानी है जिसमें व्यक्ति दूसरे के सहारे सौचता है और यदि अपने अनुसार सौचता है भी तो दूसरे के अनुसार झुक जाता है। उसकी ट्रेजडी यह है कि वह कुछ भी अस्वीकार नहीं कर पाता।

श्रीकान्त वर्मा ने तटस्थ होकर आधुनिक जीवन की विभिन्न किर्णतियों और विकृतियों को निर्व्यक्तिकता, निर्भयता और निस्पृहता के साथ चित्रित किया है।

काढ़ी व *संवाद* श्रीकान्त वर्मा के प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

1- काढ़ी- श्रीकान्त वर्मा-- काढ़ी-- भारतीय ज्ञानपीठ- दुर्गाकुण्ड रोड बाराणसी-5, प्रथम संस्करण-1964 ।

2- दूसरे के पैर-- श्रीकान्त वर्मा-- काढ़ी- पृ०-80, भारतीय ज्ञानपीठ-- दुर्गाकुण्ड रोड- बाराणसी-5, प्रथम संस्करण- 1964 ।

शैलर जोशी :--- (जन्म- 10 दिसम्बर 1934, वीलिया गाँव, अहमदाबाद)-
शैलर जोशी ने एक ओर तो वाज की किसंगतियों में टूटे हुए लोगों का चित्रण
किया है तो दूसरी ओर ग्रामीण जीवन के नये नये कोणों का अवलोकन कर
प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाया है ।

बदबू, *दाज्यू*, *कोसी का घटवार* आदि इनकी प्रमुख
कहानियाँ हैं ।

कोसी का घटवार¹ शैलर जोशी की बहुचर्चित कहानी है ।
कोसी का घटवार में एक अंचल के जीवन को उसकी समस्त आकांक्षाओं,
अभिलाषाओं तथा मनोवृत्तियों के साथ प्रस्तुत किया गया है जिसमें गुंसाई
वीर लक्ष्मा के भीन धिरन्तन प्रेम की कहानी बड़े ही मार्मिक ढंग से कही
गई है । पन्द्रह बर्षों के बाद गुंसाई पलटन से वापस आता है तब भी उसके
मन में लक्ष्मा वीर उसके बच्चे के लिए प्रेम वीर स्नेह बना हुआ है । लक्ष्मा
विधवा होकर मायके में गुजर करने आई है लेकिन वह बच्चे के नाम पर रौंटी
भी आसानी से नहीं स्वीकारती , ऐसे तो दूर की बात है । गुंसाई
कुछ भी न कर पाने पर उसके आटे में अपना आटा मिला देता है जो उसके
भीन प्रेम का प्रतीक है । इस सबके बावजूद भी वे दोनों अकेले हैं । कोसी
नदी की सूती धार उनके अकेलेपन का सूचक है ।

बदबू² कहानी में वाज के जीवन बीज की सहज मार्गी मिलती
है । वाज के वातावरण में ईमानदार वीर परित्रपी व्यक्ति का गुजर होना
मुश्किल है वाज वही व्यक्ति अपने को इस समाज में स्थापित कर सकता है
जो समझाते कर सके वीर चाटुकारिता कर सके । ईमानदार व्यक्ति तो
अन्त में अकेला ही रह जाता है ।

1- *कोसी का घटवार* - शैलर जोशी-- नई कहानी: प्रकृति वीर पाठ
(भूमिका) श्री सुरेन्द्र, पृष्ठ- 71 ।

2- बदबू- शैलर जोशी- एक दुनिया समानान्तर- सं०- राजेन्द्र यादव
पृष्ठ- 357, बहार प्रकाशन प्रा० लि०, 2136- अंतारी रोड, दरियागंज,
दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1970 ।

शेखर जोशी अपनी कहानियाँ अनवर कथ्यों को प्रस्तुत करते हैं ।
 कौसी का घटवार और *बबू* उनके प्रमुख प्रकाशित कहानी संग्रह हैं ।

रामदरश मित्र:--- (जन्म- 1924)--- नयी कहानी के साथ-साथ नयी
 कविता से भी निरन्तर जुड़े हुए हैं ।

मंगल यात्रा, *एक वीरत एक जिन्दगी*, *छाल ह्येलिया*,
 माँ सम्नाटा वीर बजता हुआ रेडियो, *निर्णयों के बीच निर्णय*,
 मिस् फिट, *घर*, *घराया शहर*, *संबंध*, *एक वह*, उनकी
 प्रमुख कहानियाँ हैं ।

लेखक ने उन्हीं तथ्यों को अपनी कहानी का विषय बनाया है
 जिनके बीच होकर वह गुजर रहा है । उस गुजरते हुए क्षण की अभिव्यक्ति
 कहीं ईमानदारी से की है । इसीलिए कहानी की प्रत्येक घटना पाठक को
 अपने जीवन की घटना प्रतीत होती है । *चिट्ठियों के बीच¹* में लेखक ने
 गाँव की लाचारी नंगी बेकसी का चित्र सींचा है । *माँ सम्नाटा वीर बजता
 हुआ रेडियो²* में लेखक ने गाँव की गरीबी का चित्र सींचा है । गाँव
 में बीमार को अच्छी दवाइयाँ तो दूर की वस्तु है । अच्छा जन्म भी नहीं
 मिल पाता । वस्तुतः यह गाँव की नहीं भारत के अविर्भाव गाँवों की गाथा
 है । *एक वीरत एक जिन्दगी³* में झुकने वाली अक्ल का सबल रूप उभारा
 गया है ।

एक वह और *ताली घर* रामदरश मित्र के प्रमुख कहानी
 संग्रह हैं ।

-
- 1- चिट्ठियों के बीच-- रामदरश मित्र- ताली घर- हिन्दी कहानी:---
 बदलते प्रतिमान, पृ०-185- डा० रघुवर दयाल बाज्जैय, पांडुलिपि
 प्रकाशन, ई- 11। 5-कृष्ण नगर, दिल्ली-110005, प्रथम सं०- 1975 ।
- 2- माँ- सम्नाटा वीर बजता हुआ रेडियो-- वही -- पृष्ठ- 186 ।
- 3- एक वीरत एक जिन्दगी-- ,, - वही - ,, पृष्ठ- 186 ।

सुदर्शन चौपड़ा:--- सुदर्शन चौपड़ा की कहानियाँ में नवीन दृष्टिबोध के दर्शन होते हैं। इनकी कहानियाँ का कथ्य वर्त्यत सामान्य है फिर भी शिल्प वर्त्यत बाधुनिक है। 'पैसा', 'जाले', 'बापसी', 'पुल', 'सास पाहुना', 'सण्ठित क्या', 'फान्वा', 'सड़क दुर्घटना', इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

'सास पाहुना'¹ बाबूजी के दुसरे वन्त की मार्मिक कहानी है। बाबूजी ने अपनी जिन्दगी का एक हाण भी अपने लिए नहीं जिया। हमेशा सब कुछ सहा ही और कुछ कहा तक नहीं- सुख नाम की चीज जिसके लिए उसनी ही वजनबी और कात्पनिक रही जितनी कि किसी भी व्यक्ति के लिए भगवान, जो सिर्फ एक वासरे का फरेब मर है-- यूँ फरेब तो खुद हन्सान भी है-- इसकी सारी वास्थार और विश्वास भी। सब रिश्ते नाते भी। ये पूरा का पूरा ताम माग ही *।

'सड़क दुर्घटना'² अस्तित्व संकट से सीधे टकराने वाली कहानी है जो मृत्यु भय के अनेकानेक स्तरों का उद्घाटन करती है।

'सड़क दुर्घटना' सुदर्शन चौपड़ा का प्रमुख प्रकाशित कहानी संग्रह है।

विजय मोहन सिंह:--- विजय मोहन साठोहर कहानी के प्रमुख कहानीकार हैं। 'एक तस्वीर के चारों ओर', 'मीठ के बाघ', 'वे दोनों', 'होटे शहर का एक दिन', 'किसी दूसरी जगह', 'टट्टू सवार' इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

1- सास पाहुना-- सुदर्शन चौपड़ा- सड़क दुर्घटना - पृष्ठ- 84, नीलाम प्रकाशन, 5-सुसरी बाग रोड- इलाहाबाद, प्र० सं०- 1972।

2- सड़क दुर्घटना- सुदर्शन चौपड़ा- सड़क-दुर्घटना, पृष्ठ- 86, नीलाम प्रकाशन, 5- सुसरी बाग रोड- इलाहाबाद- प्र० सं०- 1972।

विजय मोहन सिंह की विशेषता यह है कि ये जीवन के छोटे से लंड को लेकर उसकी अर्थवत्ता और अर्थहीनता स्पष्ट करने की चेष्टायें किया करते हैं। इस दृष्टि से उनकी कहानी 'एक तस्वीर के चारों ओर'¹ एक उत्प्रेक्षणीय रचना है। 'मैं' अपने घर जाता है, एक दो दिन ठहरता है और माथी नीरू से भी बातें होती हैं -- घर गृहस्थी की, छिपी तरीके जाने की। छत्ता से शादी कराने की भी नीरू रुचिपूर्वक बातें करती है। लेकिन सदा ही ऐसी बातों में उसकी कोई विशेष रुचि और सम्मान नहीं होता है। वे कहती हैं उसका फोटो भी है। यही फोटो उसके दुकले पतले शरीर का रहस्य। इस छोटी सी कथा के द्वारा कहानीकार संबंधों की अर्थ-हीनता और मन की सही स्थिति को स्पष्ट करने में सफल हो सका है।

'भीड़ के बाद'² में अस्तित्व संकट की पहचान में अधिक सफल हुए हैं। भीतरी विघटन के बावजूद अपने स्वत्व की पहचानने का प्रयत्न संकेत इस कहानी में है। विजय मोहन सिंह का प्रमुख कहानी संग्रह 'टट्टू सवार' है।

अन्विता कृवाल :--- अन्विता कृवाल कृत- 'मुट्ठी भर पहचान' में 'दर्द और ईतबार', 'रक्तीछेंट', 'एक बदलता हुआ आदमी', 'रेस', 'रबारबण्ड', 'कुत्तार', 'झकटा', 'कटी हुई तारील', आदि ग्यारह कहानियाँ हैं। इन कहानियों में लेखिका ने महानगरों के सामाजिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में द्वितीय-महायुद्ध के बाद के स्त्री-पुरुष की विभिन्न मनः-स्थितियों का चित्रण किया है। आधुनिक युग की भीड़भाड़ मध्यमवर्गीय

1- एक तस्वीर के चारों ओर - विजय मोहन सिंह- टट्टू सवार-

पृष्ठ-68, रचना प्रकाशन, 45-ए-सुल्तानबाद, इलाहाबाद-1, प्रथम संस्करण- 1971।

जीवन की विडम्बनाओं, दाम्पत्य जीवन की एक रसता से ऊबे वायिक विषमताओं आदि के कारण पुराने मूल्यों और मान्यताओं का विघटन आदि बातों को बन्विता कृबाल ने अपनी कहानियों में उठाया है । कहानियों में ऐत्तिकीय तटस्थता, सहज स्वामाविकता और तीव्र वायुनिक बोध है ।

बैद राही:--- बैद राही के 'दरार' (1971) कहानी संग्रह में 'तास-उठ-तास', 'पचरुहरवें बर्ष का एक दिन', 'दुष्टना', 'रिहता', 'बफ' आदि कहानियाँ हैं जिनमें ऐत्तिक ने लघुमानव के जीवन को विविध कोणों से देखा परखा है । वे अत्यंत सहज स्वामाविक ढंग से जीवन की विभिन्न स्थितियों से साक्षात्कार कराते हैं और उनके पीछे काम करने वाली प्रवृत्तियों की ओर संकेत करते हैं ।

रमेश उपाध्याय:--- इनके दो प्रमुख कहानी संग्रह हैं--- 'जमी हुई मीठ' और 'शेष इतिहास' । 'जमी हुई मीठ', 'पुराने जूतों की जोड़ी', 'वस्ताचल', 'ब्रस राजास', 'जुलूस', 'प्रतिबुध' आदि आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं ।

श्रीमती विजय चौहान:--- ये भी एक प्रगतिशील कहानीकार हैं । 'एक बुतकिशन का जन्म', 'बालों का वाटिस्ट', 'मुक्ति', 'शरद की नायिका', 'पुन', 'बैनठ', 'अफसर की बेटी' आदि आपकी प्रमुख कहानियाँ हैं । इन्होंने अपनी कहानियों में समूचे परिवेश और समाज को समेटने का सफल प्रयास किया है । अतः युगीन समस्याएँ उनकी कहानियों में पूर्णतया समाहित हो गई हैं । इनके पास एक स्वामाविक शैली है जिसमें पूर्णतया साक्षी, सीबापन, सहजता और रोचकता है ।

इन सबके अतिरिक्त रघुवीर सहाय के दो प्रमुख कहानी संग्रह हैं -- 'सीढ़ियों पर जूँ', और 'रास्ता इधर से है' इन कहानियों में जिन्दगी के टुकड़ों को कहानी बनाया गया है ।

मेहरुन्निसा परबेज का 'बादम वीर हज्जा' प्रमुख कहानी संग्रह हैं। मेहरुन्निसा परबेज एक सशक्त छैलिका हैं वीर इन्होंने मध्यकालीन तथा निम्नमध्यकालीन पात्रों को अपनी कहानी का विषय बनाया है।

राजेन्द्र किशोर के दो प्रमुख कहानी संग्रह हैं-- 'सूरजमुखी के फूल' वीर 'वी मत्स्यगन्धा'। राजेन्द्र किशोर ने जीवन की विह्वलनाओं वीर विसंगतियों का चित्रण बहुत मार्मिकता से किया है।

शिवानी ने यद्यपि कहानियाँ कम लिखी हैं फिर भी 'करिए छिमा', 'पुष्पहार', 'गैडा' उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। शिवानी की एक विशेषता ये है कि उन्होंने अपनी कहानी का मुख्य पात्र नारी को ही बनाया है वीर उसके कोमल प्रेम भावनाओं, उसकी ईर्ष्या के विषम जाल वीर बाज की युवती की समस्याओं को बहुत सुन्दर ढंग से चित्रण किया है।

हिमांशु (बोशी) के दो प्रमुख कहानी संग्रह हैं-- 'रथचक्र' वीर 'वन्ततः'। हिमांशु बोशी जीवन की छोटी सी छोटी क्रिया प्रतिक्रिया को सूक्ष्म अनुभूति को पकड़ने वाले सशक्त कहानीकार हैं, साथ ही उपन्यासकार भी हैं ही।

अमृता प्रीतम का 'वह बादमी वह वीरत', एक प्रमुख कहानी संग्रह है। अमृता प्रीतम का कहने का ढंग बेहोस है। वह किसी भी बात को या घटना को बिना किसी लाग-लपेट के रस देती हैं।

मणिमञ्जर भी एक सशक्त कहानीकार हैं। 'हवा में बकेले' उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

ममता कालिया का 'हुटकारा' वीर पानू सोलिया का 'एक किरती वीर' प्रमुख कहानी संग्रह हैं। कुलभूषण के 'पगडंडी वीर परहाइया' तथा 'ललक' दो प्रमुख कहानी संग्रह हैं। प्रेमचंद सहजवाला का 'सधमा' प्रमुख

कहानी संग्रह है। 'सुदर्शन नारंग का 'सिफ' एक वाकाश ' तथा राधाकृष्ण महाय का 'जालीदार पर्दे की घूम ' भी प्रमुख कहानी संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त जनीता जीलक भी एक सशक्त कहानीकार हैं। देवेन्द्र इस्सर का 'काले गुलाब की सलीब ' कहानी-संग्रह का यहाँ उल्लेख करना भी आवश्यक है।

यहाँ पर जितने कहानीकारों का परिचय दिया गया है उसके अतिरिक्त भी असंख्य कहानीकार ऐसे हैं जो स्वतंत्रता के बाद के कथाकार हैं पर उनकी कहानियाँ कहानी संग्रहों में संगृहीत न हो सकने के कारण और जो संग्रहों और पत्रिकाओं में संगृहीत हैं भी, वे उपलब्ध न हो पाने के कारण उनका परिचय यहाँ पर नहीं दिया जा सका है। इसका वही यह कदापि नहीं होगा कि वे कहानीकार प्रमुख नहीं हैं। यहाँ पर परिचय देते समय इस बात का प्रयत्न किया गया है कि वे सब कहानीकार इस अध्याय में अवश्य समाविष्ट हो सकें जिनकी कहानियाँ शीघ्र ग्रंथ में अन्य स्थानों पर उद्धृत की गई हैं।

-: प्रथम अध्याय :-

**बदलते हुए सामाजिक मूल्यों के संदर्भ में पारिवारिक
सम्बन्धों का स्वरूप**

- (क) पति-पत्नी के संबंध
- (ख) सास-बहू के संबंध
- (ग) पिता-पुत्र के संबंध
- (घ) पिता-पुत्री के संबंध
- (ङ) माता-पुत्र के संबंध
- (च) माता-पुत्री के संबंध
- (छ) भाई-बहन के संबंध
- (ज) भाई-भाई के संबंध
- (झ) बहन-बहन के संबंध
- (ट) अन्य सम्बन्ध

स्वाधीनता के पश्चात् हमारा समस्त साहित्य सबीधा एक नये सन्दर्भ से जुड़ गया फलतः कहानी की संवेदना में भी नई पहचान और नये-नये वायाम समाविष्ट हो गये । परम्परागत मूल्यों की निरर्थकता का आभास प्रेमचन्द की अंतिम कहानियों¹ पूस की रात¹ और कफ़न² आदि में ही मिलने लगा था बाद में जेनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, रणिय राघव, उपेन्द्रनाथ अशक और विष्णु प्रमाकर आदि ने बटसते-टूटते परम्परानुमोदित जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करते हुए नये मूल्यों की संभावना का पथ प्रशस्त किया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त नये कहानीकारों ने यह अनुभव किया कि देश की आजादी प्राप्त करना मात्र सब कुछ नहीं है । इस स्वतंत्रता ने स्वाधीन व्यक्ति के आंतरिक प्रश्नों को नहीं सुलझा पाया । इस आंतरिक संघर्ष का समाधान ढूँढने के लिये व्यक्ति को एक ओर घर से जुकना पड़ा तो दूसरी ओर समाज के बाह्य परिवेश से टक्कर लेनी पड़ी । स्वतंत्रता से पहले जो लिखते थे उनके समक्ष सब कुछ साफ़ था और उनका एक लक्ष्य भी था समग्र आजादी की मार्ग, पर यह मार्ग पूरी हो जाने के पश्चात् 'उन्होंने' देखा कि शौणिक या अपमान कर्त्ता या बुरे कोई सात समुन्दर पार का व्यक्ति नहीं था । वे अपने ही लोग थे, अपने ही माँ-बाप, माई-बहन, संबंधी जो सब कुछ के लिए उत्तरदायी थे । ऐसी बात नहीं कि यह 'अपनों' से छड़ाई आजादी से पहले नहीं थी लेकिन तब के ऐसकम का दृष्टिकोण हमेशा इसमें

- 1- पूस की रात- प्रेमचन्द- मान सरोवर, पृ०-158, भाग-1, 11वाँ संस्करण
हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।
- 2- कफ़न- प्रेमचन्द- प्रतिनिधि कहानियाँ- डा० बच्चन सिंह, पृ०-1-
वनुराग प्रकाशन, विशालादी चौक- बाराणसी-1- चतुर्थ संस्करण
1978 ।

‘शुभ’ की ओर देखने की ओर ही परिचालित होता था, चाहे वे प्रेमबन्ध हो, प्रसादया यज्ञपाल जयवा करक या ¹‘शैव’ तात्पर्य यह है कि जीवन के गहरे संपर्क में आगे चलकर कौरी मायुकता और नैतिकता को नकारना शुरू कर दिया। आत्म विहम्बना के बोझ में कट्टर यथार्थ और प्रामाणिक सत्य को सोजने की आकांक्षा जा दी। आत्म सज्जाता की यह स्थिति अभी निष्ठाविक दौर पर नहीं पहुँची है परन्तु दो युगों के (स्वार्तन्त्र्य पूर्व तथा स्वार्तन्त्र्योत्तर) नैतिक बोध का अन्तर इन कहानियों में स्पष्ट देखा जा सकता है।

स्वाधीनोत्तर प्रेम कहानियों का स्वरूप स्वाधीनता पूर्व की प्रेम कहानियों से सर्वथा भिन्न है। सामाजिक संस्कारों से व्यक्ति की सांस्कारिकता और रिश्तेदारी की प्रतिबद्धता चरमराने लगी है। सन् 1950 से पूर्व तक शिष्टाचार और आत्मीयता की वस्वीकृति का भाव उतने प्रखर रूप में नहीं पाया जाता जितना कि 1950-55 के बाद की कहानियों में। औद्योगीकरण का विस्तार नारी-जीविका, परिवार नियोजन, तलाक की वैधानिक मान्यता, प्रेमविवाह, आवास समस्या और नगरबोध जैसे रचनात्मक संघर्षों ने एक ओर संयुक्त कुटुम्ब को विभाजित किया तो दूसरी ओर प्रष्टाचार, जातिवाद, विरादरीवाद, प्राम्तवाद, बेरोजगारी, मर्लगाई और नौकरशाही के घुणित परिणामों ने एकाकी परिवार को भी नाना प्रश्न बिन्हों से घेर लिया है। प्रेम की परिणति विवाह में होना अब अनिवार्य नहीं रह गया है। प्रेम जैसा सनातनमूल्य अस्थायी शरीर-संबन्धों से जुड़ गया है। एक कुतुम्बीनार छोटा सा²

- 1- आधुनिक रचनाकार की मागीदारी और अमागापन- दुधनाथ सिंह, समकालीन कहानी: दिशा और दृष्टि, संपादक- डा० धर्मज्य - पृ०-170-171 अमिअक्ति प्रकाशन, 847-यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2, पृ० सं०- 1970 ।
- 2- एक कुतुम्बीनार छोटा सा- कृष्ण कलदेव वैद, बीच का दरवाजा, पृ०- 153, नीलाम प्रकाशन, 8-दुसरी बाग रोड, इलाहाबाद ।

की नायिका विवाह-पूर्व ही बिना किम्पक के यौन संबंध स्थापित कर लेती है। 'क्रिष्णी' ¹ में पत्नी को परपुरुष से समीप-रत देखकर भी पति की उदासीन प्रतिक्रिया से निश्चय ही एक नवीन मूल्य के उदय की संभावना दिखाई देती है। और निश्चय ² की नायिका कौमार्य के चिरम्बतन मूल्य पर बाधात करती हुई दिखाई देती है।

नारीत्व की चरम सीमा अब तक मातृत्व में मानी जाती रही है पर विवेक्ष्य परिवार की नारी ने इस परम्परा को भी चुनौती दे दी। वाधुनिका बनने की कामना और सौन्दर्य की सुरक्षा की लालसा से उत्तरार्ध ³ की नायिका माँ नहीं बनना चाहती। वात्सल्य, प्रातृत्व और पितृत्व, मातृत्व जैसे मूल्यों के प्रति वाधुनिक पीढ़ी असहमति व्यक्त करने लगी है। संकट ⁴ में सेना से छुट्टी लेकर आया हुआ पति प्रसूति गृह में पड़ी हुई पत्नी से सहवास न कर पाने के कारण विद्वुब्ध हो उठता है। नवजात शिशु के प्रति उसके मन में ममता न होकर सीमा और क्रोध है। माई की मृत्यु माई को अधीर नहीं बना पाती। माई-बहन का शाश्वत वात्सीय संबंध घूमिल होता जा रहा है। काला रोज़ार ⁵ का माई अपनी बहन की जिस्म की कमाई पर होटल में रेश करता है।

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में होने वाला संयुक्त परिवारों का फ़ास और विशिष्ट रूप से नगर-जीवन उसका बिघटन और बिस्तराव पुरातन

-
- 1- क्रिष्णी- कृष्ण कलदेव वैद- दूसरे किनारे से - पृ०-11, राधाकृष्ण प्रकाशन, अंतारी रोड, परियार्गव-दिल्ली-6।
 - 2- निश्चय- कुलभूषण, ललक- पृष्ठ-37, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
 - 3- उत्तरार्ध- मणिमजुकर- ललक- पृष्ठ-37, राजपाल एंड संस, , , , ।
 - 4- संकट- काशीनाथ सिंह, ठोग बिस्तरों पर, पृ०-18, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847- युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2, प्रथम सं०- 1968।
 - 5- काला रोज़ार- मोहन राकेश, बारिस- पृ०-130, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1974।

जीवन मूल्यों में गंभीर परिवर्तन की सूचना देने वाला है। सर्वार्थों में टूटन की स्थितियाँ और मूल्य संघर्षों का यथार्थ रूप बिरादरी बाहर¹ पिता², पीढ़ियाँ³, शीर्षकिहीन⁴, चीफ की दाबत⁵ जैसी अनेक कहानियाँ में उपलब्ध होता है। ये कहानियाँ दो पीढ़ियों के जीवन मूल्यों की टकराहट को प्रमाणित करती हैं।

जीविकारत आत्मनिर्भर नारी ने स्वाधीनता के बाद ही वास्तव में अपने वैयक्तिक रूप को और एक नागरिक की हैसियत से अपने स्वतंत्र अस्तित्व को समझ पाया है। नारी का पुरुष के समकक्ष होने वाली मान्यता ने भी एक नये मूल्य का सृजन किया है। पुरुष प्रधान परिवार में अब नारी का दखल होता जा रहा है। अर्थसूत्र अब पुरुष के हाथों में ही नहीं रह गया फलतः स्त्री विषयक प्राचीन मूल्य भी कि वह माया⁶, गृहिणी⁷ या अब्बा है, मरमराकर गिर रहा है। परिन्धे⁸, प्रतीक्षा, कूठावर्षण

-
- 1- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृष्ठ-110, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1971।
 - 2- पिता, ज्ञानरंजन, फॉस के इधर और उधर, पृष्ठ-77, बदर प्रकाशन, 2186-जंजारी रोड, दरियामंज-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1968।
 - 3- पीढ़ियाँ- राजेन्द्र अवस्थी, मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ- 44, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली-प्रथम सं०- 1975।
 - 4- शीर्षकिहीन- गंगाप्रसाद विमल, कोई शुरुवात, पृष्ठ-101, राजकमल प्रकाशन-8-फौजबाजार, दिल्ली, प्रथम सं०- 1973।
 - 5- चीफ की दाबत- वीष्म साहनी- एक दुनिया समानान्तर, पृष्ठ-223, संपादक- राजेन्द्र यादव, बदर प्रकाशन, पृष्ठ-2186-जंजारी रोड, दरियामंज-दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1970।
 - 6- परिन्धे- निमैल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-20, राजपाल एण्ड संस- दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1973।
 - 7- प्रतीक्षा- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृष्ठ-17, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1971।
 - 8- कूठावर्षण- उषा प्रियंवदा- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-88, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974।

एक दिन की डायरी¹ इन कहानियों में ऐसी नारियों का चित्रण मिलता है जो वात्सल्यपूर्ण हैं और उम्र भर वन्य पुरुषों के साथ घर बसाकर अंतर्दुष्ट तथा पीड़ित स्वाधीनता और वैज्ञानिक प्रगति ने गांव और कस्बों में बसे वाले परिवारों को दो तरह से प्रभावित और परिवर्तित किया है। उसका पहला रूप हम तब देखते हैं जब ग्रामीण और कस्बाई जीवन की अपेक्षा नगर जीवन की प्रगति की रफ्तार बहुत तेज दिखाई देती है और आर्थिक, सामाजिक तथा बौद्धिक सभी क्षेत्रों में ग्रामीण परिवार नगर-परिवार से बहुत पीछे रह गये जबकि स्वतंत्रता के बाद कृषि प्रधान भारत की योजनाओं में गांवों को प्राथमिकता देनी चाहिये थी। दूसरा रूप यह देखने में आया कि गांवों के लोग नगरबोध से प्रभावित होकर शहरों में आने लगे। रोजगार शिफा और जीवन की सुख-सुविधाओं की अपेक्षाकृत गारंटी उन्हें शहर जीवन में ही दिखाई दी। इस संक्रमण की प्रतिच्छाया अनेक कहानियों में प्राप्त होती है। एक औरत एक जिन्दगी में पुरुष सत्ता का यथार्थ से टूटकर बिलरना और नारी सत्ता का उल्लास के साथ जुड़ना, कुम्हड़े की सब्जी में शहर में आगत नवयुवक के जीवन में ग्रामीण और नगर जीवन की टकराहट ऐसी स्थितियों का निरूपण हुआ है। परिवेश तथा परिस्थितियों के अनुसार ग्रामीण वर्गों के सोचने समझने का दृष्टिकोण बदल रहा है। यद्यपि गांव में परिवर्तन की गति धीमी है लेकिन वहाँ के निवासियों में भी परिवार के पुराने रीति रिवाजों से निकलने की चेष्टा और छटपटाहट है।

1- एक दिन की डायरी- माकण्डेय-

2- एक औरत एक जिन्दगी, राम दत्त मिश्र, हिन्दी कहानी -बदलते प्रतिमान, डा० रघुवर दयाल बाण्यय, पाण्डुलिपि, प्रकाशन, ई-11।5, कृष्ण नगर, दिल्ली- 110051।

3- कुम्हड़े की सब्जी- सुबोध कुमार त्रिवास्तव-नई कहानियाँ- अग्र-1969।

इस प्रकार मूल्य सघर्ष की स्थितियों के आधार पर विवेच्य युग में अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं जिनमें कहीं संयुक्त परिवार के विघटन का समर्थन है, कहीं परम्परा विरोध है, तो कहीं विद्रोह का स्वर भी है पर नवीन मूल्यों की स्थापना के साथ ही साथ पुरातन मूल्यों की रक्षा की कहानियाँ भी यदा-कदा लिखी जा रही हैं। तलाश¹ में विधवा नारी अपने नारीत्व को सार्थक बनाने में जुटी हुई है तो नन्ही² बाजीवन वैधव्य भोगना पसन्द करती है। छुट्टी का दिन³ पूर्ति⁴, दो बीघे⁵ की नायिकाएँ स्वतंत्र रूप से अधीपान करके यह समझती हैं कि उन्हें किसी पुरुष के आश्रय की आवश्यकता नहीं रही किन्तु उस स्थिति में क्या वे प्रसन्न रह पाती हैं ? ये कहानियाँ पुरुष-आश्रय की आवश्यकता सिद्ध करती हैं तो दूसरी ओर डरी हुई बीरत⁶ फ़ाक वाला घोड़ा निकरवाला साईस पति विद्रोह की कहानियाँ हैं। डा० महाराज कृष्ण जैन के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है---

-
- 1- तलाश- कमलेश्वर- मास का दरिया, पृष्ठ-8, अक्षर प्रकाशन, 8186-अंसारी रोड, दरियानगर-दिल्ली-6 ।
 - 2- नन्ही, शिव प्रसाद सिंह, इन्हें भी इंतजार है- पृष्ठ-9, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय-वाराणसी- प्रथम संस्करण- 1961 ।
 - 3- छुट्टी का दिन, उषा प्रियंवदा- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-118, राजमाल एण्ड संस-दिल्ली, पल्ला सं०- 1974 ।
 - 4- पूर्ति, उषा प्रियंवदा- जिम्दगी और गुलाब के फूल- पृष्ठ-60, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग-दिल्ली-6, तृप्त सं०- 1971 ।
 - 5- दो बीघे- उषा प्रियंवदा- जिम्दगी और गुलाब के फूल- पृष्ठ-85 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली-6 ।
 - 6- डरी हुई बीरत- रबीन्द्र कालिया- नौसाल हौटी पत्नी, पृष्ठ-121-वभिष्यक्ति प्रकाशन-847- युनिवर्सिटी रोड-बहाहाबाद- पृष्ठ सं०-1966 ।
 - 7- फ़ाकवाला घोड़ा निकर वाला साईस- गिरिराज किशोर- पेपरबैट- पृष्ठ-98, राजमाल प्रकाशन- दिल्ली-6 ।

*मूल्यों पर बाहरी स्थितियों का दबाव कितना भी हो किन्तु उस पर सबसे बड़ा संकट मनुष्य की अपनी वास्था के स्खलन का ही हो सकता है। यहीं वाधुनिकता की चुनौती और लेखक के दायित्व का प्रश्न उठता है। स्थितियों संबंधों और परिवेश में परिवर्तन के प्रति हमारे कहानीकार जो तीखी और कहीं-कहीं अति संवेदनशील प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं उससे यह वाशबस्ति होती है कि वे मूल्यों के प्रति जागरूक हैं और कम से कम मानवी संकल्पों की दृष्टि से वनास्था की मूल्य हीनता उतना बड़ा संकट नहीं है।¹

हमें स्वातंत्र्योत्तर पारिवारिक जीवन के नव परिवर्तित संपर्कों को इसी विश्वास की दृष्टि से ग्रहण करना चाहिए। वस्तुतः मूल्य परिवर्तन एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। विवेच्य कहानी का पारिवारिक स्वरूप मूल्य की और मूल्य निमज्जा दोनों की सज्जा का संकेत देता है।

पति-पत्नी सम्बन्ध:- स्वाधीनता से पूर्व भारतीय समाज में बैमेल विवाह-
बहुविवाह, बालविवाह, पदा प्रथा, दहेज और वशिष्ठा जैसी सामाजिक समस्याएँ मुँह फैलाये खड़ी थीं इसलिये तत्कालीन कहानीकारों ने इन्हीं समस्याओं के समाधान की दिशा में अपनी लेखनी चलाई। प्रेमबन्ध की कहानियों में पति-पत्नी संबंधों का दृष्टिकोण सुधारवादी और संशोधनवादी था। प्रेमबन्ध समय के अद्भुत पारखी थे। गृहदाह में पति-पत्नी के घात

-
- 1- वाधुनिकता की चुनौती और मूल्य संक्रमण की स्थिति- डा० महाराज कृष्ण जैन, हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- पृ०-60
संपादक-डा० रामवरण मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन- नेशनल प० हाउस- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970 ।
 - 2- गृहदाह- प्रेमबन्ध, मानसरोवर- भाग-6, पृ०-178, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।

प्रतिघातों के कारण दोनों का जीवन विनाश हो गया। शान्ति¹ में नये पुराने विचारों की टकराव से पति-पत्नी के जीवन में कटुता आ गई, अग्निसमाधि² में पति के विचित्र जीवन से पत्नी विरक्त हो गई और कुसुम³ में छालूची पति को पत्नी ने छोड़ कर स्वतंत्र रहने का निर्णय ले लिया। प्रेमचन्द के युग में ही चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने बुद्ध का कांटा⁴ जैसी प्रणय प्रधान कहानी लिखी जिसमें पति-पत्नी के चरित्रों का विकास मानवीय धरातल पर हुआ है। प्रेमचन्दोंतर कहानी लेखक अज्ञेय ने 'रौज'⁵ में मध्यवर्ग परिवार के प्राणहीन और रंजित जीवन के लौलहे संबंधों का जिस यथार्थपरक भूमिका में वर्णन किया है वह स्वाधीनोत्तर पारिवारिक कहानी के बहुत निकट है। इस कहानी को यदि यही कहानी का प्रथम चरण कहा जाय तो अनुपयुक्त न होगा। पति-पत्नी संबंधों के सन्दर्भ में मैग्रीन अभिप्रेत कर देने वाली गहरी उदासी है जो निस्सन्देह जीवन की गहरी यथार्थता है और उसका वर्णन बहुत ही फोटोग्राफिक है⁶। अभिशप्त⁷ तर्क का तूफान⁸

1- शान्ति- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-7, पृ०-80, संस्करण- अक्टूबर-1971।

2- अग्नि समाधि- प्रेमचन्द- मानसरोवर- भाग-8, पृ०-171, ईस प्रकाशन, इलाहाबाद।

3- कुसुम- प्रेमचन्द, मानसरोवर भाग-2, पृ०-5- ईस प्रकाशन, इलाहाबाद नवीन संस्करण- 1972।

4- बुद्ध का कांटा- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी- हिन्दी कहानी और कहानीकार प्रोफेसर बासुदेव समुद्र-पृ०-122, बाणगिरिबिहार- 60। 14- दुर्लभिनी रोड- बाराणसी-1, तृतीयावृत्ति-1961।

5- 'रौज' मैग्रीन- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन-अज्ञेय, अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ, पृ०- 278- राजमाठ रंठ संस-दिल्ली, पृ० सं०-1975।

6- हमारी ममता और समवेदना का आलोक, डा० लक्ष्मी नारायण लाल, पृ०-19, नई कहानी दशा दिशा समावना- संपादक- श्री सरेन्द्र, ज्योती पब्लिकेशन, नयपुर-प्रथम संस्करण- 1966।

7- अभिशप्त- यशपाल- अभिशप्त संग्रह-1944- हिन्दी कहानी और कहानीकार पृ०-249-प्रोफेसर बासुदेव समुद्र-बाणगिरिबिहार-दुर्लभिनी रोड- बाराणसी-1, प्रथमावृत्ति-1961।

8- तर्क का तूफान, यशपाल-संग्रह यही-- 1944, हिन्दी कहानी और कहानीकार-- वही---।

मस्माद्वृत्त चिन्तारि¹, फूलों का कुर्चा² और उत्तमी की माँ³ बाबि
 ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें नारी की आँसू पुकार है तथा यौन समस्या और यौन
 संबंधों का विभिन्न परिस्थितियों में चित्रण है। प्रेमचन्द ने सामन्तवादी
 शोषण की अंतिम अवस्था पूर्वावादी शोषण के युग की प्रारम्भिक अवस्था के
 प्रति जो चैतावनी दी थी उसी परम्परा की अग्रिम कड़ी के रूप में यशपाल
 की नारियाँ शोषण और पीड़ा से बिल्लाकर मुक्ति की माँग करती हैं।
 आर्थिक और भौतिक परिस्थितियों के परिवर्तनानुसार यशपाल ने पति-पत्नी
 संबंधों को वैज्ञानिक और यथार्थ के घातक पर चित्रित किया है। वे पुरुष के मन क
 की मैना नहीं जीवन संगिनी बनकर रहना चाहती है। प्रेमचन्द के सामाजिक
 यथार्थ, अज्ञेय के मनोविश्लेषण तथा यशपाल के वर्ग संघर्ष की चिन्तना में
 अग्रसर होते हुए ये संबंध आज स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों के अनुरूप संक्रमण
 की प्रक्रिया से गुजर रहे हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में हमें पति-पत्नी संबंधों के
 स्वरूप का अध्ययन करना चाहिए।

बालोच्च कहानियों में संयुक्त परिवार टूट चुका है। अब
 यदि कहीं वह है भी तो बिसरा हुआ और टूटता हुआ अंतिम सर्पिल गिनने
 की स्थिति में है। विशेषतः 1950 के बाद की कहानियों में दाम्पत्य संबंधों
 का विकास या ह्रास आरम्भ की आधुनिकता, आर्थिक विवशता, यौन

- 1- मस्माद्वृत्त चिन्तारि- यशपाल- संग्रह यही- 1946- हिन्दी कहानी और
 कहानीकार- वही-- पृष्ठ-249 ।
- 2- फूलों का कुर्चा- यशपाल- संग्रह यही-1949- हिन्दी कहानी और
 कहानीकार-पृष्ठ-249--- वही--- ।
- 3- उत्तमी की माँ- यशपाल- संग्रह यही- 1955- हिन्दी कहानी और
 कहानीकार- वही--- पृष्ठ-250 ।

वराजकता, नारी की आत्म निर्भरता, पति-पत्नी की विचार विभिन्नता, प्रेक्सम्बन्धों की परिवर्तनशीलता, पुरुष की अहंकार प्रियता, मिसफिट या एडजस्ट न हो पाने की दुर्बलता तथा विवाह विच्छेद की मान्यता जैसे बहुमुसीबायामों के बीच दिखाया गया है। संबंधों का अलग-अलग व्यक्तिपरक कारण से हुआ हो या समष्टिपरक कारण से समस्याएँ और सम्दर्भ यही हैं।

एकाधिकार की समाप्ति:-

विवैध्य युगीन कहानियों में आधुनिकता प्रेमी पति-पत्नियों के बीच सैक्स के स्थूल रूप की मान्यता मिल गई है। पुरुष का पत्नी पर एक मात्र अधिकार क्यवा पत्नी का पति पर निजी अधिकार जैसी नैतिकता अब बदल गई है। 'ऊँचाई' ¹ में नारी की शारीरिक पवित्रता का परम्परानुमोदित मूल्य-रूप हुआ है। शिवानी अपने पति के सामने ही लुई रूप में कहती है कि जरा से स्पर्श मात्र से पति-पत्नी संबंधों की पवित्रता पर कोई आँच नहीं जाती। मूल्य संघर्ष का यही रूप त्रिकोण ² में भी पाया जाता है। पत्नी को परपुरुष के साथ संभोगरत देखकर भी पति न परेशान होता है न कुपित बल्कि उसकी स्वीकृति सूचक प्रतिक्रिया से हम एक नवीन जीवन मूल्य की स्थापना देखते हैं। जो कुछ हो रहा है ठीक ही तो है ³ पति का यह कहना भारतीय परिवेश में अप्रामाणिक सा अवश्य लगता है लेकिन समसामयिक

-
- 1- ऊँचाई- मन्मू मंडारी- एक प्लेट सैलाब- पृष्ठ-126- बदर प्रकाशन- प्रा०छि०- 2।36-अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम सं०- 1968।
 - 2- त्रिकोण- कृष्णाकलदेव वैद- दूसरे किनारे से- पृष्ठ-11, राधाकृष्ण प्रकाशन- 2- अंसारी रोड, दरियार्गज- दिल्ली-6।
 - 3- ----- वही----- पृष्ठ-18।

यथार्थ का यह सब है। पति के स्वाधिकार को पत्नी बख्शीकार कर रही है। भले ही पति को यह अच्छा प्रतीत न होता हो। ग्लास टैंक¹ के पति पत्नी के प्रेमी से दिलावटी बातचीत भी कर लेते हैं और उसकी अनुपस्थिति में उलझित होकर बहुत दिनों के मूले हुये सिगार को मुँह से लगा लेते हैं।

केवल पतियों को ही यह सब सहना और मौलना पड़ता हो, ऐसी बात नहीं है। पत्नी को भी पति की दुहरी जिन्दगी मौलनी पड़ती है। वे दोनों² में पत्नी अपने पति अनिल से सन्तुष्ट है जबकि पति अपनी प्रेमिका से भी संबंध बनाये रखता है और उसे अपने घर ले जाता है। प्रेमिका की पुनः पुनः पत्नी से चर्चा करना उसे घर लाना वादि ऐसा लगता है कि पति अपनी पत्नी के साथ किये गये अपराध - व्यवहार से मुक्त होने के लिये करता है। परिणति³ में पति युवती पत्नी के होते हुए भी अन्य स्त्री से पत्नी की जानकारी में ही रोमांस लड़ाता है। घर पर ड्राइंग रूम में ही प्रेमिका को बालिंगन में बांध लेता है। शराब के नशे में झुत होकर जुबवा की प्रशंसा करता है। यहाँ पत्नी आदर्शवादी नैतिकता से बंधी हुई है क्योंकि वह सब कुछ जानते हुये भी पति का विरोध नहीं करती। स्त्री पुरुष के संबंधों के माध्यम से जिस मुख्य संबंध का चित्रण हुआ है उसमें यौन वराकृता, स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रश्न तथा प्रेम संबंधों की जटिलता और अनिश्चयात्मकता वादि अनेक स्थितियाँ जुड़ी हुई हैं।

- 1- ग्लास टैंक- मोहन राकेश, क्वार्टर, पृष्ठ-80, राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1972।
- 2- वे दोनों- विजय मोहन सिंह, टट्टू सवार, पृष्ठ-45- रचना प्रकाशन, 45-ए-बुल्दाबाद-इलाहाबाद-1।
- 3- परिणति-

प्रेम विवाह की हास्यास्पद स्थिति:-

प्रेम की वादशीबादी चारणा अब बढ़ती जा रही है। प्रेम अब एक नितान्त व्यक्तिगत अनुभव रह गया है जिसे परम्परागत सामाजिक नैतिक म मूल्यों के सम्बन्ध में देसना बर्निबायी नहीं रह गया है। प्रेम के क्षेत्र में त्याग और वादशी जैसे शब्द अब कहींहीन हो चुके हैं। साथ¹ कहानी में विवाहोपरान्त प्रेम की पहली भावनायें सत्सा क्लिप्त हो जाती हैं। पति को लगता है कि पत्नी का चुनाव बहुत दुरा है। पहले की प्रेमिका, पत्नी हो जाने के बाद दूसरी-दूसरी लगते लगी। धीरे धीरे दाण में विवाह से पूर्व दिलीप और मोहिनी जिन बहानों से मिला करते थे वही बहाने विवाहोपरान्त उनकी लीक का कारण बन जाते हैं। पति को पत्नी के स्पर्श में चौपड़ा, मिला, शर्मा, न जाने किन-किन के स्पर्श का बोध होता है। 'हास्य रस'³ में दो प्रेमी सिविल मैरिज करके अपने गवाह मित्रों के साथ जैसे ही कोर्ट से बाहर निकलते हैं, पति को अनुभव होता है कि प्रेम का पूर्व रूप समाप्त हो गया और अब पत्नी उस पर अपना अधिकार जमायेगी। उसका बर्ह प्रकट हो उठता है और वह न जाने क्या क्या सोचने लगता है। चाँदनी और जाले⁴ की नायिका मोना को लगता है कि प्रेमी जब पति बन जाता है तब उसमें पहले जैसा रोमांस-भाव और संबंधों की निकटता नहीं रहती, न वह उसकी भावनाओं का ही उतना स्याल रस पाता है। शादी के बाद पत्नी सज बज्जर

1- साथ- श्रीकान्त वर्मा, फाड़ी- पृष्ठ-55, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी-5

प्रथम संस्करण- 1964।

2- धीरे धीरे दाण, गहीपर्सिह, संग्रह यही-- पृष्ठ-167, हिन्दी भवन, बालम्बर।

3- हास्य रस- ज्ञानरंजन, यात्रा संग्रह, पृष्ठ-45, रचना प्रकाशन, 45-ए सुल्तानबाद, इलाहाबाद।

4- चाँदनी और जाले- देवेन्द्र बस्सर, काले गुलाब की सलीब, पृष्ठ-76, शारदा प्रकाशन-महाराष्ट्री- नई दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1975।

हुट्टी का दिन रंगीन तरह से बिताना चाहती है पर पति सौता रहता है । विवाह से पूर्व जो शरीर चाँदनी से बना लगता था अब पति को उसकी परवाह नहीं है ।

ये कहानियाँ प्रेम की नयी स्थितियों के अन्तर्गत पति-पत्नी संबंधों के माना अनुभवों जैसे रति, आत्मारति, प्रतिहिंसा, दाह, दुःख, अस्मृतिवादि का विश्लेषण करने वाली हैं । प्रेम एक अनिर्णय की स्थिति से गुजर रहा है । यह अनिर्णय की स्थिति जब विवाह का रूप ले लेती है तब दाम्पत्य शिथिल और ठण्डा हो जाता है । समर्पित प्रेम के स्थान पर यह अनिश्चयात्मक प्रेम एक नये मूल्य की सूचना देता है । शिनास्त¹ में प्रेम विवाह करने वाले स्त्री पुरुषों के यौन संबंधों की व्यंजना बड़े सशक्त रूप में हुई है । विवाह से पूर्व उनके यौन संबंध थे । शुरू - शुरू में वे एक दूसरे को छसत से देखते थे लेकिन बाद में उनके पास एक दूसरे के लिये छिकारत मफारत, उपहास और जहर कुम्भी शब्द थे । वे अनेक वर्षों तक अलग रहे पर संयोग के बाव मानवीय अस्मिता अस्वास पति को छुवा और वह उस बीज की शिनास्त करना चाहता है जिसकी बीनों ने फिलकर हत्या कर दी है । 'प्रेम या घृणा, या वासना या स्वार्थ या सब कुछ का एक मिला-जुला नाटक ?' कहानी की केन्द्रीय संवेदना विघटित तथा विच्छिन्न दाम्पत्य को नकारने वाली

- 1- शिनास्त- दुकनाथ सिंह- सुस्तान्त, पृष्ठ-81, रचना प्रकाशन,
45-ए-सुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1971 ।
- 2- शिनास्त- दुकनाथ सिंह- सुस्तान्त, पृष्ठ-88, रचना प्रकाशन,
45-ए- सुल्दाबाद- इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1971 ।

है। नायिका¹, रोमांटिक कहानी², उर्मिल जीवन³, बादलों के धरे⁴, जो लिखा नहीं जाता⁵ आदि कहानियाँ भी पति-पत्नी संबंधों के विघटन और बिसराव की विविध स्थितियों को नई परिवर्तित दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं।

सामान्य विवाहोपरान्त दाम्पत्य का बिसराव:-

आलोच्य परिवार में सामान्य विवाहोपरान्त पति-पत्नी के बीच अजनबीपन और क्षामर्जस्य प्रस्तुत करने वाली अनेक कहानियाँ उपलब्ध होती हैं। दाम्पत्य संबंधों का बिसराव और विघटन कहीं मनोवैज्ञानिक कारणों से हुआ है तो कहीं सैक्स अराजकता और सामाजिक कारणों से। सुतान्त में पति घर के परिवेश में अपने को एक कैदी समझता है। अपने निजी आदर्शों के अनुरूप जीने की छुटपटाहट उसके मन में व्याप्त है। पति के मानसिक असन्तोष से पति-पत्नी संबंधों में भी असन्तोष छाया हुआ है। सोई हुई दिशारं⁷

-
- 1- नायिका- गिरिराज किशोर- रिश्ता और अन्य कहानियाँ- पृष्ठ-128, राजकमल प्रकाशन-8- फौजबाजार, दिल्ली-6, 1969।
 - 2- रोमांटिक कहानी-मीष्म साल्नी, मकती रास- पृष्ठ-97, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग-दिल्ली- प्रथम सं०- 1966।
 - 3- उर्मिल जीवन- कमलेश्वर- सोई हुई दिशारं- पृष्ठ-78, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गा कुण्ड मार्ग-वाराणसी-5।
 - 4- बादलों के धरे- कृष्णा सोबती, श्रेष्ठ प्रेम कहानियाँ- पृष्ठ-18, संपादक- राजेन्द्र अवस्थी, पराग प्रकाशन, विश्वास नगर-शालदरा-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1978।
 - 5- जो लिखा नहीं जाता- कमलेश्वर, माँस का दरिया- पृष्ठ-68, वडार प्रकाशन- 21.86-अंसारी रोड, परियार्गज-दिल्ली।
 - 6- सुतान्त- बुक्काधसिंह- विकल्प कथा साहित्य विश्लेषार्क- पृ०-169, संपादक- शैलेश मटियानी- विकल्प कार्यालय- मोतीछाठ नैरु नगर, इलाहाबाद-2- नवम्बर-1969।
 - 7- सोई हुई दिशारं- कमलेश्वर- संकलन-यही- पृ०-30, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-5।

में चन्दर अपनी पत्नी निथैला में अपनी पहचान खोजता है। वह अपने को नितान्त अकेला महसूस करता है इसलिये वह सोई हुई पत्नी को फिफ्फोड़कर जानना चाहता है। तनाव¹ की पत्नी बनावटी बीमारी का बहाना करती है ताकि उसका उदासीन पति उसकी तरफ ध्यान दे। अपनी ऊँची नौकरी और सामाजिकता में व्यस्त पति से इस पत्नी को आत्मीयता नहीं मिल पाती। अतः बीमारी में पति के सान्निध्य से उसे बहुत सन्तोष प्राप्त होता है। वैयक्तिक स्तर पर मानसिक रिक्तता के ये उदाहरण हैं।

‘प्रायश्चित्त’² में पति-पत्नी के मधुर संबंधों के बीच एक तीसरा आदमी आकर घर की शान्ति भंग कर देता है। पत्नी को लगता है यह आदमी एक ध्यार परा हृदय लेकर आता है जैसा कि उसके पति के पास नहीं है। छोटी सी झूल और भावुकता पति-पत्नी को अलग कर देती है। अपने-अपने दायरे का पति सैक्स बराजकता का शिकार है। पत्नी और विवाहिता बेटी के सामने ही वह घर की आया से दृष्टि लहाने जाता है। उसे न पत्नी के प्रति प्रेम है न बेटी के प्रतिवात्सल्य। गृहस्थ में सब अलग-अलग दायरे के अन्दर जी रहे हैं। मग्न प्राचीर³ में ऊँचे-ऊँचे सिद्धान्तों का बखान करने वाला पति भिन्न मोयल के रोमांस लड़ाता है और उसे कीमतों हार खरीद कर देता है जबकि पत्नी को हर वक्त शकालु दृष्टि से देखता है और उस पर बन्धन लगाता है। पण्डितियाँ⁴ की भिसिब जोशी को अपने ठण्डे और गंभीर

-
- 1- तनाव- राजेन्द्र यादव- टूटना और अन्य कहानियाँ- पृष्ठ-92, अक्षर प्रकाशन- प्राणलि-2।36-अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली-6।
 - 2- प्रायश्चित्त- शिव प्रसाद सिंह, कर्मनाशा की हार- पृष्ठ-25, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी।
 - 3- अपने-अपने दायरे- मेहरा-मिस्ता परवेज, आदम और हब्बा- नेशनल पब्लिशिंग हाउस- दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम सं०- 1972।
 - 4- मग्न प्राचीर- शिव प्रसाद सिंह- कर्मनाशा की हार- पृष्ठ-20, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- काशी।
 - 5- पण्डितियाँ- गिरिराज किशोर- पेपरबैट- पृष्ठ-60, राजकमल- प्रकाशन, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम सं०- 1967।

पति से तृप्ति नहीं मिलती । उन्हें कामुक चपल और उष्ण पुरुष की तलाश है, इसलिये वह मिस्टर सेन से पति की अनुपस्थिति में एकान्त में मिलती हैं । इन सब कहानियों में कहीं पुरुषार्थमें तो कहीं स्त्री में मानसिक तृप्ति अन्तर्द्वन्द्व अथवा यौनाचार की स्थितियाँ उपलब्ध होती हैं जिनसे दाम्पत्य में अजनबीपन और झिझराव आ गया है ।

वार्षिक विकासता से दाम्पत्य-विकृति:- सामाजिक विनाशता जो मानव जीवन के विकास में बाधक है, वही पति-पत्नी संबंधों में भी कटुता घोल देने की जिम्मेदार है । शाम¹ एक ऐसे युवक की शाम है जिसमें एक छोटी बामदनी वाला पति अपनी पत्नी की छोटी सी इच्छा पूरी नहीं कर पाता और पारस्परिक तू-तू मैं-मैं में यह शाम बौझिल और कटु हो जाती है । निम्न² मध्यवर्ग के परिवारों में ऐसी शामें प्रायः दिखाई देती हैं । आसिरी रात³ में यथार्थ की कठोर भूमि पर भावुकता का रंगीन महल चकनाचूर हो जाता है । पत्नी के पीहर जाने से पूर्व रात को अचानक पत्नी अपने पति से कमड़ों की फरमाइश कर देती है और नाजुक प्रेम तन्तु एक फटके में टूट जाता है । दोनों विदगुब्ध होकर अलग-अलग जा बैठते हैं । पति सोचता है -- यदि यह प्रश्न कुछ समय के लिये टल गया होता तो वह अपनी पत्नी को पूरी तरह ध्यार तो कर लेता । अगर मैं बाज⁴ का सौ रुपये मात्र वेतन पाने वाला देसराब अर्थ-संकट से बुरी तरह प्रभावित है । बीमार पत्नी का वह इलाज नहीं करवा

1- शाम- अमरकान्त- जिन्दगी और जीक- पुष्ठ-118, नया साहित्य- प्रकाशन, 2-डी- मिन्टो रोड- इलाहाबाद- फरवरी- 1958 ।

2- आसिरी रात- काशीनाथ सिंह, लोग विस्तारों पर- पुष्ठ-17, अपिब्यक्ति प्रकाशन- 847- यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद- प्र० सं०-1968

3- अगर मैं बाज-- कृष्ण बलदेववैद- मेरा दुश्मन- प्र०- 89, राजकमल प्रकाशन- नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली-6, प्रथम संस्- 1966 ।

पाता । उसके बच्चे मूँसे¹ सौ जाते हैं । दाम्पत्य-सुख की अनुभूति वह क्या जाने ? चुपचाप दुःख का एक सामान्य सा कठक पति हीनत्व भावना से ग्रसित है । उसकी पत्नी उसे पूर्ण समर्पण नहीं दे पाती । वह अर्थात् से मजबूर, पराई कैलाशियों के सहारे चलने वाला पति अपने को इस लायक नहीं समझता कि अपनी भरपूर बीबी को प्यार कर सके । सब ठीक हो जायेगा² का पति फौफड़े के कैंसर का मरीज है जो अपनी पत्नी भिसेब मित्रा को आर्थिक व शारीरिक किसी प्रकार का सुख देने में असमर्थ है । उसकी पत्नी धन्या करके पैसा कमाती है । यह पति इतनी उपेक्षित और दयनीय स्थिति में रहता है कि उसका बेहरा सुबह उठकर ऐसा लगता है जैसे जूते लाकर सूजा हुआ हो । ठेका³ कहानी में लेखक ने यह दिसलाया है कि आर्थिक संकट से अस्त आज का पति स्वयं यह चाहता है कि अपनी सुखसुरत पत्नी के बल पर वह जीवन में उन्नति करे । जिस दायण उसकी पत्नी ठेके की स्वीकृति उसके आफसर से ला देती है वह प्रसन्नता से मूम उठता है । इस पति का मूम उठना इस बात का चोत्क है कि आज के जीवन में परम्परागत वैवाहिक मूल्य कितने लोथले और बेमानी हो चुके हैं । 'इन्ड्रजाल'⁴ में दाम्पत्य संबंधों के भयावह परिवर्तन का संकेत मिलता है । डाक्टर के यह बताने पर कि रामलाल एक माह से अधिक नहीं जियेगा तब उसकी पत्नी सोचती है कि

- 1- चुपचाप-दुःख- मणिमधुकर- हवा में अँकले- पृ०-100, राजाकृष्ण प्रकाशन- अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली-6 ।
- 2- सब ठीक हो जायेगा- दुष्काथ सिंह- सपाट-बेहरे वाला बावमी- पृष्ठ-76-बदर प्रकाशन-प्रा०लि०-2136-अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1967 ।
- 3- ठेका- बिष्णु प्रभाकर- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-23, राजमाल हण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970 ।
- 4- इन्ड्रजाल- मीन साहनी- पटरियाँ- पृष्ठ-123, राजकमल प्रकाशन, मैताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली ।

मुझे पति के मुँह में फूलों का रस उड़ेलने से क्या लाभ ? क्यों न ज्वान बेटे को रस दिया करूँ जिसकी ज्वान हड्डियों को रस की जरूरत है । रामलाल का त्रास व्यक्ति परक त्रास नहीं है, यह प्रत्येक आसन्नमृत्यु पति का त्रास है । साथ रामलाल की पत्नी के सोचने का ढंग भावी-भयाकान्त स्थिति का परिणाम है । कमाने वाले पति की मृत्यु के बाद घर कैसे चलेगा ? फिजूल खर्ची से क्या लाभ जबकि पति को बचना नहीं है ।

नीकरी के स्तरीय भेद से दाम्पत्य का क्षिराव:-

पति-पत्नी के संबंधों में परिवर्तन लाने के लिए किसी हद तक जीविका का स्तरीय भेद भी उत्तरदायी है । वैवाहिक संबंधों की पृष्ठभूमि में आर्थिक प्रभुत्व की भावना प्रच्छन्न रूप से विद्यमान रहती है । पति-पत्नी में से जो भी जीविका की दृष्टि से प्रभावशाली होता है उसी के मूल्यों को मान्यता प्राप्त होती है । धीरे धीरे दाणा¹ की पत्नी पति की अपेक्षा उच्च स्तरीय सर्विस करती है । अतः उसके सामने पति का वह पराजित होता है । वह सोचना है कि पत्नी उसे नीचा दिखाना चाहती है । उधर पत्नी को लगता है कि उसका पति उससे ईर्ष्या करता है । अविश्वास और शंका के कारण दोनों के बीच अन्तर्विरोध की स्थिति आ जाती है । फाकवाला घोड़ा निकर वाला साईस² में भी पत्नी डिप्टी सेक्रेटरी है और पति महज एक क्लर्क । ऐसी स्थिति में पति के स्वतंत्र अस्तित्व या मूल्य रक्षा का कोई प्रश्न ही नहीं उठता । यह पति-पत्नी के कमरे में नाक करके जाता

1- धीरे धीरे दाणा- महीपर्सिह- संग्रह--- यही--- पृष्ठ-167, हिन्दी भवन- जालन्धर ।

2- फाकवाला घोड़ा-निकरवाला साईस- गिरिराज किशोर- पेपरबैट- पृष्ठ-95, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1970 ।

है, विशेष रूप से उस समय जबकि पत्नी का प्रेमी नागरथ कमरे में होता है। पति-पत्नी की डाट-ठपट, चीख - पुकार, लड़ाई-झगड़ को सुनकर बच्चे भी वैसी ही हरकतें करते हैं। अधिक कमाने वाली पत्नी के लिए पति का व्यर्थ मात्र इतना ही है कि उसकी आड़ में वह समाज को धोखा देकर अपनी पोजीशन के किसी भी व्यक्ति के साथ संबंध रख सकती है।

कंटीली हाँह¹ की पत्नी शहर के स्कूल में हेडमिस्ट्रेस है और पत्नी एक कस्बे में मास्टर हैं। ऊँची नौकरी और शहरी सुख सुविधा के कारण वह पति के पास नौकरी नहीं करना चाहती। यह पति इतना दिव्य और दयनीय है कि बीमारी में नौकर उसकी सेवा करता है, माँ और पढ़ने वाले भाई के लिये खर्च भेजता है पर पत्नी से कुछ नहीं कह पाता जबकि पत्नी ने बूढ़ी सास को अलग कर दिया और उसका जेवर अपने पास रख लिया। अलगव की यह विकृति पति को इतना कुंठित व नीरस बना देती है कि वह कम्पार्टमेंट की पत्नी राधा के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया जाता है और मकान से निकाल दिया जाता है। आज एक गम्भीर प्रश्न यह उठ खड़ा हुआ है कि नौकरीपेशा पत्नी की नौकरी का व्यर्थ पति और बच्चों से कट जाना है या इनको सुख सुविधा पहुँचाना। उसके प्रतिवादी वार्षिक कदम ने विष्टन और बिलराव की नयी समस्या लड़ी कर दी है।

अलग और विपरीत² कहानी में शीर्षक के अनुरूप ही पति-पत्नी संबंधों में अलगव दिखाई देता है। यह पत्नी उच्चमध्यम वर्ग की है और अपनी विवाह से पहले की नौकरी को विवाहोपरान्त छोड़ने को तैयार नहीं होती

1- कंटीली हाँह- उषा प्रियंवदा- त्रिन्दगी और गुलाब के फूल-पृष्ठ-76, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-6, तृतीय संस्करण- 1971।

2- अलग और विपरीत- रमेश उपाध्याय, श्रेष्ठ इतिहास पृष्ठ-63, वार्ड बुक डिपो- 80 नाईबाठा, करीब बाग, नई दिल्ली-8, प्रथम संस्करण- 1973।

अपितु पति की साधारण सी नौकरी इसलिये छुड़वा देती है कि दूसरी कहीं नौकरी लगवा देगी। फिर क्या था घर जमाई बनकर इस पति ने क्या-क्या नहीं मँगा ? प्रसूता पत्नी की देहमाछ की, घरवालों से सर्वश्रुति दिये और अपनी असली जिन्दगी को पीछे छोड़ दिया। धीरे-धीरे उसकी समझ में जाने लगा कि उसकी दुनिया उसके मूल्य, उसकी मान्यताएँ, पत्नी की दुनिया, पत्नी के मूल्य, पत्नी की मान्यताओं से अलग हैं, अलग और विपरीत। वस्तुतः वाज के युग में पति तथा पत्नी दोनों को अपने-अपने व्यक्तित्व के प्रति जागरूक बना दिया है। कोई भी अपने को कम करके नहीं दिखाना चाहता। दूसरा तथ्य यह है कि वर्तमान की दृढ़ता जिसके हाथों होगी वही अधिक प्रभुत्व संपन्न बनकर रहेगा। नारी की आत्मनिर्भरता और उस पर भी उच्चस्तरीय जीविका ने स्वाधीनता और प्रेम के संघर्ष का एक नया मूल्य उपस्थित कर दिया है।

नारी जीविका का साम्यत्व संबंधों पर प्रभाव:-

स्त्री-पुरुष की समानता तथा समानाधिकारों का मूल्य भी विवेच्य युग की देन है। नारी के आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र होते ही एक और जहाँ परिवार में नारी की स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन आया वहाँ दूसरी और पति-पत्नी के संबंधों पर भी अत्यधिक प्रभाव पड़ा। 'बीस' कहानी में पत्नी की नौकरी से पति के समझा एक समस्या खड़ी हो गई। पति हर समय यह शंका करने लगा कि कहीं उसकी पत्नी अपने बीस के साथ तो घुलफिल

1- अलग और विपरीत- रमेश उपाध्याय, श्रेष्ठ इतिहास - पृष्ठ-४३, वायु बुक डिपो- 30 नाईवाला, करीब बाग- नई दिल्ली-8, 90 संस्करण-1978।

2- बीस- श्रीकान्त- संवाद- पृष्ठ-121, राजकमल प्रकाशन- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1969।

नहीं रही है इसलिये थोड़ी-थोड़ी देर बाद पत्नी को फौन करता है ।
अन्त में उसकी कुण्ठा ने पत्नी की नौकरी अपने ही वाफिस में लगवा दी
और उसे विश्वास हो गया कि मेरी पत्नी मेरी ही होकर रह सकेगी ।
नरेन्द्र की उक्त शंका अनेक आधुनिक बुद्धिजीवियों की शंका है जिन्होंने
पत्नी की जीविका को स्वीकार कर तो लिया है लेकिन संशय और अविश्वास
का विषीला सर्प कहीं न कहीं उनके अन्तर में छहराता रहता है ।

‘सुहागिर्ने’¹ की पत्नी, पति से अलग शहर में इसलिये नौकरी
करती है कि पति की आय घर के लिये पूरी नहीं पड़ती । ऐसी स्थिति
में यदि वह नौकरी के कारण उत्पन्न परेशानियों से घबराकर नौकरी छोड़ना
भी चाहे तो पति का परामर्श उसे यह निष्पत्ति नहीं लेने देता । यह पत्नी
माँ बनने की अव्यवस्था काफ़ी लिये हुये है पर पति कुछ बर्णों तक कोई
बच्चा इसलिये नहीं चाहता कि अभी उसे अपने माई बहनों की जिम्मेदारी बहन
करनी है । अवैलेपन से पीड़ित यह नौकरी पैसा पत्नी पति और उसके परिवार
से सिन्नमना होकर अपनी इच्छाओं को दबाये रहती है । ठीक इसी प्रकार
‘दृष्टिदोष’² की पत्नी की स्थिति है । पति के पुराणपन्थी परिवार
में कान्हेय में पढ़ी हुई पत्नी तालमेल नहीं बिठा पाती इसलिये वह नौकरी
कर लेती है । उसका कोई भी वरमान पति पूरा नहीं कर पाता । इसलिये³
उनके दाम्पत्य में अस्मिता और अजनबीपन हाथे रहते हैं । नितान्त निजी
की जीविकारत पत्नी घर का बोझ और नौकरी की थकान दोनों के बीच
यह तब नहीं कर पाती कि उसे कौन सा जीवन चुनना है । यहाँ प्रश्न न केवल

1- सुहागिर्ने- मोहन राकेश, पहचान-पृ०-25, राजमाल सेंस संस-कश्मीरी गेट,
दिल्ली- द्वितीय सं०- 1974 ।

2- दृष्टिदोष, उषा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल-पृ०-105
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग-दिल्ली- तृ०सं०-1971 ।

3- नितान्त निजी- ममता कालिया-हिन्दी कहानी - नौकरी -पैसा, स्त्री
की संक्रान्त स्थिति- किरन बजाव-पृ०-100, हिन्दी कहानी- दो दशक
की यात्रा- संपादक-डा० रामदत्त मिश्र- डा० नरेन्द्र मोहन, नेशनल प० हाउस
दिल्ली-2136-कहानी रोड-दरिबान्ज-दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1970 ।

दुहरी बीम का है अपितु उसकी दुहरी इच्छा का भी है वह घर और बाहर को मौल भी नहीं पाती और दोनों में से किसी एक से मुक्त भी नहीं होना चाहती । इस स्थिति में दोनों ओर से शान्ति, व्यवस्था और अन्तराहर्षि के अभाव में वह सदा विस्थापित बनी रहती है ।

नारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की प्रबल आकांक्षा के कारण अनेक बार पुरुष के आश्रय से अलग होकर अर्थोपाजन करने लगती है और समझती है कि अब पति के आश्रय की जरूरत नहीं रही किन्तु उस स्थिति में भी क्या वह प्रसन्न रह पाती है । छुट्टी का दिन ¹ की माया पूर्ति ² की तारा और पौ अंधेरे ³ की सुमित्रा पति की अपेक्षा अपने सुत को महत्व देती हैं पर रिक्तता और उदासीनता उनका पीछा नहीं छोड़ते । वैवाहिक जीवन में पर के लिए त्याग और बलिदान के भाव प्रायः लुप्त हो चुके हैं । नारी हो या पुरुष जहाँ उसे अपनी स्वच्छन्दता में बाधा का आभास होता है वहीं उसमें कुण्ठाएँ उमर आती हैं । अर्थ-उपाजन करने पर पत्नी का अपना व्यक्ति प्रबल हो उठता है । यही आज की अवस्था का परिणाम है जो दाम्पत्य जीवन में विभिन्न प्रश्न लूँट कर रहा है ।

सम्बन्ध विच्छेद की स्थितियाँ:- एक युग था जब विवाह वैदी पर ली गयी प्रतिज्ञायें और सप्तपदी जैसी पावन क्रियायें पति-पत्नी के संबंधों पर जन्म जन्मान्तर की मुहर लगा देती थीं और सिन्दूर की जुटकी आजन्म पातिव्रत्य का शुभ संकेत देती थी परन्तु स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों की विनाशिता ने अब विवाह विच्छेद (लगाक) को वैधानिक मान्यता प्रदान कर दी है । यह मान्यता सर्वथा एक नूतन मूल्य की विधायिका है । इस मूल्य का समर्थन अनेक

कहानियों में उपलब्ध होता है। बाइसवर्ग¹ में बाहर से शीतल और बन्धर से उष्ण पति के एकाकीपन को चित्रित किया गया है। पत्नी के विवाह पूर्व का जीवन, विवाह विच्छेद का कारण बन जाता है। पति निपट केला हो जाता है और कई वर्षों बाद जब पत्नी की आत्म हत्या की सूचना उसे मिलती है तब वह अनुभव करता है कि जो कुछ उष्णता शेष थी अब वह भी समाप्त हो गयी। वह सब और से कट गया।

‘टूटना’² में लीना और किशोर के पारस्परिक वर्ग विरोधी मूल्य संघर्ष को जन्म देते हैं। किशोर परिश्रमी और ट्यूशन करके काम चलाने वाला मध्यमवर्ग का सदस्य है और लीना उच्च पदाधिकारी की पुत्री है जिसकी नस-नस में अहंकार और मफासत सपाया हुआ है। लीना के उच्च-मध्यवर्गीयवाभिजात्य और प्रदर्शन ने पति को इतना बीना बना दिया कि वह हीन ग्रन्थि का शिकार बन गया। उसके श्वसुर दीक्षित साहब का गर्बीला स्वभाव पति-पत्नी के बीच घूरी बढ़ाने में बहुत सहायक हुआ। किशोर ने समझ लिया कि यह संघर्ष केवल पति-पत्नी के बीच नहीं अपितु उच्चवर्ग और मध्यवर्ग के मध्य है।³ वस्तुतः बाज की नारी जीवन को अपनी तरह से जीना चाहती है। उसके अपने कुछ मूल्य हैं जिन्हें किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिये वह तैयार नहीं है और इसी का परिणाम है तनाव की वह स्थिति।³

बन्ध दरार्जों के साथ⁴ एक ऐसी पत्नी की कहानी है जिसने अपने पहले पति को इसलिये छोड़ दिया कि उसके पति की बन्ध दरार में उसकी पहली प्रेमिका की तस्वीरें और पत्र आदि निहायत निजी चीजें रखी हुई थीं

-
- 1- बाइसवर्ग- बुध्नाथसिंह- सपाट बैहरोबाला वादमी- पृ०-109, अक्षर प्रकाशन, प्रा०लि०-वरियार्गज-दिल्ली-6, प्रथम सं०-1967।
 2- टूटना- राजेन्द्र यादव, टूटना- पृ०-136- अक्षर प्रकाशन-- बही- प्र०सं०-66
 3- टूटना- -----बही----- पृष्ठ-140-- ,, ,, - बही---।
 4- बन्ध दरार्जों के साथ- मन्मू मंहारी- एक प्लेट सीलाब- पृ०-22, अक्षर प्रकाशन- प्रा०लि०-2186-अक्षरी रोड, दिल्ली-6, प्र० सं०-1968।

जिन्हें उसने देल लिया। उस वैमनस्य, तनाव और विरोध इतना बढ़ा कि दोनों अलग हो गये पर समस्या फिर भी ज्यों की त्यों बनी रही। अपने एकमात्र बेटे को लेकर मंजरी अलग हो ती गई पर अवैलेपन और निर्मम विवाह ने उसे पुनर्विवाह करने को मजबूर कर दिया। बेटा हीस्टल में पढ़ने लगा। ऊंची नौकरी वाले पति के कारण पत्नी ने अपनी नौकरी छोड़ दी परन्तु एक दिन बेटे की फीस के संबंध में दिलीप ने जो सहज सी बात कह दी वह मंजरी को बहुत लगी। यदि बेटे का वास्तविक पिता कुछ कहता तो उसे बुरा न लगता पर जब सन्दर्भ दूसरा था, दिलीप सौतेला बाप था इसलिये मंजरी का मातृत्व और पत्नीत्व दोनों के प्रति यह चुनौती थी। इस समय उसे अपना परित्यक्त पति विपिन याद आता है और वह सोचती है कि विपिन उसकी जिन्दगी को टुकड़ों में बांट गया है¹। यहाँ दो प्रश्न उपस्थित होते हैं कि क्या पति की पत्नी से अलग बन्ध बराबर होनी चाहिए? उत्तर स्पष्ट है कि यदि पति पत्नी को शान्तिपूर्वक रहना है तो नहीं होनी चाहिए। पिछले जीवन की अनुचित बातों को भुलाकर नये गृहस्थ को स्वरूप वातावरण में चलाना ही हितकर है। दूसरा प्रश्न यह है कि बार-बार विवाह करने या नया पति चुनने से पत्नी को सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है? फिर जब सन्तान भी साथ हो तब तो स्थिति और भी जटिल हो जाती है। मंजरी के समक्ष एक डायबोस्ट्री नारी और बच्चे की माँ वाला रूप हाया की तरह साथ लगे रहे। यद्यपि इन अशुभ परिस्थितियों की जन्मदात्री वाज की पूँजीवादी व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति अन्दर और बाहर कहीं भी सामंजस्य नहीं कर पाता लेकिन पति और पत्नी का अहम् और असह्यशीलता जैसी प्रवृत्तियाँ भी संबंध विच्छेद की बहुत कुछ उत्तरदायी हैं। शिक्षिता नारी को अपने एकाकी परिवार को सुरक्षित रखने में पल्ल करनी होगी अन्यथा टूटन की क्रूरता का परिणाम सार्थातिक होगा।

1- बन्ध बराजी के साथ- मन्मू भंडारी- एक फ्लैट सैलाब-पृष्ठ-81, अक्षर प्रकाशन, प्रा0लि0 8136-बंसारी रोड, दिल्ली-8, प्र0 सं0- 1968।

एक और जिन्दगी¹ का नायक प्रकाश निमीठा के लिये अपनी पत्नी से तलाक़ है लेता है किन्तु समस्या का वन्त यहीं नहीं होता दोनों के बीच में बच्चा एक ऐसे वाक्यांश के रूप में सड़ा है जिससे दोनों पूर्णतः अलग नहीं हो सकते। पूरी तरह जुहन सकना और पूरी तरह अलग न हो सकने की द्विधात्मक यातना वास्तविक स्त्री पुरुष संबंधों पर प्रश्न बिन्दु लगा देती है। 'स्वप्नजीवी'² में तलाक़ शुदा नारी घृणा और प्रेम के वन्तद्वन्द्व में फूलती रही है। वह अपने परित्यक्त पति को भूल नहीं पाती और एक अन्य पुरुष के विवाह-प्रस्ताव को ठुकरा देती है। वस्तुतः महानगरीय परिवेश में युवा वर्ग की व्यक्तिगत जिन्दगियाँ दाम्पत्य के समर्पण के बजाय एक उत्तेजनात्मक रोमैन्टिक भावना को समेटे रहती हैं। फलस्वरूप शारीरिक संबंधों की अल्पावधि के पश्चात् ही विश्वासहीनता पैदा होने लगती है। और दोनों लक्ष्यच्युत हो जाते हैं। जिनके घर ढहते हैं³ और नींद⁴ में इसी विश्वासहीनता की अमिच्छा मिलती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पति-पत्नी अलग हो जाते हैं पर पत्नी को अकेलेपन का संत्रास कबोटने लगता है और वह वापस लौटने की मजबूरी स्वीकार कर लेती है। 'उसका अपना बाप'⁵ में तलाक़शुदा पत्नी की इसी विवशता का चित्रण हुआ है।

-
- 1- एक और जिन्दगी- मोहन राकेश, संग्रह यही-- पृ०-135, राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट, दिल्ली।
 - 2- स्वप्नजीवी- सुधा बरीडा- विकल्प कथा साहित्य विश्लेषार्क-पृ०-805, संपादक- शैलेश मटियानी, विकल्प कार्यालय, मोतीबाग मैक्स नगर, इलाहाबाद-2, नवम्बर-1969।
 - 3- जिनके घर ढहते हैं- रमेश बर्मा, एक अमूर्त तस्वीर-पृष्ठ-163, नीलाम प्रकाशन, 5-सुसरो बाग रोड, इलाहाबाद- पृ० सं०-1972।
 - 4- नींद- उषा प्रियंवदा- कितना बड़ा कूठ- पृ०-65, राजकमल प्रकाशन, मैताजी सुमाण मार्ग, दिल्ली-6, द्वितीय सं०-1974।
 - 5- उसका अपना बाप- अनीता बीडक, हिन्दी कहानी: मौकरी - पैसा स्त्री की संक्रान्त स्थिति, किरन बजाज-पृष्ठ-107, हिन्दी कहानी: दो बरस की यात्रा: संपादक-डा० रामदत्त मिश्र-डा० नरेन्द्र मोहन, मैक्स प०हा० दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970।

मविष्य के पास मँहराता जाती¹ में विच्छेद के अनन्तर पति की दारुण मानसिक व्यथा का वर्णन हुआ है। दाम्पत्य प्रेम की अर्थहीनता तो पति ने समझ ही पर बच्ची के लिये अपार स्नेह से उद्धेलित हृदय को कैसे समझाये ? टूटते संबंधों और भ्रष्ट होते हुए मूल्यों के संदर्भ में वात्सल्य भाव की कलुषा का यह यथार्थ रूप है। सब कुछ नहीं² में एक और पति से अलग हुई वीरत है तो दूसरी और पत्नी से अलग पड़ा हुआ पुरुष है। दोनों के बच्चे भी हैं। वे उन स्थितियों को बखूबी जानते हैं जो उन्हें कोई विकल्प या रास्ता नहीं देतीं। इस मजबूरी को दोनों जानते हैं कि दोबारा कुछ भी शुरू नहीं किया जा सकता। वे समझ चुके हैं कि सभी संबंधों की संभावनाएं एक ही होती हैं। यहाँ पति पत्नी संबंधों के दौरान उत्पन्न हो जाने वाली उस मनोवृत्ति का महत्व है जो वादमी को अकेला, वात्सल्यपराया और पीड़ित बना जाती है।

निष्कर्ष यह है कि वार्षिक और सामाजिक स्वतंत्रता के कारण स्त्री पुरुषों का वैवाहिक जीवन पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी अवश्य हुआ है पर इन्हीं परिस्थितियों के कारण कई बार दोनों के स्वतंत्र व्यक्तित्व एक दूसरे की बाधा बन जाते हैं। और तलाक या विच्छेद जैसी कानूनी मान्यता के माध्यम से वे एक दूसरे के मार्ग से हट जाते हैं किन्तु समस्या का अन्त यहीं नहीं होता हायवर्स के कारण, वात्सल्यपरायापन, कुण्ठा, हताशा, अन्तर्द्वन्द्व एवं संतान आदि की नयी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं जिसे छुटकारा पाना असंभव सा हो जाता है। यही कारण है कि कभी पुनः वहीं छोट जाने की स्थिति तथा कभी अन्त्य ।

-
- 1- मविष्य के पास मँहराता जाती- रावेन्द्र यादव, अपने पार- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-156, राजपाल एण्ड संस-कश्मीरी गेट, दिल्ली- दूसरा संस्करण- 1978 ।
 - 2- सब कुछ नहीं- कृष्णाकलदेव वैद- दूसरे किनारे से - पृ०-109, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरिबार्गज-दिल्ली ।

पति-पत्नी और तीसरा बादमी:-

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ पत्नी ऐसे ही पति को पसन्द करती हो जो शरीर और मन से स्वस्थ हो। पौरुषहीन पति न पत्नी को पूरी तरह से प्यार कर सकता है न उसके प्यार को पा सकता है। ठी पर रखी छैली¹ की पत्नी अन्य पुरुष से इसलिये जुड़ जाती है कि उसके पति में पुरुषत्व नहीं है, वह साधारण कोई बात पत्नी से नहीं कह पाता। उसकी आवाज बकरी की तरह भिभियाती है।² पुरानी पत्नी चुपचाप किसी भी तरह के पुरुष को सहन कर लेती थी पर वायुनिका नारी की हार्दिकता दुर्लभ पति को सहन नहीं कर पाती। अतः वह अन्यत्र जुड़ जाती है। वायुनिकता का एक रूप दो जोड़ी वार्लें³ कहानी में भी चित्रित हुआ है। पति अपनी पत्नी को पीटता है, और पीटने के फलस्वरूप पत्नी अपने नये प्रेमी राजू से जुड़ जाती है। यद्यपि वह प्रेमी भी विवाहित है अतः ये नये प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखते हैं लेकिन फिर भी संबंध जोड़े हुए हैं। इससे विल्कुल भिन्न कहानी है प्रतिपदा⁴। यह पत्नी इतनी चालाक है कि विवाहोपरान्त अपने पूर्व प्रेमी से स्वीयका ही मिलती है। प्रेमी का विधानसभा में दखल है इसलिये लड़की के बास्ते या ऐसे ही दूसरे कार्यों के निमित्त उसका उपयोग करना चाहती है। *जब इतनी लम्बी उम्र जीना है तो प्रेम-वैम की इन मामूली बातों के पीछे अपनी गृहस्थी नष्ट क्यों करे ? यह पत्नी बड़ी

1- ठी पर रखी छैली- रामकुमार- ज्ञानोदय - अप्रैल-1967- पृ०-81।

2- ----- वही----- ,, पृष्ठ-88।

3- दो जोड़ी वार्लें- राजेन्द्र अवस्थी, ज्ञानोदय - अप्रैल- 1967।

4- प्रतिपदा- मणिपुष्कर- हवा में वकैले- पृष्ठ-80, राधाकृष्ण प्रकाशन- 8-अंसारी रोड, दरियानगर-दिल्ली-6।

5- ----- वही ----- पृष्ठ-54।

व्यावहारिक और चतुर है तभी तो यथार्थ के घरातल पर लड़ी होकर अपने संबंधों के विनाश में जागरूक बनी हुई है। तीसरा व्यक्ति उनके घर पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं डाल सकता।

पति-पत्नी संबंधों के बीच तीसरे वादमी की उपस्थिति एक नये रूप में चित्ताई गई है। कमलेश्वर की कहानी दुर्लोक के रास्ते में¹। पति-पत्नी संबंध ठीक से न निभा पाने के कारण दोनों के बीच तनाव और अन्तर्विरोध हो जाता है अतः पति अपनी पत्नी ललिता का विवाह उसके प्रेमी वीरैन्द्र से करवा देता है। वह इसमें अभिचार जैसा कुछ नहीं समझता। दाम्पत्य संबंधों के बीच से उभरता हुआ यह एक नवीनतर जीवन मूल्य उदय हो रहा है।

यह तीसरा वादमी परीक्षा रूप से 'एक कमजोर लड़की की कहानी'² में भी परिवार को प्रभावित करता है। पत्नी के पूर्व प्रेमी के कारण घर में तनाव शुरू होता है। पति अपनी पत्नी के प्रेमी को मौजन पर बुलाकर उसके मौजन में पत्नी से जहर मिलाने को कहता है। प्रेम और कसब की इस मंछी परीक्षा में पत्नी प्रेम को प्राथमिकता देती हुई वह उस विषमयी प्लेट में से चुपचाप एक चम्मच पुडिंग अपने मुँह में डाल लेती है और सहर्ष मृत्यु का वरण करती है। संबंधों का यह रूप बड़ा अटपटा सा लगता है जो स्त्री पूर्व प्रेमी को इतना मानती है कि उसके लिये जहर ला सकती है वह इस पति से शादी न करके उस प्रेमी से ही शादी कर सकती थी। एक रूप यह भी हो सकता था कि वह पति के इस अनुचित आदेश को मानने से इन्कार कर देती।

1- दुर्लोक के रास्ते- कमलेश्वर- मास का दरिया- पृष्ठ-88, अक्षर

प्रकाशन- प्राणलि0-2। 36-अक्षरी रोड, दरियार्गज-दिल्ली।

2- एक कमजोर लड़की की कहानी- राजेन्द्र यादव, त्रैष्ठ प्रेम कहानियाँ- राजेन्द्र अवस्थी, पृष्ठ-184- पराग प्रकाशन-8। 114-कण्ठगिरी, विश्वास नगर, शाहदर, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1978।

और आगे बढ़कर सोचा जाय तो इस पति को तलाक देकर प्रेमी के साथ जुड़ सकती थी। कुछ भी हो यह कहानी इस तथ्य की तो उजागर करती ही है कि पुरुष अपने एकाधिकार को छोड़ना नहीं चाहता। पत्नी के पूर्व प्रेमी को वह सहन नहीं कर पाता और अपने एकाधिकार को प्रमाणित करने के लिये ही इतना कठोर कर्म पत्नी से करवाना चाहता है जो ही परिणाम विपरीत रहा हो।

तीसरे आवामी की दुरगामी कल्पना का एक सर्वथा नवीनतम रूप पैसा¹ कहानी में देखने को मिलता है। पति पत्नी दोनों सुहागरात में ही तलाक तक की संभावना पर चर्चा करते हैं। तलाक के बीच आने वाली कानूनी विवर्तों का भी ये दोनों हल ढूँढ लेते हैं। संबंधों का यह रूप पारस्परिक अविश्वास का सूचक है। यह नवीन मूल्य परिवेश जन्य है। लगता है इस दम्पति के लिये विवाह जैसी संस्था कोई महत्व नहीं रखती। यह परिवर्तित बोध चपल मनःस्थिति और अराजक यौन भावना को व्यक्त करता है।

उपरोक्त माना परिस्थितियाँ और विभिन्न सन्दर्भ पति-पत्नी संबंधों के बदलते हुए मान मूल्यों को उद्घाटित करते हैं। ये सभी कहानियाँ पति-पत्नी के सनातन और परम्परानुमोदित संबंधों में एक नये मोड़ के आगमन की तथा नवनिर्मित रचनात्मक परिवेश की स्थापना की प्रतीति कराती हैं। संयुक्त परिवार से निर्मित एकाकी परिवार में भी तरह-तरह की समस्याएँ उपस्थित हो रही हैं जिनका समाधान वर्तमान व्यवस्था में होता दिखाई नहीं देता। समाजवादी परिवेश में ही पति-पत्नी और

1- पैसा- सुदर्शन चौपड़ा- सन् 60 के बाद की हिन्दी कहानी- उत्कर्ष विशेषांक-1966-पृष्ठ-161-संपादक-यशपाल-गोपाल उपाध्याय।

बच्चे सुसमय जीवन बिता सकते हैं क्योंकि उसमें पति-पत्नी का अपनी - अपनी इकाई के रूप में निभी मूल्य होता है। कोई किसी का सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक मानसिक या बौद्धिक शोषण नहीं कर सकता।

सास-बहू के संबंध:-

सास और बहू का विरोध एक लोकवर्धित विषय है। प्रत्येक देश और समाज में सास-बहू के वैमन्य और पारस्परिक कलह की कहानियाँ पुराने जमाने से आज तक पढ़ी-सुनी जाती हैं। हिन्दी कहानियों में प्रेमचन्द युगीन लेखकों ने सास और बहू की विपरीतता को आदर्शवादी दिशा में मोड़ने का प्रयास किया था। प्रेमचन्द को गृहनीति¹ की शिक्षा यही है कि यदि सास अपनी बहू को पुत्रीवत् प्यार करने लगे और बहू सास को अपने सद्ब्यवहार से सन्तुष्ट रहे तो कुटुम्ब में शान्ति स्थापित हो सकती है। विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक ने मातृभूमि² में सास-बहू का विरोध दिखलाकर मातृभक्ति केटी की भूमिका इस रूप में प्रस्तुत की है कि सास-बहू भी करे वह बहू से उच्चतर और मान्य है। प्रेमचन्दोंवर लेखकों ने जिस परिवार की चर्चा की है उसमें सास अनुपस्थित है। कारण यह है कि स्वयं प्रेमचन्द ने ही

3- गृहनीति- प्रेमचन्द, मानसरोवर मान-2, पृ०-269, एस प्रकाशन, नवीन संस्करण- 1972।

2- मातृभूमि- विश्वम्भर नाथ कौशिक, कौशिक जी का कथा साहित्य सुमित्रा शर्मा- पृष्ठ-88, साहित्य प्रकाशन, मालीबाठा दिल्ली-6, संवत्- 2024।

अन्त में संयुक्त परिवार के विघटन की संभावना को समझ लिया था ।
 अतः यशपाल, अज्ञेय, धीमेन्द्र की कहानियों में संयुक्त कुटुम्ब की टूटन
 और जबरता के कारण सास की पात्रता और मान्यता कम पाई जाती है ।

स्वातंत्र्योत्तर कहानीकारों ने अधिकता से एकाकी परिवार की
 कहानियाँ लिखी हैं इसलिये सास की जहाँ वहाँ भी कम है । सास-बहू
 मिश्रित परिवार वहाँ नहीं के बराबर हैं । हाँ सामयिक परिस्थितियों और
 प्रत्यक्ष जीवन का आनन्द भोगने की लालसावश आलोच्य युग की सास-बहू
 आपने-सामने कम ही पढ़ती हैं फिर भी कुछ कहानियों में प्रत्यक्ष या
 परोक्ष रूप से सास-बहू संबंधों की व्यंजना मिलती है ।

ऐसा लगता है कि युग युगों से सास के शोषण और बन्धन को
 सहने वाली बहू आधुनिक युग में सास से बदला ले रही है । स्वातंत्र्योत्तर
 मारी-बैतना, व्यक्ति-बैतना और एकाकी परिवार की स्थितियों ने पुरानी
 सास का रूप बदल दिया है । अब वह बहू के मातहत रहती है । कहीं-कहीं
 तो उसकी दयनीय स्थिति का चित्रण भी पाया जाता है । बापू¹ की
 सास अपनी बहू द्वारा परिचालित है । कुछ समय के लिए सास अपने बहू-भेटे
 के पास शहर आई है पर बहू की अति शिष्टाचार सूचक बातें उसे औपचारिक
 और अनात्मीय लगती हैं । बहू के सँकोच से वह अपने भेटे के सिर में बादाम
 रोगन नहीं लगा पाती । सास को विदा करते समय बहू ने ताना भी साथ
 में नहीं रखा । घर में बहू की प्रधानता के कारण यह सास बची घुटी सी
 रही और मन में अनेक इच्छाओं को दबाये बठी गयी । औपचारिकता का
 दूसरा रूप इन्तजार² में भी देखने को मिलता है जहाँ लम्बे समय से रुग्ण

1- बापू- मोहन राकेश- क्वार्टर- पृ०-62, राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी
 गेट- दिल्ली- प्रथम सं०- 1972 ।

2- इन्तजार- सुदर्शन चौबड़ा- सहक दुर्बटना, पृष्ठ-187, नीलाश्व
 प्रकाशन- 8-दुसरी बाग रोड, इलाहाबाद-1, पृ० सं०- 1972 ।

सास से बहू की शिकायत है कि बारबे में सास के छेड़े रहने से उसे कमरे में लाना बनाना पड़ता है 'यदि सास मर जाय तो वह बारबे में एक तरफ किचन और दूसरी तरफ सिटिंग रूप बना लेगी।¹ जायुनिक व्यक्तिवादी परिवेश की मनीषा इस कहानी में चित्रित है। सास और बहू स्पष्टतया दो पीढ़ियों की प्रतीक हैं। आज की वर्तमान पीढ़ी का बीते हुए कल की पीढ़ी के साथ सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक स्तर पर जो संघर्ष चल रहा है उसमें सास-बहू संघर्ष भी आता है। वर्तमान बहू-सास की नियामक बन गयी है। गीता सहस्रनाम में बहू द्वारा सास और अपमानित और उपेक्षित जीवन बिताने को विवश हो रही है। जायुनिक वैयक्तिक परिवार में रहने वाली बहू के बच्चे औजी का रिसाला पढ़ते हैं, फ्रिज का पानी पीते हैं। कुचा इस घर की रसवाली करता है। यहाँ आकर सास याद करती है कि पड़ोसियों ने उससे ठीक ही तो कहा था 'परदेश नहीं जा प्रीपदी, मर जायेगी। बेटा तेरा काम पर रहेगा, बहू तुम्हें जूती बराबर समझती है।² सास का अल्लापन चाहे नगरबीय के कारण हो या व्यक्तिवादी दृष्टि के परिणाम स्वरूप हो, यह निश्चित है कि इसमें दो पीढ़ियों की विषमता और विरोध का विन्दन है। कंटीली हाँह⁴ की बहू पढ़ी लिखी और नौकरी पेशा है, उसने विवाह के बाद आते ही सास को अलग कर दिया और उसके पैर अपने कमरे में कर लिये। बहू के प्रति सास का विचार है कि

1- इन्तबार- सुदर्शन चौपड़ा, सड़क दुर्घटना- पृ०-139, नीलाम प्रकाशन,

5- सुसारी बाग रोड- इलाहाबाद-1, प्रथम सं०- 1972।

2- गीता सहस्रनाम- मीन साहनी- मटकती रात- पृ०-207, राजकमल प्रकाशन- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1966।

3- ----- वही----- पृष्ठ- 214।

4- कंटीली हाँह- उषा प्रियंवदा- जिन्मनी और गुलाब के फूल-पृ०-76 भारतीय ज्ञानपीठ- नेताजी सुभाष मार्ग-दिल्ली-6, तृ०सं०-1971।

वह उसके सीधे साधे धैरे के गले न जाने कहाँ से पहुँ गई है कोई और होता तो दो जूते देकर सीधा कर देता ।¹ दृष्टिदोष की बहु वाधुनिक परिवेश में पली हुई है जबकि उसकी ससुराल में पुराने रीति रिवाजों की मान्यता दी जाती है । त्योंहार पर सास-बहू से व्रत रखवाना चाहती है । अपने पौत्र का नाम स्कन्द रखना चाहती है पर बहू को इन बातों में पुरानापन और पिछड़ापन दिखाई देता है । उसे इस घर में बैठ टी भी नहीं मिल पाती । स्पष्ट रूप से इस कहानी में प्राचीन और अर्वाचीन मूल्यों का संघर्ष चित्रित हुआ है ।

विवेच्य युग में कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जिनमें रुढ़िवादी दृष्टिकोण से सास-बहू के संबंधों को चित्रित किया गया है । ऐसा प्रतीत होता है कि सामन्तवादी विचारों वाली अनेक सासों काज भी बहुओं को तिरस्कार, उपेक्षा और शंका की दृष्टि से देखती हैं । सास यहाँ अधिकार सम्पन्न और गृह-संभालिका के रूप में विद्यमान है । अरुन्धती² में सास ने अकेले नदी में जाने वाली बहू को बदनाम करने वाले लोगों का विश्वास कर लिया । वहाँ बाद बहू गर्भवती हुई तो दकियानूसी सास ने उसका गर्भ इसलिये गिरवा दिया कि लोग उस बच्चे को नौकर का सम्पर्क में । बहू द्वारा गर्भपात की दवा का पी जाना इस बात का प्रमाण है कि सामन्ती अवशेष एवं सासवाद का यमन कब वतमान में भी भारतीय परिवारों में और विशेषतः ग्राम्य गृहस्थों में परिध्याप्त है ।

- 1- कटीली हाँस- उषा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल-पृ०-80
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली-6, तृ०सं०-1971
- 2- दृष्टिदोष- उषा प्रियंवदा- ----- वही-----पृष्ठ-105 , , ।
- 3- अरुन्धती- शिव प्रसाद सिंह- मुर्दा सराय- पृष्ठ-15, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1966 ।

भारतीय परिवार पुत्र-प्रधान है। स्वाधीनोत्तर भारत में कितनी भी प्रगति क्यों न कर ली हो आज भी पुत्र-पुत्री के बीच घोर अन्तर है। विशेष रूप से पुरानी पीढ़ी के दिमाग में कमाऊ पुत्र की परम्परागत कल्पना गहरे रूप में समाई हुई है। बेटा बीमार होता है तो उसके तरह-तरह के इलाज कराये जाते हैं पर बहु बीमार पड़ जाय तो उसका इलाज फिजूल सर्वाँ लगाने लगता है। सावित्री नम्बर दो¹ की सास-बहु की बीमारी पर उसे प्रताड़ित और छिन्नित करती है। सास को लगता है उसके बेटे के काम फूट गये जो ऐसी रोगिणी बहु घर आ गई। अन्त में इस बेचारी बहु को सन्तानावस्था में ही उसके पीछर पहुँचा दिया जाता है। सास प्रधान कुटुम्ब का ऐतिहासिक निन्दनीय रूप स्वाधीनोत्तर भारत में भी घुन की तरह लगा हुआ है।

सास-प्रधान घर में यदि आर्थिक संकट हो² जब तो बहु की दशा और भी शोचनीय बन जाती है। 'आर में आज'³ में बहु की तकलीफ सास को बहानेबाजी प्रतीत होती है। वह सोचती है कि इस मक्कारी और फरेब करनेवाली बहु को 'एक जोर की लात लग जाय तो सारा दर्द एक दम ठीक हो जाय'।

उपर्युक्त कहानियों में जिन परिस्थितियों या कारणों के मध्य सास बहु के संबंधों को उद्घाटित किया गया है उनसे दो तथ्य उभर कर सामने आते हैं। पहली बात यह है कि आज के परिवेश में रहने वाली बहु पुरानी

- 1- सावित्री नम्बर दो- धर्मवीर भारती- बन्दगली का आसिरी मकान, पृष्ठ-81, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली- द्वितीय सं० अक्टूबर-1973
- 2- आर में आज- कृष्ण कलदेव वैद, मेरा दुश्मन - पृ०-89, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1966।
- 3- ----- बही----- पृष्ठ-90, ----- बही----- ।

सासबाद की मान्यता को स्वीकार करने को कदापि तैयार नहीं है । पुरानी मान्यता की वस्वीकृति का ही परिणाम है कि कहीं बहू सास के प्रति औपचारिक शिष्टाचार निमात्री है तो कहीं घोर उदासीनता और उपेक्षा बिताती है । दूसरी बात यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति और जागरण की बहुमुली प्रगति के पश्चात् भी वनक परिवारों में सासों का बबदबा और शासन पछ्ले जैसा ही कायम है जिसके जन्तर्गत बीमार बहू को पीछर भेज दिया जाता है । कलात् उसके नर्मस्थ शिशु को गिराया जाता है और तरह-तरह से उसे रंका और अनादर की दृष्टि से देखा जाता है । एक बात दृष्टव्य है कि दोनों ही परिस्थितियों में घर के पुरुष पात्र या तो मौन रहते हैं या आशाकारी सदस्य की तरह बहू और सासों का समर्थन करते हैं । पछ्ले सास की हुकूमत थी तो अब बहू की है । पछ्ले के पति पुत्र या दूसरे सदस्य तथाकथित सास को घर का केन्द्र मानते थे वह संयुक्त कुटुम्ब की निदेशिका थी तो आज एकाकी परिवार में रहने वाला पति तथाकथित बहू को ही प्रधानता देना चाहता है और देता है क्योंकि घर का संचालन सूत्र-बहू के हाथ में आ गया है ।

पिता- पुत्र के सम्बन्ध:-

स्वाधीनता पूर्व की युवा पीढ़ी अपने पित्रु वर्ग के प्रति नैतिक कसैव्य बोध के कारण जिस आस्था और विश्वास को प्रकट करती आ रही थी, स्वाधीनोत्तर की पीढ़ी ने उसके प्रति उपेक्षा और विरोध व्यक्त करना शुरू कर दिया । पिता-पुत्र सम्बन्धों का जो रूप कफ़न¹ और संशोधन जैसी

1- कफ़न- प्रेमचन्द- प्रतिनिधि कहानियाँ, हा0 बच्चनसिंह- पृष्ठ-1,

वनुराग- प्रकाशन, विशालाद्वी चौक वाराणसी- चतुर्थ संस्करण- 1978 ।

प्रेमचन्द युगीन कहानियों में मिलता है वह विवेच्य युग की कहानियों में वार्षिक रूप से भी नहीं मिलता। कफ़न के बाप-बेटा यद्यपि सामाजिक यथार्थ और का वैवाच्य की भयावहता को प्रस्तुत करते हैं परन्तु पारस्परिक संबंधों की नैतिकता उनमें फिर भी दिखलाई देती है। पैट की मूल उन्हें बहू के कफ़न के पैसे भी लूट करवा देती है। लेकिन लोक-परलोक के प्रति दोनों की धारणायें और परस्पर का ममत्व पुराने संस्कारों से जुड़े हुये हैं। इसी प्रकार कौशिक जी के संशोधन का पुत्र पिता की आज्ञा का पालन करता है। प्रष्टाचार में लिप्त पुत्र को पिता की प्रेरणा और उपदेश सन्मार्ग पर ले जाते हैं। दो पीढ़ियों का तालमेल और संबंधों की नैतिक जिम्मेदारी इन कहानियों में चित्रित है।

आलोच्य युगीन पिता-पुत्र संबंधों के परिवर्तन की जो कहानियाँ मिलती हैं उनमें दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। पहली प्रवृत्ति में पितावों के प्रति पुत्रों की आस्थाहीनता की स्थिति केवल आक्रोश तक ही पहुँची है। परम्परा प्राप्त आदतों या लोकलाज के म्य से पुत्र का विरोध बहुत उग्र रूप धारण नहीं कर पाया है। दूसरी प्रवृत्ति विद्रोह और पूर्ण रूप से मूल्य भंग की है जहाँ अब तक की परम्परापोषित मर्यादा को ताक पर रखकर पुत्र विद्रोही और प्रतिद्वन्द्वी के रूप में खड़ा मिलता है। इस सन्दर्भ में डा० शिवप्रसाद के निम्न विचार उल्लेखनीय हैं :---

‘यदि हम ८० के बाद की कहानियों का सही विश्लेषण करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि ५५-५६ तक कहानियों में निहित आस्था की हरारत धीरे-धीरे नीचे उतरने लगी थी। उदाहरण के लिए ८० के ठीक बाद भी कहानी में दादा दादी-बाबा आदि को इस रूप में प्रतिष्ठित किया जाता था कि वे समय के कठोर चक्र में फिसले हुये भी मानवीयता से वंचित नहीं हैं।

- 1- हर्षोदन- विश्वम्भर नाथ शर्मा- कौशिक-कस्तूर-ग्रुष्ठ-८६, विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्मिडल रोड, आगरा- तृतीय संस्करण- १९६८।

जिन्हें समझने की जरूरत है। धीरे-धीरे पितृवर्ग के प्रति विश्वास का यह भाव उनकी वायुनिक को समझने की असमर्थता के कारण सीमा और उदासीनता में बदलता गया-- देऊ दादा, दादी माँ, गुररा के बाबा, देवा की माँ आदि कहानियों में दया और सहानुभूति है। यही बाद में राष्ट्रीय जीवन के प्रति नई पीढ़ी की सीमा के कारण, बाद की कहानियों में पिता पुत्र के बीच का संबंध सिंचाव और गहन उदासीनता में बदल गया। प्राचीन परम्परापीणित संबंधों में 'गाँठे' ही नहीं पहँती, ऐसा 50 के बाद की कहानियों में है बल्कि वे उस सीमा को छूने लगते हैं जहाँ रक्तपात होता है।¹

विरोध (आक्रोश) और विद्रोह की इन कहानियों के विभिन्न सन्दर्भ इस प्रकार हैं:-----

वार्थिक विक्षोभ:-

पिता के प्रति उदासीनता व्यक्त करने वाली अब और नहीं² कहानी वर्थ-संकट की कहानी है। निम्नपथ्यवर्ग का पुत्र साधारण कमाई से परिवार का भार नहीं ढो पाता। ममता और अपनत्व की अव्यवस्था सोई हुई नजर आती है। यद्यपि पिता के घोट लगने पर पुत्र के मन में ममता जागती है पर वह वार्थिक गौरवस्थे की परेशानी के बीच उसे निभा नहीं पाता। बूढ़ा पिता की सामान्य जरूरतें करने वाले बेटे के बच्चों को लिहाता है, उसका दुब लुटाता है, कंगीठी सुलगाता है और इस तरह बेकसी और ऊब के बीच पिता पुत्र जुड़े हुये चल रहे हैं।

1- वायुनिक परिवेश और नक्कलन- पृ०-212-शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद-1, प्रथम संस्करण- 1970।

2- अब और नहीं- कम्प्लेक्स- बयान- पृष्ठ-178, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए-महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-1, प्रथम संस्करण-1972।

सीसीफस¹ में भी पिता के प्रति पुत्र का वाक्रीय व्यं संकटजन्य है। पिता से अलग रहते हुए भी यह पुत्र पिता की वार्षिक सहायता देता रहता है फिर भी इस पिता की शिकायत है कि उसने जो कुछ कमाया सब अपने पिता को दिया पर वायुनिक बेटा बाप के जूतों के लिए 15-20 रुपये भी नहीं देता। बेटे की शिकायत है कि पिता ने उसे केवल कर्क बनाकर छोड़ दिया, वह अपने तथा पिता के परिवार के बीच से अन्दर ही अन्दर घुटा जा रहा है। सर्वर्षों का अजनबीपन और दो पीढ़ियों का विरोधाभास यहाँ स्पष्ट है। 'दायरा'² की संवेदना में भी पुत्र की वार्षिक लाचारी का रूप उभरता है। स्कूल में पढ़ाने वाला यह पुत्र पिता के परिवार की सहायता देना पसन्द करता है परन्तु स्वयं पिता के पास वाली नौकरी नहीं करना चाहता। बीमार पिता को देखकर वह घबराने लगता है। वह सोचता है कि क्या पिता के पास एकमात्र दिलचस्प विषय बीमारी ही रह गया है जिसकी वे प्रायः बातें करते हैं। वह स्टेशन पर जाकर दिग्भ्रमित सा लड़ा हो जाता है कि कौन सी गाड़ी पकड़े। यह घबराहट वस्तुतः पिता से नहीं वार्षिक विकासता से है जो काँ वैयक्तिक का परिणाम है।

स्कीवासी³ कहानी का पुत्र वार्षिक और सामाजिक विसंगतियों से इतना पीड़ित है कि उसे पिता की रुग्णता की चिन्ता नहीं है परन्तु चिन्ता केवल इस बात की है कि उसकी मृत्यु के उपरान्त दाह संस्कार बाप के लिये वह कन कैसे जुटा पायेगा। पिता पुत्र सर्वर्षों का यह अवमूल्यन

1- सीसीफस- हृदयेश, छोटे शहर के लोग- पृष्ठ-98, बदर प्रकाशन, पृष्ठ-10 दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1972।

2- दायरा- रामकुमार- समुद्र, पृष्ठ-136, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6 प्रथम संस्करण- 1968।

3- स्कीवासी- दुषनाथसिंह, सातवें दशक की हिन्दी कहानियाँ- पृष्ठ-41 अपरा प्रकाशन-41-ए ताराबस स्ट्रीट, कलकत्ता-1।

सामाजिक यथार्थ को हमारे समझ उध्घाटित करता है, मले ही यह यथार्थ ऊपर से देखने में हमें अक्षुब्ध प्रतीत होता हो ।

बेरोजगारी की भयावहता:-

निम्नमध्यवर्गी का व्यक्ति वजीब सी स्थितियों से घिरा रहता है और जब जवान बेटा बेकार बैठता हो तब स्थिति और भी भयावह हो जाती है । एक अपरिचित दायरा-¹ का पिता सामान्य सी नौकरी में परिवार को चलाने में कठिनाई महसूस करता है । पुत्र और पिता अलग-अलग कटे हुए हैं । उधार सामान ला-लाकर घर का गुजारा चलता है । जवान बेटा मले ही बेकार हो पर उसकी जवानी की भी कुछ उम्रों और छसरतें हैं अतः वह प्रेमाचार-पत्राचार भी करता है पर दुर्भाग्य की बेकार लड़के से अपनी लड़की की शादी कोई नहीं करना चाहता । बाबू ज्ञान शंकर ने इस पिता को चिठ्ठी लिखी है कि वे उनके बेकार पुत्र से अपनी बेटी सुधा की शादी नहीं कर सकते और न जाने क्या अबाही-तबाही लिख मैजी है ।² फिर भी पिता को पुत्र से डर लगता है कि घर से न निकल जाय । पुत्र को शिकायत है कि ऊँची से ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त कर लेने पर भी उसे नौकरी नहीं मिल रही तो वह क्या करे । क्या घर वाले कुछ दिनों तक बिठाकर नहीं सिला सकते ।³ पिता पुत्र सज्जित व्यक्तित्वों को समेटे हुये तनाव और कटुता के बीच संबंध निबह कर रहे हैं । डिप्टी क्लर्क⁴ के सारे स्वप्न धूर धूर हो जाने पर पिता

1- एक अपरिचिदावरा- सुरेश सिन्हा- कई बाबाजों के बीच-पृष्ठ-32, लोकमार्ती प्रकाशन-15-ए, महात्मागान्धी मार्ग- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1968 ।

2- ----- वही----- पृष्ठ-45 ।

3- ----- वही----- पृष्ठ-38 ।

4- डिप्टी क्लर्क- अमरकान्त- पुरस्कृत हिन्दी कहानियाँ- पृष्ठ-1, संपादक- श्रीकृष्ण, परान प्रकाशन- कण्ठिली-विश्वास कार, शाहदरा दिल्ली-32, प्रथम संस्करण- 1978 ।

बीर पुत्र दोनों उसी पुराने ज़र मकान बीर पुरानी मजदूरियों में जीने को विवश होते हैं। पिता की आशा है कि पुत्र के डिप्टी क्लर्क हो जाने से वह एक न एक दिन मध्यम की मजदूरियों से ऊपर उठेगा, तब वह गरीब स्थितियों का दास नहीं रहेगा लेकिन जीवन का यथार्थ स्वप्नों के आकाश की धरती पर छापकता है। पिता-पुत्र निरीह संबंधों के बीच अस्तित्व संघर्ष की विभीषिका से सिर झुकाकर चले जा रहे हैं।

साया¹ का पुत्र पिता से नहीं आता अपितु अपनी बेकारी और बेरोजगारी के कारण स्वयं से आ रहा है। पिता के ऊपर बोझ बना हुआ यह पुत्र घर में अपने को अनास्तुत अतिथि सा महसूस करता है। अनेक इन्टरव्यू के लिये पर नौकरी नहीं मिली। पिता ने गन्दे कपड़े पहनने शुरू कर दिये हैं। 10वें दिन कमड़ों में साबुन लगाने लगे हैं। जब बेटा दर से घर पहुँचता है तो पिता वार्शका ग्रस्त होकर उसे दूँदने निकलता है पर अयोग्य और बेरोजगारी की असमर्थता से यह पुत्र एक दिन रेल से कट ही गया। मृत्युबोध की अमानक स्थिति के मध्य वास्तव्य का यह रूप कितना दयनीय है। यही बेरोजगारी की बेकसी सास पाहुना² के बेटे में भी है। साया कहानी का पिता अपने पुत्र की नौकरी के लिये चिंतित था और सास पाहुना का पुत्र लम्बी बीमारी से पीड़ित पिता के मल्ले इलाज के प्रति चिंतित है। अन्त में उसे अपनी माँ का मन रखने के लिये एक फूट नड़ना पड़ा कि डाक्टर ने जवाब दे दिया है। साया का पुत्र रेल के नीचे कट कर मर जाता है और सास पाहुना का पिता बिना इलाज

1- साया- हृदयेश-छोटे शहर के लोग, पृष्ठ-65, बदर प्रकाशन, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972।

2- सास पाहुना- सुदर्शन चौपड़ा, सड़क दुर्घटना-पृष्ठ-84, नीलाम प्रकाशन, 5-सुतारों बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972।

के मर जाता है। जीवन का इतना दुर्दमनीय बोझ कि अस्तित्व की सार्थकता का ही पिटाना पड़े। पिता पुत्र संबंधों से अधिक ये कहानियाँ भारत की बीसत जनता के जीवन संघर्ष की कहानियाँ हैं।

नये पुराने मूल्यों का संघर्ष:-

उपर्युक्त कहानियों में पिता-पुत्रसंबंधों में उदासीनता निरीहता वार्शका और तनाव जैसी स्थितियों के द्वारा अन्तर्विरोध व्यक्त किया गया है परन्तु आलोच्य युगीन ऐसी अनेक कहानियाँ भी हैं जिनमें पिता पुत्र सामने प्रतिद्वन्द्वी की तरह लड़े दिखाई देते हैं। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी की टकराव को देखकर लगता है कि वो पीढ़ियों की लड़ाई अर्द्धव्य हो गई है।

“बापसी”¹ के गजाधर बाबू रिटायर होकर पैंतीस वर्ष के एकाकी जीवन के पश्चात् अत्यन्त उमंग और उल्लास से अपने परिवार के मध्य रहने के लिये आते हैं पर यहाँ आकर उनका अकेलापन और गहरा हो उठता है। इस दीर्घ अवधि के बीच उनके तथा उनके पुत्र के विचारों और मूल्यों में इतना अन्तर आ गया था कि वह अपने को घर में अजनबी पाते हैं। पुत्र की पिता के आदर्शवादी पुराने विचार नहीं जबते। पिता ने नौकर छुड़ा दिया, उसका कमरा छीन लिया और उसका प्रभुत्व छीन लिया। अतः वह माँ के माध्यम से कल्लाता है। “बूढ़े आदमी हैं चुपचाप पड़े रहें”² और घर से निकाले हुये के समान बूढ़े रिटायर्ड पिता फिर एक नौकरी करने बापस लौट गये। पिता ने अपनी नाड़ी कमाई से जिस परिवार को बनाया था उसी का

1- बापसी- उष्मा प्रियंवदा- जिन्वगी और गुलाब के फूल- पृष्ठ-131, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कनाट प्लस, नई दिल्ली- चतुर्थ संस्करण- 1975।

2- ----- वही -----पृष्ठ- 141।

संचालन सूत्र जब पुत्र के हाथ में जा गया तो पिता घर से निकलने को विवश हो गया। भारतीय कौटुम्बिक इतिहास में यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन की सूचना है। यह गजाघर बाबू की परिवार से वापसी की कहानी न होकर बहारे पुरातन मूल्यों से वापसी और एक नई राह पर चलने की कहानी है।

पिता जब परिवार से सहजस्ट नहीं कर पाता तब उसे बिरादरी बाहर¹ होना पड़ता है। वापसी के गजाघर बाबू तो लौटकर नयी नौकरी पर वापस चले गये थे पर बेचारे पारस बाबू को घर के अन्दर ही उनके पुत्रों ने अलग थलग कर दिया। पुत्री के अन्तर्जातीय प्रेम विवाह का पिता ने घोर विरोध किया पर पुत्रों ने बहन का साथ देकर यह विवाह करवा दिया। नई पीढ़ी के पुत्र के लिये प्राचीन मूल्यों का उल्लंघन कोई विशिष्ट घटना नहीं है किन्तु पुरानी पीढ़ी के पिता के जीवन में वही घटना उथल पुथल मचा देती है। पहले कभी परम्परागत मूल्यों का विरोध करने वाले व्यक्ति को बिरादरी से बाहर कर दिया जाता था किन्तु आज के परिवर्तित समाज में परम्परागत मूल्यों का समर्थन करने वाला व्यक्ति स्वयं को बिरादरी से बाहर अनुभव करता है। न जाने ऐसे कितने पिता बिरादरी से बाहर हो गये।

*पिता*² में पिता पुत्रों की टकराहट असाढ़ में सड़े दो पल्लवानों की मर्ति दिखाई देती है। पिता पुराने आगुहों को त्यागने को तैयार नहीं है और उसके पुत्र आरोपित मूल्यों की जड़ता से मुक्त होकर सुस-सुविधामय

1- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृष्ठ-110, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1971।

2- पिता- ज्ञानरंजन, फॉस के इधर और उधर- पृष्ठ-77, अक्षर प्रकाशन- प्रगल्भ-2136- अंसारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968।

नूतन जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। वे पुत्र पिता के लिये कीमती वस्तु बनवाना चाहते हैं, नहाने के लिये शीशु लाना चाहते हैं पर रुढ़िवादी पिता पुत्रों के वाग्रह की स्वीकार करता हुआ भी अस्वीकार करता है। बहुमूल्य कपड़ों की वह सस्ते दरजी से ही सिलवाता है तथा अपनी पुरानी दिनब्यां में किसी भी मूल्य पर परिवर्तन करने को तैयार नहीं होता। पुत्रों को लगता है 'पिता एक झुलन्द भीमकाय दरबाजे की भाँति लड़े हैं जिसे टकराकर हम निहायत पीड़ी और दयनीय होते जा रहे हैं।' संस्कार ग्रस्त वज्रना से मुक्त पुत्रों ने पहली बार पिता के चट्टान सहस्र व्यक्तित्व को इस नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। इस संघर्ष में पिता अधिक बलशाली अवश्य प्रतीत होता है लेकिन आज के सन्दर्भों में वह कितना निरर्थक है यही कहानी की व्यञ्जना है। ठीक इसी प्रकार रमेश बह्नी ने पिता दर पिता कहानी में पिता-पुत्र के संबंधों, संबंधों नहीं बल्कि असंबंधों और पीढ़ी दर पीढ़ी रूपान्तरित होते चेहरों का रचनात्मक स्तर पर बोध कराया है। नई पीढ़ी की आंतरिक अकुलाहट और जात्यकेन्द्रिता इसमें उमर कर सामने आई है।

एक नाव के यात्री³ में सात वर्ष बाद विदेश से लौटकर बेटा पहले अपनी ससुराल जाता है उसका सारा समय दावतों और पार्टियों में बाहर ही बीतता है। जिस रिटायर्ड पिता के लिये वहाँ पहले पुत्र ने बालों का इलाज कराने के लिये इंग्लैण्ड जुलाने की लिखा था उन्हीं वह मूल सा गया। पिता मिलने के लिये निर्विघ्न प्रतीक्षा कर रहे हैं। 18 दिन बाद जब रंजन आया

1- ----- वही----- पृष्ठ-88 ।

2- पिता दर पिता- रमेश बह्नी- समकालीन कहानी: यथार्थ और अस्तित्वबोध- पृष्ठ-92 वायुनिकता और समकालीन रचना सन्दर्भ डा० नरेन्द्र मोहन, वादसी साहित्य प्रकाशन, बेस्ट सीलमपुर-दिल्ली 31, प्रथम संस्करण- 1973 ।

3- एक नाव के यात्री- शानी- युद्ध पृष्ठ-146- विधा प्रकाशन- मन्दिार दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम - 1972 ।

तो औपचारिक व्यवहार और आरोपित आवरण से पिता को विस्मृत और पीड़ित बना गया। उल्टे उल्लास होड़ गया कि उसके व उसकी पत्नी के जाने से किसी को दुःखी नहीं हुई। *पापा हर वक्त उसड़ी - उसड़ी बातें करते रहे। *¹ इस निरपेक्षा बेटे को न पिता से मिलकर आल्लाव हुआ न विदा होते समय किसी तरह की वेदना ही हुई। पिता की भी विचित्र मनीषा है कि पुत्र के चले जाने पर ही कोट पहनते हैं तथा उसका रंग पूछते हैं। पिता पुत्र की सहज आत्मीयता यहाँ दूर-दूर तक नायब है।

डैकोरेशन पीस² एक ऐसी कहानी है जिसमें स्वर्गीय पिता के चित्र के माध्यम से पिता पुत्र की दो पीढ़ियों के गम्भीर अन्तर को निरूपित किया गया है। पिता गान्धीवादी थे और स्वाधीनता आन्दोलन में कई बार जेल गये थे। पुत्र का विश्वास है कि यदि उसके पिता जीवित होते तो निश्चय ही गवर्नर बन गये होते। पुत्र की बातों से लगता है कि गांधीवादी पिता उसके आदर्श हैं पर व्यवहार में वह आधुनिक प्रष्ट राजनीति का पक्का खिलाड़ी है। जर्मनी से स्माल्ड की हुई घड़ी बांधे हुये, शाहजहाँ कालीन कालीन बिछाये हुये तथा कश्मीर से भंजाया हुआ अलरोट की लकड़ी का सोफासेट सजाये हुये यह पुत्र अक्सरवादी है। पिता की लम्बा-चौड़ा चित्र ही डैकोरेशन पीस है। जिसको दिखाना दिखाकर बेटा लोगों पर राब गाँठता रहता है। दो पीढ़ियों का अन्तर यहाँ राजनीतिक स्तर पर व्यक्त है। स्वर्गीय आदर्शवादी पिता की स्वीकारता हुआ भी यह आधुनिक पुत्र व्यवहार में अस्वीकार करता है जिससे दो पीढ़ियों और पुराने नये विचारों का संघर्ष का रूप स्पष्ट हो जाता है।

1- ----- दही----- पृष्ठ- 150 ।

2- डैकोरेशन पीस-हृदयेश- छोटे शहर के लोग- पृष्ठ-154- अन्तर प्रकाशन,
प्रा०लि० दरिबार्ग- दिल्ली- 6, प्रथम संस्करण- 1972 ।

शेरा होते हुए¹ मैं भी पिता केन्द्रित परिवार बितर रहा है। सबने अपने कमरे सजा रसे हैं वस पिता और माँ के कमरे में कुछ नहीं है। पिता से बात करने का किसी के पास अवकाश नहीं है पिता परिवार की टूटन से चिंतित होता हुआ भी समस्याओं से कतराता है। मंगलु बेटे की प्रतीक्षा की जा रही है शायद ज़ाली बार वह इससे भी अधिक मयावह स्थिति का निर्माण करेगा। संबंध परिवर्तन के इस रूप से यह तथ्य उभरता है कि वर्तमान पीढ़ी ही पुरानी पीढ़ी से अलग नहीं हो रही है। बल्कि पुरानी पीढ़ी भी नयी से अलग हो रही है।

बराब्र पिता और आधुनिक पुत्र:-

स्वातंत्र्योत्तर कहानी में एक महत्वपूर्ण नवीन दृष्टिकोण पिता-पुत्र संबंधों की मूकिका में प्रस्तुत किया है। आधुनिकतम परिवेश में ऐसे पिता पुत्र देखने को मिल जाते हैं जहाँ पिता-पुत्र साथ-साथ बैठकर शराब पीते हैं, मित्रों जैसी बातें करते हैं, गोपनीय बातों को एक दूसरे से नहीं छिपाते। शीर्षकिहीन² कहानी का पिता अत्याधुनिक है। वह रिटायर्ड होकर पुत्र के साथ रहता है। पिता बेटे से अपनी प्रेमिकाओं और दोस्तों की लुल्ले वाम बर्बाद करता है। उन दोनों को देखकर सबकी यही लगता है कि दोनों मित्र हैं। पिता जब अपनी पुरानी प्रेमिका से बातें करता है तब पुत्र उनकी बातों में दिलचस्पी इसलिये लेता है कि वह यह जानना चाहता है कि पुराने लोग किस रूप में प्रेम करते थे। पुत्र स्वयं पिता का परिचय इस तरह देता है।

1- शेरा होते हुए- ज्ञानरंजन, पॉस के इंचर और उंचर- पृष्ठ-62, अंगार

प्रकाशन- 2136- अंतारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968।

2- शीर्षकिहीन- नगाप्रसाद विमल- कोई शुरुवात, पृष्ठ-97, राजकमल

प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973---- बही--- पृष्ठ-102।

* मैं इतना जानता हूँ कि होस्टल में प्रतिमास एक निश्चित रकम भेजने वाला व्यक्ति मेरा पिता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक पिता के रूप में मुझे अपने पिता का कुछ ज्ञान नहीं है।¹ इस कहानी में पिता और पुत्र दोनों ही वाधुनिकता-वादी हैं फिर भी उनमें व्यक्तिगत स्तर पर बहुत अन्तर है।

* एक स्थिति *² में भी पश्चिमी सभ्यता का अनुगामी पिता बाहर की स्त्रियों से रोमांस छड़ाता है जिससे उसका बेटा परिचित है। पुत्रवधू के प्रति भी पिता की चेष्टा म्यादाहीन लगती है। इसलिये पिता की उच्छ्वलता से बचने के लिये बेटा दूसरे शहर में नौकरी करने चला जाता है। वाधुनिकतावादी पितावर्ग से पुत्रों को यह सतरा भी होना लगा है कि वे उनकी पत्नियों से ही कुछ अनुचित नैतिक व्यवहार न कर बैठें। एक नयी संभावना और मूल्योदय के साथ नैतिक धरातल पर पिता-पुत्र संबंधों का यह रूप हमें बटपटा नहीं लगता। वाधुनिक वजनहीन की एक स्थिति कटघर में साँस³ में भी वर्णित है। पहले नौ पुत्र के भेजे हुये रुपयों को यह पिता शराब और वीरतों में उड़ा देता था। अब वह पुत्रों की शराबखोरी परिवार की पारस्परिक कलह, यौन वराजकता आदि को देखकर भी उदासीन रहता है। जिस स्त्री के पास पहले पिता जाता था उसी के पास अब पुत्र जाने लगा है। बेटा अपनी पत्नी को पीटता है पर पिता उसे बचाने का प्रयत्न नहीं करता। परिवार का ध्वंस अपनी आँखों के सामने देखता हुआ भी वह चुप है। उसकी बुर्खा, दो-दो पीढ़ियों के रिश्तों की टूटन की सहज स्वीकृति का संकेत देती है।

1- हीरकेशीन- नगाप्रसाद बिमल- कोई शुरुवात- पृ०-97, राजकमल प्रकाशन- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973।

2- एक स्थिति- रामकुमार- समुद्र, पृ०-135, राजकमल प्रकाशन- प्राणलि०- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1968।

3- कटघरे में साँस- मणिमधुकर- हवा में कौले- पृष्ठ-148, राधाकृष्ण प्रकाशन- दरियार्गज-दिल्ली-6, संस्करण- 1972।

पिता पुत्र संबंधों के बदलते हुये रूप को गंदले जल का रिश्ता¹, मायाजाल², सण्ठितसम्बन्ध³ आदि कहानियों में भी चित्रित किया गया है। कहीं बेटे की मजदूरी सबल-गती है तो कहीं बाप की। जीवन के सभी क्षेत्रों में परम्परागत मूल्यों को चुनौती मिल रही है क्योंकि सामयिक पारिवारिक जीवन में असंतोष है। सामाजिक विषमता और विसंगतियों के कारण अनुशासनहीनता, उच्छ्वसलता और अराजकता की विविध स्थितियाँ चारों ओर दिखाई दे रही हैं। अतः उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में इन संबंधों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। अन्तर दो पीढ़ियों में सदा रहा है लेकिन वैज्ञानिक परिवेश में संक्रमण की गति तीव्रतर है। इसलिये इन संबंधों के बदलाव में भी त्वरितता पाई जाती है।

पिता-पुत्री के सम्बन्ध:-

प्रेमचन्द ने अपनी कहानी 'बेटी का घन'⁴ में 'लड़कों को अपने माता-पिता से वह प्रेम नहीं होता जो लड़कियों को होता है। गंगाजली इस विचार में मग्न रहती है कि दादा की किस भाँति सहायता करे।' इस प्रकार के उद्गार व्यक्त करके पिता के प्रति बेटी की आत्मीयता और गहरे लगाव की व्यंजना की है। लेकिन विवेच्य युग में यदि प्रेमचन्द होते तो वे शायद ऐसा न कह पाते क्योंकि सभी पारिवारिक रिश्तों के समान ही पिता-पुत्री के संबंधों में भी बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों में बदलाव आया है।

-
- 1- गंदले जल का रिश्ता- शानी- युद्ध- पृष्ठ- 86, विधा प्रकाशन मन्दिर, 1681-दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973।
 - 2- माया जाल- बागीश कुमार सिंह- समय-30 जून 1974, पृष्ठ-11।
 - 3- सण्ठित सम्बन्ध---
 - 4- बेटी का घन- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-2-पृष्ठ-29, एस प्रकाशन- इलाहाबाद- 12 वाँ संस्करण- 1960।

स्वाधीनोत्तर भारतीय परिवार की बेटी ने शिक्षा, जीविका, प्रेमविवाह, अन्तर्जातीय विवाह तथा नगरबीज जैसी प्रक्रियाओं से गुजरते हुये अपने अस्तित्व को समझ रही है। सामाजिक संवेतना प्राप्त करके वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने में संलग्न है। अस्तित्व निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हुये उसे दुहरी परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर वह माई की समझदाता पाने के लिए पारिवारिक और सामाजिक परम्पराओं और रूढ़ियों से जुका रही है तो दूसरी ओर उसे आर्थिक और सामाजिक अवस्थाजनित परिस्थितियों से टक्कर लेनी पड़ रही है। लगता है पिता और पुत्री समानान्तर दो व्यक्तित्व हैं। दोनों सामने सामने लड़े हैं। इन संबंधों के विभिन्न रूप इस प्रकार हैं :---

निपन्नता की स्थितियाँ:- अधिमाव और गरीबी बहुत बुरे होते हैं। सीसीफस की बेटी प्राइमरी स्कूल की टीचरी से 60 रुपये पाती है जिसमें से 10 रुपये जब खर्च बचाकर शैशु पिता को दे देती है पर अल्पवेतन पाने वाले पिता को इससे संतोष नहीं होता। दोनों पिता-पुत्री विवशता में साथ-साथ रह रहे हैं इसलिये एक दिन माँगने पर भी जब बेटी पिता के जूतों के लिये रुपये नहीं दे पाई तो पितृ उस कुमारी बेटी को अलग अन्तर्जाम करने की धमकी देता है।

ज्ञास पाहुना² में एक नीकरी करने वाली बेटी चाहने पर भी रोगी पिता का इलाज नहीं करा पाती। बेरोजगार माई, घर की दूसरी जिम्मेदारियाँ सबकी फौलती हुई वह इतनी समझदार और

1- सीसीफस- हृदयेश, छोटे शहर के लोग- पृ०-१३, अक्षर प्रकाशन

पृ० १६, दरियार्गज-दिल्ली- ३, प्रथम सं०-१९७२।

2- ज्ञास पाहुना- सुदर्शन चौपड़ा, सड़क दुईटना, पृष्ठ-३४, नीलाम प्रकाशन, ४-दुसरी बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम सं०-१९७२।

मजबूत हो गयी हैं कि माँ का वैधव्य, माई-बहनों का अनिश्चित भविष्य और स्वयं को अनाथ अनुभव करने की कल्पना से वह भित्ति है पर पैसे की कमी से वह माँ को एक झूठ बात बताती है कि पिता के इलाज से डाक्टर ने जवाब दे दिया है। पिता की मृत्यु के बाद सगे संबंधियों का रोना बीखना उसे नाटकीय सा लगता है। बीसीफस में जो पिता संघर्ष रत था उसी पिता को सास पाहुना में मरना पड़ता है।

अभाव की विवशता का ऐसा ही एक रूप दाय¹ कहानी में भी विद्यमान है। पिता के इलाज के लिये बेटी को नौकरी करनी पड़ती है। पहले वह किसी की ट्यूशन पढ़ाने देकर बिड़ती थी पर पिता की बीमारी के बाद वह स्वयं बदल गयी। स्वयं उसने बसवीं कक्षा में किसी छात्रा को पढ़ाने के लिये अनुचित प्रयत्न किया। परिस्थितियों ने उसे हठना बदल दिया कि वह अपनी बाइ-बिल के ऊपर पड़ी हुई छल भी नहीं पोंछ पाती।

पैसे के अभाव में बाप को अपनी बेटी का विवाह उस लड़के से करना पड़ता है जिसे वह पहले विल्कुल उपयुक्त नहीं समझता था। अन्त में उसे वही लड़का ठीक लगने लगता है 'ऐसा लड़का तो मैं गबानों को मिला' ऐसा कहकर मानों वह स्थिति से उबरने का बहाना सौजता है। और जो दरवाजा बन्द रहता था वह बीच का दरवाजा खुल जाता है।²

निधन परिवार की बेटी पिता का घर चलाने के लिये बच्चों का ट्यूशन, दूध-ठिपी पर दूध बाँटना, और दुफ्तर में किसी की सबजी काम करना जैसे कामों को दिनभर करती है। उसकी बहुत दिनों तक

1- दाय- मन्मू मंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ- पृ०-71, अक्षर प्रकाशन, ग्रा० लि०- दरियार्गज-दिल्ली- संस्करण- 1975।

2- बीच का दरवाजा- कृष्ण कलदेव वैद, संकलन--- यही-- पृ०-11, नीलाम प्रकाशन, 8-सुतरो बाग रोड, इलाहाबाद-1।

3- दूसरे- कभलेश्वर- मांस का दरिया- पृ०-79, अक्षर प्रकाशन, 21-86-जंशारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली।

शादी नहीं हो पाती और संयोग या दुर्भाग्य से जब शादी कहीं लग
 हो जाती है तो पिता निहायत बेचारी से इस फैसले को सुनाते हैं ।
 जब लड़की की ओर से स्वीकृति मिल जाती है * तब पिता ने गहरी साँस छी और मुँह
 ढक लिया * बेचारे पिता ने यही सोचा होगा कि अब घर कैसे चलेगा ?

घटूरे का फूल¹ का रिटायर्ड पिता जवान बेटी को देस-देस
 कर कुड़ता रहता है । यह उसकी शादी नहीं कर पा रहा है । उधर
 विवाहित युवती लड़की लड़की में लड़ी होकर पुस्तकों की धूरती
 रहती है । एक अनचाही मूक व्यथा पिता पुत्री के बीच कौहरी के पक्ष
 की भाँति फैली हुई है ।

गरीबी और बुढ़ापा दोनों ही भारतीय पारिवारिक जीवन
 के अभिशाप हैं । मोगे ह्ये दिन² की विधवा बेटी अपने बच्चों को लेकर
 पति के मरने के बाद बुढ़ा पिता के पास आकर रहने लगती है । प्राथमरी
 टीचर इस विधवा बेटी को स्कूल से आकर ट्यूशन को भी जाना पड़ता
 है । पूरे दिन सट कर रात को घर लौटकर सामान नसीब होता है । अपने
 बच्चे और पिता के लुब्ध घर दोनों के लिये यह बेटी कमरतोड़ मेहनत
 करती है तब कहीं पेट भर पाता है । पिता अभाव और करुणाजनक
 वातावरण में रहते ह्ये बेटी की व्यथा को समझने की कोशिश करते हैं ।

सिमटा हुआ दुःख³ का पिता अपनी बेटी को जिस तरह अपने
 हेक्स्टेंशन का माध्यम बनाता है वह आधुनिक परिवार की सबसे बड़ी ट्रेजेडी है ।

1- घटूरे का फूल- शमी- युद्ध- पृष्ठ-30, विद्या प्रकाशन मंदिर,
 1681-दरियागंज-दिल्ली, प्रथम संस्करण-1973 ।

2- मोगे ह्ये दिन- मेहरान्निता परवेज, आदम और हत्मा, पृष्ठ-98,
 मेहनत पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज-दिल्ली, प्रथम सं०-1972 ।

3- सिमटा हुआ दुःख- हिमांशु जोशी- अंततः पृष्ठ-118, पूर्वाक्षय प्रकाशन,
 प्रान्ति-718-दरियागंज-दिल्ली-6, संस्करण- 1973 ।

जवान बेटी को दुल्हन की तरह सजाकर पिता अपने बीस के पास रात में ले जाता है और बारह बजे रात में नदी में धुत्त, वस्त्र-व्यस्त कपड़ों वाली बेटी को बाँहें थामे हुये घर लौटता है। घर लौटकर बाप ने सारे देवी देवताओं की मूर्तियाँ बाहर फेंक दीं, ताना नहीं साया, किसी से बात नहीं की पर कहीं न कहीं एक वाशा की किरण उसके अन्तर में है कि उन्हें नौकरी में कुछ धर्नों का एक्स्टेंशन मिल जायेगा। पिता की निरीह कष्टणाजनक विवशता और जवान बेटी का पिता के साथ मातृमी पातावरण में जाना मानवीय जिजीविशा और आर्थिक विवशता से उत्पन्न तीव्र संवेदनात्मक स्तर पर पिता पुत्री के बदलते हुये संबंधों की प्रत्यक्षा करता है।

विवशताजन्य ऐसा ही दुस्साहस फरिश्ते¹ के पिता में भी पाया जाता है। घर में गर पेट भोजन की कमी है और इस कमी की पूर्ति होती है बेटी के सब कुछ लुट जाने पर। वे दो पुरुष घर में अनाज, दाल आदि की बोखियाँ छाल जाते हैं और साथ में बेहोश गिन्नी के शरीर को भी लूट जाते हैं। सामाजिक दृष्टि से वे दोनों व्यक्ति मूठे ही दुश्चरित्र कहे जायें पर अकिञ्चन बाप के लिये तो सबकुछ वे फरिश्ते ही हैं।

एक अपरिचित दायरा² की बेटी विवाहोपरान्त पति के साथ अपने पीछर बाई हुई है। माई बेरोजगार है। सामान्य आमदनी वाला

1- फरिश्ते- मणिमधुकर, लंबा में अकैले- पृष्ठ-83, राधाकृष्ण

प्रकाशन- 2- अंसारी रोड, दरियामंज-दिल्ली।

2- एक अपरिचित दायरा- सुरेश सिन्हा- कई आकाशों के बीच- पृष्ठ-82

इकाई प्रकाशन, 16-पुरुषोत्तम नगर-हिम्मत गंज, इलाहाबाद-1,

प्रथम संस्करण- 1968।

पिता कुण्ठित है कि कैसे घर चलाया जाय । वह दुकान से उधार सामान लाता है, राशन की दुकान पर घण्टों सड़ा रहता है, पैले कपड़े पहनता है पर बेटी को इन बातों से कुछ छेना-देना नहीं है उल्टे उसे शिकायत रहती है कि कोई ठीक से उसके पति से बात नहीं करता । दमा का मरीज बाप को रूहू के कैल की तरह तमाम दिन जुता रहता है । बेटी अपने पति के साथ बढ़िया-बढ़िया साड़ी पहन कर यूनिवर्सिटी, सिविल लाइन्स तथा सिनेमा का मनोरंजन करती है । संबंधों का यह बदलाव वास्तुनिक परिवेश और व्यक्ति चेतना का परिणाम है ।

नये पुराने का संघर्ष:-

पिता पुत्रों के समान ही पिता पुत्रियों के विचारों और मूल्यों में भारी अन्तर विद्यमान है । दो पीढ़ियों के इस संघर्ष में पुत्री विजयी होकर निकलती है और पिता की बिरादरी बाहर¹ होना पड़ता है । जब बेटी प्रेम संबंध जोड़कर अन्तर्जातीय विवाह कर लेती है । पिता के लाख विरोध करने पर भी यह विवाह नहीं रुकता । विवाहोपरान्त पिता इस पुत्री से नाता तोड़कर समझ लेता है कि उसने अपनी मर्यादा की रक्षा कर ली पर बेटी माँ के अपरेशन पर अपने पति सहित जा चमकी । पिता अलग रहते हैं, अलग इस पर साना साते हैं । शायद यह सोचकर कि वे बेटी से नफरत कर रहे हैं पर वास्तुस्थिति यह है कि बेटी ने ही उन्हें अलग काट दिया है । *धिया मेरे, ये बाकल के बच्चे² पारस बाबू का यह वाक्य पुरानी और नयी पीढ़ियों के अन्तर को उजागर कर देता है ।

1- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृ०-110,

राजमाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०-1971 ।

2- ----- वही ----- पृष्ठ- 116 ।

बापसी¹ की अविवाहित जवान बेटी को भी नौकरी से रिटायर्ड होकर आये हुये पिता अच्छे नहीं लगते क्योंकि वे पढ़ाई में न घुमने फिरने तथा मन लगाकर पढ़ने का उपदेश देते हैं। उसे लगता है पिता उसके रास्ते में रोड़ा है।

दो पीढ़ियों के इस अन्तराल का संक्षिप्त निरूपण पीढ़ियाँ² कहानी में भी चित्रित है। इतिवादी पिता की बेटी चुपचाप अपने प्रेमी से काटें मिराज कर लेती है। पिता को इसका पता एक महीने बाद लगता है। जिस पिता ने अपनी इकलौती लाइली बेटी के कारण पत्नी के मरने के बाद दूसरी शादी नहीं की उसकी बेटी जब ऐसा दुस्साहस करे तब पिता की मानसिक स्थिति का क्या रूप होगा? पहले तो पिता ने अपने अहम् की रक्षा के लिये पुत्री का अपमान किया पर शीघ्र ही वह बेटी के समझा घुटने टेक देता है। बाहर पानी में भीगते दामाद को वह अन्दर बुलवा लेता है। स्पष्ट ही यह पितृत्व की पराजय और पुत्रीत्व की विजय की कहानी है।

कील³ कहानी में पिता अपनी कुमारी बेटी का विवाह नहीं करना चाहता। वह उसे एक असाधारण वस्तु बनाकर अपने पास ही रखने का इच्छुक है इसलिये सदैव इस पिता ने बेटी मौना को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि वह एक असाधारण लड़की है ताकि वह किसी साधारण लड़के को पसन्द न कर ले लेकिन युवा मन की प्रयास और सैक्स की मूस के कारण मौना ने पिता की बिना अनुमति के ही एक साधारण से लड़के से विवाह

1- बापसी- उषा प्रियंवदा- जिम्दगी और गुलाब के फूल - पृ०-131, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कनाट प्लेस, नई दिल्ली- चतुर्थ सं०-1975।

2- पीढ़ियाँ- राजेन्द्र अवस्थी, तराश, पृ०-84, राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1970।

3- कील महीपर्सिह- सातवें दशक की हिन्दी कहानी- डा० नरेन्द्र मोहन पृष्ठ-85, आधुनिकता और समकालीन रचना सन्ध्या-- आदर्श साहित्य प्रकाशन- ईस्ट सीलमपुर-दिल्ली-81, प्रथम संस्करण- 1978।

कर लिया और पिता के कल्पना-प्रासाद की जाणभर में चूर-चूर कर डाला । मनोवैज्ञानिक वायार पर अवस्थित यह कहानी दो पीढ़ियों के गहरे अन्तर की बड़ी सूक्ष्मता से स्मृति करती है ।

सज्जित कथा¹ की युवा बेटी बाप की तेज निगाह की परवाह नहीं करती । महान्गरीय जीवन में जबान बेटी की कामनायें कैसे भी बहुत बढ़ जाती हैं । अतः वह कॉलेज के बहाने काफी देर बाहर रहती हैं । जुस्त कुर्ता पहनती है और उसके पिछले बटन बाप से छुवाती है । शाम को सलवार कमीज पर बहुत सी शिकर्नें लेकर बेटी जब घर लौटती है तब आक्रोश भरा बाप इन शिकर्नें का कारण बसों की भीड़ में खोज लेता है । जबान के जिस्म पर कुढ़न की गरम सलाहें दागता हुआ यह पिता दिनन्दिन की इसी जिन्दगी में रहने को सब कुछ सहने को मजबूर है ।

कुछ रुढ़िग्रस्त पिता:-

विवेच्य युग में कुछ कहानियों की संवेदना रुढ़िग्रस्त पिताओं के विभिन्न रूपों को भी चित्रित करती है । जहाँ लक्ष्मी कैद है² एक घनी परन्तु लालची बाप ने इस अन्धविश्वास के कारण कि लड़की के घर में रहने पर लक्ष्मी की वृद्धि होती रहेगी, जबान बेटी की शादी नहीं की । वह उसे सबमुब लक्ष्मी का प्रतीक समझता है । लेकिन युवा लड़की की भी कुछ भावनायें हैं, उसके मन में शादी की इच्छा लहरा रही है इसलिये उसको हिस्टीरिया के बीरे पड़ने लगे । पिता की मान्यता का विरोध बेटी के दीर्घों में सांकेतिक रूप से यहाँ चित्रित किया गया है ।

1- सज्जित कथा- सुदर्शन चौधड़ा- सहक पुर्बटना- पृष्ठ-128, नीलाम प्रकाशन, 6-सुसरी बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972 ।

2- जहाँ लक्ष्मी कैद है-- रावेन्द्र यादव, संग्रह यही-- पृष्ठ-189, अक्षर प्रकाशन, प्राणलिंग-2186- अंसारी रोड, दरियागंज-दिल्ली-6 ।

इडिवादी पिता का एक रूप संस्था के पार¹ में भी वर्णित हुआ है। विधवा बेटी पिता के घर से भाग गई थी और उसने दूसरा घर बसा लिया था। वहाँ बाद अकस्मात् वह बेटी अपनी बेटी से मिलने जाती है पर पिता इसकी आज्ञा नहीं देता। फल ही वह भील भाँगे पर वह इस घर में नहीं घुस सकती²। पुरानी पीढ़ी का यह पिता बेटी के वागे एक बैक डाल जाता है पर बेटी की घर में रहने की आज्ञा नहीं देता। पिता के वार्षिजात्य के समका विवश पुत्री उसी घर की लौट जाती है जहाँ वह भाग कर गयी थी और पिता की पैतिकता जीत जाती है।

वादशीवादी और सनातन संस्कारों का पुजारी पिता इतना आग्रहील होता है कि बेटी को जरा भी आज्ञाही नहीं देना चाहता। पास-फौल³ में ऐसे ही पिता का चित्रण है। प्रोफेसर होते हुये भी यह पिता अपनी बेटी पर कठोर नियंत्रण रखता है और जब तब उस पर हाथ भी उठा देता है। जब बेटी तपैदिक की मरीज हो जाती है तब उसकी विचारधारा कुछ बदलती है। वह चाहता है उसका कोई शिष्य ही उसकी बेटी को पसन्द कर ले पर यह बीमार बेटी आधुनिक लड़के द्वारा फौल कर दी गयी।

पिता पुत्री संबंधों की कुछ कहानियाँ शीर्षकहीन³, कलह⁴

1- संस्था के पार- मन्मू मंडारी, एक फ्लैट सैलाब पृष्ठ-11, अक्षर प्रकाशन, 2136-अंतारी रोड, दरिबार्ग- दिल्ली, प्रथम सं०- 1968।

2- पासफौल- राजेन्द्रयादव, छोटे-छोटे ताजमल्ल, पृष्ठ-65, राजवाड एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972।

3- शीर्षकहीन- गिरिराज किशोर, रिश्ता और अन्य कहानियाँ- पृ०-24, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, संस्करण- 1969।

4- कलह- ज्ञानरंजन, फौस के इधर और उधर- पृष्ठ-25, अक्षर प्रकाशन, प्रा० लि० अंतारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968।

बूहे¹ बापि शीर्षकों में भी मिलती हैं। इन सबसे यही ध्वनि निकलती है कि उक्त संबंधों में दो पीढ़ियों का विचार वैभिन्न्य, वार्षिक विस्तारता, (कहीं पिता की पुत्री की) नये पुराने मूल्यों की टकराहट (सैक्स संबंधों, नगर बीच, युवा मनःस्थितियों की भूमिका में) अस्तित्व बीच तथा रुढ़िवादी पितृवर्ग की संस्कार ग्रस्तता के कारण बन रहा है। वास्था, विश्वास और नैतिकता जैसे वादसी सांघातिक चीटों से कराह रहे हैं। व्यावहारिक जिन्दगी की नैतिकता दूसरी तरह की हो गयी है जो परिस्थितियों और व्यवस्था तथा परिवेश के गम से जन्म ले रही है। स्वार्तंत्र्योत्तर लेखकों ने ठाकुराज के आवरण को उतार फेंका है। समकालीतावादी पिता, हौ या रुढ़िवादी पिता। विद्रोहिणी पुत्री हौ या शोणित दमित पुत्री सभी प्रसंगों में पुराने मूल्यों का अवमूल्यन दिखलाना ही लेखकों का अभीष्ट रहा है।

माता-पुत्र के संबंध:-

स्वाधीनता से पूर्व माता-पुत्र संबंधों के आचार पर जो कहानियाँ लिखी जाती थीं उनका मुख्य ध्येय एक वादसी विशेष को प्रस्तुत करना था। प्रेमचन्द युगीन कहानियों का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस युग के माता-पुत्र पुराने संस्कारों और वादसों के परिपालन के निमित्त मात्र हैं। माँ के समझा वात्सल्य और ममता का लक्ष्य है तो पुत्र के समझा मातृभक्ति और आज्ञाकारी पुत्र बनने का निश्चित लक्ष्य है। बूढ़ी काकी, माता का

1- बूहे- निरिराज किशोर- पैपरबैट, पृष्ठ-9, राजकमल प्रकाशन, हरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967।

2- प्रेमचन्द- मानसरोवर भाग-8, पृष्ठ-144, नवीन संस्करण- 1978, ईस प्रकाशन, उठाहाबाद।

हृदय¹, उसकी माँ², मातृमक्ति³ वादि कहानियों में मातृ-महिमा तथा पुत्र प्रेम के वादशैलिक ध्येय को स्थापित किया गया है। वादशै की यह कृतक स्वतंत्रता के उपरान्त भी कर्मनाशा की हार⁴, देवा की माँ⁵ तथा वादशै⁶ वादि कहानियों में भी अक्सर हुई परन्तु शीघ्र ही विवेच्य युगीन कहानीकारों ने दूसरे संबंधों के समाप ही माँ-बेटे के संबंधों में भी जीवन सत्य और परिस्थितियों की यथार्थता को सूक्ष्मता से ग्रहण कर लिया। इसके फलस्वरूप मातृत्व और पुत्रत्व का नयी दृष्टि से नूतन परिवेश में मूल्यार्पण हुआ। इस प्रकार की कहानियों में केवल नारी और पुरुष के बीच ही टूटते संबंधों को परिमाणित नहीं किया गया प्रत्युत सभ्य परिवार के, हर इकाई के संबंध सूत्र अलग-अलग पिच्छिन्न हो गये हैं। उस अलगाव में माँ अलग और बेटा अलग अपना - अपना निजी व्यक्तित्व लिये लिये हैं। माँ-बेटे का सम्बन्ध रूप वहाँ असम्बन्ध है। वस्तुस्थिति का अनुशीलन करने से इसके कारण भी समझ में आ जाते हैं। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही शुरू

- 1- प्रेमचन्द- मासरोवर भाग-8, पृष्ठ-96, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्तमान संस्करण, 1968।
- 2- उसकी माँ- कैचन शर्मा उग्र, हिन्दी कहानी उद्भव और विकास - सुरेश सिन्हा- पृष्ठ-177, अशोक प्रकाशन- नई सड़क दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967।
- 3- मातृमक्ति- विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक- कौशिक जी का कथा साहित्य- शौच ग्रन्थ- सुमित्रा शर्मा- पृष्ठ-38, साहित्य प्रकाशन, मालीबाड़ा- दिल्ली- संवत्-2024।
- 4- शिव प्रसाद सिंह, संग्रह- यही- पृष्ठ-9, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, बुककुण्ड रोड, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 1958।
- 5- कच्छरवर संग्रह- रा जानिर्बंसिया- पृष्ठ-1, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी - द्वितीय संस्करण- 1966।
- 6- मोहन राकेश- क्वार्टर- पृष्ठ-62, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972।

रुख में नयी पीढ़ी के हृदय में वाशा, उत्सुकता, सम्पत्ती और विश्वास के भिड़े जुड़े भाव उदय हो रहे थे। ऐसा लगता था कि अब वह सब सुलभ हो जाएगा जो दासता के जीवन में दुर्लभ था। जीवन की सभी उपलब्धियाँ के प्रति कहानीकार भी वास्तविक थे पर शनैः शनैः ये उपलब्धियाँ उन्हें वार्थिक विषमता, कृत्रिम रोमान्टिसिज्म और द्वेष मनःस्थिति जैसी जटिलताओं के चीखटों में जकड़ी हुई दिखाई देने लगी। समसामयिक सम्दर्भों में मार्-बेटे का रिश्ता दो रूपों में दिखाया गया है। पहले रूप में बेटे की ओर से तटस्थता और वितृष्णा का प्रदर्शन है तो दूसरे रूप में माँ की ओर से संवेदन शून्यता का प्रस्तुतीकरण हुआ है।

पुत्र की अजबता, वितृष्णा और उदासीनता के विभिन्न रूपः

अफर शाही का अभिलाष जो न कराये थोड़ा है। मौकरी की प्रगति और प्रमोशन के लिये चीफ की दावत का पुत्र मार् को फालतू सामान की तरह घर में छिपा देता है और माँ है कि अपने छिपाये जाने की स्थिति को भी बेटे के हित में अच्छा भीता सहस्र नाम की माँ बात्मालाप करती रहती है। वैभव संपन्न पुत्र के घर में वह कौनों दूर के गाँव से आई हुई है यद्यपि बेटा प्रत्यक्ष रूप से माँ से कुछ नहीं कहता पर उसकी उदासीनता और उपेक्षा सब कुछ कह देती है। इस घर की माँ उपेक्षित और छाँछित भी एक कौन में पड़ी रहती है।

1- चीफ की दावत- भीष्म साहनी, मटकती रात, पृष्ठ-207,

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1966 ।

2- भीता सहस्रनाम- भीष्म साहनी- मटकती रात- पृष्ठ-9, राजकमल

प्रकाशन- 8- नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली- प्रथम सं०- 1966 ।

रक्तपात¹ एक ऐसी कहानी है जिसमें पागल माँ का चित्रण है। कभी उसने मातृत्व के सहज रूप को धारण किया था पर वर्तमान में वह एक निश्चेष्ट और निरीह माँ है जिसके प्रति बेटे की ममता भी मानों अतीत के साथ ही बीत गई है। रक्तपात वास्तव में माँ का नहीं हुआ अपितु माँ-बेटे के सहज संबंधों का हुआ है।

संयुक्त परिवार की जटिल जिम्मेदारियाँ भी बेटे को माँ के प्रति अझाल नहीं रहने देतीं। बायरा² का पुत्र छुट्टियाँ में जब घर आता है तब उसे हर समय माँ की ओर से यह मय लगा रहता है कि कहीं वह स्कूटिया बहन के दोनों बच्चों को घर बुलाकर उसपर दुगुना बोझ न डाल दे। पगपग पर माँ के बिचारों की प्रतिक्रिया से वह विद्वोभ और सीम उठता है। उसके कमरे में जब कभी माँ आकर बैठती है, उसका हृदय मय से काँप सा उठता है। वस्तुतः यह मय माँ से नहीं अपितु अर्थ संकुल जीवन की जटिलता से है।

अर्थ संकुलता ने पुत्र को इतना व्यक्ति निष्ठ और आत्म केन्द्रित बना दिया है कि इन्तजार³ के तीन-तीन पुत्र अंतिम साँसे गिनती हुई माँ की मृत्यु का केशत्री से इन्तजार कर रहे हैं। बड़ा बेटा इस बात से चिंतित है कि यदि माँ सात बजे के बाद रात में मरी तो कलकसे जैसे महानगर में कम्पा देने वाला चौथा आदमी कहाँ से आयेगा। उसे अपनी जीविका होड़ने की भी

- 1- रक्तपात- बुधनाथ सिंह- सपाट बैहरे वाला आदमी- पृष्ठ-124, अक्षर प्रकाशन, ग्रा0 लि0 दरियानाज-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1967।
- 2- बायरा- रामकुमार- समुद्र- पृष्ठ-107- राजकमल प्रकाशन, ग्रा0 लि0 दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1968।
- 3- इन्तजार- सुदर्शन चौपड़ा, सड़क दुष्टिना, पृष्ठ-137, नीलाम प्रकाशन, 8-सुखरी बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1972।

विन्ता है। मकंठा बेटा सोचता है कि आम की कमाई मारी गयी। सिनेमा के तरीके हुये वो टिकटों को ब्लैक में बेच कर वह मौज मकंठा कर जाता है और पान भी बाहर ही खा लेता है, अन्यथा पान मरे मुँह को देकर लोग न जाने क्या सोचेंगे। मातृत्व के दिन जाने, वात्सल्य के अभाव अथवा अनाथ होने जैसी कोई भावना इन बेटों के हृदय में नहीं उभरती। माँ जल्दी मरे और वे छुट्टी पार्ने यही सब चाहते हैं। बदलते हुये जीवनमूल्यों का यह नवीनतम रूप है।

जो पहले माँ लगती थी अब कमी-कमी ही माँ लगती है या माँ का भ्रम² 'ज्ञानरंजन संबंध'³ शीर्षक कहानी में इसी तथ्य को स्पष्ट किया है व्यक्तिवाद और वात्सल्यनिष्ठा के फलस्वरूप माँ बेटे के स्नेह और वात्सल्य में इतना परिवर्तन आ गया है कि बेटे की मातृत्व का अस्सास भी यदा कदा ही ही पाता है।

मुक्ति⁴ कहानी का बेटा जीवन की वितृष्णापूर्ण उदासी से कुण्ठित होकर माँ की हत्या कर देता है। बेटे के लिये माँ के व्यक्तित्व के बीच एक विमाजक रैसा सिंधी हुई है। पहले भाग में माँ का अतीत है जहाँ

- 1- इन्तजार- सुदर्शन चौपड़ा, सहक दुर्घटना- पृष्ठ-187, नीलाम प्रकाशन, 5-कुसारी बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1972।
- 2- संबंध- ज्ञानरंजन, फॉस के इधर और उधर पृष्ठ-116, अक्षर प्रकाशन, प्रणालि-2136- कुसारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968।
- 3- संबंध- ज्ञानरंजन- पृष्ठ-113, --- वही -----।
- 4- मुक्ति- विनय चौहान, परिवेश भाग-2 संपादक-काशीनाथ सिंह, पृष्ठ-4, सातवें दशक की कहानी- (डा० विजय मोहन सिंह से साक्षात्कार प्रस्तुतकर्ता- रमेशचन्द्र पाण्डेय- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय- वाराणसी-5

वह मातृत्व सम्मान माँ थी। दूसरे पाग में माँ का वर्तमान है जहाँ वह (मातृत्वहीन) माँ नहीं रहती। माँ के प्रति इस प्रकार की प्रतीति एक भयावह स्थिति की सूचना देती है। माँ से अलग होना परम्परा से अलग होना है। मौलिक रक्त संबंध से अलग होना है।

माँ की उदासीनता और संवेदन शून्यता:

मारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने माँ-बेटे के संबंधों पर व्यापक प्रभाव डाला है। जिनगी और गुलाब के फूल¹ में नीकरी करने वाली और घर चलाने वाली बेटे के प्रति माँ का आकर्षण और प्रेम अधिक है क्योंकि बेरोजगार पुत्र के। जिस बेटे की अनुमति के बिना पहले घर का पक्का भी नहीं छिलता था वही बेकारी की स्थिति में परिवार का सबसे निरीह प्राणी बना हुआ है। माँ के लिये पहले कमाऊ पुत्र महत्वपूर्ण था तो आज कमाऊ बेटे ने उसका स्थान ले लिया है। बेटे के कमरे की मेज, घड़ी, मेजपोश आदि अच्छी-अच्छी चीजें माँ-बेटे के कमरे में पहुँचा देती है। बाज के परिवेश का वास्तव्य इस कहानी में सशक्त रूप में चित्रित है।

यह धैर्य लिये नहीं² में भी एक संस्कारगुस्त विधवा माँ की बेटे के प्रति उदासीनता को अंकित किया गया है। अपने पति के छोड़े हुये जर्जर मकान के मोहबन्द्य में यह माँ बेटे की सुत सुविधा को भूल गई है। पैसों की कमी से बेटा उधार लेकर पुस्तकें पढ़ता है और द्यूशन से गुजारा करता है

1- जिनगी और गुलाब के फूल- संग्रह- यही-- उगा प्रियंवदा- पृष्ठ-120

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-6, तृतीय संस्करण- 1971।

2- यह धैर्य लिये नहीं- बमवीर भारती- बन्दगली का बासिरी मकान-

पृष्ठ-51- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कनाट प्लेस-नई दिल्ली-

द्वितीय संस्करण- 1973।

पर माँ निझुह-निझुह कर इकट्ठे हुये पैसों की भकान की फटी दीवारों में फाँकती रहती है। वह अतीत को देखती है वर्तमान को नहीं। जीवित माँ अपने पुत्र की वात्सल्य और ममत्व नहीं दे पा रही है। दोनों परस्पर कटे हुए तो जी रहे हैं। माँ बेटे के संबंधों का यह सबूत बदला हुआ रूप है।

पुरानी बीर नई लकीरें¹ की माँ भी पुरानी पीढ़ी के अपने वर्ग को नई छोड़ पाती फलतः माँ-बेटे के बीच संघर्ष बढ़ता जाता है। बाज एक बदलते हुये युग की लकीरें माँ-बेटे के बीच आ लड़ी हुई हैं।²

वर्तमान दिशाहीन सामाजिक अवस्था और पारिवारिक स्वार्थ की क्रूरता ने माँ को यदि निर्भीक और कठोर बना दिया है तो इसमें आश्चर्य की कोई गुंजाइश नहीं है। महापुरुषों की वापसी³ में बेटे को मरा हुआ समझकर माँ, रौना चिल्लाना छोड़कर सबसे पहले उस कागज को तलाशने को फाँपटती है जिस पर बेटे ने अपनी वात्सल्य की यात को स्वीकार है ताकि उन लोगों पर जिम्मेदारी पर के लिये कोई कलंक न लग जाय। माँ की यह निर्भीकता एक नवीन मूल्यबोध का संकेत देती है।

मानवीय रिश्तों की विह्वलना रिश्ता⁴ के माँ-बेटों के संबंधों में स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ माँ और बेटे के संबंध का पता ही नहीं चलता।

1- पुरानी बीर नई लकीरें- सौमावीरा समकालीन हिन्दी कहानी और मूल्य संघर्ष की दिशा- सविता जैन- पृष्ठ-124-हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- डा० रामदत्त मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन, ने० प० हाउस, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970।

2- वही----- पृष्ठ----- 124।

3- बल्लभ सिन्हा- निर्बंध- समकालीन कहानी: मूल्यबोध और मयाकाम्य स्थिति- लेखक- अशोक अग्रवाल, पृष्ठ-145, हिन्दी कहानी- दो दशक की यात्रा- डा०- रामदत्त मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन- नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970।

4- रिश्ता- दुषमाधसिंह, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, पृ०-145, राकमल प्रकाशन- दिल्ली-6।

विधवा माँ अपनी शादी का सौदा स्वयं तय करती है। जो उसे अच्छी कीमत देगा उसी की वह पत्नी बनकर रहेगी। जवान बेटे के संकोच या शर्त जैसी कोई बात यहाँ नहीं है। वह उल्टे गिरधारी को सम्झाती है कि 'बबू तू उन्हें बाबू कहा करना सम्झना' ¹। माँ और पुत्र के वात्सल्य की पूरी 'मिथ' गायब है। संबंधों में न कहीं कृत्रिमता है न औपचारिकता। परम्परामुक्त और नये संबंधों के तलाश की यह कहानी माँ की वैयक्तिकता को सक्षमता के साथ संप्रेषित करती है;

संबंध ² कहानी में माँ तटस्थ और उदासीन है लेकिन पुत्र को अपनी माँ का प्रेमिका का रूप भी अनुचित नहीं लगता। न जाने किन विवशताजन्य परिस्थितियों में माँ ने पति के रहते हुए भी प्रेमी को घर आने की स्वीकृति दी होगी। कोई पुराना पुत्र होता तो ऐसी माँ को मला जुरा कहकर अपमानित करता पर विवेक्य परिवेश में जन्मा हुआ यह पुत्र जीवन के नवीन मूल्य बोध को समझते हुए माँ के प्रेम संबंधों को उसी दृष्टि से जाँचता है। अपने पार ³ कहानी में भी यौनाचार और उच्छृंखलता के कारण माता पुत्र के संबंधों की परिमाणा ली गयी है। 'पापा मुझसे कहते हैं-- ये तुम्हारी मम्मी है और मम्मी जैसे अवैतन में इस परिमाणित संबंध को नकारते हुए गले की जंजीर को निकालकर चार्तो से पकड़ लेती है।' ⁴

- 1- रिश्ता- इबनाथसिंह- रिश्ता और अन्य कहानियाँ- पृष्ठ-149, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6।
- 2- संबंध- नानाप्रसाद विमल- कोई शुरुआत, पृष्ठ-80, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1978।
- 3- राबिन्द्र यादव- नारबीच और रचना रुठियाँ- डा० नरेन्द्र मोहन- पृष्ठ-124, वाचुनिकता और समकालीन रचना- सन्दर्भ- डा० नरेन्द्र मोहन, बादरी साहित्य प्रकाशन, वेस्ट सीरुमपुर- दिल्ली-31, प्रथम सं०- 1978।

उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त बिरादरी बाहर¹, बापसी² तथा लिहौने बीर डेटे³ की मातायें परिस्थितियों को समझती हुई अपने पुत्रों की साम्यताओं का समर्थन करती हैं। बिरादरी बाहर की माँ, पति के विरोध करने पर भी डेटों के साथ मिलकर पुत्री को अन्तर्जातीय विवाह की स्वीकृति दे देती है। बापसी की माँ डेटे के साथ रहना अधिक अच्छा समझती है क्योंकि पति के इतलिये रिटायर्ड पति के साथ उसकी हमदर्दी उतनी नहीं है जितनी कमाऊ पुत्र के साथ है। लिहौने बीर डेटे की समझदार माँ पहले पुत्र के स्वेच्छा विवाह को बहुत बुरा समझ रही थी लेकिन बाद में डेटे की इच्छा को ही प्रमुख मान कर वह परिस्थिति से समझौता कर लेती है और विदेश में डेटे को शुभकामनायें प्रेषित करती है !

कुल मिलाकर माता-पुत्र संबंधों की ये कहानियाँ परम्परा से विपरीत माँ-डेटे के पनपते हुए संबंधों की आधुनिकता की दुईर्ण पीठिका पर स्थापित करती हैं। वर्तमान शिथिल और रुका होते हुए भी इनमें वर्तमान जीवन की धिराट बैठना छिपी हुई है। जीवन के व्यापक ग्राहक पर आज के माता-पुत्र अतिनै बहल गये हैं उतने पहले कभी नहीं बदले थे क्योंकि सामाजिक असंगतियाँ, आर्थिक विसंगतियाँ तथा वस्तुगत संभावनायें तेजी से उमरी हैं और निरन्तर उमरती जा रही हैं।

- 1- बिरादरी बाहर- राजेन्द्रयादव, किनारे से किनारे तक, पृ०-110, राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1971।
- 2- बापसी- उषा प्रियंवदा- जिन्बगी बीर गुलाब के फूल- पृष्ठ-119, भारतीय ज्ञानपीठ, नेताजी समाज मार्ग, दिल्ली-6, तृतीय संस्करण- 1971।
- 3- लिहौने बीर डेटे- दिष्णु प्रमाकर, मेरी सैंतीस कहानियाँ- पृष्ठ-59, राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970।

माता-पुत्री के सम्बन्ध:-

बालौघ्य युगीन हिन्दी कहानी में परम्परागत जीवन मूल्यों के विघटन एवं नवीन जीवन मूल्यों के सज्जन के फलस्वरूप उत्पन्न टकराव की जो गूँव सुनाई देती है उसमें माँ-बेटी के सम्बन्धों का बदलाव विशेष महत्व रखता है। पिता की अपेक्षा बेटी-माँ के अधिक निकट होती है। माँ की ममता पुत्री से अधिक इसलिये होती है कि वह पराये घर का धन मानी जाती है। अब तक पिता की सम्पत्ति में भी उसका अधिकार नहीं था अपने विवाह आदि के विषय में भी वह चुप रहती थी। परिवार में बेटी की अपेक्षा उसका व्यक्तित्व लघुतर माना जाता था पर अब स्थिति बदल गयी है। 'संयुक्त परिवारों' में आनन्दी का लोप हो चुका है। उसके स्थान पर आनानन्दियों की संख्या बढ़ रही है।¹

उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलने पर बेटी को परिवार में माता तथा पिता दोनों से जूझना पड़ता है। सहशिक्षा, सेमिनार, सौसायटी के साथ-साथ उसे युवा मित्र मंडली के साथ फिक्किल में भी जाना पड़ता है। माता-पिता के सामने एक विरोधामास उत्पन्न हो गया है। यदि बेटी को शिक्षा दें तो वह स्वच्छन्द होकर काबू से बाहर हो रही है और यदि शिक्षा न दें तो वह बच्चा बर और घर नहीं प्राप्त कर पाती। बेटी यदि जीविका करने लगती है तो पिता और भाई की समकक्षाता प्राप्त कर लेती है। ऐसी स्थिति में वात्सल्य और प्रातृत्व के मौलिक गुणों का अवमूल्यन होने लगता है। बाहर आने जाने या दूसरे शहर में नौकरी कर लेने पर बेटी की माँ कानामी से डरती है। तात्पर्य यह है कि बेटी की स्थिति आज भी अधिक स्पष्ट नहीं हो पाई है लेकिन अपने अन्तर्बोध संबंध में

1- आधुनिक परिक्ष और नक्सेसन- डा० शिव प्रसाद सिंह, पृष्ठ-87,

दूसरे पात्रों के समान ही बेटी भी जुटी हुई है। वास्तविक परिवेश और प्रगतिशील परिस्थितियाँ ने उसे भी साहस और विश्वास प्रदान किया है। हिन्दी कहानी में विवेक युगीन लेखकों ने माता-पुत्री सम्बन्धों के बदलाव को अनेक रूपों में चित्रित किया है।

मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध:-

पिता की अपेक्षा बेटी की ममता और सहानुभूति माँ से अधिक होती है क्योंकि अब तक के पितावर्ग ने मातावर्ग का बहुत शोषण किया तथा मनमानी करके उसके मातृत्व और पत्नीत्व दोनों की अवमानना की। निरीह बेटी भी यह सब देखती रही और शायद तथ्य को समझकर उसने मन ही मन पिता से माँ की ओर से इन सबका बदला लेने का निश्चय कर लिया। तलाश¹ की पुत्री अपनी विधवा माँ के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करती है। माँ की मित्रता किसी अन्य व्यक्ति से होती जा रही है। बेटी को लगता है कि माँ की घुटती हुई जिन्दगी के लिये यह मैत्री आवश्यक सी है इसलिये वह माँ को अपराध भाव से मुक्त रखती है और अधिक स्वतंत्रता देने के लिये स्वयं हीस्टल में चली जाती है।

‘तलाश’ ऐसी भावभूमि की स्थापना ‘ग्लास टैंक’² में भी मिलती है। ग्लास टैंक के छेडी की पत्नी भी तीसरे आदमी से जुड़ी हुई है।

1- तलाश- कमलेश्वर- माँस का दरिया- पृष्ठ-8, अक्षर प्रकाशन, बरियार्गज-दिल्ली।

2- ग्लास टैंक- मोहन राकेश - क्वार्टर- पृष्ठ-80, राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1972।

*नीरु सोयी हुई मम्मी के उमरे हुये बांसुवों को हल्के से पोंछ देती है।¹
 सामाजिक दृष्टि से इस संघर्ष की कुछ भी निन्दा या बालूचना की जाय
 पर पुत्री की दृष्टि में माँ की यह झुलाहट अनुचित नहीं है। सच्ची मित्र
 की तरह ये बेटीयाँ माँ का नैतिक और वैयक्तिक समर्थन करती हैं।
 बिरादरी बाहर² में माँ पुरानी पीढ़ी की अवश्य है परन्तु परिस्थितियों
 को समझते हुये वह पति का विरोध करती है। पुत्री का नहीं। बेटी के
 अन्तर्जातीय प्रेम - विवाह का वह समर्थन करती है और इस समस्या में पूरा
 साथ बेटी का देती है। पति घर से कट गया है पर माँ छड़की-दामाद के
 साथ हँस बोलकर समझदारी का परिचय देती है।

*फड़फड़ाहट*³ में पुत्री माँ को पीड़ित और परेशान देखकर
 तलाक का परामर्श देती है। माँ को इस प्रकार का परामर्श देना सर्वथा
 परम्परा भंगन और नवीन मूल्य सञ्जन का स्पष्ट संकेत है। स्वतंत्रता पूर्व की
 कहानियाँ पुस्तकीय एवं वारोपित बोध का शिकार बनकर व्यवस्था के प्रति
 समझदार बुद्धि वस्तुस्थिति को छिपाती रही हैं लेकिन विवेच्य कहानी ने
 व्यवस्था के प्रति जो प्रचण्ड आक्रोश व्यक्त किया है, उसका स्तर बेहद स्पष्ट
 और बेलाग है।

अधीनस्थान के सम्बन्ध:-

वार्षिक स्वतंत्रता प्राप्त कर छैन पर बेटी ने परिवार में
 महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। जिन्दगी और गुलाब के फूल⁴ में कहा

-
- 1- ग्लास ट्रेक- मोहन रा केश- क्वार्टर- पृष्ठ-83, राजपाल एण्ड संस,
 कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1972।
 - 2- बिरादरी बाहर- राजेन्द्र यादव, किनारे से किनारे तक- पृष्ठ-110,
 राजपाल एण्ड संस- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1971।
 - 3- फड़फड़ाहट- अम्बिता अग्रवाल, चम्पुग, पृष्ठ-53, 13 अक्टूबर 1969।
 - 4- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा- संग्रह-यही-- पृष्ठ-120,
 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली-6, तृतीय संस्करण- 1971।

माई बेरोजगार है और छोटी बहन नौकरी करके घर की संचालिका बनी हो गई है। माँ की मरपूर आत्मीयता और सहानुभूति भी बेटी को ही मिल रही है। पहले बेटा (सुनील) कमाता था तो माँ और बहन दोनों उसकी प्रतीक्षा करती रहती थीं अब साना बेटी (बुन्द्या) की सुविधा के अनुसार बनता था। माँ बेटे से बुन्द्या को घड़ी देने को कहती है और जब वह मना करता है तब माँ आहत और मत्सर्नापूर्ण दृष्टि से बेटे को फटकारती है, "उसके पास बचता ही क्या है। तुम सब करते होते तो जानते।" माँ बेटी के सम्बन्धों का यह रागात्मक रूप आर्थिक भिन्न पर आधारित है।

नौकरी पेशा लड़की "सास पाहुना" ² में बेरोजगार माई, पिता की बीमारी तथा परिवार के दूसरे सदस्यों का भार वहन कर रही है। वह पिता का लचीला इलाज करने में अपने को असमर्थ पाती है इसलिये माँ से फूट कह देती है कि डाक्टर ने बच जाने की कोई उम्मीद नहीं बताई है। घर में माँ का अस्तित्व बेटी के कारण ही स्थापित है क्योंकि जवान बेटी बेकारी के दिन काट रहा है। बेटी की मुलावटि माँ और नौकरीपेशा पुत्री के सम्बन्धों की यह स्थिति सामाजिक क्रान्ति की सूचक है।

पुराणपन्थी माँ पहले बेटी की कमायी साने को बहुत अक्षुभ मानती थी पर युगबोध ने उसकी विचारधारा को बदल दिया। रबरबैण्ड ³ की माँ पहले "मैं तेरी रोटियाँ साजगंी" ⁴ कहकर बेटी की कमाई साने से

1- वही--- पृष्ठ- 124।

2- सास पाहुना- सुदर्शन चौपड़ा, सहक दुर्बटना- पृष्ठ-34, नीलाम प्रकाशन- 5- सुसरी बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम सं०- 1972।

3- रबरबैण्ड- अम्बिता कृवाह- नई कहानी कथ्य और शिल्प- डा० सच्चतसिंह, पृष्ठ-121- अभिनव भारती प्रकाशन, 42- सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद- प्रथम सं०- 1973।

4- --वही----- पृष्ठ- 121।

हम्कार कर देती है पर बाद में उसने बेटी के वाक्या में रहना स्वीकार कर लिया । नये सम्बन्धों में माँ का पुराना दृष्टिकोण बहुत बदल गया है ।

अधोपाधन केवल नौकरी से ही नहीं किया जाता । विवशता में उसका कुछ दूसरा रूप भी हो जाता है । एक थी विमला¹ सीधी-साधी अशिद्धित बेटी है । पिता की मृत्यु के उपरान्त वह घर का सामान बेचकर माँ का इलाज कराती है । सामान खरीदने वाले सराफ बलवन्त राय की निगाह कुन्ती पर है पहले कुन्ती उसका स्याल नहीं करती थी पर एक दिन जब घर में कुछ नहीं रहा तब इरादा करके कुछ रुपये लेने वह बलवन्त राय के पास पहुँची और नकली मुस्कराहट फँककर उसने आसानी से रुपये प्राप्त कर लिये । यह स्थिति आरोपित नहीं है । पिता की मृत्यु के उपरान्त माँ को जिन्दा रखने का सवाल है । जवान अशिद्धित बेटी के पास बनावटी मुस्कराहट के सिवाय और है भी क्या ? और क्या जाने इससे आगे भी और कुछ बचा हो जिसे सामाजिक विषमता के नाम पर यह बेटी समर्पित करने को मजबूर हो जाय ।

दो पीढ़ियों के सम्बन्धों का स्वरूप:-

पुरानी और नयी पीढ़ी के विचारों की टकराहट का व्यापक रूप कटघर² में उपलब्ध है । माँ उस पीढ़ी की है जब सुहाग रात में पत्नी रोया करती थी और माँ उस पीढ़ी की है जहाँ लड़के लड़कियों का प्रेम-पत्र लिखना आश्चर्य की बात नहीं मानी जाती । *हमने भी जवानी देती है हमने ऐसी बेशर्मी की बातें कभी नहीं कीं*³ । दो पीढ़ियों के अन्तराल को न समझ

1- एक थी विमला- कमलेश्वर- सौई हुई दिशार्- पृष्ठ-84, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी ।

2- कटघर- भीष्म साहनी- मटकती रात- पृष्ठ-184, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966 ।

3- वही----- पृष्ठ-193 ।

पाने के कारण ही माँ ऐसा कहती है । मार लाती हुई बी० ए० पास पिछ्वा की आँखों में वही भाव था जो बीस बरस पहले सुहागरात को उसकी भागती छिपती माँ की आँखों में था ।

बूहे¹ कहानी में माँ पुरानी नई पीढ़ी के अन्तर को फँसाती है और पिता भिटाता है । बेटी सविता आधुनिक बोध का प्रतीक है । वह अपने सख्याठी से प्रेम करती है । वह अपने माई को बेटा कहती है जबकि उसकी माँ के जमाने में अपने बेटे को भी बेटा कहने में संकोच लगता था । माँ के लिये बेटी कायह कथन "किसने कहा था इतने पैदा करने के लिए"।² परिवार नियोजन, की आधुनिक आवश्यकता को प्रमाणित करती है । पूरी भावभूमि सैक्स तथा युवायनःस्थिति का विश्लेषण करती हुई पुरातनता और आधुनिकता के संघर्ष को स्पष्ट करती है ।

मोहन गु केश की कहानी नन्ही³ माँ बेटी के त्रिकोण को तीन पीढ़ियों द्वारा प्रस्तुत करती है । माध्यम सौतेली नवविवाहिता माँ है । नई माँ के जाने की चर्चा सुनकर छोटी बच्ची मीरा बड़ी प्रसन्न हो रही है । लेकिन पास जाने पर जब माँ ने अपना हाथ सींच लिया तब नन्हीं को इतना आघात लगा कि वह बुझार में पड़ गई और बुझार नई माँ को भी जा गया क्योंकि वह कल तक स्वयं अपनी माँ की बत्सलता में रह रही थी । जाव उसी को पत्नी बनते ही माँ बनना पड़ गया । संवेदनात्मक स्तर पर माँ-बेटी के तीन स्वरों को यहाँ सौंठा गया है । विधुर विवाह, सौतेली माँ का रूप

1- बूहे- गिरिधाम किशोर- पैपरबैट- पृष्ठ-9, राजकमल प्रकाशन, फौज बाजार, दिल्ली- 6, प्रथम संस्करण- 1967 ।

2- बही----- पृष्ठ-18 ।

3- नन्हीं- मोहन राकेश- एक घटना- पृष्ठ-18, राजमाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974 ।

तथा तलहटी हृदय की माबी कल्पनावर्षों के माध्यम से यहाँ माता-पुत्री संबंधों के वीर और फैला दिये हैं ।

माँ के यौन सम्बन्ध वीर बेटी:-

इन कहानियों के अतिरिक्त पुँकले रंग¹ में आधुनिक प्रष्टाचार वीर नकली व्यक्तित्व के माध्यम से स्वच्छन्द विचारों वाली माँ वीर समकक्षार बेटी का रिश्ता स्पष्ट किया गया है । माँ सब धक्का अपने दोस्तों के साथ जाती है तब बेटी को लगता है कि वह ठरपोक माँ की सन्तान है । बाया गीत गा रही थी² की बेटी जानती है कि "मेरा जो भूया होगा वह मम्मी का बेटा तो होगा पर पापा का बेटा नहीं"।³ आधुनिक सन्दर्भ में माँ वीर बेटी का सम्बन्ध इतना परिवर्तित हो गया है कि लज्जा, शील, मर्यादा जैसी मान्यताएँ समाप्त हो चुकी हैं ।

दूसरे का मोग⁴ में बेटी खूब समझती है कि उसकी विधवा माँ ज़िस्ते दूर के रिश्ते का भाई बताती है वह खलनायक है वीर माँ से उसके यौन सम्बन्ध हैं । लड़की का कैशरी जब यौवन में बदलने लगा तब माँ के इस मोग में बेटी को भी रस मिलने लगा वीर एक दिन वह उस व्यक्ति के पास कुर्सी से सटी हुई लड़ी बैठी गयी । माँ का वैधव्य वीर युवती बेटी का बर्चस्व ठीक उसी दिशा में प्रवाहित हो रहे हैं जहाँ उन्हें होना चाहिए । माँ वीर बेटी के रोमांस का केन्द्र एक ही युवक बन गया इससे अधिक संबंधों का स्वरूप क्या बदलेगा ?

1- पुँकले रंग- अन्विता कृवाल- मुठ्ठी पर पल्लवान- पृ०-117, बजार प्रकाशन- अंजारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- संस्करण- 1969 ।

2- बाया गीत गा रही थी- रमेश वज्जी- मेज पर टिकी हुई कहानियाँ, पृष्ठ-17, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी- प्र०सं०-1963 ।

3- यही----- पृष्ठ-19 ।

4- दूसरे का मोग- गंगा प्रसाद विमल- कोई दुरावात- पृ०-71- राजकमल प्रकाशन, पौजबाजार- दिल्ली-6, प्रथम संस्करण- 1973 ।

‘सुरंग’¹ कहानी में एक विरही विधवा और उसकी पुत्रियों के बीच बढ़ते हुए वजनबीजन को दिखाया है। यह माँ वैधव्य का दुःख पूजा पाठ के बीच मुलाना चाहती है और इतनी उदासीन है कि बेटियों के प्रति समत्व कभी उसमें नहीं उमड़ता। बेटियाँ भी कल-कल दायरा में घर के बन्दर छुट रही हैं। सम्बन्धों का यह वजनबीजन और ठण्डापन हमारे वास-पास के वनक घरों में देखा सुना जाता है।

इन कहानियों में माँ-बेटी के यथार्थ परन्तु कहीं-कहीं कटु तिरक्त सम्बन्धों के नाना रूपों को निरूपित किया गया है। एक तथ्य अवश्य इनसे स्पष्ट उभरता है कि पुराने मूल्यों के टूटने और नये मूल्यों के बनने की प्रक्रिया में कहानीकारों ने कोई समाधान प्रस्तुत नहीं किया है। आखिर इन टूटते बिखरते मूल्यों का मविष्य क्या है। इसका उत्तर अभी शेष है।

माई-बहन के सम्बन्ध:-

भारतीय परिवार में माई की स्थिति बहन की अपेक्षा सदा से उच्चतर मानी जाती रही है। पिता का उत्तराधिकारी होने के कारण माई को एक और पारिवारिक सम्पत्ति प्राप्त हुई तो दूसरी और सामाजिक उपलब्धियों के द्वार भी उसके लिये खुल गये। बेटी को परम्परागत रूप से पिता और भाइयों के संरक्षण और अनुशासन को नत-मस्तक होकर स्वीकार करना

1- सुरंग- उषा प्रियंवदा- कितना बड़ा मूठ- पृष्ठ-72, राजकमल प्रकाशन, सुभाष मार्ग, दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1974।

पढ़ा लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् स्थिति में परिवर्तन आया । शिक्षा तथा शिक्षा के माध्यम से प्राप्त आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के कारण बहन ने भी अपने निजी व्यक्तित्व को समझा और प्रतिष्ठित किया है । यद्यपि अभी पूर्ण रूप से बहन ने भाई की समझाता प्राप्त नहीं की है परन्तु इसमें दो राय नहीं है कि शैक्षिक और वैधानिक सुविधाओं ने उसे पर्याप्त रूप से व्यक्तित्व निर्माण और व्यक्तित्व प्रतिष्ठा के सुवक्सर प्रदान किये हैं । विशेष रूप से नगर जीवन और यत्र तत्र कस्बाई जीवन में भी बहनें नौकरी कर रही हैं, समा, संस्थाओं से जुड़ती जा रही हैं और पुरानी मान्यताओं तथा रुढ़ियों को तोड़ रही हैं ।

दूसरे रिश्तों के समान ही भाई-बहन के रिश्ते के बदलाव में आर्थिक कारण ही मुख्य है । इसके अतिरिक्त व्यक्तिवादी मनोवृत्ति और यौन संबंध जैसी प्रवृत्तियों ने भी उक्त संबंधों को प्रभावित किया है जैसा कि अग्रिम पंक्तियों में देखा जा सकता है ।

नौकरी पेशा बहन और बेरोजगार भाई:-

समय परिवर्तनशील है । आज स्थिति ऐसी आ गई है कि बहन नौकरी करती है और भाई नौकरी न मिलने से बेरोजगारी की घुटन में तड़पता रहता है । आसक्ति¹ में बहन की कमाई पर जीवन निर्वाह करने वाला भाई बहन अपने बीस की अनुचित बातों की शिकायत भाई से करती है तो भाई कोइसमें कुछ भी अनुचित नहीं लगता । जब बहन कीट मैरिज करके

1- आसक्ति- कम्प्लेक्स- क्यान- पृष्ठ-158, लोक भारती प्रकाशन,
15-ए- महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1978 ।

अपने पति के साथ रहने लगती है तब माई की दशा और भी बदतर हो जाती है। वह बाहर बरसात में भीनता है, कोई दरवाजे पर उसकी आवाज नहीं सुनता। लोगों को विश्वास नहीं होता कि वे दोनों माई बहन हैं। बहन मूल कर ही कभी उसको कपड़ों व भोजन के बारे में पूछती है। इन सभी परिस्थितियों को माई द्वारा फौलना एक नये मूल्य का बोध कराता है।

जिन्दगी और गुलाब के फूल¹ की यातना भी कुछ इसी प्रकार की है। जब वह कमाता था घर का संचालन सूत्र उसके हाथ में था किन्तु जब से वह बेकार है और छोटी बहन कमाने लगी है तब से धीरे-धीरे उसके स्थान पर बहन का अधिकार होता जा रहा है। उसके कमरे के मेज कालीन बहन के कमरे में पहुँच गये। पहले यह देखकर सुबोध को अटपटा लगता था पर बाद में वह अभ्यस्त हो गया यद्यपि उसका प्राप्तत्व और पौरुष वृद्धा की सत्ता को स्वीकार नहीं कर पाते थे पर विवश होकर वह मानसिक यातना का शिकार बना हुआ था।

इसी प्रकार का कुण्ठित और दबा हुआ एक माई 'सास पाहुना'² में चित्रित है। पूरी कहानी में घर की व्यवस्था, पिता का इलाज, माई बहनों व माँ की देखभाल, यहाँ तक कि पिता के निवृत्तिपरान्त लिसे जाने वाले पत्रों की सूची आदि का काम भी बहन ने अपने ऊपर ले रसी है। बेकार बैठा हुआ माई तो उसके इशारों पर चलता है। रीना में अर्थपिप्पल की चेतना है तो हरकत में बेरोजगारी की विवशता।

- 1- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उष्मा प्रियंवदा- संग्रह- यही- पृष्ठ-180- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली- तृतीय सं०- 1971।
- 2- सास पाहुना- सुदर्शन चौपड़ा- सड़क दुष्टिना- नीलाम प्रकाशन, 8-सुसारी बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972।

रौजगार माई का एक रूप नया जन्म¹ में भी है। यद्यपि यहाँ बहन नौकरी नहीं करती लेकिन वह अपने माई के बीफिल वीर कुंठित जीवन का उद्धार कराने में बहुत सहायक बनती है। डाक्टरेट की डिग्री लिये हुये माई को इधर उधर घटकना पड़ता है पर नौकरी नहीं मिलती, विवश होकर जीने के लिये उसे एक समझौता करना पड़ता है।² वह अपनी तरुणी बहन की शादी जड़तालीस वर्षीय विधुर धुल-धुल शरीर वाले हूसार लेकिन पैसे वाले सेठ दयालचन्द से कर देता है। बहन रंजना के श्रीमती दयालचन्द बनते ही माई नढ़िया सी कार में चलने लगा वीर उसका कबाड़ी मकान बेल फाईनरिड हो गया। न जाने कितने माइयों को इस प्रकार के समझौते जीवन चलाने के लिये बहनों के माध्यम से करने पड़ते हैं।

व्यक्तिवादी निर्ममता:-

पूँजीवादी जीवन प्रणाली में हर व्यक्ति केवल अपने तक ही सोचने को मजबूर हो जाता है। रौजगार का माई इतना व्यक्तिवादी हो गया है कि बहन की जिस्म की कमाई खाने में तनिक भी संकोच नहीं करता। महानगरीय जीवन में बहन के घन्थे की कमाई पर वह होटलों में रेश करता है। ठीक ऐसा ही एक माई कीड़े-मकोड़े⁴ में अपनी बहन के लिये ग्राहक जुटाता है। अपनी इस धिनीनी हरकत को वह बुरा नहीं समझता क्योंकि जिस सीमा पर व्यक्ति बुरे या अनुचित का निर्धारण करता है वह सीमा उससे बहुत पीछे

1- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई धावाजों के बीच - पृष्ठ-189,
लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1968।

2- वही----- पृष्ठ-125।

3- रौजगार- मोहन राकेश- बारिस - पृष्ठ-36, राजपाल एण्ड संस-
कश्मीरी गैट- दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1974।

4- कीड़े-मकोड़े- राधेन्द्र किशोर, जी मत्स्यगन्धा, पृष्ठ-13,
किताब मल्ल, इलाहाबाद।

टूट गयी है। *चारों ओर की चीट सहते - सहते मेरी वह डोर टूट गयी जिसके सहारे मैं इन्सान बनना चाहता था।* माई का यह कथन यद्यपि हमारी कसृणा प्राप्त करता है पर इन्सानियतका इतना अधःपतन कि सगा माई बहन से वैश्यावृत्ति कराने लगे, स्वयं ग्राहक जुटाने लगे, यह स्थिति हृदय को कम्पायमान और विह्वल कर देती है।

¹ बुढ़ा कहानी में माई इतना क्रूर बन जाता है कि वह अपनी बहन का कत्ल करवा देता है।

² घर में बहन नौकरी करके माइयों को सहायता देती है और उन्हें कुछ करने लायक बनाती है पर समय हो जाने पर माई लोग बहन से नफरत करने लगते हैं और वह अविवाहित रह जाती है।

³ दाय कहानी में परिवार की विपन्नतावश बहन को अध्यापिका बनना पड़ता है। वह तमाम अनचाही जिम्मेदारियों को ढोते-ढोते ऊब जाती है। दाय से रुग्ण पिता की बीमारी उसे भी लग जाती है। आंतरिक घुटन से छटपटा कर वह छोटे माई से कहती है, *टुन्नी है जब तू संभाल, मैं नहीं जानती- तू छोटा है या बड़ा, जो तेरी समझ में आये कर----* ।

सम्बन्धों में अजनबीपन:-

⁴ आइसर्की का माई विनय पारिवारिक परिस्थितियों से इतना ऊबा हुआ है कि वह चाहता है उसकी बहन उसकी अप्पा को समझे। वह

-
- 1- बुढ़ा- मोहन राकेश- हिन्दी कहानी और जीवन मूल्य - पृष्ठ-105, डा० रमेशचन्द्र लवानिया, अमित प्रकाशन- 66- सुमाण मार्ग, गांधीबाद ।
 - 2- घर- सुधा बरोड़ा- और तराशे हूये, पृष्ठ-144, इकाई प्रकाशन, 16- पुराणोत्तम नगर, हिम्मत गंज, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1968 ।
 - 3- दाय- मन्मू मंडारी- श्रेष्ठ कहानियाँ- पृ०-71, अक्षर प्रकाशन, प्राणल्लो अन्तारी रोड, दिल्ली-8, संस्करण- 1975 ।
 - 4- आइसर्की- पूबनाथ सिंह, सपाट बैहरोवाला- आदमी पृष्ठ-109, अक्षर प्रकाशन, दरियानगंज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967 ।

बहन को पत्र में लिखता है कि उसे अपनी पहचान कराने वाले लोगों और संबंधियों की आवश्यकता है। शायद बहन से उसे कुछ सहानुभूति की आशा है।

विदा यात्रा का वासिरी सूरज¹ तथा कहानियाँ भी व्यक्तिपरक और सामाजिक सन्दर्भों में भाई-बहन के अजनबीपन को निरूपित करती है।

स्वीवासी में एक भाई अपनी बहन के घर आकर पहुँचा जाता है और धीरे अपमान सहता है। चारों ओर उसे अजनबियत और अनादर मिलता है। यह भाई उपेक्षा और सामाजिक विसंगतियों में इतना अजनबी बन गया है कि मानों अपनी लाश ढी रहा है।

उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त गलत पते पर कहानी में कुमारी जवान बहन की यौन समस्या है। बहन गर्भवती है और शीघ्र ही माँ बनने वाली है। भाई अपनी इस जवान बहन को छात घूँसा से पीटता है। स्वयं बहन भी बाग लगाकर मर जाना चाहती थी पर घरवालों ने बचा लिया। भाई भी इस बहन की मौत चाहता है। इसी प्रकार का संकट नई बात में एक भाई के सामने उपस्थित है। उसने जवान बहन को गाँव से अपने पास दिल्ली इसलिये बुला लिया कि वहाँ बहन की बदनामी हो रही थी। तरह-तरह की चर्चाएँ हो रही थीं। पर इस बहन ने वहाँ आकर भी वही सब शुरू कर लिया। पड़ोसी उसके कमरे में कागज की गोलियाँ फेंकने लगे। उसके बक्स में डेर सारी बिछियाँ उसके दोस्तों की रखी थीं। वह वहाँ आकर लिफाफों की माँग करने लगी। भाई ने समस्या से निबटने के लिये बहन को बुलाया था पर एक नई समस्या लड़ी ही गई। जवान बहन

1- विदा यात्रा का वासिरी सूरज- सुरेश सिन्हा- आधुनिक कहानी का परिपाइवी- रुक्मी सागर बाण्यौय, पृष्ठ-101, साहित्य मवन, पृष्ठ 10- इलाहाबाद।

और निम्न बिच माई दोनों ही की विवशता थी जो इस समस्या को जन्म दे रही थी ।

स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में माई-बहन-सम्बन्धों के बिसराव और विघटन की उपर्युक्त स्थितियाँ पारिवारिक विघटन का ही एक हिस्सा हैं । इन संबंधों की विणमता के सन्दर्भों से हमें वाश्चर्य या विस्मय नहीं होना चाहिये ।

माई-माई के सम्बन्ध:-

आलौच्य युगीन परिवारों में केवल दो पीढ़ियों के ही संबंध नहीं बदले अपितु समान वय वाली एक ही पीढ़ी के रिश्तों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है । माई-माई के सम्बन्धों में वैचारिक मतभेद मूल आधार नहीं है , आधार हैं वे ही तमाम परिस्थितियाँ जो दूसरे सम्बन्धों के बीच आड़े आती हैं । परिवेशगत संक्रमण के परिणाम स्वरूप व्यक्ति के सामाजिक आर्थिक और मानसिक घरातल पर पड़ने वाले दबाव ने माई-माई के रक्त संबंधों में भी घोर अन्तर पैदा कर दिया है । समाज की तमाम समस्याओं का मूल आधार आर्थिक विणमता है । दूसरे सम्बन्धों पर विचार करते समय भी यह पाया गया कि आर्थिक विवशता प्रथम कारण है जिसने परिवार की तमाम इकाइयों और रिश्तों को एक दूसरे से दूर कर दिया है । माई-माई के सम्बन्धों के बदलाव में भी प्रधान कारण अर्थ वैणम्य है । इसके साथ ही नगरबीध, और व्यक्तिवाद जैसी प्रवृत्तियों ने भी इन संबंधों पर पर्याप्त प्रभाव डाला है ।

वार्थिक विषमता:-

समाज में वार्थिक विषमता के कारण बर्ग भेद और वर्ग संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जो परिवार में भी वार्थिक असमानता या जीविका की असमानता के कारण माई-भाई में विभाजन और बदलाव हो जाता है। आडूरी¹ (मोहन राकेश) में परस्पर विरोधी प्रवृत्तियाँ वाले दो भाई दो वर्गों के प्रतिनिधियों जैसे लगते हैं। बड़ा भाई अच्छे रोजगार से लगा हुआ है इसलिये सुख सुविधा का जीवन व्यतीत करता है और समाज में प्रतिष्ठा पाये हुये है। छोटा भाई ट्यूशन आदि करके कठिनाई से काम करता है इसलिये वह पारिवारिक और सामाजिक रूप से असफल व्यक्ति है। दोनों अलग-अलग शहरों में रहते हुये एक दूसरे की वात्सीयता पाने की लालसा भी त्याग चुके हैं। बड़े भाई के झुलझुलाने से छोटे पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता और छोटे के समाचार न मिलने से बड़े को कोई परेशानी नहीं होती। आखन्त कहानी में दोनों भाई एक दूसरे से कटे हुये हैं पर उनमें एक गहरी समानता है कि दोनों भाई एक दूसरे के प्रति समान रूप से उपेक्षाशील हैं।

गरीबी में सगे भी पराये हो जाते हैं। सून का रिश्ता² में गरीब छोटे भाई पर चम्मच चुराने का हलजाम लगाया जाता है, उसकी जेबों तक की तलाशी ली जाती है। भतीजे की शादी में उसे कोई नहीं ले जाना चाहता। 'अपने रईस माइयों को छोड़कर इस मरबूद को साथ ले जायें सारा शहर धू-धू करेगा'।³ कहानी सिद्ध करती है कि सून का रिश्ता आज कोई रिश्ता नहीं रहा बल्कि सबसे बड़ा रिश्ता बर्ग रह गया है।

1- आडूरी- मोहन राकेश- कहानी विविधा- संपादक- देवी शंकर अवस्थी, पृष्ठ-144, राजकमल प्रकाशन, फौजबाजार- दिल्ली-110006, तेरहवीं आवृत्ति- 1974।

2- सून का रिश्ता- मीन साहनी- मटकती रात- पृष्ठ-47, राजकमल प्रकाशन, मैताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966।

3- वही--- पृष्ठ- 54।

पारदर्शीबीवार¹ में चार सगे भाइयों में सम्पन्नता और विपन्नता के आधार पर दो भेद हो जाते हैं। मुसीबत के समय दोनों गरीब भाई अपने अमीर भाइयों से कुछ रुपया मांगते हैं पर वे साफ नकार जाते हैं। छेन-देन तो बराबर वालों से किया जाता है। यदि गरीब भाइयों ने रुपया न छीटाया तो क्या होगा ?

कुटुम्बिक बितराव में भाई-भाई:--

संयुक्त परिवार की हर कड़ी अलग-अलग बितर गयी है। विशेष रूप से गगरों में। ऐसी स्थिति में यदि पुरतनी हौटी से हौटी चीज भाइयों² को दीसती है तो उस पर हर एक अपना अपना अधिकार चाहता है। लोग³ में पिता लम्बी बीमारी के बाद पर गये तो हौटे से भकान की हिस्सेदारी होने लगी। एक भाई और उसकी पत्नी नीचे वाली कौठरी में ताला ढालकर चले गये। भाई के क्रिया कर्म में हौटे भाई ने एक पैसा नहीं लगाया। बेबारी विधवा को सुहाग का टीका तक बेचना पड़ा।

कटघरे में सांस³ का संयुक्त कुटुम्ब जबर स्थिति में चल रहा है। हर सदस्य अलग-अलग स्वेच्छाचार कर रहा है। बड़ा भाई सट्टा लेलता है और अपनी पत्नी को पीटता रहता है पर हौटे भाई लोग सब कुछ देखते हुये भी उसे नहीं रोकते। हौटा भाई काठ वर्ण बाद घर जाता है और ज्वंस होते कुटुम्ब

1- पारदर्शी बीवार- महीप सिंह- सुबह के फूछ- पृष्ठ-110, हिन्दी-
मन्त्र- जालन्धर।

2- लोग- अमृतराय- इतिहास- पृष्ठ-168, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद-
द्वितीय संस्करण-

3- कटघरे में सांस- मणि मयुर- हवा में कौले- पृष्ठ-149, राधाकृष्ण-
प्रकाशन, दरिबार्गज-दिल्ली-8, संस्करण- 1972।

की दशा को देखकर उसी की ज़रूरत का एक भागीदार बन जाता है।
चारों माई एक दूसरे से टूटे और बिखरे हुये जलग-जलग विच्छेद की दिशा
में अपने - अपने सम्बन्धों को छे जाने पर लुटे हुये हैं।

शेष होते हुये ¹ में तीनों माई पारिवारिक प्रश्नों के प्रति
उदासीन हैं। सभी अपने-अपने कमरे सजाने में लगे हैं। बहू के जाने पर
एक माई नया पकवान बनवाने लगता है। धीरे-धीरे एक ही घर में कई
घर बनते जाते हैं। टूटते परिवार की समस्याओं और पारस्परिक माई
भारे से सभी कतरा रहे हैं। समस्याओं का कोई सामना नहीं करता।

मृत्युबोध की भयावह स्थितियाँ (व्यक्तिवाद):-

माई-माई के सम्बन्धों का विघटन और भंजन कराने में
व्यक्तिवादी मनोवृत्ति का गहरा हाथ है। स्थिति इतनी निर्भीक हो गई
है कि माई को माई की मौत से कोई आघात या झिल नहीं होता। दूसरे
बैहरी ² में छोटा माई बड़े माई की बरसी पर ठीक समय पर पहुँचने के बदले
अपने साहू के साथ मदिरा-पान करने लगता है और बरसी में देर से चला भी
जाता है तो औपचारिकता निभाकर तत्काल वापस लौट जाता है जैसे किसी
पराये व्यक्ति की रस्म निमाने आया हो।

सुबह का ठर ³ का माई इससे भी दो कदम आगे बढ़ गया है।
उसका माई अस्पताल में वासन्त मृत्यु की भीषणतम यातना झेल रहा है पर

1- शेष होते हुये- ज्ञानरंजन- फौंस के इधर और उधर- पृष्ठ-62, अक्षर
प्रकाशन, प्राणलि- 2136 अन्सारी रोड, दिल्ली- प्रथम सं०-1968।

2- दूसरे बैहरी- से० रा० यात्री, संग्रह यही-- पृष्ठ-148, नीलाम
प्रकाशन, 5-सुसरी बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971।

3- सुबह का ठर- कालीनाथ सिंह, संग्रह यही- पृष्ठ-70।

यह माई है कि कौलज की लड़कियाँ और नर्सों से गन्दे मजाक करने से नहीं
चूकता। पान जूँ की चर्चा करना और अपनी रात काटने के विषय में
सोचना जैसी बातों से लगता है कि यह कायल माई को देखने नहीं वपितु
किसी बरात का बराती बनकर आया है।

सम्बन्ध¹ में बड़ा माई छोटे माई की हत्या करने की बात
सोचता है वह यह भूल जाता है कि हम दोनों एक माँ के बेटे हैं और
हत्या जैसी दुर्भावना कितनी गहरी और वीमत्स है।

बोम² में छोटे माई को चिन्ता है तो केवल यही कि पैसा की
मृत्यु हो जाने पर वस्तुस्थिति के लिये पैसा कहाँ से आयेगा।

उदासीन और निरपेक्षा रूप:-

मध्यम और निम्न मध्यम के घिसे पिटे जीवन में व्यक्ति वात्म-
केन्द्रित हो गया है। जाला³ में तीन-चार साल बाद छोटा माई बड़े माई
के घर जाता है। न छोटे माई ने पहले अपने जाने की सूचना देना जरूरी
समझा और न बड़ा ही लपक कर ममत्व से माई से मिला। ऐसा लगा जैसे
किसी क्षीण सम्बन्ध में दोनों इकट्ठे हो गये हैं। निरपेक्षाता, ठण्डापन
और औपचारिकता के बीच खून का रिश्ता न जाने कहाँ सो गया ?

संछिन्न सम्बन्ध⁴ में माई-माई के बीच गहरी दूरियाँ हैं।
परिचयी सम्बन्ध में विकसित होते हुये इस परिवार में माई-माई दो

- 1- सम्बन्ध- ज्ञानरंजन फौंस के इमार और उधर- पृष्ठ-113, बदर
प्रकाशन- 2186- अन्सारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1969।
- 2- बोम- से0 रा0 यात्री- दूसरे बेहरे, पृष्ठ-124, नीलाम प्रकाशन,
सुसरो बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1971।
- 3- जाला- हृदयेश - छोटे शहर के लोग, पृष्ठ-84, बदर प्रकाशन,
प्राणलि0 अन्सारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम सं0- 1972।
- 4- संछिन्न सम्बन्ध- से0 रा0 यात्री- दूसरे बेहरे- पृष्ठ-110, नीलाम प्रकाशन,
सुसरो बाग- रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971।

दो वजनधियों की भाँति रहते हैं। संत्रास¹ में छोटा भाई बड़े भाई के घर पत्नी की हिलीबरी के लिये जाया है पर घर में कोई हर्षजनक प्रतिक्रिया नहीं दिखाई दी। यद्यपि छोटे ने रात को बड़े भाई के पैर दबाये और स्वायत्त वात्सीयतापूर्ण बातें भी कीं लेकिन एक सामोरी और उदासीनता जैसी प्रतिक्रिया को उसने और उसकी पत्नी ने गहराई से अनुभव की।

निश्चय ही मातृत्व के अवयुक्त्यन और विघटन की उक्त प्रवृत्तियाँ और स्थितियाँ मानवीय संबंधों की विह्वलना को उजागर करती हैं। पुरातन जीवन मूल्य जिस तरह दूसरे सम्बन्धों में टूट और बिखर गये हैं ठीक उसी प्रकार भाई-भाई के मध्य भी नये मूल्य निर्मित हो रहे हैं जबकि दोनों एक ही नयी पीढ़ी के सदस्य हैं।

बहन-बहन के सम्बन्ध:-

वालीय युगीन लेखकों ने बहन-बहन के सम्बन्धों को उजागर करने वाली कहानियाँ कम ही लिखी हैं। संभवतः पुरातन कौटुम्बिक प्रतिबद्धताओं का जितना प्रत्यक्ष दबाव पति-पत्नी, माता-पुत्र, पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, भाई-भाई या भाई-बहन जैसे सम्बन्धों पर पड़ा है उतना बहन-बहन के संबंधों पर नहीं। पिता का उत्तराधिकारी होने के कारण तथा पुरुष प्रधान समाज का सदस्य होने के कारण भाइयों के बीच वैधानिक और आर्थिक प्रतिद्वन्द्विता पाई जाती रही है और आज भी विद्यमान है जबकि बहन को पराये घर जाना

1- संत्रास- से0 रा0 यात्री- दूसरे बेहरे- पुच्छ- नीलाम

होता है और वह लड़की होने के नाते परिवार में लड़के से हीन ही मानी गई है। विवाहोपरान्त उसका शुभाशुभ पति गृह से जुड़ जाता है। अतः दूसरे रिश्तों के समान टकराने या विरोध करने की स्थिति बहनों में नहीं आ पाती।

इस सबका अविप्राय यह नहीं है कि बहन-बहन के सम्बन्धों पर स्वातन्त्र्योत्तर परिवेश या परिस्थितियाँ ने कुछ प्रभाव ही नहीं डाला। कुछ कहानियाँ प्रमुख रूप से बहन-बहन सम्बन्धों को ही स्पष्ट करने के लिये लिखी गयी हैं तथा कतिपय कहानियों में उनके सम्बन्धों की जानकारी प्रासंगिक या आंशिक रूप से मिलती है।

इन सम्बन्धों में एक बात विशेष रूप से प्रष्ट है कि प्रायः यौन कुण्ठा और सैक्स-जन्य स्थितियों में बहन-बहन की प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य या तनाव को निरूपित किया गया है। दल्लीज¹ में बड़ी बहन रूनी को इस बात से बड़ी ईर्ष्या होती है कि शम्मी माई उसकी बहन जेली में क्या कुछ देसते हैं जो उसमें नहीं देस पाते। युवावस्था में पदार्पण करते समय यौन-विनायक किन-किन भावनाओं से एक युवती अभिभूत रहती है। इसी का सम्यक् चित्रण इस कहानी में है। वह सोचती है उससे भी कोई ऐसा ही प्रेमालाप करे जैसा उसकी बहन से शम्मी माई करते हैं।

हास्य रस² में भी छोटी बहन की यौन कुण्ठा व्यक्तिमूलक स्वर में उठाई गई है। बड़ी बहन के विवाह से पूर्व छोटी बहन ने अपने जीजा से कहा था, 'आप हमसे उस तरह कमी नहीं बोलते जैसे शिसा बहन से बोलते हैं।'³

1- दल्लीज- निमैल वर्मा, मेरी प्रिय कहानियाँ- राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट- दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1978।

2- हास्य रस- ज्ञानरंजन- यात्रा संग्रह, पृष्ठ-9, रचना प्रकाशन, 15-ए, सुल्ताबाद, इलाहाबाद।

3- वही----- पृष्ठ-10।

एक अविवहाहिता तरुणी की सैक्स की अतृप्त पिपासा इस कथन से प्रकट होती है। इसे दोनों का वैमनस्य नहीं माना जाना चाहिए।

अतृप्त मन और यौन कुण्ठा का एक चित्र रस¹ में कुछ दूसरे रूप में चित्रित है। बड़ी बहन शीशु की टांग टूटी हुई है, प्लास्टर चढ़ा हुआ है, वह सुन्दर भी नहीं है। छोटी बहन सुन्दर है पर उसे बड़ी बहन की कुछ परवाह नहीं है। 25 तारीख को बड़ी बहन की टांग टूटी थी और 28 तारीख को ही छोटी बहन की सगाई पक्की हुई थी। अतृप्त आकांक्षा को दबाये हुये बड़ी बहन उपेक्षित सी रहती है। दोनों बहनों के बीच अपनत्व और ममत्व का भाव नहीं रह गया है। छोटी बहन ठनकर घूमने जा रही है, शायद किसी से मिलने? ऐसी स्थिति में बड़ी के आंतरिक हाहाकार का अनुमान कौन लगा सकता है।

दो बहनें² में विवाह की आवश्यकता और युवा मनःस्थितियों का चित्रण है। दो युवा बहनें विवाह के लिये प्रस्तुत एक ऊँची नौकरी वाले नवयुवक से विवाह की इच्छुक हैं पर दोनों ही अपनी इच्छा को गोपनीय रखती हैं। दोनों एक दूसरे को छलती रहती हैं लेकिन वह युवक जब किसी तीसरी लड़की से विवाह कर लेता है तब विजया पर बहन का पैदा झुलता है क्योंकि बुवा के पत्र से बहन के चेहरे का रंग उतर जाता है। मनोवैज्ञानिक बाधार पर दो बहनों के तनाव, छल और वैमनस्य का इस कहानी में अंकन मिलता है।

1- रस- अम्बिता अग्रवाल- मुठ्ठी भर पहचान- पृष्ठ-55, अपार प्रकाशन, अन्सारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली।

2- दो बहनें- शिवानी, करिए हिमा- पृष्ठ-62, शिवानी प्रकाशक- 2203, गली उकीतान, तुर्कमानौट-दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1973।

वाणिज्यिक समाज में सौन्दर्य के आधार पर ही व्यक्ति का मूल्य जाँका जाता है। सुन्दर युवतियाँ इसीलिये अपने सौन्दर्य पर गर्व करती हैं और असुन्दर की अवमानना करती हैं। कटी हुई तारीस¹ में छोटी बहन का सौन्दर्य बड़ी बहन के जीवन में शून्यता भर देता है। प्रेमी के आकर्षण का केन्द्र चीनी है मीठ नहीं इसलिये दोनों बहनों के मध्य तनाव व्याप्त है।

सावित्री नम्बर दो² दो बहनों के अन्तर्विरोध को पारिवारिक स्तर पर स्पष्ट करती है। बड़ी बहन की लम्बी बीमारी ने घरवालों को परेशान कर दिया। छोटी बहन जोजा की देखभाल करने लगी। इस पर बड़ी बहन इतनी क्रुपित हुई कि न जाने क्या-क्या कह गई। जो बहन कल तक उसे छोटी सी बच्ची जैसी लगती थी वही आज उसके समक्ष खीस के रूप में खड़ी थी। घरवालों ने छोटी के दर्द के रूपये बड़ी की बीमारी में सब कर दिये और अन्त में गहरी सोच लिया कि रुग्ण बहन के जेवर छोटी की शादी में काम आ जायेंगे और छोटी को उनके दामाद से ब्याह दिया जायेगा। आर्थिक, पारिवारिक तथा मनोवैज्ञानिक बराबर पर एक साथ ही कहानी की भावभूमि बहन - बहनों के अन्तर्विरोध को दिखलाती है।

सिमटा हुआ दुःख³ मुख्य रूप से पिता-पुत्री सम्बन्धों और अर्थ संकट की मयाबहता को प्रदर्शित करती है पर समानान्तर रूप से आजीपान्त छोटी बहन चिनार बड़ी जिज्जी की विकासता को गहराई से देख रही है।

- 1- कटी हुई तारीस- अम्बिता अग्रवाल- मुठ्ठी भर पहचान- पृष्ठ-89, अक्षर प्रकाशन, 2-अक्षरी रोड, दरियागंज-दिल्ली- संस्करण- 1969।
- 2- सावित्री नम्बर दो- यशवीर मारती- बन्धगली का आतिरी मकान, पृष्ठ-81, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- कनाट प्लेस- नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1973।
- 3- सिमटा हुआ दुःख- शिवांगु जोशी, अन्ततः पृष्ठ-11, पुनर्दिव्य प्रकाशन- 718-दरियागंज-दिल्ली-6, संस्करण- 1973।

अपनी सर्विस के रेकॉर्डेशन के लिये पिता अपनी जवान बेटी को अपने बाँस के पास रात में उसकी बंशायिनी बनाने ले जाता है। बिनार देसती है तब भी जब जिज्जी वनिष्ठा से विदग्ध है, तब भी जब दुलहिन की तरह सज्जर पिता के साथ जाती है और उस समय भी जब वह नशे में धुस उसके पास जाकर छेड़ जाती है। वह शराब की गन्ध से भी परिचित होती है। इस तरह उसकी संवेदना अप्रत्यक्ष रूप से बहन के साथ जुड़ती है। लेकिन वह पिता की परेशानियों को भी समझती है।

सुरंग¹ में वैयध्य पीड़ित माँ के जीवन से दो बहनें भी पीड़ी और अन्तर्बिधा को मँल रही हैं। दोनों में उदासीनता और अलगाव है। लगता है जीवन का रस संवेदना, ममत्व सब कुछ समाप्त हो गया। परस्पर एक दूसरे के लिये वे वजनबी सी हैं।

ये सभी कहानियाँ नीरस एवं कष्टपूर्ण जीवन की कुण्ठाओं, मनोग्रन्थियाँ तथा सामाजिक विसंगतियों का परिणाम प्रस्तुत करती हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जीवन की जटिलताओं और व्यक्ति संकुलता को इन सम्बन्धों में, वैयक्तिक स्तर पर उभारने का प्रयत्न किया गया है।

वन्ध सम्बन्ध:-

उपर्युक्त पारिवारिक सम्बन्धों का विश्लेषण करने के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि विवेक्य युगीन कहानीकारों ने तमाम सम्बन्धों की समस्या के भीतर देखने का प्रयास किया है। जीवन के यथार्थ बीज को लेकर चलने वाले विराट् मध्यकी और निम्नकी वर्तमान में बुद्धिन्ति

1- सुरंग- उगा प्रियवदा- कितना बड़ा-फूट- पृष्ठ-72, राजकमल प्रकाशन- दिल्ली-6, द्वितीय संस्करण- 1974।

अर्थ-संकुलता से पीड़ित है। स्वाधीनता के बाद के बदलते हुये परिवेश में मूल्यों का जो संकट आया उसने आत्मकुण्ठा, आत्म रति, अकेलापन, हताशा और अस्तित्व संकट जैसी स्थितियों को जन्म दिया। जब पिता पुत्र, माता-पुत्री, भाई-भाई और भाई-बहन जैसे रक्त सम्बन्धों की ही नाना प्रश्न बिन्हों ने घेर लिया तब उत्तर सम्बन्धों के विषय में तो कहना ही क्या है? संयुक्त परिवार की कड़ियाँ छिन्न-भिन्न हो गयी हैं। जहाँ कहीं यह कौटुम्बिक व्यवस्था चल भी रही है वहाँ भी घर के अन्दर हर सदस्य कटा हुआ और बिलरा हुआ रहता है। स्त्रियों की दैनन्दिन की कलह, बच्चों को लेकर ईर्ष्या द्वेष, वामदनी, पद और प्रतिष्ठा के अनुरूप पारस्परिक वैमनस्य, जलन एक दूसरे को नीचा दिसाने की कुवैष्टा, यहाँ तक कि हत्या कर देने की भी नीकत आ जाती है। गाँवों में भी संयुक्त कुटुम्ब ह्रास की ओर जा रहा है, एक घर में से कई घर बन रहे हैं और मविष्य की संभावनाएँ भी इसके विपदा में ही दिखलाई देती हैं। एकाकी परिवार का दायित्व भी वैयक्तिक चेतना से ग्रस्त हो चुका है। पति-पत्नी जैसा सशक्त रिश्ता भी अपनी गरिमा और नैतिकता को खोता जा रहा है। फिर चाचा, ताऊ, मामा, फूफा, मामी, ननद, बीरानी-छिठानी, जीजा, मामाद आदि सम्बन्धों की टूटन और कृत्रिमता का सहन ही अनुमान लगाया जा सकता है। निम्न कहानियाँ इसके उदाहरण हैं।

रत्नाने आकाश नाई¹ की नौकरी पेशा बहु कलकत्ता के महानगरीय अशान्ति पूर्ण जीवन से ऊँचकर कुछ दिन अपनी ससुराल में सुख शान्ति के दिन बिताने जाई है। उसका प्रेम आते ही टूट जाता है क्योंकि छिठानी उसपर

1- रत्नाने आकाश नाई- मन्मू मण्डारी- मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ- पृष्ठ-88, बदार प्रकाशन 2136- अंजारी रोड, दिल्ली-6, संस्करण- 1975।

अपनी बाणों की बौछार करती रहती है। सास उसके पैरों को फाँटने की फिराक में लगी है। मार्कण्डेय की कहानी रामलाल¹ में रामलाल अपनी पुत्र-वधू, मामी और पौते के बीच कटा-कटा फिरता है। स्थिति यहाँ तक आ गयी कि वह अपने अत्यंत प्रिय पौते से भी वंचित कर दिया गया। उस पर किसी का विश्वास ही नहीं रहा। आवाजें अब भी आ रही हैं² में एक सम्बन्धी की तत्काल हुई मृत्यु को मुलाकर उसकी लाश के इर्द-गिर्द लौंग लाल रहे हैं। लगता है वह लाश सम्बन्धियों के मनोरंजन का माध्यम है। एक अपरिचित दायरा³ में मध्यमवर्ग परिवार का दामाद घर के लिये समस्या बना हुआ है। ससुर अपने दामाद से मयभीत और सर्शकित रहता है। साला अपने जीजा के प्रति सीमता रहता है। मौत में पति की मृत्यु के बाद पत्नी नहीं चाहती कि उसके जेठ देवरों को बुलाया जाय क्योंकि वे उसे लूट ले जायेंगे। स्वीवासी⁴ में बहनीई द्वारा साले का तिरस्कार किया जाता है पर साला वहीं पड़ा रहता है। अपना शहर⁵ में मानव से मिलते ही मामी उसकी जेब से रुपये निकाल लेती है और मामा के मतलब के कपड़े छीन लेती है। ये समस्त कहानियाँ स्वार्थवादिता, व्यक्तिवाद, औपचारिकता और आरोपित नाते-रिश्तों की बस्तियाँ उकेड़ने की पर्याप्त हैं। सौमनस्य, प्रेम, अपनत्व का कहीं कोई निशान नहीं है।

-
- 1- रामलाल- मार्कण्डेय- पानपूल- पृष्ठ-89, नया साहित्य प्रकाशन, 8-ठी मिंटो रोड, इलाहाबाद, तृतीय सं०-1961।
 - 2- आवाजें अब भी आ रही हैं- गंगा प्रसाद विमल, हिन्दी कहानी- दो दशक की यात्रा- पृष्ठ-143, 'मृत्युबोध और मयाक्रान्त स्थिति' अशोक कृपाल- संपादक- डा० रामदरश मिश्र- डा० नरेन्द्र मोहन- नेशनल पब्लिशिंग हाउस- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1970।
 - 3- एक अपरिचित दायरा- सुरेश सिन्हा- कई आवाजों के बीच- पृष्ठ-32, लोकप्रती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गान्धी मार्ग, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1968।
 - 4- मौत- रबीन्द्र कालिया, काला रजिस्टर, पृष्ठ-58, रचना प्रकाशन, 45-ए, सुल्ताबाद, इलाहाबाद-1, प्रथम संस्करण- 1972।
 - 5- स्वीवासी- दुबनाधसिंह- सुलान्त- पृष्ठ-9, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1971।

क्या कोई कल्पना कर सकता है कि सगा भाई अपने भाई के घर जाकर रहे और जाते समय बैक दे जाय । वाइसर्की¹ में सुबोध ने ऐसा ही किया है । इष्टिदोण² तथा "नई बात"³ में नन्द-मापी के अन्तर्विरोध की तथा कल्ल और विपरीत⁴ और टूटना⁵ में ससुर-दामाद सम्बन्धों की विगमता और विरोध के यथार्थ चित्र हैं । अपने ससुर की मृत्यु सुनकर उसे पहली बार लगा कि महाराणा प्रताप⁶ के टूट जाने की खबर पर अकबर को कैसा लगा होगा । किसी दूसरी जगह में रिश्तेदार का औपचारिक व्यवहार तथा एक नाव के यात्री⁷ में सास ससुर-बहू के विगम सम्बन्धों की स्पष्ट किया है ।

-
- 1- वाइसर्की- दूधनाथसिंह- सपाट चैहरवाला- वादमी- पृष्ठ-109, अक्षर प्रकाशन, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967 ।
 - 2- इष्टि दोण- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उगा प्रियंवदा- संग्रह-यही, पृष्ठ-116, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, कनाट प्लेस, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण- 1975 ।
 - 3- नई बात-स्मिांशु जोशी- अन्ततः, पृष्ठ-88, पूर्वोदय प्रकाशन, प्राणलि0, 7।8-दरियार्गज-दिल्ली, संस्करण- 1978 ।
 - 4- कल्ल और विपरीत- रमेश उपाध्याय, संग्रह यही- पृष्ठ-63, वार्ड बुक डिपॉ- 80 नाईवाला, करीब बाग, नई दिल्ली- प्र० सं०- 1973 ।
 - 5- टूटना- राजेन्द्र यादव, संग्रह यही, पृष्ठ-136, अक्षर प्रकाशन, अन्सारी रोड, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966 ।
 - 6- वही---- पृष्ठ- 146 ।
 - 7- किसी दूसरी जगह- विजय मोहन सिंह- टट्टू सवार- पृष्ठ-68, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971 ।
 - 8- एक नाव के यात्री- शानी- युद्ध- पृष्ठ-146, विधा प्रकाशन, मंदिर- दरियार्गज- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1978 ।

वैतन के पैसे¹ और बशीकरण² में संवेदनात्मक स्तर पर साला-जीजा सम्बन्ध तथा देवर-भाभी सम्बन्धों का प्रस्तुतीकरण है। पहली कहानी में साले के सद्गुहस्य से जीजा प्रेरणा ग्रहण करता है और दूसरी कहानी में देवर की सौजन्यता और सद्ब्यवहार से फूहड़ और बाह्यीयता कही जाने वाली अपनी भाभी को सुधड़ और सद्बुद्ध बनाने दिया।

इन कहानियों की रचना यही है कि रिश्तों में से मावात्मक अनुभूति लुप्त हो चुकी है। व्यक्ति इतना खुद गँव हो गया है कि उसके अन्तःकरण में पारिवारिकता, रिश्तेदारी और नातेदारों के लिए प्रेम और संवेदना शेष नहीं रह गयी है। जैसाकि पिछले पृष्ठों में भी कहा जा चुका है। आर्थिक परिस्थितियों के दबाव, अस्तित्ववादी दर्शन के प्रभाव और विज्ञान के विकास के फलस्वरूप साहित्यिक क्षेत्र में नवमूल्य सज्जन की प्रवृत्ति को स्वीकारा जा चुका है। स्वातन्त्र्योत्तर कहानी नूतन जीवन-मूल्यों और जीवन दर्शन का नया मुहावरा खोजने में व्यस्त है।

1- वैतन के पैसे- महीपसिंह- सुबह के फूल- पृष्ठ-85, हिन्दी मगन, जालम्बर।

2- बशीकरण- शिव प्रसाद सिंह, कमीनाशा की हार- पृष्ठ-25, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम संस्करण- 1958।

छठा अध्याय

वालीय युगीन परिवार की समस्याएँ

- (क) उच्च मध्यमवर्ग की समस्याएँ
- (ख) मध्य मध्यमवर्ग की समस्याएँ
- (ग) निम्न मध्यमवर्ग की समस्याएँ
- (घ) निम्न वर्ग की समस्याएँ
- (ङ) समस्याओं का समेकन

उच्च मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याएँ :

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत में जिस मध्यमवर्ग का विकास हुआ उसमें पूँजीवादी व्यवस्था का क्लृप्ता योगदान रहा। इस दिशा में दूसरे पूँजीवादी देशों की अपेक्षा भारत की स्थिति कुछ भिन्न है। भारत सदियों तक परतंत्र रहा अतः उसमें पूँजीवादी व्यवस्था का विकास दूसरे देशों की तरह स्वरूप ढंग से नहीं हुआ। फलस्वरूप अव्यक्तित्व पूँजीवाद का प्रभाव मध्यवर्ग पर धीरे रूप में पड़ा और समानान्तर रूप में मध्यवर्ग के अपेक्षाकृत संपन्न और दाम्पत्यपूर्ण लोग उच्चमध्यवर्ग के रूप में स्थापित होते गये। उच्चमध्यवर्ग जीविका, शिक्षा तथा समाज की अन्य सुविधाओं को उपलब्ध करने में मध्यवर्ग की अपेक्षा इसलिए अधिक समर्थ होता है कि आमदनी के स्रोत उसको अधिक सुलभ होते हैं। इस वर्ग की पारिवारिकता का विकास प्रायः नगर बोध के बीच होता है। पुराने सामन्तवादी परिवारों के सदस्य गाँव और कस्बों में भी उच्चमध्यवर्ग की सुख सुविधाओं को प्राप्त कर लेते हैं।

विवेच्य युगीन कहानियों में उच्चमध्य परिवार की विभिन्न समस्याओं को वास्तुनिकता के परिप्रेक्ष्य में उठाया गया है। औजी शिक्षा, स्वतंत्र चिन्तन, व्यक्तित्व प्रतिष्ठा, नारी-स्वतंत्रता और वारिध्यात्म के सवाल ने दाम्पत्य, जीविका और यौन संबंधी विविध समस्याओं को उत्पन्न कर दिया है। ये समस्याएँ कहीं वर्ग वैषम्य के बराबर पर अवस्थित हैं तो कहीं युगबोध की संवेदना से परिचालित हैं और किन्हीं कहानियों में समस्याएँ सपाट रूप से भी निरूपित की गयी हैं।

वर्तुष्ट दाम्पत्य : सामाजिक ढाँचा की परिवर्तित स्थितियों के कारण दाम्पत्य संबंध आज सबसे बड़ी समस्या के रूप में उपस्थित हैं। उच्चमध्य वर्ग के अनेक पति-पत्नियों वर्तुष्ट और छुटन के बीच जी रहे हैं। साथ रहते हुए भी वे अलगापन महसूस करते हैं। शारीरिक संबंधों के बावजूद उनमें सैक्स की

मूस और प्रेम की प्यास पाई जाती है। अधिक बैतन पाने वाले पति की जिम्मेदारियाँ भी अधिक होती हैं। अपने अप्सरों अधिकारियों के अतिरिक्त समाज के दायित्वों से भी वह घिरा रहता है और बाहर की यह जिन्दगी उसे घर की समीपता से काट देती है। *तनाब¹* की पत्नी उसी प्रकार के पति द्वारा पीड़ित है। झूठमूठ की बीमारी और घबराहट से जब वह पति को अपने समीप थिठलाने में सफल हो जाती है तब उसे अत्यंत सुख शान्ति का अनुभव होता है। वह सोचती है चलो पति उसकी परबाह तो कर रहा है। लगता है जैसे अकेली पत्नी शून्यता के अहसास से घिरी हुई पति की समीपता के लिए तरस रही है। वतुप्ति की यही प्रवृत्ति असमान मानसिकता वाले दम्पति में पाई जाती है। *पगडंडियाँ²* की मिसिज जोशी अपने गंभीर और ठण्डे पति से संतुष्ट नहीं हो पाती इसलिए उन्हें चपल, उष्ण और कामुक पुरुष की तलाश है। अपने पति की अनुपस्थिति में वे मिस्टर सेन से एकान्त में रोमांस लड़ाती हैं और सेन साहब भी मिसिज जोशी से तभी मिलते हैं जब उनकी पत्नी पीहर चली जाती है। लगता है अलग-अलग परिवारों के पति और पत्नी अपने दाम्पत्य जीवन को पूरी तरह नहीं नीमा पाते इसलिए अतृप्त मन की प्यास बुझाने को वे इधर-उधर भटकते हैं। तनाब और बिलराब की स्थिति का एक कारण यह भी होता है कि पति और पत्नी दो असमान वर्गों से आते हैं। संपन्न परिवार की बेटी जब एक सामान्य सी नौकरी करने वाले पुरुष की पत्नी बन जाती है तब कर्णिय विषमता उभर कर सामने आ जाती है। पत्नी का आभिजात्य अपना रंग दिखलाता है।

1- तनाब-- राजेन्द्र यादव (टूटना और अन्य कहानियाँ) पृ०-

वन्दार प्रकाशन प्राणल्लि० 2136 अंसारी रोड, दरियागंज दिल्ली-6, प्रथम-66

2- पगडंडियाँ-- गिरिराज किशोर (पैपर बैट) पृ०-25, राजकमल प्रकाशन दिल्ली-6।

‘अलग और विपरीत’¹ के पति-पत्नियों के संबंध असमान वर्गीयता के कारण विकृत हो रहे हैं। संपन्न परिवार की बेटी जब मामूली सी नौकरी करने वाली पुरुष की पत्नी बना दी जाती है तब बिसराव और तनाव की स्थितियाँ पैदा होती हैं। ऊँचे घर की बेटी और ऊँची नौकरी करने वाली पत्नी ने शादी के बाद पहला काम यह किया कि पति की नौकरी छुड़वा दी और उसे घरजबाई बनने को मजबूर कर दिया। पति बेचारा पराश्रित होकर दिन हीन जीवन जीता हुआ न पत्नी को प्यार कर सका और न उसका ही प्यार पा सका। वर्गीय असमानता एक दूसरा रूप दृष्टि दोष² के पति - पत्नी में पाया जाता है। पत्नी चन्द्रा का उच्चवर्गीय यह सामान्य मध्यवर्ग में पड़े हुए पति साम्ब को बहुत मँहगा पड़ा। भारतीय विधिनिर्णयों का व्यापसी पति पश्चिमी सभ्यता में रंगी हुई पत्नी को संतुष्ट न कर सका। भावनात्मक मैच न मिलने के कारण पति और पत्नी दोनों ही मानसिक व्यथार्यों को भोगते हैं और समस्या में से दूसरी समस्या उभरने लगती है। फौलाद का आकाश³ का लेबर अफसर रवि अपनी पत्नी मीरा को मानसिक तृप्ति नहीं दे सका। उसकी हर प्रतिक्रिया पत्नी को तटस्थ और ठण्डी प्रतीत होती है। यही कारण है कि मीरा को राजकृष्ण मिनिस्टर की मीट में कुछ निराशा ही अनुभव हुआ। पति उसकी हरकत को रोक नहीं सका। वैचारिक और बौद्धिक असमानता के परिक्ष में पति-पत्नी

- 1- अलग और विपरीत, रमेश उपाध्याय (शैल इतिहास) पृ०-68
वार्थ बुक डिपो, 30 नाईबाठा, करोल बाग, नई दिल्ली-5,
प्रथम संस्करण-1978।
- 2- दृष्टि दोष - उषा प्रियम्बदा- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ०-108
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली-तृ०सं०-1971
- 3- फौलाद का आकाश-- मोहन राकेश, क्रांति पृ०-121,
राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली - पृ० सं०-1972।

कटे-कटे रहते हैं। रुबियों की मिन्नता उनके बीच दूरी पैदा कर देती है।¹ नींद की नायिका ईरा घन दौलत, ऐश-वाराय सब कुछ होते हुए भी बैन से सौ नहीं पाती। वह संगीत प्रेमी है जबकि उसका पति बिजनेसमैन है। अपनी सितार पर धिरकती अंगुलियों को वह किसी दिखलाये। बैनी की घुटन से उसे नींद नहीं आती इसलिए उसे एक के बाद एक कई नींद की गोलियाँ खानी पड़ती हैं।

विवाह-विच्छेद: पश्चिमी प्रभाव और नव जागरण की चेतना के परिणाम स्वरूप तलाक और संबंध विच्छेद के कानून बनाये गये। विवेच्य युगीन कहानियों में कहीं-कहीं इस समस्या को भी उठाया गया है।² टूटना कहानी में पति-पत्नी तलाक देकर अलग हो जाते हैं। तलाक का कारण है पति-पत्नी की असमान विचारधारा। अतृप्त संबंधों में वर्गीय असमानता बाढ़ आती थी और तलाक में भी वही असमानता उभरती है। लीना जिस वर्ग की नारी है उसकी विशेषता है निष्णय की दृढ़ता और स्वतंत्र विचार-धारा। वह चाहती है कि उसका पति घोड़ी का घुला कुर्ता पायजामा पहनकर सोये क्योंकि वह स्वर्य प्रेस की हुई स्वच्छ साड़ी पहनकर सोती है पर सामान्य मध्यवर्गीय परिवार का पति इन बातों को फिजूल समझता है। वह किसी भी तरह इसके लिए अपने मन को तैयार न कर सका और परिणाम यह हुआ कि अप्रत्यक्ष रूप से छड़ी गई लड़ाई का पर्यकर परिणाम देसने को मिला। एक सुखी दाम्पत्य जीवन के पूर्ण विघटन के रूप में। बेवारा बच्चा माँ और बाप के संयुक्त वात्सल्य से वंचित होकर अजीब सी स्थिति में पलता है। भावनात्मक असमानता का कारण केवल वर्गीय

1- नींद-- देवेन्द्र इस्सर-- (काले गुलाब की सलीब) पृ०-7, शारदा प्रकाशन, महरौली-- नई दिल्ली-80- प्रथम सं०-1975।

2- टूटना- राजेन्द्र यादव -- एक दुनिया समानान्तर, संपादक-- राजेन्द्र यादव पृ०-297, अक्षर प्रकाशन, दरियानगंज, अंसारी रोड दिल्ली-6, द्वितीय संस्करण-1970।

बैशाख्य नहीं होता। वायुनिक परिवेश में रहने वाली नारियाँ
 नैतिकता के स्तर पर भी पति का बन्धन स्वीकार नहीं करना चाहती।
 'प्रतिष्पन्नियाँ'¹ में डायबोर्स का कारण है। शारीरिक पवित्रता का
 प्रश्न। पति चाहता है कि पत्नी केवल उसकी होकर रहे पर पत्नी का वस्त्र
 इस बात को नहीं स्वीकार करता और पति की ओर से तलाक हो जाता
 है। पत्नी भी मुक्त होकर संतुष्ट हो जाती है क्योंकि 'मीनिंगलैस रस्म'
 ने ही तो उन्हें बाँध रखा था।

सर्वथ विच्छेद केवल तलाक से ही नहीं होते तलाक एक कानूनी
 माध्यम है परन्तु इसके अलावा भी पति पत्नी अलग-अलग और बिघटित
 हो जाते हैं क्योंकि पति-पत्नी में से किसी के भी शकालु प्रवृत्ति,
 अहम्पन्यता, यौन अराजकता की आदतें वास्तव्य के टुकड़े-टुकड़े कर देती हैं।
 'मग्न प्राचीर'² के विद्वान पति वजीनामुक्त वायुनिक जीवन में जीते हुए
 भी पत्नी पर प्रतिबन्ध लगाते हैं। पत्नी के होते हुए वे मिस गोयल से
 प्रेमाचार करते हैं और परिणाम यह होता है कि उन्हें अपनी पीड़ित
 और दमित पत्नी की चुनौती का सामना करना पड़ता है 'कान खोलकर
 सुन लो, जल्दी अपना रास्ता बदलो, दरना मुझे सोचना पड़ेगा और
 यह सौदा तुम्हें मंजूर पड़ेगा'³ ये शब्द सैकड़ों बर्गों की परम्परा को

1- प्रतिष्पन्नियाँ-- उष्णाप्रियम्बदा (कितना बड़ा फूट) पृ०-23, राजकमल
 प्रकाशन, 8-नैताजी सुभाष मार्ग दिल्ली- दि०सं०-1974।

2- मग्न प्राचीर-- शिव प्रसाद सिंह (कर्मनाशा की हार) पृ०-114, भारतीय
 ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी, प्र०सं०-1958।

3- ,, ,, ,, पृ०-120,
 भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी- प्र० सं०-1958।

संछिन्न कर देने वाली वायुनिक नारी के स्वाभिमान की पहचान कराने वाली है। वायुनिक बुद्धिवादी समाज में रहते हुए भी नारी अभी तक पूरी तरह से समाजसिद्ध दासता से मुक्त नहीं हो पाई है। सदियों से पुरुष प्रधान समाज के आदेश-निर्देशों पर चलते रहने के कारण आज भी भारतीय पत्नी मन के किसी निमृत्त कोने में सच्चरित्र पति के प्रति भी सन्देह बनाये रखती है और समय आने पर यह सन्देह जब प्रकट होता है तब स्थिति की भयावहता सामने आती है। *प्रायश्चित्त¹* कहानी की रचना इसी प्रकार की गलतफहमी का शिकार बनती है। वह सोचती है पति उसकी परवाह नहीं करता और इसी कुण्ठा में घुटती हुई वह डाक्टर विनय से अनुचित संबंध स्थापित कर बैठती है। परिणाम यह होता है कि उसका पति एकमात्र बच्चे को लेकर, भरा पूरा घर छोड़कर चला जाता है। यहाँ समस्या का रूप सामाजिक की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक अधिक है।

भैतिक मूल्यों के दबाव में सचाई को सहन न कर पाने के कारण पति-पत्नी संबंध छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और पत्नी के अलग हो जाने पर पति को एक विचित्र सी छटपटाहट अन्दर ही अन्दर गलाती रहती है। *बाईसवर्ग²* कहानी का पति इसी छटपटाहट का शिकार है। पहली ही रात को मावुकताक्ष पत्नी ने उससे सब-सब कह दिया जिसके कारण वह पत्नी से अलग हो गया। संपन्न परिवार का सदस्य होते हुए भी वह पारिवारिक सुख से वंचित है। जिन्दगी का संत्रास इतना बढ़ता है कि

- 1- मग्न प्राचीर, शिव प्रसाद सिंह (कर्मनाशा की हार) पृ०- 25
भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गा प्रसाद कुण्ड रोड, बाराणसी-, पृ० सं०-
1958 ।
- 2- बाईसवर्ग- दुधनाथ सिंह-- (सपाट बैरौ वाला आदमी) - अक्षर
प्रकाशन, प्रा०००१० - दरियागंज दिल्ली- प्रथम सं०- 1967 ।

वह हर समय क्लैपन की यातना से घिरा रहता है। और पीछर में रहने वाली पत्नी को भी क्या सुल मिला। जीवन से ऊँकर उसने भी आत्महत्या कर ली। वच्छी सासी गृहस्थी उजड़ गयी। केवल पारस्परिक असह्यिगुता के कारण। अतीत की एक मूल को इतना गंभीर मान लेना कि वह पूरे मविष्य के लिए अमिशाय बन जाय, कहां की बुद्धिमानी है।

यून-वराजकता: यून संबंधों की वराजकता और सैक्सगत स्थितियों के विमिन्न कोण, विवेच्य युगीन अनेक कहानियों में वंकित किये गये हैं। क्लौकिक और विधि संभव प्रेम की वाज मान्यता नहीं रही क्योंकि यूनानवार और उन्मुक्त संबंधों की स्थितियों ने नैतिक और सामाजिक रुढ़ियों को पीछे छोड़ दिया है। विवाहिता और अविवाहित दोनों ही प्रकार की परिस्थितियों में यून वराजकता के विमिन्न रूप पाये जाते हैं।

विवाह-पूर्व यून संबंध स्थापित करने का एक उदाहरण सुरेश सिन्हा की कहानी 'कमजोर शास' ¹ है। प्रेम की परिणति विवाह में ही हो, वाज यह ऊँरी नहीं माना जाता। कमजोर शास की भीता तीन बर्ष तक एक पुरुष से प्रेम का नाटक रचाकर अन्त में किसी दूसरे पुरुष से विवाह कर लेती है क्योंकि उसके विचार से 'तीन साल की मायुकताओं की दल्लीज पर सारी जिन्दगी शहीद नहीं की जा सकती' ²। पहली प्रेमिका के घोसा देने का परिणाम यह होता है कि डाक्टर अपनी दूसरी नई प्रेमिका स्निग्धा पर भी विश्वास नहीं कर पाता। असल में भीता से पहले भी वह किसी अन्य नारी की प्रेमाग्नि में ऊँ चुके थे वतः वाधुनिक प्रेम के क्षेत्र में मुक्तमोगी होने के कारण डाक्टर ने क्लैपन की

1- सुरेश सिन्हा, एक कमजोर शास-- पृ०-535, विकल्प क्या क्लौणांक संपादक- शैलेश मटिवानी, विकल्प कायलिय, मोतीठाठ नेल्स नगर, इलाहाबाद- नवम्बर -1969।

2- सुरेश सिन्हा, एक कमजोर शास, विकल्प क्या क्लौणांक- पृ०-538।

निर्ममता को स्वीकार करना ही उचित समझा । यहाँ यौन संबंधों से होने वाली उस मनोवृत्ति का चित्रण है जो आदमी को अकेला और छाकार बना जाती है साथ ही नैतिक मान्यताओं के अवमूल्यन और संकृमण को भी यह कहानी स्पष्ट करती है । प्रेम कहीं और विवाह कहीं की एक स्थिति ¹ 'परछाइयाँ' में स्पष्ट की गई है । प्रेमिका जब शादी कर लेती है तब प्रेमी में हीनत्व भावना आ जाती है और उस समय उसकी दशा कितनी दयनीय बन जाती है जब शादी शुदा वही प्रेमिका प्रेमी के घर जाती है और बहल्ले से कहती है कि उसके पति उस प्रेमी से मिलकर बहुत प्रसन्न होंगे । यौन संबंधों की यहाँ एक नयी स्थिति को उभारा गया है । सैक्सगत स्थितियों का एक सँझा भिन्न रूप ² 'त्रिकोण' में है । इसमें पति पत्नी और प्रेमिका का बिल्कुल नया त्रिकोण है । प्रत्येक की मनः स्थिति बदली हुई है । पत्नी को अन्य पुरुष के साथ संयोग रत देखकर पति तनिक भी विचलित नहीं होता अपितु स्वीकृति सूचक प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगता है (जो कुछ ही रहा है ठीक ही तो है) यौन संबंधों का यह बदला हुआ रूप अपने - अपने वहम् की सोल को बनाये रखने और उसमें सिमट जाने का है । पापबोध जैसी कोई बात तीनों पात्रों में नहीं है तीनों ही अपनी अपनी जगह अपने अहं की तुष्टि का आनन्द ले रहे हैं । वाष्पनिक उच्चमध्यवर्ग के परिवार के अन्तर्गत स्त्री पुरुष संबंधों का एक स्तर यह है जहाँ संयोग के शारीरिक सुख की तुष्टि के लिए

- 1- परछाइयाँ-- गिरिराज किशोर, (पैपरबैक) पृ०-६६, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-६, पृ० सं०-१९७७ ।
- 2- त्रिकोण, कृष्ण बलदेव वैद, (दुबारे किनारे से) पृ०-११, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरिबार्गज, दिल्ली-
- 3- ,, ,, - वही-- ,, पृष्ठ-१६ ।

वैवाहिक बन्धन को चुनौती दी जाती है। 'बाया गीत गा रही थी' की पत्नी के तयाकथित माई साहब लोग वाकर उसे सोफे पर धम्म से गिरा देते हैं। चांदनी रात में मम्मी जागे-जागे दौड़ती है और वे पीछे-पीछे यहां तक कि घर की बाया यह भी बिहवास पूर्वक कहती है कि जो मम्मा पैदा होगा वह मम्मी का बेटा तो होगा लेकिन पापा का बेटा नहीं। वास्तव में बात यह है कि व्यक्तित्व और प्रेम में जो पाप, शाप और प्रतिहिंसा थी उसकी परिणतियों बढ़ गयी हैं। समर्पिता स्त्री का रूप बाज आत्म सजा नारी ने ले लिया है जिससे निश्चिन्ता पति के लिए ही नहीं, कहानीकार के लिए भी कठिन हो गया है। उक्त पत्नी की कठिनाई यही है कि वह आत्मरति के दौर से गुजरती हुई अपनी रीति की भूल हर तरह से मिटाना चाहती है। 'परिणति' में एक ऐसे युवक की यौन बुद्धि का चित्रण हुआ है जो जवान पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री से इश्क लड़ाता है। अपने द्वाइगकर्म में दिन में ही पत्नी के घर में होते हुए जुबदा को वालिंगन में बांध लेता है और मीटिंग का बहाना करके इतबार को जुबदा के साथ पिक्कर देखने जाता है। शराब के नशे में जुबदा की तारीफ करता है। पुरानी प्रेमिकाओं के फोटो उसके एल्बम में लगे हुए हैं। जिस्म की भूल में वह बाहर भटकता रहता है।

ये कहानियां यौन संबंधों के विभिन्न रूपों को अभिव्यक्त करती हैं। यहाँ एक बात जान लेनी आवश्यक है कि यौन भावना और प्रेम भावना दोनों का गह गह रूप उच्चमध्यवर्गीय परिवार में पाया जाता है।

- 1- बाया गीत गा रही थी-- रमेश बक्षी (मेज पर टिकी हुई कहानियां)
पृ०-17, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी- प्रथम संस्करण-1963 ।
- 2- हिमांशु जोशी-- अन्ततः पृ०-60, पुबोदय प्रकाशन, दिल्ली-6
प्रथम संस्करण- 1973 ।

क्योंकि समय के साथ यौन की पुरानी बर्जनाएँ मिटती जा रही हैं इसलिए प्रेम का मूल्य भी परिवर्तित हो गया है। फ्रायड आदि दार्शनिकों ने यौन को गोपनीय नहीं रहने दिया। समय की मान ने नारी को घर से बाहर निकाल कर कर्मक्षेत्र में पुरुष के साथ ला सह्य कर दिया है जिसने पुरातन दकियानुसी मान्यताओं की धजियाँ उड़ा दी हैं। स्त्री-पुरुष के स्वतंत्र मिलन () ने यौनवृत्ति को बढ़ावा दिया है फलतः यौन के विभिन्न पक्षों को कहानीकारों ने प्रस्तुत किया है।

प्रेम की परिणति शारीरिक यौन संबंधों में हो भी सकती है और नहीं भी लेकिन यौन की अज्घा प्रेम संबंधों में सब सदा विद्यमान रहती है, इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। इसी वायार पर उपर्युक्त कहानियों में आज के यथार्थ यौन व्यवहार प्रेम संबंधों को चित्रित किया गया है। मावना-मावना का प्रेम और वात्मा-वात्मा का प्रेम जैसा आदर्श अब अपनी व्यर्थता हो चुका है। ये कहानियाँ वैयक्तिक नैतिकता की कहानियाँ हैं।

आत्म निर्भर नारी: आत्मनिर्भर और जीविकारत नारी के कारण पारिवारिक संबंधों में व्यापक परिवर्तन आया है। नौकरी पेशा नारी ने स्वतंत्र व्यक्तित्व का ज्वलन्त प्रश्न सड़ा ही नहीं कर दिया काफी हद तक उसका उत्तर भी सोज निकाला है। वस्तुस्थिति यह है कि उच्चमध्य परिवार की नारी की जीविका ने उसकी वैयक्तिकता, धार्मिकता और तमाम परिवार के संबंधों से संबंधित बनेक समस्याएँ सड़ी कर दी हैं। लगता है युग-युगों से शोणित और पीड़ित-वक्ला अब इस रूप में सब्ज बनकर पुरुष से बदल रहे हैं। स्थिति तब और भी ज्यादा हो उठती है जब पत्नी अपने पति की अपेक्षा ऊँची नौकरी पर लगी होती है। "फ्राक बाठा बोड़ा निकरवाला साईस" पत्नी ठिप्टी सेक्रेटरी है और पति एक कर्क।

1- फ्राकबाठा बोड़ा निकरवाला साईस-- गिरिराज किशोर पृ०-95

(वेयरकेट) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, पृ० सं०-1970।

ऐसी स्थिति में पति के स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रश्न ही नहीं रहता क्योंकि पत्नी का ऊँचा सतवा मामूली नौकरी वाले पति पर हावी हो गया। बेचारा पति कुंठित व्यक्तित्व लिये हुए जीता है और जब ऊँची नौकरी वाली पत्नी का प्रेमी पत्नी के कमरे में होता है तब वह दरबाजे पर 'नाक' करता है। यहाँ पत्नी किसी अपराध माव से पीड़ित नहीं है और पति भी पुरातन समर्पिता पत्नी की कामना नहीं कर पाता। पत्नी का वार्थिक पक्ष प्रकृतर होने के कारण पति सामौशी से सब कुछ सहन करता है। स्पष्ट है कि नारी की जीविका ने एक ओर जहाँ सामाजिक और वार्थिक जागृति के दरबाजे खोले हैं वहाँ यौनाचार, व्यक्तित्व प्रतिष्ठा और एकपतित्व की समस्याएँ भी लड़ी कर दी हैं। समाज के व्यापक परिक्षे में वर्ग विषम्य का प्रश्न है तो परिवार के सीमित क्षेत्र में दाम्पत्य की विषमता का प्रश्न है। पति पत्नी के पेशों में अन्तर होने से उनके मौलिक संबंधों में भी अन्तर आ रहा है। यही अन्तर 'अलग और विपरीत' के पति-पत्नी के संबंधों में पाया जाता है। यह पत्नी अपनी ऊँची नौकरी और संपन्न परिवार के कारण पति की साधारण सी नौकरी कुछना देती है। वह अपनी ससुराल में सब कुछ सहकर रह रहा था। वास्तव में वह एक ऐसा पति है जिसको कुछ सुविधायें देकर लीज लिया गया था। उसकी अपनी इच्छायें समाप्त हो गई थीं।

आज शिक्षित नारी को इतना आत्मविश्वास हो गया है कि वह कठिन से कठिन परिस्थिति का मुकाबला कर सकती है। वह पति द्वारा पैदा की गयी समस्या का समाधान करना सीख गई है और स्वामिमान की रक्षा करना भी सीख गई है। उसे विश्वास है कि वह अपने पैरों पर लड़ी होकर परिस्थिति का उत्तर दे सकती है। 'मग्न प्राचीर' की पत्नी दूसरी वीरत से आँस लहाने वाले और उसे कीमती हार पहनाने वाले पति

1- मग्न प्राचीर- शिव प्रसाद सिंह (कर्मनाशा की हार) पृ०-120,

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, बाराणसी- प्रथम सं०-1958।

को बाड़े हाथों लिया। वह पति के ऊपर निर्भर न रहकर नौकरी कर लेती है और उसी के बल पर उसने पति से कह दिया कि यदि पराई औरतों से आसनाई करने का रास्ता उसने न बदला तो उसे पकड़ाना होगा क्योंकि अब वह उसके पैसे पर नहीं जीती।

जीविकारत नारी का एक ऐसा रूप भी उच्चमध्यवर्गीय परिवार में पाया जाता है जब पति की ऊँची नौकरी के कारण उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ती है। उच्चपदवीधारी पति, बंगला, कार, ऐश्वर्य और वैभव की नयी दुनिया में आकर वह पति की सहायक बनना चाहती है। घर की व्यवस्था, सजावट रख रखाव, स्वागत सत्कार वाली क्रियाएँ सभी संपन्न हो सकती हैं जब पत्नी घर की देखभाल करे।¹ नई नौकरी² की रमा उच्चाधिकारी पति की शान शक्ति और तरक्की के लिए अपनी दस साल पुरानी काछेज की नौकरी छोड़ देती है पर क्या सचमुच ऐसा करके उसे पूरी शान्ति और संतोष मिल सका? शायद नहीं, क्योंकि जब-जब वह पति को कार में आते जाते देखती है तब-तब उसे ऐसा लगता है कि कुन्दन उसे पीछे छोड़कर आगे निकल गया है बहुत आगे।³ ऐसा लगता है कि आज के समाज में पारिवारिक सुरक्षा और व्यक्तित्व दो विरोधी चीजें हैं और साथ ही पतित्व और पत्नीत्व एक समान स्तर पर रहकर ही अच्छी सुखी जिन्दगी व्यतीत कर सकते हैं। घर की देखभाल तो नौकर चाकर भी कर लेते हैं फिर नारी ने जो शिक्षा-दीक्षा समाज से ग्रहण की है उसे वह सीमित दायरे में क्यों समेटे। गृहणी और आत्मनिर्भर महिला

1- नई नौकरी-- मन्नू मंडारी (एक प्लेट सैलाब) पृ०-1, अक्षर प्रकाशन, प्राणलिंग 2186 बन्सारी रोड, दरियार्गज, दिल्ली-6, पृ० सं०-1968।

2- नई नौकरी-- मन्नू मंडारी--(एक प्लेट सैलाब) पृष्ठ-10।

ये दो अलग-अलग व्यक्तित्व हो गये हैं। पति का घर और बच्चे संभालने तक अपने को सिकोड़ देना आज की प्रगतिशील स्त्री को नहीं रुचता। वह अपनी दामता और यौग्यता को समाज के विराट् प्राणिम में प्रस्फुटित और प्रसारित करने को लालायित रहती है। यही कारण है कि नौकरी छोड़ देने के पश्चात् सर्व सुखों के बीच रहने पर भी रमा के मन में कहीं न कहीं नौकरी छोड़ देने की कसक बाकी है। यहाँ वास्तव में समस्या निजी-व्यक्तित्व की है। स्वतंत्र व्यक्तित्व की यही समस्या प्रकारान्तर से 'बन्द दरारों के साथ' कहानी में भी उठाई गई है। मंजरी अपने पहले पति से संबंध विच्छेद करके जब दूसरे पुरुष से विवाह करती है तब अपनी नौकरी छोड़ देती है, कुछ दिन सब ठीक चलता है परन्तु एक दिन अपने पिछले पति के बच्चे की हॉस्टल की फीस कौलेकर पति ने आर्थिक कठिनाई की बात उठा दी और उसी क्षण मंजरी को पराश्रितता और गुलामी को कटु अहसास होता है। उसे लगा कि वह एक संपूर्ण जीवन नहीं जी पायेगी। ये कहानियाँ नारी के आर्थिक संघर्ष, टूटते हुए पारिवारिक संबंध बनते हुए नवीन संबंध, प्राचीन भावभूमि से निकलकर नूतन भाव भूमि में प्रवेश, व्यक्ति के अतिस्तित्व का प्रश्न, प्रेम, यौन संबंधों की समस्याएं एवं मनुष्य के टूटते हुए व्यक्तित्व के नये आयामों को अभिव्यक्त करती हैं।

पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव: स्वाधीनता प्राप्त करने के उपरान्त पश्चिम .

सभ्यता से भारतवासियों ने जो विभिन्न प्रवृत्तियाँ ग्रहण की उनमें प्रदर्शन की प्रवृत्ति मुख्य है। विशेष रूप से उच्चमध्यम वर्ग के व्यक्तियों में प्रदर्शन प्रियता बहुत पाई जाती है। आधुनिकता की पहचान यह मानी जाती है कि बातलाप में ज़ोंबी का प्रयोग किया जाय, फूँटीशान, आठप्पर और रहन-सहन, कमूणा सबमें फैशन हो। 'सेफ्टीपिन' की मिसेज

1- सेफ्टीपिन-- मोहन राकेश (फौलाद का आकाश-- पृ०-११ अक्षर प्रकाशन २।३६-अंसारी रोड, दरिबार्गज दिल्ली, पृ० सं०-१९६६।

सबसेना इतनी नाज़ुक हैं कि उन्हें उपन्यास सुनाने के लिए एक व्यक्ति चाहिए। वाधुनिक शिष्टाचार के अनुसार वे पति का नाम लेती हैं। यह ऐसे लोगों की कहानी है जिनकी पत्नी या जिनके पति की ओर कोई उत्सुक निगाहों से देखे तो वे बुरा नहीं मानते। सेफ्टीपिन शायद उन भावनाओं का प्रतीक है जो प्रकट नहीं हो पातीं¹ पर जो सेफ्टीपिन की नौक की तरह चुपचाप रहती हैं। *एक समर्पित महिला* की नायिका श्रीमती शीला वाधुनिकता के कारण श्रीमती शीला नाम लिखना पसन्द करती हैं। बीच-बीच में अँग्रेजी के वाक्य बोलना उनकी विशेषता है। अपने पति से हिन्दी की बातचीत में (टूमी नथिंग इज़ पर्सनल अट वाट²) कहना उनके पश्चिमी प्रभाव का प्रतीक है। इसी प्रकार *पगडंडियां* कहानी में मिस्टर सैन और मिसिज जोशी बात-बात में अँग्रेजी का प्रयोग करते हैं। मिसिज जोशी अपने पति के हिन्दी बोलने की ऐसी उड़ाती हैं। झूठी शान और वादशों का खोखलापन इस वर्ग की बहुत बड़ी कमजोरी है। *उकॉरेशन फीस* कहानी में दिसावटी वादशीवाद को सूक्ष्मता से व्यक्त किया गया है। परिवार के नाती पीते सभी अपने दादा रामजीदास की जब तक चर्चा करते हैं कि यदि वे होते तो गबनर ज़र बना दिये जाते। दादा बड़े देशभक्त थे और जेल गये थे। पर व्यवहार में इस परिवार का कोई भी सदस्य दादा का अनुकरण नहीं करता है। सभी अपनी अपनी स्वार्थी साधना और प्रेमाचार में संलग्न रहते हैं। *ढोलक पर

1- एक समर्पित महिला-- नरेश मेहता, पृ०-55, भारतीय ज्ञानपीठ कलकत्ता।

¹ पाप " कहानी का पूरा परिवेश औजी सभ्यता से परिचाहित है ।
 वफासरांना बदबों वादाब, बातचीत में औजी का निर्बाध प्रयोग, गोस्फ
 हिंक विदेशी नृत्य के स्टेप्स, विदेशी कारों का मोह कहानी के पात्रों
 में अत्यधिक पाया जाता है । "संछित संदर्भ" ² में छोटा माई बड़े माई
 को नमस्ते या प्रणाम न करके "गुड ईबर्निंग" ³ करता है । पियानों कैबेट्स,
 मनीप्लान्ट तथा अमेरिकन सीरिज के उपन्यास वादि सभी पश्चिमी परिवेश
 और संस्कृति की हास्यास्पद नकल सी लगते हैं । "एक शाम की बातचीत" ⁴
 की नायिका मिसिज राठी विदेशी वस्तुओं की दीबानी है । हांगकांग की
 लिपस्टिक, अमेरिका का फ्रिज तथा अनेक विदेशी वस्तुएं उसके घर में हैं
 इंग्लिश बोलने में वह बड़ी शान समझती है (वाई शुड कौल माईसिल्फ
 रादर एन एस्प्री वडिक्ट) यही सब मैं इसी प्रकार "उद्दीपन की एक रात" ⁵
 तथा प्रतीक्षा कहानियों में क्लब पार्टी, बालबान्स, वारकेस्ट्रा, जेम्स
 बांड के उपन्यास तथा ट्विस्ट वादि के माध्यम से पश्चिमी परिवेश के

- 1- डोलक पर थाप, विष्णु प्रमाकर (मेरी प्रिय कहानियाँ) पृ०-82
 राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरीगेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1970 ।
- 2- संछित संदर्भ-- से०रा० यात्री (दूसरी चेहरे) पृ०-109, नीलाम
 प्रकाशन, सुसरी बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1971 ।
- 3- एक शाम की बातचीत-- देवेन्द्र इस्सर (काळे गुलाब की सलीब) पृ०-29
 शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975 ।
- 4- उद्दीपन की एक रात-- राजेन्द्र किशोर (सूरजमुखी के फूल) किताब मल्ल,
 56-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद , पृ०-62 ।
- 5- प्रतीक्षा -- राजेन्द्र अवस्थी (मेरी प्रिय कहानियाँ) पृ०-86,
 राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली- प्रथम संस्करण -1975 ।

अनुसरण और प्रमाण को उद्धाटित किया गया है। शराब के साथ-साथ समाज सेवा की चर्चा में भी जहाँ तहाँ की जाती हैं। शायद यह भी वाक्कल का फीशन है।

उपर्युक्त कहानियों के पात्र मूलतः अस्तित्ववाद और पश्चिम के मीगवाद से प्रभावित हैं। सैकड़ों बर्गों की गुलामी के बाद देश स्वतंत्र हुआ। ब्रिटीश शासन ने अपनी सभ्यता संस्कृति, भाषा, केश रहन-सहन सभी का प्रभाव हम पर छोड़ा था। भारतीय नौजवान को कलकत्ते केवल उपलब्धि के रूप में मिली थी। विशेष रूप से नगर और महानगर में रहने वाले नर-नारी पश्चिम के मौक्तिक वाद से अधिक प्रभावित हुए क्योंकि नगरों में ज्ञान-विज्ञान के सभी साधन युलुम होते हैं और वे सभ्यता के आदान-प्रदान के केन्द्र होते हैं। इसलिए नगरबासी के अन्तर्गत उक्त प्रवृत्तियाँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

अधिक शिक्षित और सभ्य होने के कारण उच्चमध्यमवर्ग के परिवार के लोग महत्वाकांक्षी भी होते हैं। हमारे मूल्य उन्हें पुराने लगते हैं। कुछ नया और अनोखा कर डालने की छलक इस वर्ग में रहती है। अतः प्राचीन मूल्यों को नकारकर पश्चिम के व्यक्तिपरक मूल्यों को अपनाने की प्रवृत्ति इसमें होती है। इस वर्ग की औरतें दूसरे के अपावों पर अँगुली रखने में संकोच नहीं करतीं। भिसिब चौपड़ा पड़ोसी के घर जाकर चाय पीते हुए अच्छे पदों लगाने, बढ़िया कुर्सीवाँ मँगाने और चायदानी पर टीकोजी रखने की सलाह देती हैं। जैसे वह इतनी बाछाक भी हैं कि पड़ोसन से जब तक चाय-चीनी, मसाले माँगकर ले जाती हैं।¹

विवेच्य परिवार से संबंधित समस्याओं पर दृष्टि डालने से यही स्पष्ट होता है कि आज के स्त्री-मुक्त बौद्धिक और भावात्मक दोनों

1- शीशे के पदों - राजेन्द्र अवस्थी, दो जोड़ी बर्तन - मैकल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज दिल्ली-, प्रथम संस्करण- 1971।

ही स्तरों पर पुराने मूल्यों को नकार रहे हैं। नये मूल्यों की प्राण प्रतिष्ठा अभी नहीं हो पाई है और संक्रमण कालीन दौर से गुजरते हुये पति-पत्नी, माँ-बाप, माई-बहन, सास-बहू, पिता-पुत्री आदि सभी संबंध नाना प्रश्न चिन्हों और जटिलताओं का सामना कर रहे हैं। एक समस्या से अनेक प्रश्न जुड़े हुए हैं और एक प्रश्न के अनेक उत्तर हैं पर अभी एक निश्चित उत्तर की तलाश है।

मध्यमध्यम वर्गीय पारिवारिक समस्याएँ :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् बदलते हुये परिवेश में मध्यमध्यमवर्ग के परिवार को सबसे अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। उच्चमध्यमवर्ग के लोग आर्थिक सुविधा के कारण समाज में सुरक्षित रहते हैं वतः वे संघर्ष से भी बहुत कुछ दूर रहते हैं। निम्नमध्यवर्ग और निम्नवर्ग के सदस्य मान्यवाद, रुढ़ियों और एक निश्चित जीवन के आधार पर जीते हैं इसलिए एक प्रकार की निश्चितता उनमें पाई जाती है। सबसे अधिक समस्या ग्रस्त जीवन मध्यमवर्गीय परिवार का होता है। यह परिवार येन केन प्रकारेण अपनी मर्यादा का निर्वाह करते हुए नाना प्रकार के व्यय, लाइन और उपेक्षाओं को सहता है। अपनी स्थिति और दायता को बढ़ा-चढ़ाकर दिसाने के कारण इस परिवार के लोग तोल्ला जीवन बिताते हैं। अभिजात्यवर्ग के निकट पहुँचने की ललक के कारण इन्हें सारहीन बिहम्बनापूर्ण परिस्थितियों के मध्य होकर गुजरना पड़ता है। कृत्रिम शान शीकत बनाने और समाज में ऊँचा दिखाई देने की आकांक्षा के कारण इस परिवार की आर्थिक दशा दुर्बलतर होती जाती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अस्तित्वबोध की सोज में आज का मध्यमवर्गीय परिवार कुंठा एकाकीपन, अनास्था, आक्रोश और निराशा तथा जैसे मानसिक विकारों को मौल रहा है। अपने व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करने

में यह सतत संघर्ष कर रहा है - विवेच्य युगीन कहानीकारों ने मध्यमध्यमवर्गीय की छोटी - बड़ी सभी समस्याओं को किसी न किसी रूप में पकड़ने की कोशिश की है और उन्हें व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों ही रूपों में चित्रित किया है।

सब प्रथम यदि हम मध्यमध्यमवर्गीय परिवार की नारी समस्याओं पर ही विचार करें तो हमें सर्वथा नये संदर्भों से जुड़ी हुई संघर्षशील नारी दिखलाई देगी। नारी की स्थिति, उसकी समस्याओं और संबद्ध प्रश्नों के विषय में विचार करते समय डा० धनंजय की निम्न पंक्तियाँ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं :-----

“एक ओर जहाँ वह अपनी सचाई में जीनेवाली नारी है, वहीं साथ संदर्भ से छटकर माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका भी है, कुछ ऐसे ही कहीं सिर्फ औरत है। उसमें आज की जीसत नारी की तलफछाहट, दिक्कत, पीड़ा अथवा विमुक्ति की हव तक पहुँची हुई सुविधा मान्यता, आचरण और व्यवहार है, वह उसी रूप में कहानी में व्यक्त हुआ है। कहानीकार अपनी ओर से कोई फौसला नहीं देता¹।”

विवेच्य कालीन कहानियों में नारी संवेदना को आधार मानकर जो विषय या समस्याएँ उठाई गई हैं उनमें कुछ रुढ़िगत विषय भी हैं। विधवा जीवन, अनपेक्षित विवाह, दहेज प्रथा और वैश्यावृत्ति तथा वैश्याचार इसी प्रकार के विषय हैं। मध्यमध्यमवर्गीय परिवार की केन्द्रीयता में स्वातन्त्र्योत्तर संदर्भ में कहीं इन समस्याओं की दिशा बदली हुई है और कहीं पुरानी सुधारवादी प्रवृत्ति को ही इनमें अपनाया गया है।

1- कहानी का बदलाव : डा० धनंजय, विकल्प कथा साहित्य-- विशिष्टार्क

1968, पृष्ठ-259, विकल्प कार्यालय, मोतीलाल नेहरू नगर इलाहाबाद-2।

वैधव्य के विविध आयाम: सुधारवादी कहानीकार वैधव्य की समस्या का समाधान विधवा विवाह से किया करते थे । वहाँ विधवा भारत की एक दया की पात्र और पीड़ित उपेक्षित स्त्री के रूप में वर्णित की जाती थी परन्तु विवेच्य युग में विधवा नारी ने अपने वैयक्तिक मानमूल्य को परिवार और समाज की सापेक्षाता से अलग होकर वांका है । समाज की सदस्य और देश की नागरिक होने के नाते उसकी एक अलग इकाई के रूप में नाना इच्छायें, अपेक्षायें और आवश्यकताएँ हैं । पढ़ी-लिखी शिक्षित विधवा कहीं किसी से दया और कृपा उधार ले । *तलाश* की विधवा जो एक जबान बेटे की माँ भी है, अपने अधिकारी से संबंध स्थापित कर लेती है जिसका ज्ञान उसकी बेटे को हो जाता है । बेटे का व्यवहार कहीं भी इस प्रसंग से उग्र या कटु नहीं हुआ अपितु एक मित्र के समान वह सँ की इच्छाओं की पूर्ति में सहायक बनती है । पुत्री माँ को एकान्त देने के लिए जब छात्रावास जाकर रहने लगती है तब माँ भी विरोध प्रदर्शन नहीं करती । सहज रूप में माँ बेटे अलग-अलग रहती हैं और प्रेम संबंधों की सुविधा माँ की मिल जाती है । विधवा नारी की यौनभावना का यह निरूपण परंपरागत वैधव्य के मानसिक तनाव को बहुत हल्का कर देता है ।

अपनी मुक्ति² की विधवा पति की मृत्यु के उपरान्त सीधा सादा जीवन बिताना चाहती है पर उसे चारों ओर की प्रतिकूल परिस्थितियाँ ऐसा नहीं करने देती । अपनी सुरक्षा और सैक्स की मूल भित्ति के लिए उसे पुरुष की आवश्यकता अनुभव होने लगी । इसलिए वह

- 1- तलाश-- कम्प्लैश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ-- पृ०-128, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वि० संस्करण- 1974 ।
- 2- अपनी मुक्ति-- राजेन्द्र उदस्यी, मेरी प्रिय कहानियाँ, पृ०-78, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1975 ।

उसे चाहने वाले व्यक्ति की काल में निश्चित होकर सौती हुई सरटि मरने लगी ।

दूसरे का मोग¹ कहानी कमलेश्वर की 'तलाश' से बिल्कुल विपरीत है । तलाश की विधवा माँ को उसकी बेटी प्रेम संबंधों की लुट्टी छूट देना चाहती है पर 'दूसरे का मोग' की बेटी इस बात से बहुत परेशान है कि उसकी विधवा माँ एक युक्त से यौनाचार करती है । यह विधवा अपने प्रेमी को दूर के रिश्ते का मामा बताती है और एक दिन उस तथाकथित प्रेमी की पत्नी जब उसके घर पर आघमकती है तब बड़ी शालीनता का व्यवहार करके अपने संबंधों की गोपनीयता बनाये रखना चाहती है । विधवा हृदय की मानसिकता और शारीरिक माँग का यह रूप आज के संदर्भ में कहीं से भी अनुचित नहीं लगता ।

'तस्बीर'² की विधवा का रूप उसी विधवा जैसा है जो सैकड़ों बर्षों से भारतीय पारिवारिक परिवेश में अपना विकृत और दयनीय जीवन बिताने को बाध्य है । सधवा होते हुए भी उसे पति का ध्यान नहीं मिला और विधवा होने पर ससुर के कठोर व्यवहार को झेलना पड़ा । घर का सामान उसी के सामने एक-एक करके बेचा जा रहा था पर वह चुप थी क्योंकि अपने और बच्चों के जीवन निर्वाह का प्रश्न था । यहाँ न विधवा विवाह है न प्रेम संबंध हैं, केवल परमुखापेक्षी भारतीय नारी का दैन्य है ।

दुनिया बहुत बड़ी³ है में दैन्य को प्रेम संबंध से जोड़कर विधवा

1- दूसरे का मोग-- गंगा प्रसाद बिमल, कोई शुरुवात, पृ०-71, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम संस्करण - 1973 ।

2- तस्बीर- भीष्म साहनी, पटरियाँ, पृ०-53, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973 ।

3- दुनिया बहुत बड़ी है-- कमलेश्वर, ज्ञान तथा न्यून कहानियाँ- पृ०-253 लोकप्रती प्रकाशन, 15-ए, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1972 ।

विधुर विवाह की प्रगतिशीलता का चित्रण किया है परन्तु यह विधवा 'पुनर्मौलिकीय' की तरह फिर वैधव्य की यातना सहती है और पारिवारिक उपेक्षा, शोषण, उत्पीड़न से इतनी निस्सहाय हो जाती है कि वह मारी मारी घूमती है कोई उसे नहीं पूछता। आत्मपरायणता का अन्कार उसके चारों ओर छाया हुआ है।

मध्यमवर्गीय परिवारों में माँ-बाप, भेटे-भेटियाँ साह-बहू यहाँ तक कि पति-पत्नी संबंधों का अवमूल्यन और विघटन हो रहा है फिर एक नवयुवती विधवा की तो स्थिति ही अलग है। घर या बाहर उसे सहारा चाहिए। इसलिए किबाड़¹ पर रोशनी की जबान विधवा पति की मृत्यु के पश्चात् अनेक प्रश्नों से घिर जाती है। प्रेम संबंध भी उसे विश्वसनीय नहीं लगते और अलग-अलग के कटुदाणों को फँसते हुए भी वह घर से जुड़ना चाहती है। अविश्वास और अनिश्चय की द्वन्द्वात्मक पीड़ा को मोगने वाली यह नारी वैधव्यजनित विरोधाभास में जी रही है।

अनमेल विवाह: अनमेल विवाह भारतीय कहानी साहित्य की शताब्दियों से चली आ रही समस्या है। भारतीय मध्यमवर्गीय परिवार में आधुनिक जागरण के युग में अनेक ऐसी नारियाँ हैं जो अनमेल विवाह की पीड़ा में आजीवन छुटती रहती हैं यद्यपि इस समस्या का मूल कारण मध्यमवर्ग में आर्थिक ही रहता है पर वैयक्तिक स्तर पर एक नवयुवती की मानसिकता से पाठक को सहानुभूति होती है। 'उर्मिल जीवन'² की सत्रह वर्णियाँ नीरा इसीलिए हमारी संवेदना को फकफोर जाती है। वह नीरू से सत्सा नीरा बनकर अपने

- 1- किबाड़ पर रोशनी, निरूपमा सेबती, हिन्दी कहानी-बदलते प्रतिमान- पृ०-238- डा० रघुवर दयाल बाण्णैय, पाण्डुलिपि प्रकाशन, ई-11।5 कृष्णाकर दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975।
- 2- उर्मिल जीवन- राजेन्द्र यादव, पहचान, पृ०-72, राजवाठ एण्ड संस काश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1974।

अपने प्रौढ़ जीजा की पत्नी बन जाती है और नन्हीं कृष्णा की माँ भी बन जाती है। वह फिर से बालिका बनने की कामना करती है पर नहीं, उसे लगता है जीवन तत्त्व ही निःशेष हो रहा है।

ठीक इसी प्रकार *नन्हीं* को भी ससुराल जाते ही माँ बनना पड़ा। नाना रंगीन कामनाओं में पगी नन्हीं जब नवबलू के रूप में ससुराल पहुँची और जाते ही नन्हीं बालिका ने नयी माँ के रूप में उसका हाथ सींच लिया। कल तक वह अपनी माँ के वात्सल्य से लिपटी छोटी सी बेटि थी और आज वह अकस्मात् माँ बन बैठी। एक नबोदा की रंगीन कल्पनाओं के सामने वनेक प्रश्न चिन्ह उभर जाते हैं।

एक रोमैन्टिक कहानी^१ की सखिमणी को घोसे से एक मिरगीवाले मरीज से ब्याह दिया जाता है जो सखिमणी से उमर में बहुत बड़ा है। वैचारी सखिमणी ससुर की मृत्यु के बाद संबंधियों की गुणहागर्दी, बदतमीजी और उपेक्षा से निरन्तर संघर्ष करती रही और जीवन का शुभ रास्ता खोजती रही उसने शिक्षा प्राप्त की, नौकरी की, पति को इलाज के लिए भेजा पर जीवन की विषमताओं से वह इतना ऊब चुकी थी कि एक दिन तीर्थ यात्रा पर जाकर फिर नहीं लौटी। शायद कहीं भारतीय परिवार को कौसती हुई मगवान से उसकी शिकायत कर रही होगी।

बेश्याचरणा व बेश्यागामिता :

बेश्यावृत्ति एक हीन कर्म है जिसे स्त्री परिस्थितिकर ही अपनाती है। यदि नारी को पारिवारिक उदारता और सुचारु जीवन

- 1- नन्हीं- मोहन राकेश, एक घटना, पृ०-13, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम सं०-1974।
- 2- एक रोमैन्टिक कहानी- भीष्म साहनी, पटकती रात पृ०-97, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली- प्रथम सं०- 1966।

अतीत करने की सुविधा मिले तो वह कदापि इस नारकीय जीवन को स्वीकार नहीं करेगी। वेश्याचार और वेश्यागायिका की समस्त कहानियों की मूल संवेदना आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक घात प्रत्याघातों से परिचालित दिखाई देती हैं। सौ कैण्डल पावर का बल्ब¹ में जिस वेश्या का चित्रण किया गया है वह एक ऐसी युवती है जिसने परिस्थितिवश इस जघन्य कर्म को स्वीकार किया है। आत्म पीड़ा की अनुभूति से उसे रात भर नींद नहीं आती। पुरुषों के प्रेम में वह उसे कबास लगते हैं पर क्या करे वह शरीर बेचने को विवश है।

वेश्याचार या वेश्यावृत्ति केवल कोठे पर बैठने वाली औरत ही नहीं करती। यह भी जरूरी नहीं है कि परित्यक्ता कुमारी या विधवा औरत ही शरीर-व्यापार करे। सब ठीक हो जायेगा² में एक विवाहिता पत्नी अपने पति की उपस्थिति में घर पर ही धन्धा करती है। यहाँ भी कारण आर्थिक विवशता ही है। पति फोफड़े के कैंसर का रोगी है उसकी जायदाद भाइयों ने छुप ली है, वह कुछ न कर पाने की असमर्थता में पत्नी की अभिचार की कमाई खाता है। पहले यह पत्नी जिस मकान में पति के रहते धन्धा करती थी, पति की मृत्यु के उपरान्त मकान मालिक से अपमानित होकर, उसने वह छोड़ दिया और बाग़ का जीवन चलाने के लिए दूसरे मकान में जाकर धन्धा करने लगी। इस कहानी में समस्या दोनों की है, पति की भी और पत्नी की भी। अतः विवशता और सघन हो गयी है।

1- सौ कैण्डल पावर का बल्ब- मण्टी- सहक के किनारे, पृ०-26, प्रथम संस्करण-1968- प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य, पृ०-118, हाठ राधेश्याम गुप्त (शौच ग्रंथ)।

2- सब ठीक हो जायेगा - दूधनाथसिंह, सपाट चेहरे वाला बादमी, पृ०-51 बदार प्रकाशन, प्रा०लि०, दरियार्गज, दिल्ली- प्रथम संस्करण-1967।

वैधव्य स्वर्य में एक अभिशाप है फिर पति की मृत्यु के बाद जो दूसरों के क्रण के बोझ से दबी हो वह मध्यममध्यमवर्ग की स्त्री क्या करे ? निरुपाय वह उस क्रण को अपने शरीर से चुकाती है । "मांस का दरिया" की जानू ऐसी ही नारी है । वह स्वर्य बीमार है पर बेसहारा पहाड़ सी विन्दगी को काटने के लिए धन्या करती है ।

कहा जाता है कि प्रेम अन्या होता है । इसी अन्याय की शिकार "टूटे तार" की एक भली घर की लड़की हो गई और बदले में उसे बदनामी के साथ-साथ एक अवैध कन्या भी मिली थी । यद्यपि उसने बेटी को अपने से अलग एक अच्छे परिवार में रखा और तन बेच-बेचकर उसे पढ़ाया पर रही तो वह वैश्या ही । इसी कारण बड़ी होने पर जब शीला की शादी होने लगी । तब समाज के ठेकेदारों ने उसे इसलिए तुहवादिया कि वह लड़की वैश्या की है । पुनरुद्धार और सम्मान को मिला बनाने के लिए वह माँ वैश्या बनी पर समाज ने उस भली बेटी को भी कहाँ स्वीकारा ? आज के प्रगतिशील समाज में भी इतना दम नहीं है कि वह मानवीय अधिकार को लुटे दिल से स्वीकार करे । चाँद चलता रहा³ की युवती कल्पन में ही माँ-बाप की मृत्यु और बाद में भौतर के मर जाने पर अपने अभावग्रस्त जीवन को मरने के लिए वैश्या जैसा वाचरण करने लगती है ।

- 1- मांस का दरिया, कमलेश्वर, संग्रह यही-- पृ०-82, अक्षर प्रकाशन, पृ० लि०- 2136 अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली ।
- 2- टूटे तारे- शिवप्रसाद सिंह- इन्हें भी इन्तजार है, पृ०-75, हिन्दी प्रचार पुस्तकालय-वाराणसी- संस्करण- 1961 ।
- 3- चाँद चलता रहा- उषा प्रियम्बदा- जिंदगी और गुलाब के फूल, पृ०-94- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाषमार्ग, दिल्ली- तृतीय संस्करण- 1973 ।

वायुनिक नगरबोध की यांत्रिक विमीणिका ने वादमी को इतना दृढ़ बना दिया है कि काला रोज़गार का एक भाई अपनी बहन की जिस्म की कमाई पर ऐश करने में तनिक भी संकोच व शर्म नहीं अनुभव करता। इस घन्चे में बहन को आपरोशन भी कराना पड़ता है पर भाई बंक्ड के होटलों में कड़ी शगुन और अकड़ से रहता है।

चारों ओर की चोट सहते - सहते जब इन्सानियत की डोर टूट जाती है तब कीड़े-मकौड़े का भाई अपनी बहन के लिए ग्राहक जुटाने लगता है। यह भाई जिजीविषा के हेतु ऐसा करता है जबकि 'काला रोज़गार' का भाई वायुनिक मटकब और क्लिासी जीवन की लालसा से बहन से वेश्याचार कराता है।

लगता है वायुनिक बहनों को माइयों की आर्थिक जिम्मेदारी का अधिक अहसास है फिर बहन को स्त्री शरीर की लुबिधा है जो कि भाई को नहीं है अतः रोज़गार की बहन महानगरीय वातावरण में मिसदारु-बाला के नाम से मशहूर होकर शारीरिक व्यवसाय से अपने केकार भाई के बिलों का पैमेन्ट करती है।

वेश्यावृत्ति का सीधा संबंध स्त्री से है और वेश्यागामिता का पुरुष से। आज के परिवेश में जो तरुणापीढ़ी निरुदेश्य, दिग्भ्रमित और निष्क्रियता की जटिल स्थितियों से गुजर रही है वह अपना वाक़ोस और विद्रोह वेश्याचार और शराब सोरी से करता है। व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करने का संभवतः सबसे सरल मार्ग उन्हें यही दिखाई

-
- 1- कलारोज़गार-- मोहन राकेश, जानवर और जानवर पृ०-३६।
 - 2- कीड़े-मकौड़े- राजेन्द्र किशोर, वी मत्स्यगन्धा, पृ०-13, किताब महल, इलाहाबाद।
 - 3- रोज़गार- मोहन राकेश- बारिस- पृ०-70, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरीगेट, दिल्ली, प्रथम सं०- 1972।

देता है। इधर पश्चिमी युवा पीढ़ी और हिप्पीबाद ने भी भारत के युवावर्ग को झुकाया है। यह भटकाव विवेक्य युगीन मध्यवित्त परिवार में यत्र तत्र पाया जाता है।

सितम्बर की एक शाम¹ का दिशाहीन युवा माई बहन के घर पहुँच जाता है और बहन उसको किराये के लिए जो रुपये देती है उसको वह तत्काल एक वेश्या के यहाँ जाकर उड़ा देता है। कटघरे में साँस² के बाप और बेटा दोनों औरत बाजी करते हैं। पारिवारिक संबंधों के बिसराव के मध्य बाप और बेटे की कहीं वात्सीयता नहीं नजर आती। बेटे के भेजे हुए रुपयों से बाप औरतों के पास जाता है और बाद में एक ऐसी स्थिति भी बाई कि जिस लड़की के पास बाप पैसे फूँक जाता था उसी के पास बड़ा बेटा पहुँच जाता है। कुँहरी³ के दो मित्र शराबी माहौल में रँही के दर्शन करते हैं। उनकी दृष्टि में विवाह इन्सानों का काम नहीं है क्योंकि वेश्या से भी काम चल सकता है। *बिना दीवार का घर⁴* कहानी सामन्ती ऐय्याशों की याद दिलाती है। होटल में ठहरने वाले मियाँजी, कुँबर साहब, डाक्टर साहब सभी को नई-नई औरतों की मार्ग है। औरत की जिस्म की चाह में सब तड़फ रहे हैं।

- 1- सितम्बर की एक शाम, निर्मल वर्मा, परिन्दी पृ०-122, राजकमल प्रकाशन, दरियार्गज दिल्ली-6।
- 2- कटघरे में साँस- मणिमपुकर- हवा में अकेले- पृ०-149, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियार्गज दिल्ली- संग्रह -1972।
- 3- कुँहरी- महेन्द्रमल्ला, तीन बार दिन- पृ०-56, रचना प्रकाशन, 45-ए-हुल्दाबाद- इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1972।
- 4- बिना दीवार का घर- शिव प्रसाद सिंह, कर्मनाशा की हार- पृ०-25 भारतीय ज्ञानपीठ-काशी।

वै सौदा पटाने में व्यस्त हैं। घर से निकलकर यही एक स्थाविर मानो उन्हें पूरी करनी है।

शारीरिक व्यसाय से कोई सफल बैश्या जब व्योपार्जन करने लगती है और उसकी मांग बढ़ जाती है तब अपने सौन्दर्य और पैसों पर उसे गर्व होने लगता है। ऐसी स्थिति में वह अपने वर्तमान से इतनी संतुष्ट हो जाती है कि किसी के हार्दिक प्रेम की भी परवाह नहीं करती। बनिया बना बनाम इश्क की बैश्या अपनी प्रेमी की एकमात्र महबूबा तमी बनने को तैयार है जब वह उसकी कीमत एक हजार रुपये दे दे इससे कम में उका गुजारा नहीं हो सकता। जब वह गुजारा करती है। लोग उससे चुल्लू करते हैं, उस पर फावित्बाँ कसते हैं। यह सब उसके महबूब को नहीं रुचता पर वह उसकी कीमत नहीं दे सकता और पूँजीवादी समाज में प्यार भी पैसे से खरीदा जाता है।

यौनाचार सैक्सवराजकता : सहज मानवी प्रकृति के रूप में यौन व्यवहार को हमने धर्म तक में बड़ी महत्ता प्रदान की। हमारे भारतीय धर्म स्थानों तक में इस मानवी धर्म को स्वीकार किया गया है। यह जानने के लिए हमें फ्रायड के दर्शन की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि जीवन में यौन बुभुक्षा का कितना बड़ा स्थान है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि उच्छल यौनाचार आज की युवापीढ़ी का महत्तम अमिशाप है। इसके कारण मूलतः सामाजिक हैं अतः यदि विवेच्य युगीन परिवार के पात्र यौन विकृति, यौन अनाहार अथवा सैक्स की मूल से आक्रान्त हैं तो वे हमारी धृणा के नहीं सहानुभूति के पात्र हैं।

12 बनिया बनाम इश्क- देवेन्द्र इस्सर, काले गुलाब की सलीब- शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-30, प्रथम संस्करण- 1970।

पति-पत्नी के बीच बिना किसी लड़ाई फगड़े या विरोध के जब तीसरा व्यक्ति चाहे उसे प्रेमी, प्रेमिका या मित्र कुछ इसलिए अच्छा नहीं लगता कि वह उस दिन को पवने प्रेमी सुखबन्त के साथ बिताना चाहती है। वह अपने पति को 'लेजी हर्षवृण्ड' समझती है। यह पति अपनी पत्नी को उसके प्रेमी के साथ घूमने मेज देता है और दोनों के लौट आने पर चाय बनाता है। लगता है वह घर का नौकर है। संबंधों की यह निर्भीक तटस्थता आज के उन्मुक्त जीवन की देन है। 'कटीली हाँह'¹ के मास्टर साधु प्रकृति के वीर विवाहित होते हुए भी सैक्स की मूल के वाकेश में गलत कदम उठा लेते हैं। प्रीढ़ावस्था में विवाह करके भी वे पत्नी को साथ नहीं रख सके क्योंकि शहर में नौकरी करने वाली प्रधानाध्यापिका पत्नी ने कसबाई जीवन में जाना पसन्द नहीं किया और एक दिन कम्पाउंडर की पत्नी से झड़क लड़ाते हुए पकड़ लिये जाने पर उन्हें मकान सौंपी करना पड़ा। रेगिस्तानी जिंदगी में सैक्स का यह प्रसंग न अस्वाभाविक लगता है न अनुचित।

विवाह जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। पति-पत्नी के संबंधों से व्यक्ति को आत्मपीड़ा, अकेलेपन की व्यथा और शारीरिक माँग सबका समाधान हो जाता है। मले ही विवाहोपरान्त यह समाधान न हो और कुछ नये प्रश्न उपस्थित हो जायें लेकिन अविवाहित वीर कुमारी युवती कुछ ऐसा ही सोचती है। और जब विवाह नहीं होता तब वह जिस तिस से संबंध स्थापित करके अपनी शारीरिक आवश्यकता को पूरा करती है। 'प्रेमिन्दस'² कहानी इसी सत्य का उद्घाटन करती है। एक प्रधानाध्यापिका विवाह

1- कटीली हाँह, उष्ण प्रियम्बदा, जिन्मगी और गुलाब के फूल, पृ०-76, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली- तृतीय संस्करण 1971।

2- प्रेमिन्दस- मगबती चरण-बर्मा, इन्स्टालमेंट, भारती मंदार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

करने की प्रवृत्ति बच्चक रही परन्तु उसके जीवन में भी कहें, प्रवेश करता है तब हमारे परम्परानुमोदित नैतिक संस्कारों को ठेस सी पहुँचती है पर बाप के संदर्भों की परख करते हुए यदि हम इस पर विचार करें तो कुछ भी अजीब नहीं लगेगा। इसका मुख्य कारण है पारवात्य सभ्यता का प्रभाव तथा उससे उत्पन्न व्यक्ति चेतना और बलम् जैसी प्रवृत्ति का उदय। एक दूसरा कारण विशेष रूप से नारी पक्षीय यौन उन्मुक्तता का यह भी है कि सदियों की दासता से पीड़ित और दलित भारत की नारी ने जब खुली हवा में साँस ली और शिक्षा तथा जीविका जैसे घटकों ने उसको अपने व्यक्तित्व को पहचानने और स्वतंत्र जीवन निर्माण का अधिकार दिया तब वह प्रणय और परिणय के दीप में भी अपनी निजी कामना का उपयोग करने लगी। इन्हीं मातृदण्डों के आधार पर विवेच्य कहानियों में यौनवृत्ति की व्यथना को समझना चाहिए। यौनाचार और सैक्स संबंध विवाहित, अविवाहित और विधवा सभी प्रकार के पात्रों में प्राप्त हो जाते हैं।

तीन चार दिन की पत्नी¹ अपने पति से अपने पुरुष मित्र की बात नहीं छिपाती और पति भी पत्नी के सम्मान से पूरी तरह परिचित हैं। अपने एकाकी परिवार में भी पति-पत्नी दोनों अलग-अलग दायरा बनाये हुए हैं। *अपने-अपने दायरे*² का पति पत्नी और विवाहिता पुत्री की जानकारी में ही रात को अपनी आया से इश्क लड़ाने उसके कमरे में पहुँचता है। न उसे पत्नी से ध्यार है न बेटी से ममता। सामन्तवादी युग के पुरुष जैसा अहार इस पति में कूट-कूट कर मरा हुआ है यह यौन

1- तीन चार दिन, मेहेन्द्रमल्ला (संग्रह यही) पृष्ठ-

रचना प्रकाशन, 45-ए, सुल्ताबाद, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण-1972

2- अपने-अपने दायरे-- मेहेन्द्रमल्ला परियेज, आदम और हब्बा- नैतिक पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, दिल्ली- प्रथम सं०- 1972।

जुमुदा का रूप है। उरी हुई बीरत¹ की पत्नी रबिबार को भी पति का घर में रहना जितने भी व्यक्ति वाये सब उसके शरीर के भूते थे। कोई भी उसका पति बनने को तैयार नहीं हुआ। यद्यपि प्रत्येक को उसने माबी पत्नी के रूप में देखा पर सब उसे प्रेजेन्स देकर चले गये जिनकी संख्या एक सौ तेरह तक पहुँच गई थी। यद्यपि एक जीविकारत नारी का विवाह न होना और एक सौ तेरह प्रेमियों का उसके जीवन में जाना बहुत ही अतिरिजनापूर्ण और असहज लगता है लेकिन कौमार्य की मार्ग और भोग लिप्सा के परिप्रेक्ष्य में देखने पर कहानी में कुछ भी अनुचित नहीं दिखाई देता।

एक थी विमला² की कुमारी लज्जा शादी करना चाहती थी पर कोई उसे पतिरूप में प्राप्त न हो सका। अतः उसने जीवन को नये रास्ते पर ढालकर पिछले चार पाँच वर्षों की जिन्दगी को सुख सुविधा संपन्न बना लिया। नये-नये प्रेमियों की दोस्ती से उसका परिवार मालामाल हो गया। वह जाड़ोस-पड़ोस में चीज के नाम से पुकारी जाने लगी। रात को दो बजे घरवालों के दरवाजा न खोलने पर उल्टे वह उन्हें डाँट लगाती थी। स्वयं की जिन्दगी भी ठीक हो गयी और परिवार भी संपन्न बनने लगा। इसी प्रकार लुले पंत टूटे हैंने³ की विवाहिता मीनल तीन पुरुषों के संपर्क में आकर भी विवाहित नहीं हो पाती। प्रौढ़ावस्था में अपने रिक्त जीवन को वह विहम्बना के रूप में देखती है।

- 1- उरी हुई बीरत - रवीन्द्रकालिया- नई कहानी, कथ्य और शिल्प (शोधार्थ) पृ०-212, डा० सन्त बत्तसिंह, अभिनवभारती प्रकाशन- 42 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1973
- 2- एक थी विमला, कमलेश्वर, लोई हुई दिशारं, पृ०-84, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं०- 1962।
- 3- लुले पंत टूटे हैंने- राजेन्द्र यादव, नई कहानी, दशा दिशा से मानना श्री सुरेन्द्र, पृष्ठ-203, अपोलो पब्लिकेशन, जयपुर, प्र० सं०-1966।

नौकरी पैसा सब कुछ होते हुए भी एकाकी जीवन की रिक्तता, पूर्ति¹ की तारा को सलती रहती है। नलिन से उसका संबंध औपचारिक ही था पर एक दिन उसकी दबी हुई यौन कामना उद्दीप्त हो उठी और वह दिनभर के मटकें हुए पंखों के साँफ की मीढ़ में जाने के समान नलिन की फँली हुई बाहों में आ गई। सैक्स- अनिवार्यता का यह पहलू बाठक को तनिक भी अनैतिक नहीं लगता।

‘अग्निस्तोर’² की नायिका सैक्स वराजकता का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। पता नहीं वह विवाहिता है, परित्यक्ता है या विधवा है। तरह- तरह के लोगों से उसकी बदनामी जुड़ी हुई है। वह गर्भपात चाहती थी पर ऐसा न होने पर होली फैमिली हास्पिटल में पुत्रोत्पन्न करती है और पुत्र को वहीं छोड़कर चली जाती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सैक्सभावना की पूर्ति नहीं हो पाती और नारी आत्म कुण्ठा और हीनता की भावना से ग्रसित हो जाती है। इस प्रकार की सैक्स यन्त्रणा की कहानियाँ भी विवेक युगीन परिवार की नारी को लेकर प्रायः लिखी गई हैं। मक्ली रे तू सुतती क्यों नहीं³ की पुष्पा, माया दर्पण की तरन मिसपाल की मिसपाल तथा पांचवें

- 1- पूर्ति- उषा प्रियम्बदा, जिन्दगी और गुलाब के फूल- पृ०-60, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, प्रथम सं०-1962।
- 2- अग्निस्तोर- फणीश्वर नाथ रेणु, मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-118-- राजमाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6, प्रथम सं०-1973।
- 3- लक्ष्मीनारायण ठाकुर, एक झुंडक, पृ०-97- प्रथम सं०- 1974।
प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य (श्रीकृष्ण) डा० राधेश्याम गुप्त-पृ०-69,
विमल प्रकाशन, तेली बाड़ा, जयपुर।
- 4- निमैल क्यों-- जलती फाड़ी- पृ०-22, वही पृष्ठ- 71।

माले का फ्लैट की नायिका¹ * विवाह न हो सकने की विवशता से यौन उत्तेजना और सैक्स यन्त्रणा की शिकार बनी हुई हैं। प्रत्यक्ष रूप में वे अपनी कामना को पूरा नहीं कर पातीं पर मानसिक व्यभिचार की दयनीय स्थिति में वे जीवन बिता रही हैं। इन कहानियों के पात्र अधिक वात्सपरक तथा वैयक्तिक हैं। समाज और परिवार में जीते हुए भी वे उनके सक्रिय अंग के रूप में नहीं दिखाई देते।

परम्परा-विद्रोह: बदलती हुई परिस्थितियाँ, शिक्षा और विनाय वार्थिक स्थितियाँ ने नारी को परम्परा से विद्रोह और इच्छियों से मुक्त होने की शक्ति प्रदान की है। स्वतंत्रता के उपरान्त चेतनाशील नारी शनैः शनैः गली सड़ी मान्यताओं को मानने से इन्कार करती जा रही है। इस प्रकार की कई कहानियाँ हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं।

संघर्ष की नायिका रेणु को जब यह ज्ञात होता है कि उसके पिता सौतेली माता की प्रेरणा से, एक तीसरा बर्णिय दुहेजू वर से उसका विवाह करने वाले हैं तब वह भावी वर को अपने विरोध का पत्र लिखती है जिसमें वर की आत्मा फकफोर डाला और उसने दामा याचना की।

मुरब्बावाली³ कहानी की विशेषता यह है कि इसमें नई पीढ़ी की लड़की के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी (तीसरी पीढ़ी) की उसकी नानी भी इच्छि-विद्रोह कर उठती है। पूरे परिवार के उग्र विरोध के बावजूद भी साहिबा ने अपने प्रेमी से विवाह करने की ठान ली। साहिबा

1- पाँचवें- माले का फ्लैट- मोहन राकेश, पृष्ठ-9, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1969।

2- संघर्ष- सौमावीरा- स्वातन्त्र्योत्तर कथा लेखिकारं- पृष्ठ-44, (शोकार्णव) डा० उर्मिला गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन-अजमेरी रोड, दरिबानंज, दिल्ली- प्रथम सं०-1967।

3- मुरब्बावाली- अमृता प्रीतम, वह बादमी वह औरत-पृष्ठ-36, राजवाठ एण्ड संत, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974।

जाट थी और प्रेमी यजहर्षाबाला प्रेम विवाह और वह भी अन्तर्जातीय ।
लड़की का साहस सराहनीय था पर आवश्यक तब होता है जब नानी स्वीकृति
सूचक शब्दों में कहती है -- "लोगों का क्या है, चार दिन बोल के तिमकों
की जाग की तरह बुक जायेंगे ।"

लकड़हारा² में दहेज-समस्या है जिसका विरोध लड़की करती है ।
इच्छानुसार धन राशि न मिलने पर पिता ने अपने बेटे को भाँवरों से उठा
लिया । शिष्टांत बेटी इस अपमान को सहन न कर सकी * मैं किसी गँवार
का हाथ पकड़ लूँगी, मैं उसे पढ़ा लूँगी लेकिन इन राक्षसों को घर से
निकालिए * कहते हुए उसने लकड़हारे सुमेरा को भाँवरों के ताली पट्टे पर
सींच लिया । मीराजना एक साहसी और स्वाभिमानी लड़की है । दुर्लभ
आर्थिक स्थिति के कारण घरवाले उसे पढ़ाना नहीं चाहते । वह अपने
प्रोफेसर की सहायता से पढ़ती है पर बाद में उसके पाँच सौ रुपये लौटा
देती है क्योंकि उसका स्वाभिमान दया की भीख स्वीकार नहीं करना
चाहता । अपनी सगाई को भी वह इसलिए अस्वीकार कर देती है कि जीवन
का नया रास्ता जो उसने चुना है उसमें किसी बाधा से समझौता नहीं
करना चाहती ।

1- मुरझोवाली- अमृता प्रीतम, वह बादमी वह औरत- पृ०-40,

राजपाल एण्डसन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974 ।

2- लकड़हारा- राजेन्द्र यादव, जहाँ लक्ष्मी कैद है, पृ०-100, अक्षर प्रकाशन
प्रा०लि० 2136-बन्सारी रोड, दिल्ली ।

3- ,, ,, - वही-- ,, ,, पृ०-109 ।

4- मीराजना, राजेन्द्र यादव, जहाँ लक्ष्मी कैद है-- पृष्ठ-77,
अक्षर प्रकाशन- प्रा०लि०, 2136-बन्सारी रोड, दिल्ली ।

इतिहासयुक्ति की ये कहानियाँ नई दिशा और नई संभावनाओं का दिशात्मक तैयार करती हैं ।

नौकरी पेशा नारी: नारी की आत्म निर्भरता और जीविका ने इटिबों को तोड़कर उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा की है पर साथ ही व्यक्तित्व की अलग स्थापना से नारी के अपने जीवन में अनेक छोटी बड़ी समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं । एक ओर वह परिवार के दायित्व को संभालने में सहयोगी बनती है तो दूसरी ओर पारिवारिक संबंधों की कहियों को तोड़ने और एडजस्ट न करवाने आदि स्थितियों को भी झेलती है । अनेक बार दाम्पत्य विघटन तक की नीवत आ जाती है । फिर भी अधोपार्जन के आधार पर उसने अलग और विशिष्ट स्थान तो बना ही लिया है । विवेच्य परिवार की नौकरी पेशा नारी से संबंधित अनेक कहानियाँ उपलब्ध होती हैं ।

एसाने आकाश¹ नाई की लेखा कलकत्ता में नौकरी करती है । अवकाश का कुछ समय चैन से बिताने जब वह अपनी ससुराल (गाँव में) जाती है तब वह और बेचैन हो जाती है । जिहानी की व्यंग्योक्ति, सास की पैसा माँगने की लालुपता और पूरे घर के माहौल से लेखा पराबैपन का शिकार बन जाती है । कहीं भी वह एडजस्ट नहीं कर पाती ।

सुहागिनी की मनोरमा हैमिस्ट्रैस होते हुये भी मानसिक रूप से पीड़ित है । वह पति से अलग रहकर नौकरी करती है क्योंकि पति को अपने परिवार वालों के लिए पैसे की जरूरत है । वह माँ बनना चाहती है, मातृ की ललक उसे कबोटती रहती है पर क्योंकि उसके पति को बहन की शादी

1- एसाने आकाश नाई- मन्मू मंडारी - मन्मूमंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ,

अक्षर प्रकाशन- प्रा0लि0, 2186-अन्सारी रोड, दरियामगं, दिल्ली-6 ।

2- सुहागिनी- मोहन रॉकेश, एक और जिन्दगी- पृष्ठ-15, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1970 ।

करनी है, माइयों को पढ़ाना है अतः पाँच साल अभी वह ऐसा नहीं चाहता । पत्रों में वही ऐसे बचाने की बात चीजें तरीदने की सलाह और अन्त में वालिंगन बुम्बन की औपचारिकता मनोरमा आत्मनिर्भर होकर भी दाम्पत्य और मातृत्व के लिए जैसे तरस रही है । वह चिड़चिड़ी और रुसी हो गई है ।

जिन्दगी और गुलाब के फूल¹ की बहन ने आत्मनिर्भर बनकर हिन्दू समाज की इस पुरानी मान्यता को झूठा दिया है कि परिवार में बहन की स्थिति माई से निम्नतर होती है । बेकार बड़े माई का बौका उठाकर यह बहन एक पुराने सत्य को नया रूप दे रही है पर माई का विवाह अलग है । उसकी हर चीज बहन के कमरे में पहुँच जाती है । और वह अपने को घर में बीना सा महसूस करने लगता है ।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद नौकरी और नौकरी इसलिए भी कि उपयुक्त जीवन साथी की प्राप्ति तक ताली समय व्यतीत करना है । साथ ही सामाजिक उपयोगिता और शिक्षा के उपयोग का मनस्वी भी इससे जुड़ा हुआ है । जीती बाजी की हार² की नारी अच्छे साथी की तलाश में नौकरी करते-करते प्रौढ़ होने लगती है पर प्रणय निवेदन लेकर कोई नहीं जाता । ऐसी स्थिति में वह किसी भी पुरुष के साथ घर बना लेती है पर घर का वातावरण ही ऊब और अकान से होता है ।

1- जिन्दगी और गुलाब के फूल-- उषा प्रियम्बदा - संग्रह यही-

पृ०-180- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन , नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली- तृतीय संस्करण-1971 ।

2- जीती बाजी की हार- मन्नु मंडारी- मैं हार गई- पृ०-35

बहार प्रकाशन प्रा० लि० 2136 अन्सारी रोड, दरिबार्गज, दिल्ली- बहार संस्करण-1973 ।

नारी जीविका ने पति पत्नी के एक दूसरे पर स्काधिकार के परम्परागत मूल्य को सिद्धि कर दिया है। जब तक वह घर की बहारदीबारी के अन्दर गृहिणी मात्र थी तब तक ऐसा नहीं था किन्तु घर से बाहर कदम रखकर नौकरी पेशा बनते ही वह पति की शंकाओं और कुण्ठाओं का कारण बन गई। धीरे हुए दाणा¹ की आत्मनिर्भर मोहिनी ऐसी ही स्थिति में है। पत्नी के पर-पुरुषा² से मिलने जुलने पर मोहिनी का पति अत्यन्त चिंतित रहता है। ईर्ष्या, अविश्वास और शंकाओं को सहने के लिए पत्नी तैयार नहीं होती। परिणामस्वरूप दोनों के बीच दूरी और कलह बढ़ने लगती है।

कंटीली हाँह³ का पति पत्नी से दूर रहने के कारण गलत कदम उठा बैठता है और उसे अपमानित होकर मकान से निकलना पड़ता है क्योंकि जीविका अत्यन्त पत्नी उससे अलग है और वह अकेलेपन की दीनता में समय बिताता है। उसकी पत्नी उसके परिवार के लिए समस्या बनी हुई है क्योंकि वह अपने वहम् में किसी को उचित वादर नहीं दे पाती।

धिराब⁴ की नौकरीपेशा पत्नी ने तनाव की कटुता से जब पति को त्यागकर नये जीवन साथी की तलाश कर लिया तब बाह्मर भी वह अतीत को नहीं मूल पाती। पहला पति अमर उसे बुरी तरह से धीरे हुए है। धिराब बाहर का नहीं, अमर की तरफ से भी नहीं, यह उसके मनका है।

- 1- धीरे हुए दाणा- महीपसिंह, हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- सविता जैन, पृ०-127- समकालीन हिन्दी कहानी और मूल्य संघर्ष की दिशा-

संपादक डा० रामदरश मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली- प्रथम सं०-1970।

- 2- कंटीली हाँह- उषा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल- पृ०-84। भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नेताजी सुभाषमार्ग, दिल्ली- तृ०सं०-1971।

उसकी सन्तान भी पहले पति से है। चैष्टा करने पर भी वह अपने को निरपराध नहीं बना पाती, उसके भीतर का संस्कारगुस्त पत्नीत्व या मातृत्व उसे आतंकित किये रहता है।

सैल,¹ छोटे छोटे ताजमल्ल,² ईसा के घर इन्सान³, थागे⁴, घर⁵, एक दिन की छाया⁶, जिनके घर डहते हैं⁷, आदि कहानियाँ नौकरी करने वाली स्त्री की संक्रान्त स्थितियों का उद्घाटन करती हैं। बाध्य परिस्थितियाँ, पारिवारिक परिवेश तथा उसके अन्तर की महत्वाकांक्षिणी और दिवास्वप्न देखने वाली नारी भी नकारात्मक परिणाम उपस्थित करने में योग देती है। संक्रमण की स्थिति कैसी भी हो यह निर्विवाद है कि नारी के स्वावलम्बन ने उसे सामाजिक इकाई के रूप में जो सम्मान दिया है वह किसी भी देश के लिए गर्व और गौरव का विषय है।

- 1- राजेन्द्र यादव, छोटे-छोटे ताजमल्ल- पृ०-२२, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- दूसरा संस्करण- 1972 ।
- 2- राजेन्द्र यादव, छोटे-छोटे ताजमल्ल- पृष्ठ-176, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली, दूसरा सं०-1972 ।
- 3- मन्नु मंडारी- नई कहानी की उपलब्धियाँ - धनंजय वर्मा पृ०-103, नई कहानी दशा दशा संभावना - श्री सुरेन्द्र अपोला प्रकाशन, जयपुर, प्रथमसंस्करण- 1966 ।
- 4- निमील वर्मा-- पिछली गर्मियों में, पृष्ठ-7, राजकमल प्रकाशन, प्रा०लि० नेताजी सुभाष मार्ग दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968 ।
- 5- सुधा बरौड़ा- हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- पृ०-103 । संपादक- डा० रामदत्त मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन- नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970 ।

नगरबाँध: स्वातन्त्र्योत्तर कहानी में सामाजिक यथार्थ के जो विभिन्न संदर्भ उपलब्ध होते हैं और जिन्होंने मध्यवर्ति परिवार को विकराल रूप से प्रभावित किया है, उनमें से एक नगरबाँध की प्रवृत्ति है। अनेक कहानियों में महानगर और नगर जीवन की संबन्धनस्थ स्थितियों का चित्रण किया गया है।

पारदर्शिक¹ में जब से भाणी ने सुना है कि दुर्घटना में तनेजा साहब की मृत्यु हो गई है तब से उसे अपने पति के लिये चिन्ता हो जाती है। क्योंकि महानगर में सब एक दूसरे से उदासीन रहते हैं इसलिए भाणी की भीतरी चेतना में मृत्युमय घहराता रहता है।

उससे दिल्ली में एक मौत² का मैं इस बात से चिंतित है कि कोई वाकर सर्दी में सेठ दीवान चन्द के शवदाह में चलने को न कह दे। अन्त्येष्टि के लिये भी लोग तैयार होकर आते हैं ताकि श्मशान से सीधे पार्टी या कॉफी हाउस में पहुँचा जा सके। सब यात्रा भी बोरियत लगती है अतः महानगरों में सीधे शव पर जाकर फूल चढ़ाना ही ज्यादा सरल समाधान जाता है और अब तो विज्ञान ने इतनी प्रगति करली है कि शव को गाड़ी में ले जावो और बिजली का बटन दबाकर शवदाह कर दो।

नये-नये जाने वाले³ में एक वीफिसर को लगता है कि प्रत्येक जानेवाला व्यक्ति कुछ सहायता लेने आया है इसलिए चाहते हुए भी वह निजी

1- पारदर्शिक- महीपर्सिह- धिराब- राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

2- दिल्ली में एक मौत- कमलेश्वर, लोई हुई दिशायें पृ०-३०
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन दुर्गाकुण्ड मार्ग, बाराणसी-५।

3- नये-नये जानेवाले- राजेन्द्र यादव, लोटे-लोटे ताजमल्ल पृ०-१०
राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

रिश्तेदार से नहीं मिलता । अन्तर्धन में कहीं यह भाव उभरता है कि शिष्टाचार को फटक कर उससे अँधेरे में अपनत्व की बात करे पर नहीं कर पाता ।

पराया शहर¹ में एक ठेक्कार नगरबोध की विभीषिका से आक्रान्त है । नीकरी पाने के बाद वह पत्नी व बच्चों को कैसे लाये जबकि मकान नहीं मिल रहा है । सर्वत्र अकेलेपन का अन्धकार उसे घेरे रहता है । मकान मालिक के दुर्व्यवहार से वह किंकरव्यविमूढ़ हो उठता है । मकान सौली करने की चेतावनी ने उसे दीनहीन बना दिया है ।

क्रास² मयाक्रान्त मानवीय स्थिति को नितान्त वैयक्तिक स्तर पर उभारती है । कहानी का वह आपरेशन³ लिए अस्पताल में दाखिल है । कल आपरेशन होने वाला है । उसे रातभर नींद नहीं आती । पिता और नर्स के प्रति वह हल्की फुल्की प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है । वह ऐसा अनुभव करता है कि चार आदमी मांस के एक लोचड़े को बिस्तर पर लिटा रहे हैं और आसन्न मृत्यु की दृष्टि में उसे नींद आने लगती है ।

आबाजें अब भी आ रही हैं³ एक ऐसी कहानी है, जहाँ अपने संबंधी की मृत्यु, जो कुछ देर पूर्व हो चुकी है, को मुलाकर उसकी लाशके हृद-गिर्द कामू के 'वाउट साइडर' की तरह तार का सेल रचाया जाता है ।

1- पराया शहर, रामदरश मिश्र, एक वह पृष्ठ-48, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 28 दरियागंज दिल्ली- प्रथम सं०-1974 ।

2- क्रास, जादीश चतुर्वेदी, 'मानवस्थितियाँ और समकालीन कथाबोध' डा० नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ-103 आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ आदर्श साहित्य प्रकाशन, वेस्ट सीलमपुर, दिल्ली-31, प्रथम संस्करण-1973 ।

3- आबाजें अब भी आ रही हैं-- गंगाप्रसाद विमल- समकालीन कहानी मृत्युबोध और मयाक्रान्त स्थिति पृ०-148, अंतक अग्रवाल, हिन्दी कहानी दशक की यात्रा-डा० रामदरशमिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन, 30 प० हाउस दिल्ली- प्रथम सं०-1970 ।

जीर-जीर से चिलाकर दुबन्नी, चबन्नी की चाल चलने और चाकलेट खाने का शौर मचाया जाता है ।

नगरबोध की मयावहता तब और भी वीमत्स हो उठती है जब एक छोटे नगर इलाहाबाद से दिल्ली जैसी महानगरी में जाया हुआ एक युवक अपने आपको सबंधा कौला पाता है । प्रेम, ममत्व और संपूर्ण भावनात्मक संबंध किस तरह महानगर की यांत्रिक गतिविधि में बिखर रहे हैं । यही इस कहानी की संवेदना है । तथागत¹ सहक दुर्घटना² मय³ तथा एक आदमी⁴ वादि में महानगरीय जीवन में सांस्कृतिक रूप से व्याप्त संत्रास, यन्त्रणा, कौलेपन का तनाव और मृत्युबोध को तटस्थता और ईमानदारी के साथ अंकित किया गया है । महानगर के उलझे हुए परिक्ष में मानवीय यंत्रणा का जितना तीव्र अस्सास होता है उतना गांव के परिक्ष में नहीं । इसीलिए *छूटा हुआ नगर*⁵ और बिठ्ठियाँ के बीच⁶ *दोनों कहानियों में रामदरश मिश्र ने ऐसे व्यक्तियों की व्याख्या

- 1- सुदर्शन नारंग- समकालीन कहानी मृत्युबोध और मयाक्रान्त स्थिति- अशोक अग्रवाल- पृ०-144- हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- डा० रामदरश मिश्र- नरेन्द्र मोहन, नै० प० डा० दिल्ली- प्रथम सं०-1970 ।
- 2- सुदर्शन चौपड़ा- सहक दुर्घटना संग्रह- पृ०-86, नीलाम प्रकाशन- 5 सुसरी बाग रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1972 ।
- 3- राजेन्द्र कुमार- हिन्दी कहानी दो दशक की यात्रा- सं०- डा० रामदरश मिश्र, डा० नरेन्द्र मोहन, ऐस- समकालीन कहानी - मृत्युबोध और मयाक्रान्त स्थिति- अशोक अग्रवाल, पृ०-145 ।
- 4- जितेन्द्र भाटिया, मानवस्थितियाँ और समकालीन कथाबोध -पृ०-103 वायुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ- ऐसक डा० नरेन्द्र मोहन, आदर्श सा० प्रकाशन सीलमपुर- दिल्ली, प्रथम सं०-1973 ।
- 5-6- रामदरश मिश्र, समकालीन हिन्दी कहानी और मूल्य संघर्ष की दिशा सविता जैन- पृ०-131 तथा 133 संपादक- डा० रामदरश मिश्र-डा० नरेन्द्रमोहन, नै०प०डा० दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970 ।

की है जो वनेक वर्ण पूर्ब गाँव से शहर में जाकर बसे थे लेकिन शहर का यांत्रिक बातावरण उन्हें रह-रह कर गाँव की सहजता और सादगी याद आती है। छूटता हुआ नगर का युवक तो संघर्ष में पराजित होकर अपने मूल्यों की रक्षा के लिये पुनः अपने गाँव लौटने को विवश होता है। इस प्रकार नगर जीवन और नगर संस्कृति के जटिल संदर्भों से जुड़ी हुई उपर्युक्त कहानियाँ विवेक्य परिवार के सदस्यों की अन्तःचेतना की विस्फोटक स्थिति को उजागर करती है।

बेरोजगारी की घुटन:

दासता की घुटन से मुक्त होने के बाद जिस भारतीय प्रजातांत्रिक परिवेश में नई पीढ़ी को रहना पड़ रहा है उसमें उनके रंगीन स्वप्नों और स्वर्णिम कल्पनावर्षों के प्रासाद को चकनाचूर हो रहे हैं। जिन सामाजिक और नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिये स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गई थी उसका परिणाम निराशा और मोह घग के रूप में सामने आया। जब मध्यवित्त परिवार के तरुण भेटे बेरोजगारी और बेकारी के मर्यकर दौर से गुजरने लगे तब उनकी वास्तवमूलक मनोवृत्ति स्तूलित हो गई। अस्तित्व संघर्ष की लड़ाई में उन्हें घर और बाहर अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आने लगा। बेरोजगारी की इसी घुटन पर अग्रिम कहानियाँ प्रकाश डालती हैं।

तेरी मेरी जिन्दगी¹ का नायक कई साक्षात्कारों में असफल हो चुका है। जब इन्टरव्यू के लिये जाता है, घरवालों को बड़ी आशायें बंधती हैं पर लगातार असफल होने के बाद अब माँ जाते समय बुर्फे - बुर्फे चेहरे से आशीर्वाद देती है। इधर नायक के मित्र ढींगरा के नौकरी न मिलने के कारण घरवालों से रिश्तेन किड़ चुके हैं, घर दीक्ष सा लगता है।

1- तेरी मेरी जिन्दगी- प्रेमचन्द सहजवाला, तेरी मेरी जिन्दगी पृ०-115

वासुकि¹ का केदार माई अपनी जीविकारत बहन के ऊपर आवृत्त है। वह इतना हताश और कुंठित है कि जब आफिस का बीस उसकी बहन से अनुचित बातें करता है और बहन उससे शिकायत करती है तब वह तनिक भी क्रोधित या उद्विग्न नहीं होता। एक ठण्डी प्रतिक्रिया के साथ वह कहता है कि यह सब तो होता ही रहता है²। बहन एक नीजबान से शादी कर लेती है और माई को बाहर बरसात की रात में पीगना पड़ता है। अब कमी मूले मटके ही बहन पौजन व कपड़ों के लिये पूछती है। पड़ोस के लोग यह विश्वास ही नहीं कर पाते कि वे दोनों माई बहन हैं। अकेलेपन की यह विवशता और अपमान जैसे उसकी नियति बन गये हैं।

कमर से ऊपर³ में दो केदार परन्तु नीकरी की तलाश में घबके खाने वाले मित्रों की करुण दशा का चित्रण है। एम0 ए0 की डिग्री प्रेस रिपोर्टर और लेखन कला कोई भी योग्यता केदार दर्शन के काम न आ सकी। जिस साहित्यिक सामग्री और प्रमाण-पत्रों के बोझ को लेकर वह साक्षात्कार पर गया था उसे ढोते हुए दर्शन को कड़ा कष्ट अनुभव हो रहा था। घरवाले उनमें रुचि नहीं लेते और वे घरवालों में नहीं। अपना गुम गलत करने के लिये बाहर-बाहर मटकने की उनकी वादत पड़ गई है।

* जिन्दगी और गुलाब के फूल⁴ * का माई केदार है और बहन

-
- 1- वासुकि- कमलेश्वर, क्यान तथा अन्य कहानियाँ- पृ0-152, लोकभारती प्रकाशन- 15-ए-महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।
- 2- वही-- पृ0- 156, पृ0 सं0-1972।
- 3- कमर से ऊपर- रमेश बस्ती- पृ0-463- विकल्प क्या साहित्य विशेषांक, सं0- शैलेश मटियानी विकल्प कार्यालय मोतीबाग नहर नगर- इलाहाबाद नवम्बर- 1969।
- 4- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा- जिन्दगी और गुलाब के फूल- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 3620।21, नेताजी सुभाषमार्ग, दिल्ली-9, तृ0 सं0- 1971, पृ0-130।

नीकरी से लगी हुई है। उसके कमरे को कालीन, घड़ी, मेज धीरे-धीरे बहन के कमरे में चले गये। यद्यपि उसका पुल्लण हृदय घर में बुन्दा की सत्ता और प्राथमिकता स्वीकार नहीं कर पाता और उसे यह सब अटपटा भी लगता है पर कुछ न कर पाने की विवशता ने उसे मौन बना दिया है। जो बहन पहले नीकरी पर भाई के लगे रहने पर उसके बागें पीछे घूमती थी वही अब इतपन और राब से पेश आती है। गुमसुम भाई मानों अपने से छड़ता रहता है।

वासिरी रात ¹ का बेरोजगार पति, पत्नी के पीहर जाने से पूर्व बाली रात को रोमैन्टिक मूड में व्यतीत करने को छालायित था पर पत्नी द्वारा कपड़ों की फरमाइश कर देने पर वह रात विदूषता में बदल गई। छोटी से मार्ग पूरी न कर पाने पर वह पत्नी को प्यार न कर सका। असमर्थता ने रोमांस और प्रेम के सूत्र को एक फटके में हिन-भिन्न कर दिया। पत्नी अलग सुक रही थी और पति छत पर चला गया था। एक ही पीढ़ा को दोनों दो तरह से अनुभव कर रहे थे। बेरोजगारी के दर्द की ये कहानियाँ वर्तमान व्यवस्था का मजाक सा करती नजर आती हैं। माबी राष्ट्र के निर्माता युवकों का जब यह दमघौटू हाल है तब अनुशासनहीनता, व्यक्तिवाद, हिप्पीवाद, यौन अराजकता और दूसरे प्रकार की विस्फोटक स्थितियाँ यदि चारों ओर उमरती दिखाई देती हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

अर्थता के बोध में तिरस्कार, पारिवारिक उपेक्षा और स्वयं की बेकारी का दर्द जिन्दगी को कितना नाटकीय धरातल पर लींच लाता है, यह तथ्य महापुरुषों की बापसी में ² उभरता है। उसकी आत्महत्या

1- वासिरी रात, काशीनाथ सिंह, लौंग बिस्तरों पर, पृ०-17, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847-यूनिवर्सिटी मार्ग, इलाहाबाद-2, प्र०सं०-1968

2- महापुरुषों की बापसी- बल्लमसिद्धार्थ- समकालीन कहानी- मृत्युबोध और म्याक्रान्त स्थिति- पृ०-145- अशोक अग्रवाल, हिन्दी कहानी- दो दशक की यात्रा- रामदत्त मिश्र, नरेन्द्रमोहन-नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली।

की बात को घर में सबने अपने मानसिक आग्रहों के कारण इतना सच मान लिया था कि अब उसके जीवित छूट जाने की सत्यता सबको असहनीय लगने लगी थी। उन्हें प्रतीत था, उसकी मौत का समाचार लाने वाले किसी पुलिस मैन-परिचित या राहगीर की पारिवारिक स्वार्थ और बेरोजगारी की पर्यवर्तित स्थिति का यह दस्तावेज आज के यथार्थ का कच्चा बिठ्ठा सोलने वाला है।

नीकरियाँ और रोजगार की तलाश में घटने वाले नौजवानों और बुद्धिजीवियों से संबद्ध निम्न कहानियाँ भी हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं जिनमें तिकड़मबा जी, फूँठ, चाटुकारिता, अफसरशाही और पदापात जैसे पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। एक बुतशिकन का जन्म¹ हुआ पचा² अंगीठी के कोयले³ रोज की बार्ते⁴ शिफादानी का अन्त⁵ आदि कहानियों की मूल संवेदना आर्थिक है।

आर्थिक विकसता: पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से पीड़ित मानव पूरे परिवार के लिये उलझन बना हुआ है और परिवार उसके लिये समस्या है। आर्थिक विषमता और कई वैशद्य ने भ्रष्ट आचरण और ऐसी अनहोनी अनैतिकता को बढ़ावा दिया है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अपनीनीकरी में एक्सटेंशन पाने के लिए जब एक पिता अपनी जवान बेटी को नई साड़ी लाकर देता है और उसे पहनाकर अपने अफसर की

1- श्रीमती विजय चौहान, नई कहानियाँ, अक्तूबर- 1960।

2- जितेन्द्र कहानी नव वर्णिक-जुलाई 1958।

3- प्रह्लाद नारायण मित्तल- न्याय सितम्बर- 1953।

4- शत्रुघ्नलाल- कहानी अक्तूबर- 1960।

5- मन्मथनाथ गुप्त- कहानी नव वर्णिक- जनवरी- 1958।

वर्कशायिनी बनाने स्वयं बेटी को साथ ले जाता है तब हमारी वांत्सों के डोरे रक्तिम हो उठते हैं और गर्दन झुक जाती है। धार्मिक और नैतिक वादशों वाला इस बाप के सामने बेटियों की शादी और बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारियाँ हैं। यदि नौकरी के कुछ वर्ष बढ़ जायें तो काम हल्का हो जायेगा। शराब से बुरा बेटी अस्त-व्यस्त बेटी जब रात को लौटकर आती है तब माँ पति से पूछती है कि अब तो शायद रेक्सटेशन मिल जायेगा। कितनी निमीम निरीह मजबूरी है¹।

मध्यमवर्ग का एक लैक्चरर अपने पुरतैनी और मकान की मरम्मत नहीं करवा पाता। मैलगाई की मार, बीमारी और लड़की की शादी में हाईकैश देने के कारण वह बार-बार सोचने पर भी घर का कुछ हिस्सा भी ठीक नहीं करा पाता। फलस्वरूप बरसात में पूरे घर में पानी टपकता है और घर का सामान संभालने में दोनों पति-पत्नियों को बड़ी कठिनाई होती है²।

बाबू का पति अपनी पत्नी को बड़े-बड़े लोगों के पास भेजने में संकोच नहीं करता। अपनी सुब सुरत पत्नी की सामाजिकता के बल पर वह आगे बढ़ने का स्वप्न देख रहा है और सबमुच अमिसारिका पत्नी उसके लिये ठेके की स्वीकृति ले आती है।

अपने बाँस को लुप्त करने के लिये बेटा अपनी माँ को घर में छिपा देता है क्योंकि वह बेपढ़ी-लिखी है और आधुनिक व्यवसायों की नहीं जानती और माँ भी पुत्र के अच्छे भविष्य की कामना से एक कोने में दुबकी

1- सिमेटा हुआ दुःख- हिमांशु जोशी, अन्ततः, पूर्वादेव प्रकाशन, 718 दरियार्गज-दिल्ली-6, प्रथम सं०- 1973।

2- पुराना मकान, राधाकृष्ण सहाय, जालीदार पदों की रूप पृ०-28, 15-ए-लोकभारती प्रकाशन, महात्मागान्धी मार्ग, इलाहाबाद- प्र०सं०-1970

पड़ी रहती है तथा सामने जाने पर हेरु गिड़गिड़ाहट मरी बातें करती है कि कहीं से भी वह माँ नहीं लगती¹।

इन कहानियों के अतिरिक्त सोलहवें साल की बघाई² एबर-कन्डीशन³ चित्रफलक⁴, और महलियाँ⁵ शीर्षक कहानियाँ भी वार्षिक विभामताजन्य पीड़ा, उलफान तथा मूल्य विघटन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं।

बाल मनोविज्ञान: केवल पति, पत्नी, माँ-बाप-माई - बहन या घर के दूसरे बड़े सदस्य ही समस्या और घटना से प्रभावित नहीं होते अपितु पारिवारिक और सामाजिक जटिलताओं को किशोर और बच्चे भी कसूनी समझते हैं और यदि गहराई से उन्हें समझ नहीं पाते तो बाह्यरूप से कहीं न कहीं उसकी प्रतिक्रिया को वे पकड़ते हैं। हिन्दी में स्वाधीनोत्तर लेखकों ने कुछ ऐसी कहानियाँ लिखी हैं जिनमें बालमनोविज्ञान और किशोर मन की चेतना का उद्घाटन हुआ है।

तस्बीर⁶ कहानी में विधवा माँ को परेशान देखकर और घर का साधन अपने दादा द्वारा दाने जाने पर दो बच्चे अपने पिता की

1- चीफ की दावत- भीष्म साहनी।

2- सुरेश सिन्हा- हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान, छा0 रघुवर दयाल बाण्णौय-पृ०-148, पांडुलिपि प्रकाशन, ई-11। 5-कृष्णनगर-दिल्ली प्रथम सं०- 1975।

3- रुपनारायण शुक्ल- कहानी अक्टूबर-1960।

4- अमृतराव- नई कहानियाँ- दिसम्बर- 1960।

5- शानी- कहानी- अगस्त- 1960।

6- भीष्म साहनी- पटरियाँ- पृ०-9, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली।

तस्वीर को देख-देखकर कहते हैं कि पिताजी नहीं जायेंगे । तस्वीर को हम रखेंगे । वे जिन बातों को करते हैं वे माँ को तसल्ली देने वाले हैं । वे बच्चे माँ की वान्तरिक व्याधा को पहचानने लगे हैं ।

¹
पुराना मकान का बच्चा बैठा हुआ कानब पर घर का चित्र बना रहा है । मकान बनाकर उसके बीच में वह कड़ी सी लकीर सींच देता है और पूछने पर बताता है कि यह फ्लेम है । इससे हमारा मकान जल जायेगा क्योंकि बरसात में घर चूने लगता है परेशानी उठानी पड़ती है इसलिए बच्चे ने मकान को फ्लेम से जला दिया । ऐसे मकान का करना भी क्या है ?

²
“एक बह” में किशोर बच्चे के माध्यम से आधुनिक इंग्लिश स्कूलों की बनावटी व्यवस्था का मज्जाफोड़ किया गया है । बच्चा घर बाकर अध्यापिकावों के व्यवहार की शिकायत करता है । कभी ड्रामा के लिये चन्दा मंगाया जाता है तो कभी किसी पिकनिक के लिये । टाई, कालर, चप्पल की शिकायत से बच्चा परेशान है । वह अपनी शिक्षिकावों के लिये गालियाँ बकता है और बेहद नफरत दिखाता है । वह उस स्कूल में नहीं जाना चाहता । दैनिक स्कूल में जाने का हज्जुक है ताकि ठाँब-ठाँय गोली चला सके । गोली चलाना इस बात का प्रतीक है कि यह किशोर अपनी उन गुरु अध्यापिकावों को मार देना चाहता है जो उसे वान्तरिक समत्व नहीं दे पातीं और उसके किशोर मन को तुष्ट नहीं कर पातीं ।

- 1- राधाकृष्ण सहाय- जालीदार पर्दे की घुप- पृष्ठ- 28 ,
लोकभारती प्रकाशन- महात्मागांधी मार्ग- इलाहाबाद- प्रथम सं०-1970 ।
- 2- रामवरण मिश्र- एक बह- पृष्ठ- 85, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
23-वरियार्गज, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974 ।

अपने घर का देश¹ की बच्चियाँ घर के इतने माहील से चिढ़ जाती हैं। समस्या ग्रस्त परिवार में पिता से दुलार पाने को वे तरस जाती हैं। रोती हुई बच्चियाँ पिता की पुस्तकें फाड़ डालती हैं। वे सौकर उठते ही दुलार के लिए रोया करती हैं। एक पिता अपनी माँ और पति अपनी पत्नी के प्रश्नों की सूची में इतना उलझा रहता है कि बच्चों को प्यार ही नहीं दे पाता। बेचारे वात्सल्य के धूलें प्यासे बच्चों के पास रौन के सिवाय रह ही क्या जाता है।

हरिदास बालक अपनी पड़ोसिन बालिका सोना से व्याह करने को कहता है क्योंकि सोना बड़ी सुन्दर लड़की है। चार बच्चियाँ सोना को भी यह मालूम है कि वह मोहल्ले की लड़कियों में सबसे सुन्दर है क्योंकि उसकी माँ ने उसे ऐसा बताया है। सोना का प्रस्ताव है कि यदि हरिदास व्याह के बाद उसको अच्छी - अच्छी कहानियाँ सुनाने का वायदा करे तो वह विवाह को तैयार हो जायेगी। बाल सुलभ मनोवृत्ति की ये माबनार्य बच्चों की दबी हुई मानसिक चेतना का मनोविश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।²

निम्नमध्यमवर्गीय परिवार की समस्याएँ :

आलोच्य कालीन कहानी का केन्द्रीय पात्र मध्यवर्ग का वह व्यक्ति है जो युग की धारा में अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु संघर्ष कर रहा है।

-
- 1- काशीनाथसिंह, लोग विस्तराँ पर- पृ०-46 । अभिव्यक्ति प्रकाशन यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद- 2, प्रथम सं०- 1968 ।
 - 2- कहानी की सौज में- राबी-- पल्ला कहानीकार पृ०-119, प्रथम सं०- 1954- प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य- डा० राधेश्याम गुप्त (सं०) पृष्ठ- 87, विष्णु प्रकाशन तेलीबाड़ा- जयपुर-3, प्रथम सं०- 1970 ।

सामाजिक और आर्थिक विषमता से उत्पन्न दारुण यातना, बेकसी, कुष्ठ, असाव और समकालीन की दयनीय परिस्थितियाँ अपेक्षाकृत रूप में निम्न मध्यवर्गीय के सदस्यों को मींगनी पड़ती है। निम्नमध्यवर्गीय का परिवार आर्थिक साधनों की दृष्टि से मध्यवर्गीय परिवार की अपेक्षा निम्नतर होता है और आर्थिक पक्ष की यही दुर्बलता उसे समाज के हर संदर्भ में पराजित और निरीह बनाती है। परिवार, शिक्षा, जीविका, विवाह, प्रेम तथा सोसायटी के सभी क्षेत्रों में उसे संघर्ष का मुँह देखना पड़ता है। अनवरत संघर्ष के बाद भी वह सफलता के प्रति आश्वस्त नहीं हो पाता। यही है निम्नमध्यवर्गीय के पारिवारिक व्यक्ति की नियति। सीमित आयदनी, सामाजिक विहम्बनावर्ती तथा आर्थिक परम्पराओं के तले पिसता हुआ वह जीवन यापन की अनचाही अवस्थाओं में गुजरता है या यों कहें कि उसे गुजरना पड़ता है। हिन्दी कहानीकारों ने स्वाधीनोत्तर निम्नवर्गीय परिवार की छोटी-बड़ी सभी समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। अग्रिम पंक्तियों में उन्हें देखा जा सकता है।

अधिभाव का दैन्य: निम्नमध्यवर्गीय का व्यक्ति जिन अन्तर्विरोधों और मयावह परिस्थितियों से गुजर रहा है उसकी मूल घुरी अर्थ संकट है। समाज की आर्थिक विषमता ने उसके जीवन सूत्रों को इतना हिन्न-मिन्न कर दिया है कि जिस परिवार का वह पात्र है और जिससे उसका मौलिक संबंध है उसके प्रति भी वह संवेदनशील नहीं रह पाता और न तमाम रिश्ते ही उसके प्रति संवेदनाशील रह पाते हैं।¹ यह धेरे लिये नहीं के माँ धेटे एक दूसरे से कटे हुए हैं। परिवार और समाज के सोल्ले मुख्यों और रुढ़ियों की रद्दार्थ विषया माँ को जो कुछ करना पड़ता है उससे दोनों के संबंधों में उदासीनता, अनास्था और निराश्रय का विषाद हा जाता है।² 'दायरा' का केन्द्रीय पात्र छोटी सी तनस्वाह में परिवार

1- जमींदार मारती- यह धेरे लिये नहीं (बन्ध गली का आतिरी मकान) पृ०-51, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-5 प्रथम संस्करण- 1969।

2- रामकुमार- दायरा-समुद्र - राजकमल प्रकाशन, प्रा०हि० दिल्ली-6- प्रथम संस्करण- 1968।

के दावित्व को नहीं ढौ पाता उल्टे माँ जब छुट्टियाँ में भी उससे नौकरी करने को कहती है तब ज़ाहिर और अन्तर्द्वन्द्व की रचनाओं से गुजरता हुआ वह स्टेशन पर जा लड़ा होता है पर दिग्भ्रमित सा वहाँ भी वह यह नहीं समझ पाता कि वह कौन सी गाड़ी पकड़ेगा ।

अभाव के कारण निम्नमध्यवर्गीय परिवार के लोग दो जून रोटी जुटाने की सुविधा भी नहीं उपलब्ध कर पाते लेकिन इस अभाव को जानते हुये भी जब वे पेट भर जानें जैसा स्वाँग करते हैं तब स्थिति का अर्थात् मानवीय संवेदना को फकफोर जाता है । दोपहर का भोजन ¹ के मुँशी चन्द्रिका प्रसाद गुह से रोटी खाते हैं क्योंकि घर में दाल समाप्त हो चुकी है पर कहते यही हैं कि नफ्कीन जीर्णों से उनकी तबियत ऊब गई है । उनकी गन्दी धोती के ऊपर तार-तार लटकती बनियान, सिद्धेश्वरी के भोजन का निरीह दृश्य तथा घर के भीतर घिरी हुई उदासीनता विवेच्य परिवार की स्थिति को स्पष्ट कर देते हैं । यह वही शायद आत्म प्रबचना के लिये मजबूर है ।

अभावजनित अनात्मियता:

महानगर का सामान्य सा बर्क ने अपनी पत्नी के प्रति माझु रह पाता है न पिता के प्रति आस्थावान् ² । दिनभर बफ़्तर की एक रस जिन्दगी बिताकर जब थका हारा या रात को बेर से घर

- 1- अमरकान्त- दोपहर का भोजन (जिन्दगी और जॉक) पृ०-51, नया साहित्य प्रकाशन, ३-डी-मिन्टो रोड, इलाहाबाद- 1958 ।
- 2- कमलेश्वर- अब और नहीं- ब्यान- पृ०-178, लोकभारती प्रकाशन- 5 सुसरो रोड, इलाहाबाद- 1, प्रथम सं०- 1972 ।

लौटता है तो पत्नी को देर से जाने की शिकायत रहती है और बूढ़ा पिता भेटे की नीरस जिन्दगी से चिंतित रहते हैं। चाहते हुए भी वह पिता की वार्सों की जाँच और चरमे की व्यवस्था नहीं कर पाता। अपनी मरपूर पत्नी की इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता और कभी-कभी वैसे टिकाकर उसे गहराई से देखने लगता है मानों अपना जीवन और आत्मीयता को सौंज रहा हो। बीमार पिता को मरने से कैसे बचाया जा सकता है जब कई सदस्यों के एक परिवार के लोग निहायत मामूली जिन्दगी बिताने को बाध्य हों। *सासपाहुना* के माई बहन अपनी माँ के सामने मृत्युशय्या पर पड़े हुए पिता के लिये फरैब मरा नाटक करने को बाध्य होते हैं कि डाक्टर ने जबाब दे दिया है जबकि वस्तुस्थिति अयमिवाव से जुड़ी हुई है। बच्चों को बाबूजी की ज़रूरत नहीं रहती। ऐसे बाबूजी की जिनके लिए सुख नाम की चीज उतनी ही अजनबी और काल्पनिक रही जितनी कि किसी व्यक्ति के लिए भगवान²। पति-पत्नी, माई-माई देवर-भामी सभी के बीच अनात्मीय रिक्तता छाई रहती है क्योंकि वे एक दूसरे को कुछ दे नहीं पाते। पत्नी सोचती है वह कहीं भी व्याही जाती इस घर से बेहतर रहती। भामी सोचती है कि जो कोई भी लड़की उसके देवर से शादी करती-- उसी का भाग्य फूटता। माई-माई तीन वर्ष बाद मिलने पर भी सपाट सी बातें करते हैं³। *एक और सैठाब*⁴ की स्त्री का पति लम्बी बीमारी से अस्मिताल में पड़ा है। लकवे के कारण वह बीठ नहीं पाता। आसन्नमृत्यु पति के लिए पत्नी रोज

- 1- सुदर्शन चौपड़ा- सासपाहुना- सड़क दुर्घटना पृ०-34, नीलामप्रकाशन, 8- तुसरो रोड, इलाहाबाद-1, प्रथम सं०- 1972।
- 2- -- बही -- पृष्ठ- 56।
- 3- बाठा- हृदयेश, छोटे शहर के लोग, पृष्ठ-84, अक्षर प्रकाशन प्रा०लि० 2136-अन्सारी रोड, दरियानंज-दिल्ली-6, प्रथम सं०- 1972।
- 4- मेहरान्निता परबेज-- आदम और हब्बा- पृ०- 76।

दूरदराज के घर से लाना लेकर जाती है। बच्चों को वह मार्गने पर भी सच्ची नहीं खिला पाती। जीवन के संक्रास से वह इतनी दुखी हो गई कि एकदिन चिर रोगी पति को स्वर्ग ही उसने नींद की ज्यादा गोलियाँ देकर मार दिया। कम से कम एक बौद्ध से तो वह हल्की हो ही गयी। उसने वैषम्य स्वीकार कर लिया। पर जिन परिस्थितियों में ऐसा हुआ वे हमारे समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता से उत्पन्न विषमता का मण्डाफोड़ करने के लिए पर्याप्त हैं।

वर्तमान में निम्नस्थितियों को जीता हुआ भी निम्नमध्यवर्ग का व्यक्ति जब उच्चवर्ग के स्वप्न देखता है तब उसके मानसिक और सामाजिक संघर्ष की अजीब सी स्थितियाँ और अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। वह वाशा करता है कि एक न एक दिन वह गरीब परिस्थितियों की दासता से मुक्त हो जायेगा लेकिन जीवन का यथार्थ उसके स्वप्नों के आकाश को धरती पर ला पटकता है फिर न वह अपने बेटे को सेलर¹ बना सकता है और न स्वर्ग अस्मिस्टेंट² बन सकता है। अपनी मजबूरी की म्याबहता उसे असामान्य बना देती है। बीमार पत्नी और बच्चे, दमे के मरीज बाप और सब्बा सी रुपये की नौकरी के बीच कैसे झालमेल बैठाया जाय जबकि घर में पूरे महीने को आटा भी नहीं बच पाता और जीवन संघर्ष में पराजित हुआ 'अगर मैं बाज'³ का देसराज परिस्थिति की विद्रूपता पर रौने के वजाय हंसने लगता है। इस बात को सोचकर कि अगर मैं नहीं रहूँगा तो क्या होगा-- वह हँसता है। यह हँसी स्वाधीनोत्तर भारतीय

- 1- सेलर- रामकुमार (एक दुनिया समानान्तर) पृ०-325 - सं०-
राजेश्वर यादव, अक्षर प्रकाशन- प्रा०लि० 2136, अन्सारी रोड,
वरियार्गज, दिल्ली-6। द्वितीय संस्करण- 1970।
- 2- अस्मिस्टेंट- रामकुमार- एक बेहरा - अस्मिस्टेंट का आकाश।
- 3- अगर मैं बाज- कृष्णाकृतदेव वैद- मेरादुरमन- पृ०-89- राजकमल
प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग- दिल्ली- 6।

निरुपाय आदमी की है जो स्वतंत्र नागरिक होते हुए भी वार्षिक दासता में जकड़ा हुआ है। जब महीने के अंतिम दिन घर को बाधा किलो रद्दी बेचकर केले मूंगफली और सिगरेट तरीदी जाती है¹ और पति-पत्नी की सुन्दर सुसज्जाम केवल इसलिये कटु बन जाती है कि पत्नी द्वारा अपनी एक मित्र को चाय पिछाने का प्रस्ताव, पति को अपनी वार्षिक दशा पर किया हुआ व्यंग्य प्रतीत होता है तब व्यवस्था की चक्की में पिसने वाले सैकड़ों हजारों गृहस्थों की यथार्थता हमें फकफोर डालती है। मायुकता और मित्रता की तरलता रह ही कैसे जायेगी जब अपने सीमित बजट के कारण काली चाय पीनी पड़े और बीमारी व घर की परेशानियों के कारण दो महीने की बिना वेतन की छुट्टी लेनी पड़े। 'हाशिये'² का सामान्य सा क्लर्क इसीलिये चाहने पर भी अपने मित्र को चालीस रुपये उधार नहीं दे पाता कि वह स्वयं क्या करेगा। पति घर पर होते हुये भी पत्नी ने कड़ी सफाई से कह दिया कि वह घर पर नहीं है। कमर टूटे पिता जानवर की तरह घिसटते हैं और विफल अर्थ-शून्य पुत्र सोने की बेष्टा करने पर भी सौ नहीं पाता, माँ फटा हुआ अनेक चिप्पियों वाला जूता पहनती है तथा प्राइमरी स्कूल में पढ़ाने वाली बेटी पचास रुपये घर में देकर केवल 10 रुपये जेब सर्व से काम चलाती है और एक जगह इकठ्ठे होकर पूरे परिवार के सदस्य फिर भी संकटपूर्ण जीवन के आने वाले काले रूपको देखने को उत्कर्णित रहते हैं³।

- 1- केले पैसे और मूंगफली-- अमरकान्त (जिन्दगी और जॉक)
नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी-मिन्टो रोड, इलाहाबाद, फरवरी-
1958 ।
- 2- शानी- हाशिये- युद्ध- पृ०-48-विद्या प्रकाशन मंदिर, 1681-
दरिबार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973 ।
- 3- सीसीफस- हृदयेश- छोटे शहर के लोग, पृष्ठ- 93, अक्षर प्रकाशन-
2136-अन्तारी रोड, दरिबार्गज- दिल्ली-6, प्रथम सं०- 1972 ।

जबान लड़की की शादी अल्पवित्त माँ-बाप के लिये समस्या होती है पर इसका एक विपरीत सन्दर्भ भी है और वह है कमानेवाली ऐसी लड़की की शादी का प्रस्ताव वा जाना जो ट्यूशन करके, दफ्तर में सबजी काम करके और दूध डिपो पर दूध बाँट करके पूरा घर चलाती है। दूसरे¹ कहानी के पिता ने ऐसी परिस्थिति में एक हाथ से बालों को ढक लिया था शायद इसलिये कि जागे क्या होगा। जागे क्या होगा का यह अनवरत चक्र निम्नमध्यवर्ग के व्यक्ति की बालों के जागे नाना रूपों में घूमता रहता है। जब मविष्य नहीं दिखाई देता तब पिता द्वारा संकट फोलकर पड़ाये जाने वाला पुत्र त्यागी पिता के प्रति कटु और असहन्शील हो उठता है। जब बेकार इन्जीनियरों की यूनियन में ही वास्तविकार मर्ती होना है तब पिता उसपर जाधी तनस्वाह क्यों बिगाड़ रहे हैं। उसे लगता है बाबू- अम्मा की अतिरिक्त सहन्शीलता बहन की समझदारी सब जैसे एक गुप्त षड्यंत्र के हिस्से हैं जो उसके खिलाफ रचा गया है।²

नगरबीध की आँखः

एक प्राइवेट फर्म में साधारण सी नौकरी करने वाली लड़की को नाना असुविधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। घर के राशन की चिन्ता, क्वार्टर छूट जाने का डर और नौकरी छूटने की आशंका उसे बराबर बनी रहती है। पराये शहर में वह किसी के प्यार, प्रतीक्षा बहालना और नाराजगी को तरसती है। वह चाहती है कि अल्पवित्त वाले उसके घर भी साफ सुथरे कपड़े पहनने वाले लोग आँवें ताकि पास - पड़ोस

1- दूसरे- कपलेश्वर- माँस का दरिया- 2।36- अक्षर प्रकाशन प्रा०लि० दिल्ली-6।

2- मन्मू मण्डारी- रैत की दीवार- पृष्ठ-135, विकल्प कथा साहित्य विशेषांक, संपादक शैलेश मटियानी- विकल्प कार्यालय-मौतीहाल नेहरू नगर- इलाहाबाद-2 नवम्बर-1969।

के लोग उन्हें शिकारत की निगाह से न देखें। लोग समझें कि उसके घरवाले निपट निस्सहाय नहीं हैं। इसी कारण वह अपने एक साथी से घर जाने का वाग्रह करती है। कहानी में जबान लड़की की शुष्क जिन्दगी तथा नगरबोध के अकेलेपन की कटुता को चित्रित किया गया है¹।

निम्नमध्यवर्गी की महानगर में रहने वाली चार लड़कियाँ जो एक ही मकान में रहती हैं अपने खोखले और ऊब भरे जीवन को मरने के लिए कनाटप्लेज जाकर चाँट पकौड़ी खाती हैं। चुल्लूबाजी, और बंचलता पूर्ण बातें करने वाली इन लड़कियों को तगैबाला "काल गल" जैसा समझता है। हालाँकि उनकी यह है कि तगैबाले को देने के लिये पूरे पैसे भी नहीं निकले। महानगरीय परिवेश में और कुछ नहीं तो ये बेचारी घर से निकल कर उन्मुक्त हवा में घूमकर हँसी मजाक रीं कर ही सकती हैं।

बेरोजगारी का अभाव: बेरोजगारी और बेकारी स्वतंत्र भारत की प्रमुखतम समस्या है। निम्नवर्गी का मजदूर, जमादार, नौकर और दूसरे लोग अशिक्षित और अशिक्षित होने के कारण तथा गरीबी को अपनी नियति मान कर छोटे से छोटा शारीरिक श्रम करने में नहीं सकुचाते पर निम्नमध्यवर्गी की मजदूरी यह है कि वह जैसे जैसे शिक्षा ग्रहण कर पाता, दफ्तर, स्कूल तथा विभिन्न संस्थानों में कुर्सी पर बैठ कर कलम चलाने की अव्यवस्था उसे शारीरिक श्रम और मजदूरी जैसी नौकरी नहीं करने देती। अतः अपने से ऊपर

1- किसी एक शहर में-- हिमांशु जोशी-- अन्ततः पृष्ठ- 148,
पूर्वोदयप्रकाशन- दिल्ली-6, संस्करण- 1973।

2- उड़ान- कृष्णाकलदेव वैद- प्रतिनिधि कहानियाँ- पृष्ठ-94, डा०-
बच्चनसिंह, अनुराग प्रकाशन विशालाहाड़ी चौक, बाराणसी-
चतुर्थ संस्करण- 1973।

वाले मध्यवर्ग, उच्चमध्यवर्ग तथा अपने से नीचे वाले निम्नवर्ग के बीच की जटिलताओं में वह बीना होकर चलता है। उसे पढ़-लिखकर जब नौकरी नहीं मिलती तब तरुणाई, शिक्षा, सभ्यता और बौद्धिकता की निरर्थकता उसे कचोट जाती है। 'नया जन्म'¹ का युवक विजय हिन्दी में छाकटोरे लेकर भी पड़ापात, माई-मतीजाबाद और चाटुकारिता जैसी दुष्प्रवृत्तियों के कारण बेकार इधर से उधर घूमता है। निष्क्रियता की निर्मम पीड़ा उसे इतना विषादुब्ध बना देती है कि अपनी रिसर्च के कागजों को वह रदी में बेचने निकल पड़ता है। उसे अपनी जबान बहन का विवाह अड़तालीस साल के काले कलूटे विधुर लाला दयाल चन्द से करना पड़ता है। 'साथा'² का युवा पुत्र अपनी बेकारी से ऊब कर गाड़ी के नीचे कटकर आत्महत्या कर लेता है क्योंकि अस्तित्व रक्षा के संघर्ष में मृत्यु ही अंतिम हथियार उसके लिये बची थी। बेकार नौजवानों के मुँह तब अवश्य ही शर्म और अपमान से लाल हो उठेंगे जब उन्हें पता लगता है कि 'इन्टरव्यू'³ में लिये जानेवाले लोग तो पहले ही चुन लिये गये। 'छिप्टी कलाकटरी'⁴ के सारे स्वप्न बुर-बुर हो जाने पर वही पुराना मकान, पुरानी बल्की, पुरानी मजबूरियाँ और जिजीविषा इतनी

- 1- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई आबाजों के बीच- पृ०- 174, लोकप्रती प्रकाशन- 15-ए महात्मागान्धी मार्ग- इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1968 ।
- 2- साथा- हृदयेश - पृ०-65, (कोटे शहर के लोग) अक्षर प्रकाशन, परियार्गज- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972 ।
- 3- इन्टरव्यू- अमरकान्त- (जिन्दगी और जाँक) पृ०-60, नया साहित्य प्रकाशन- 2-डी- मिन्टो रोड, इलाहाबाद- फरवरी-1958
- 4- छिप्टीकलाकटरी- अमरकान्त- मौत का नगर, पृ०-51, रचना प्रकाशन, 45-ए- सुल्ताबाद, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण-1973 ।

बाकी बच जाती है जो इस वर्ग के हिस्से में आई है। जिजीविषा इतनी अपरिहार्य बन जाती है कि बेकारी का मारा हुआ बादमी अपने संबंधियों के घर पर अपमानित होता हुआ भी पड़ा रहता है। उस नारकीय मक्कहौल में उसे लगता है वह स्वर्ग में रह रहा है, वह स्वर्गवासी है¹। उसकी सामान्य स्वस्थता विकृत हो जाती है। एक बेकार पति अपने पतित्व को तब धिक्कारने को विवश होता है जब वह अपनी पत्नी की नीकरी पर वात्रित होता है। पत्नी के लिये कुछ करना चाहते हुए भी स्थिति उसे निरुपाय बना देती है। 'रोग की तरह'² का पति रमेश निम्नमध्यवर्ग के सौख्ये परिक्षा का गवाह है।

विकृताजन्य समझौता: आलौच्य वर्ग की पारिवारिकता आर्थिक सामाजिक और नैतिक दबावों का सामना करती हुई जब बागे साफ़ होती है तब उस प्रक्रिया में उसे अनेक प्रकार के समझौते करने पड़ते हैं। कभी 'दाय'³ रोग से पीड़ित पिता के परिवार को बलाने के लिए नीकरी पेशा-बेटी को मकान मालिक की बेटी को अवैध तरीके से काली कदमा में चढ़ाने का अवैध प्रयत्न करना पड़ता है तो कभी 'फरिश्ते'⁴ के पिता को कुमारी बेटी का सर्वस्व लूटने वाले व्यक्तियों की सहन करना पड़ता है क्योंकि वे लोग अनाज की बोरियाँ भी तो उसे दे जाते हैं। कभी सुन्दर जवान बहन को भाई पचपन साल के सेठ से व्याहने को विवश होता है तो

1- स्वर्गवासी-- दुबनाथ सिंह-- हिन्दी कहानी- सातवाँ दशक- पृ०-86

प्रह्लाद अग्रवाल, मैकमिलन कम्पनी आफ इंडिया लि० नई दिल्ली-
द्वितीय संस्करण- 1977 ।

2- रोग की तरह- रमेश उपाध्याय- शेष इतिहास, पृ०-81, 80 नाईवाला करौल बाग, नई दिल्ली-5, प्रथम संस्करण- 1973 ।

3- दाय- मन्मू मंडारी- श्रेष्ठ कहानियाँ- पृ०-71, अक्षर प्रकाशन, प्रा०लि० 2136-अन्सारी रोड, दरियार्गज, दिल्ली- संस्करण- 1975 ।

4- फरिश्ते- मणिमधुकर- हवा में ऊँछे- पृ०- राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियार्गज- दिल्ली ।

कभी ग्राहमरी के सामान्य से मास्टर को स्कूल के प्रधान के बीची कदम में पढ़ने वाले दीठ बेटे की घोंस सहनी पढ़ती है। अगर मुझे मारा तो मैं पिताजी से कह दूंगा। मन में गहराई से जमा हुआ जाति और गोत्र का बर्ष तब एक ही फटके में टूट जाता है जब जवान बेटे की शादी माँ-बाप के लिये समस्या बनकर लड़ी होती है। जिस पड़ोसी को स्वप्न में भी अपना दामाद बनाने की कल्पना उन्होंने नहीं की उसी को एक दिन अपनी ओर से शादी का प्रस्ताव मेजने में उन्हें समस्या मुक्ति का बख्सास हुआ और तभी बीच का दरवाजा खोल दिया गया।

अनाथ शक्कपा तमाम अनैतिकताओं से समझौता करती है पत्नीत्व की कामना मातृत्व की आकांक्षा और नारीत्व की प्रतिष्ठा ऐसी मायनाओं को समाप्त करके वह शरीर से धनार्जन करने को विवश होती है। धनीमूत पीड़ा को छिपाये वह नाना पुरुषों के संपर्क में आती है, गर्भपात करती है और सदा - सदा के लिये मातृत्व को समूल नष्ट करवाके मादा बन जाती है।² समझौते की इन कहानियों में व्यक्तित्व को, चरित्र को और इन्सानियत को धन से खरीद लिया जाता है। समझौतावादी ये सभी पात्र अधिक दूर तक नहीं देख सकते इसलिए अस्तित्व संघर्ष की विभीषिका और भावी आशंका से अपना सिर झुका लेते हैं।

आवास-समस्या: निम्नमध्यवर्ग का मामूली आदमी ज्यादा किराये का मकान नहीं ले सकता। इसलिये छोटे से घर में पति-पत्नी एकान्त सहवास के लिये भी तरस जाते हैं।³ 'एक कमरे का घर' का पति स्नायविक तनाव

1- बीच का दरवाजा, कृष्णाकलदेव वैद- संग्रह यही-- पृष्ठ-11,

नीलाम प्रकाशन- 8-हंसरो बाग रोड, इलाहाबाद।

2- शक्कपा की मौत- विष्णु प्रमाकर, मेरी प्रिय कहानियाँ- पृष्ठ-126, राजमाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०-1970।

3- शानी- एक कमरे का घर- मेरी प्रिय कहानियाँ- राजमाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- प्रथम सं०- 1976।

की सी विस्फोटक स्थिति में पत्नी की अधीर प्रतीक्षा करता है। बाबास की इसी कठिनाई से 'साबा'¹ के नवदम्पति को अपनी मधुष्यामिनी दूसरे के मकान में बितानी पड़ती है। समुचित कमरे के अभाव में घरवाले साँचते हैं कि बहू को दूसरे के घर बुलाया जाय या नहीं। यह एक अर्ध सवाल बना हुआ है। इस प्रकार इस वर्ग का स्वप्नजीवी व्यक्ति अजीब सी स्थितियों से घिरा रहता है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आज जीवन यथार्थ की जो सबसे अधिक और स्पष्ट प्रतिक्रिया घटित हो रही है उसका प्रभाव पूरी तरह से निम्नमध्यवर्ग के परिवार पर पड़ा है। अनेक परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनके नागपाश में इस परिवार के सदस्य विकसता और आत्म प्रवर्धना के शिकार बन जाते हैं और इसके विपरीत जिन परिस्थितियों में ये पात्र मजबूरी से ऊपर उठने का साहस करते हैं वहाँ भी सफलता नहीं मिलती। गरमियों के दिन², बड़ी कृपा है। सिफारिश बिड़्ठी³ एक आत्महत्या के पात्र ऊपरी परातल पर टिके हुए हैं। उसे नकारने का प्रयास करते हैं पर ऐसा नहीं कर पाते। उनके जीवन में नाना विकृतियाँ हैं। उसमें घुन लम चुका है। ये कहानियाँ देश के नवयुवकों और नई पीढ़ी की विम्रान्तता, कुण्ठा एवं निराशा के यथार्थ परिक्ष को सजीवता से उभारती हैं।

- 1- साबा- हृदयेश, छोटे शहर के लोग, पृ०-65, बदार प्रकाशन, दरियामार्ग, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972।
- 2- गरमियों के दिन- कमलेश्वर (मेरी प्रिय कहानियाँ) पृ०-53, राजमाल इंड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1974।
- 3- सिफारिश बिड़्ठी- भीष्म साहनी- (मटकली रात) पृ०-125, राजमाल प्रकाशन- नेताजी सुभाषमार्ग, दिल्ली।

निम्न वर्गीय परिवार की समस्याएँ :

समाज और परिवार के निम्नस्तरीय जीवन पर सूक्ष्म दृष्टि डालने वाले और उसके प्रति मानवीय संवेदना समर्पित करने वाले कहानीकारों में प्रेमचन्द का स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने स्वाधीनता से बहुत पहले ही भारत के निम्नवर्गीय जीवन की नाना समस्याओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कर लिया था। उनके इस गहन अध्ययन की पहचान तब होती है जब हम उनकी 'पूस की रात' ¹, 'कफ़न' ², 'सबासेर गेहूँ' ³ और 'घासवाली' ⁴ शीर्षक कहानियों को पढ़ते हैं। 'पूस की रात' का छल्लू और 'सबासेर गेहूँ' का शंकर दोनों ही कृष्णग्रस्तता के शिकार बने हुए जमींदार और महाजन की शोषण की चक्की में बाजीवन पिसते रहने को बाध्य हैं। 'कफ़न' के बाप-बेटे घीसू और माघी पेट की मूल और अभावों के कारण इतने वास्थाहीन और संवेदन शून्य हो चुके हैं कि घर में पड़ी बहू की लाश के लिये कफ़न के पैसों से मौजन करते हैं और वानन्द लेते हैं और ऐसा करते हुये उन्हें तनिक भी संकोच नहीं हुआ। विश्वम्भरनाथ कौशिक की 'मोह' ⁵ भी इसी श्रेणी में आती है। पत्नी तथा पुत्र विहीन

-
- 1- पूस की रात मानसरोवर भाग-1, पृष्ठ-158, एंस् प्रकाशन, इलाहाबाद 11वाँ संस्करण- 1970।
 - 2- कफ़न- प्रतिनिधि कहानियाँ, पृष्ठ-1, संपादक- डा० वच्चनसिंह- अनुराग प्रकाशन, किलाहादि चौक बाराणसी- चतुर्थ संस्करण- 1973।
 - 3- सबासेर गेहूँ- मानसरोवर भाग-4, पृष्ठ-189, एंस् प्रकाशन, इलाहाबाद 10वाँ संस्करण- 1965।
 - 4- घासवाली- मानसरोवर भाग-1, पृष्ठ-308, एंस् प्रकाशन- इलाहाबाद 11वाँ संस्करण- 1970।
 - 5- मोह- विश्वम्भरनाथ कौशिक- हिन्दी कहानी-- प्रकाश दीक्षित- पृष्ठ- 153।

जानू काका का जीवन रौंटी रौंजी की अनिश्चयात्मक स्थिति में रहते-
 रहते मोह शून्य हो चुका है। निराशा की 'चतुरी चमार'¹ में भी
 सामाजिक और धार्मिक रूढ़ियों की प्रगति विरोधी भूमिका में निम्नवर्गीय
 और निम्नजातीय चरित्र का उद्घाटन किया गया है। इसी प्रकार के पीड़ित
 और उपेक्षित जनजीवन का सुहा चित्रण महादेवी वर्मा ने 'धीसा'² में
 किया है। नारीत्व की जबरता का प्रामाणिक रूप इस कहानी में मिलता
 है। ये कतिपय कहानियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि स्वतंत्रता से पूर्व भी
 विभिन्न कहानीकारों ने निम्नवर्ग को अपनी संवेदना का पात्र बनाया था।

स्वातंत्र्योत्तर कहानी में यद्यपि सर्वाधिक व्यापक अनुशीलन
 मध्यम वर्ग का किया गया है परन्तु निम्नवर्ग की सर्वथा उपेक्षा कर दी
 गयी हो ऐसा नहीं है। मोहन राकेश, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, धीम्म-
 साहनी, हृदयेश, शैलेश मटियानी, मन्मू मण्डारी, कृष्णावलदेव वैद आदि
 ने निम्नवर्ग के परिवेश की निरल परल करने में पर्याप्त ईमानदारी का
 परिचय दिया है। इन लेखकों में अभाव, उत्पीड़न और उपेक्षा की वेदना
 से कराहते हुए मानवों की बहुमुखी जटिलताओं को बस्तु परक सन्दर्भों में
 पहचानने की चेष्टा की है। स्पष्ट है कि गरीब की मुख्य और केन्द्रीय
 समस्या उसकी गरीबी है जो अधिभाव के कारण निर्मित होती है अतः
 निम्न वर्गीय परिवार की भी मूल समस्या है। उसकी विपन्नता और
 आर्थिक विषमता। इसी के ऊपर होकर जीवन की दीनता, विवशता,
 दरिद्रता और अनैतिकता की परिस्थितियाँ गुजरती हैं। ये ही अधिभाव
 के नामा सन्दर्भ हैं।

- 1- चतुरी चमार- निराशा- हिन्दी कहानी- स्वरूप विकास और
 प्रतिनिधि कहानीकार- लेखक- प्रकाश दीप्ति, विनोद पुस्तक मंदिर,
 हास्पिटल रोड, बागरा, फ़ाउंड- 225, प्रथम सं०- 1096 ।
- 2- महादेवी वर्मा- धीसा- पृ०-153 (हिन्दी कहानी स्वरूप विकास और
 प्रतिनिधि कहानीकार) लेखक श्री प्रकाश दीप्ति, विनोद पुस्तक मंदिर,
 हास्पिटल रोड, बागरा, प्रथम संस्करण- 1096 ।

जिजीविषा का संघर्ष : भारत जैसे धार्मिक देश में वैद्यक सभी वर्गों के लिये एक जटिल समस्या है फिर गरीब और निम्नवर्ग की तो बात ही बलग है । *इन्हें भी इन्तजार¹ है* की विधवा पति के मर जाने के उपरान्त भील मार्गने की विवश हो गई है पर लोग भील न देकर उसे धक्के देते हैं । वैद्यक के अभिलाष ने उसे मिदनाबूति की दुहरी विवशता में धकेल दिया । मिदनाबूति की गहिँल प्रथा की स्वाधीनता के इतने बर्गों बाद भी हम समाप्त नहीं कर सके । *जिन्दगी और जॉक²* का रज्जुवा समाज की धार्मिक विषमता से पीड़ित होकर भील मार्गने को मजबूर है । *वह मरना नहीं चाहता था इसलिए जॉक की तरह जिन्दगी से चिमटा रहा लेकिन लगता है जिन्दगी स्वयं उससे चिपटी थी और धीरे-धीरे उसके रक्त की अंतिम बूंद पी गयी ।³* रज्जुवा की पीड़ा केवल उसकी जिजीविषा की पीड़ा नहीं है अपितु आज की सामान्य जिन्दगी के सामाजीकरण की पीड़ा है जिसमें दुर्निवार संघर्ष और बोझ है । भूला मरता क्या न करता के अनुसार बैक्सी और गरीबी से हताश पिता ही जब गला घोटकर अपने बेटे को मार डालता है तब वर्ग वैद्यक्य के प्रति हृदय विदारक से भर उठता है ।⁴

- 1- इन्हें भी इन्तजार है-- शिवप्रसाद सिंह-संग्रह यही-- पृष्ठ-68, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-प्रथम संस्करण- 1961 ।
- 2- अमरकान्त- जिन्दगी और जॉक-- मौत का नगर, पृष्ठ-88, रचना प्रकाशन, 45-ए, तुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्रथम सं०-1973 ।
- 3- जिन्दगी और जॉक- अमरकान्त- मौत का नगर- पृष्ठ-90, रचना प्रकाशन, 45-ए, तुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्रथम सं०- 1973 ।
- 4- मार्कण्डेय- संगीत वाँसू और इन्सान, पानफूल पृष्ठ-101, नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद, तृतीय सं०-1961 ।

निराशा जनितः आत्म हत्या के जो विभिन्न सन्दर्भ होते हैं उनमें पलायन मुख्यतम सन्दर्भ है। घनाभाव और विपन्नता। गरीब को मजबूरी में अनैतिकता का सहारा लेना पड़ता है और उस अनैतिकता के परिणाम स्वरूप जब उसे तिरस्कार मँलना पड़ता है तब वह एक दूसरा रास्ता सोच लेता है, आत्मघात का 'अन्धकूप' की सौनी-भाभी इसी प्रकार की परिस्थिति का शिकार बनी हुई कुर्ये में कूदकर आत्महत्या कर लेती है।¹

वार्षिक मजबूरियों से दबा हुआ भारतीय गाँव का जीसत जायमी बेमेल व्याह को स्वतंत्रता के अनेक बगों बाद भी बुरा नहीं समझता। वस्तुतः वह बेमेल व्याह को समस्या न मानकर समस्या से छुटकारा पाने का निदान मान लेता है। इसीलिये एक षोडशी कन्या पचास वर्ष के लंगड़े को व्याह दी जाती है²। गरीबी की विपन्नता ने यदि बेमेल विवाह कराया तो बेमेल विवाह की जटिलता ने यौन समस्या का प्रश्न खड़ा कर दिया। एक युवती के अन्तर्भेद की उमरी शायद पचास साल का लंगड़ा नहीं समझ सका। इसीलिये वह घर से भाग जाने को विवश होती है। नाना अनचाही मजबूरियों और अनेक अनैतिक उपायों से यौवन और पेट की मूल को बुझाती हुई पीड़ित, तिरस्कृत और अमिश्रित वही शन्नो फिर जब लौटकर अपने बूढ़े और लंगड़े पति के पास लौट जाती है तब मामूली जायमी के अस्तित्व संघर्ष और जीवन की उदाम छालसा का रहस्य समझ में आ जाता है और लंगड़ा बूढ़ पति बगों बाद लौटती हुई अनेक पुस्तकों के संघर्ष में रहने वाली पत्नी का सहर्ष स्वागत करता है तब अलैपन की असमर्थता से सिर फुकाने का मूलभूत संघर्ष मुक्त हो उठता है।

1- शिवप्रसाद सिंह- अन्धकूप- इन्हें भी इन्तजार है, पृ०- 241,
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय- वाराणसी, प्रथम सं०- 1961।

2- मार्कण्डेय- सात बच्चों की माँ- पानफूल- पृष्ठ- 121, नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी, मिन्टो रोड, इलाहाबाद- तृतीय सं०- 1961।

दरिद्रता का अभिशाप: ग्रामीण परिवेश के अभावजन्य अलेपन की व्यथा और तीव्रतम अनुभूति कराने वाली कहानी 'मारे गये गुलफाम' ¹ रिक्त जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तुत कर देती है। हीरामन की रिक्तता निम्नवर्ग के करोड़ों जीवनों की रिक्तता है। यह रिक्तता देश के हर छहर में भी मिलती है। नारबोय की उदासी, घुटन और दयनीयता 'एक बदबूदार गली' ² में प्रतिबिम्बित होता है जहाँ गली की बदबू में जानवरों की तरह बच्चे पलते रहते हैं, विधवा को विवश धन्धा करना पड़ता है, बूढ़ा मौची रौंटी के बदले चमड़ा चबाने लगता है और बूढ़े पति की तीसरी पत्नी अपने पति को भिलारियों के बीच पुलपर झोंड़ जाती है क्योंकि वह अधिक रौंटियाँ सजने को माँगता है। निम्नवर्ग का यह कुत्सित परिवेश हमारी आँखों को गीला कर जाता है।

वर्ग-विषमता: वर्ग वैषम्य समस्त विश्व की आधुनिकतम समस्या है। भारतीय समाज की यह एक वास्तविकता बनी हुई है। हिन्दी कहानियों में कमिद जनित विविध कठिनाइयों का सशक्त अंकन मिलता है। 'मैं हार गई' ³ में निम्नवर्ग एवं उच्च वर्ग को आमने सामने सड़ा करके निर्धन परिवार की दयनीयता को उमारा गया है। कहानी का मुख्य पात्र बहन के इलाज के लिए चोरी करने को विवश होता है और जमींदार के कारिन्दों से मुठभेड़ लेता है जिसके बदले उसे पिता की आकस्मिक मीत देसने को मिलती है। मध्यवर्ग

- 1- फण्णिश्वरनाथ रेणु - मारे गये गुलफाम, मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ- 22, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
- 2- एक बदबूदार गली- कृष्णाकलदेव वैद, बीव का दरवाजा, पृष्ठ- 33- नीलाम प्रकाशन, 15-लुसरो बाग रोड- इलाहाबाद-1, प्रथम सं०- 1963।
- 3- मैं हार गई-- मन्नु मण्डारी- मन्नु मंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ- पृ०-145, अक्षर प्रकाशन, प्रा०लि० 2।36, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1975।

और निम्नवर्ग के बीच भी यही विषमता है क्योंकि दोनों के बीच चौड़ी साई है जो स्वामी-सेवक संबंधों को जन्म देती है। निम्नस्तरीय नौकरानी पति द्वारा परित्यक्त होने पर अपने चार बच्चीय बेटे को पालने के लिये घर-घर की चाकरी करनी पड़ती है¹। नौकरी करना उसके लिये जितना विवशता जन्म है, पुरानी नौकरी छोड़कर नई नौकरी तलाश करना उससे भी अधिक विवशतापूर्ण है क्योंकि बच्चे के चापल्य और शरारत के कारण उसे घर-घर की दासता का दण्ड भोगना पड़ता है।

गुंडियां गले न लगीं में दो वर्गों के बच्चों के माध्यम से लेखक ने समाजवादी चेतना का निरूपण किया है। गरीब बाप का बेटा रामू और अमीर पिता का पुत्र वसन्त जब गुली ठण्डा खेलते हैं तब रामू को दबाकर रखने को वसन्त अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। वह उसे मारपीट भी छेता है। इन दोनों के शोणित शोणक सम्बन्ध है। रामू के घर में राग है और पिता के जेब में धन का अभाव है, फटेहाली विवशता और एक नपुंसक बड़बड़ाहट की उसको आदत पड़ गई है। सामाजिक वैषम्य की यह कहानी निम्नवर्ग के चीत्कार की अभिव्यक्ति करती है।

सुहागिर्ने² में हेडमिस्ट्रेस की नौकरानी के पास भी एक चाह मरा हृदय है। वह अपनी मालकिन की शृंगार मेज के सामने खड़ी होकर लिपस्टिक और पाउडर लगाती है और दर्पण में मुग्ध होकर अपना चेहरा देखती है। तभी मालकिन उसे पकड़ लेती है और जली-कटी सुनाती है।

- 1- अपने-अपने बच्चे- भीष्म साहनी- मटकती राख पृ०-194 ,
राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार, दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966 ।
- 2- दयानन्द अनन्त- कहानी दिसम्बर- 1952 ।
- 3- सुहागिर्ने- मोहन राकेश- एक और जिन्दगी, पृष्ठ- 15, राजमाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट - दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1970 ।

हैमिस्ट्रैस अपने बेटन में से पति को भी रूपये भेजती है पर यह नीकरानी अपने सूते के मरीज बच्चे का इलाज भी नहीं करा पाती । वह मनोरमा की रसोई में से चीजें चुराती है । मध्यवर्ग और निम्नवर्ग के बीच की लाई का यह यथार्थ रूप है । पेट के लिये न जाने क्या-क्या करना पड़ता है ।

जिन्दगी गरीब को भी प्यारी होती है । उस जिन्दगी की चाहने अनाथ शंकरिया से चोरी करवाई, मीस मंगवाई और कमी पुलिस-वालों से तो कमी मिहानावृत्ति कराने वाले मालिक से थप्पड़ छुसे और छानें सहने को मजबूर किया । 'प्यास' कहानी के सभी पात्र कुत्सित और मारकीय जीवन-जीने को मजबूर हैं । वे उसी गले सड़े दायरे में सन्तुष्ट रहते हैं क्योंकि उन्हें लगता है उनको उससे बेहतर जिन्दगी गुजारने का अधिकार नहीं है ।

पुलान प्रधान समाज की रुढ़ियों ने सबसे अधिक निम्नवर्ग को प्रभावित किया है । गरीबी का वैश्य इतना भयावह होता है कि चार-चार दिन तक भूख मारने वाले कोढ़ी पति की मृत्यु पर भी बेचारी विधवा चीत्कार और क्रन्दन करती है । वह अपने पति की तीसरी पत्नी है और पति का प्यार पाने को जब तरस कर रह जाती है तब युवा चमन पर यदि उसकी बर्तें टिक जाती हैं तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ? ज्वानी की माँग गरीब के पास भी होती है । जिजीविशा के उत्साह और उर्म में नई नकेली •

1- प्यास- शैलेश मटियानी, दो दुर्तों का एक सुत- पृ०-40, किताब मल्ल, 56-ए-जीरो रोड, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1966 ।

2- कमलेश्वर- साँसबे- राजा निरबंसिया- पृ०- 167, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी- 5 , द्वितीय सं०- 1966 ।

3- ----- वही ----- पृष्ठ- 170 ।

4- मीन साहनी- नई नकेली- मटकती रात - पृ०-

राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार- दिल्ली , प्रथम संस्करण- 1966 ।

युवती विधवा होकर भी आत्म निर्भरता की ओर बढ़ती है। गरीब विधवा जीवन यापन के निमित्त चाय की दुकान करने लगती है पर उसकी सास उससे रुपये छीनकर ले जाती है क्योंकि जबान धैरे के मर जाने से गरीबी की समस्या उसके सामने भी विकराह रूप से उपस्थित है इसीलिए एक ही परिवार के दो गरीब परस्पर टकराते हैं और पारिवारिक एकता का विघटन हो जाता है। ऐसे पात्रों के समस्त परिवार या समाज से पल्ले पेट भरने और जीवन चलाने की समस्या है अतः उनका नैतिक पतन भी आर्थिक विणमता का ही एक पहलू है।

उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त व्यक्ति की आर्थिक विणमता अन्य पीढ़ावर्गों, उलफानों, चारित्रिक पतनों और मूल्यों के विघटन आदि अनेक पहलुओं का चित्रण 'भूत और प्यासे' ¹, 'महलिया' ², 'दुकानदार बच्चे' ³, 'वर्ष है' ⁴, और 'चित्रफलक' ⁵ आदि कहानियों में भी पाया जाता है। इन कहानियों के विपन्न और विकल पात्र सुखी जीवन की लालसा से संघर्ष करते दृश्य पाये जाते हैं। इसलिये इन कहानियों के मूल में आर्थिक विणमता को नष्ट कर एक नये शोषणमुक्त सुखी परिवार और समाज की स्थापना की उर्मग निहित है।

- 1- द्विवेन्द्रनाथ मिश्र, कहानी- जनवरी- 1955 ।
- 2- शानी- कहानी- अगस्त- 1960 ।
- 3- हृदयेश- ज्ञानोदय, जुलाई- 1958 ।
- 4- श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरिक्ता- कहानी- जनवरी- 1958 ।
- 5- बभ्रुतराय- नई कहानियाँ- दिसम्बर- 1960 ।

समस्याओं का समेकन :

उपर्युक्त कहानियों पर विहंगम दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि उच्चमध्यवर्ग, मध्यमध्यवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग की अनेक समस्याएँ एक सी हैं। विवाह, प्रेम और सैक्स नौकरीपेशा स्त्री, दाम्पत्य का बिसराव जैसी समस्याएँ तीनों ही प्रकार के परिवारों में पाई जाती हैं। नारबोध की मयाबहता मध्यवित्त और निम्नमध्यवित्त परिवार के लोगों को अधिक प्रतीत होती है इसलिये महानगरीय बोध दोनों से संबंधित कहानियों में विद्यमान है। निम्नवर्ग केबारा नाना समस्याओं का बोझ केवल विपन्नता और दरिद्रता के कारण ही ढोता रहता है इसलिये निम्नवर्गीय परिवार की कहानियों में जो निराशा, वैय्य विवशता और जड़ता की परिस्थितियाँ दिखाई देती हैं वे सभी गरीबी और व्यर्थ की घोर कमी के कारण बनती है। उच्चमध्यवर्ग यद्यपि ऊँचा चढ़ने और अधिक व्ययार्जन करने की छालसा से तरह-तरह के छोटे-बड़े हथकण्डे अपमाता है परन्तु सुविधामोगी और अपेक्षाकृत सम्पन्नता में जीवन व्यतीत करने के कारण उसपर अधिभाव का प्रभाव नहीं पड़ता। यह वर्ग तो अपने वार्थिक प्रभाव से शराबखोरी, मनोरंजन, और सामाजिक प्रतिष्ठा के सभी कारणों को अपनी पुठ्ठी में रसता है। मोग-विलास, प्रदर्शन फैशन परस्ती तथा पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की नकल करके उच्चमध्य परिवार के स्त्री पुरुष तथाकथित प्रगतिशीलता और वाधुनिकता का दम मारते हैं इसलिये उनके जातिजात्य और प्रदर्शन प्रियता पर काफी लिसा गया है।

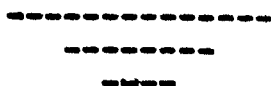
बेरोजगारी की यातना भी उच्चमध्यवर्ग को प्रायः नहीं फौलनी पड़ती इसलिये मध्यवर्ग के शेष दोनों परिवार ही उसे फौलते हैं। उच्चमध्यवर्ग के पास पैसा होता है अतः वह बच्चों को ऊँची शिक्षा दे सकता है, उनकी कोई बिजान्स करवा सकता है, ठेका दिलवा सकता है इसलिये बर्हा बेकारी क्यों होगी। निम्नवर्ग को कुछ भी करने में शर्ष नहीं आती इसलिये वह

मिहनाबरण से लेकर चोरी, मजदूरी, दूसरे वर्गों के घरों की नौकरी भारतीय समाज की संरचना परिवार पर आधारित है। अतः उच्चमध्यवर्ग, मध्यमध्यवर्ग, निम्नमध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग सभी वर्गों के परिवारों की संवेदना स्वाधीनोत्तर कहानी साहित्य में उपलब्ध होती है। व्यंशास्त्र और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार जो पूँजीपति वर्ग कहलाता है, उस परिवार की कहानियाँ प्रत्यक्षा रूप से बहुत कम लिखी गई हैं। जो कहानियाँ उपलब्ध होती हैं वे प्रस्ताचार, शोषण, उत्पीड़न और वधू की परिधियों को धरती हुई राजनीतिक और सामाजिक घरातल को अधिक प्रभावित करती हैं। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है मध्यवर्ग के मसिजीवी लेखकों ने अपने वर्ग के संस्कार और सम्दर्भों के बहु आयामी रूप बड़े सशक्त और सूक्ष्म रूप से चित्रित किये हैं। जिस वातावरण और जिन स्थितियों को वे भोग रहे हैं (या भोगा है) तथा जिनको भोगते हुये अपने चारों ओर के लोगों को देख रहे हैं उनके यथार्थ को उपर्युक्त कहानियों में अभिव्यक्ति मिली है। इसीलिये अपने कारखानों और उद्योगों का विस्तार करके तथा अधिक से अधिक मजदूरों का केन्द्रीकरण करके उनकी अतिरिक्त अक्षमता को खरीदने वाले और इस प्रकार अपनी पूँजी को निरन्तर बढ़ाते रहने वाले मुनाफ़ाखोर पूँजीपतियों और सेठों की पारिवारिक समस्यायें इन लेखकों ने मूलरूप से नहीं उठाई हैं। यही कारण है कि प्रस्तुत वर्गीय कहानियों में पूँजीपति वर्ग की समस्याओं पर विचार नहीं किया है। निम्न-वर्ग के वर्ग वैवाच्य अथवा निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विषमता के परिपार्श्व में जो दूसरा वर्ग इन कहानियों में समानान्तर रूप से आया है वह मध्यवर्ग और उच्चमध्यवर्ग है। निम्नवर्ग के परिवार को मध्यवर्ग प्रभावित करता है। तो मध्यवर्ग के परिवार को उच्चमध्यवर्ग। स्वामी सेवक संबंध, जीविका-दोत्र, पड़ोसी और मकानमालिक आदि विभिन्न सम्दर्भों में उपर्युक्त चारों वर्ग एक दूसरे को प्रभावित और परिवर्तित करते हैं। आमिजात्य वर्ग का अभिप्राय उच्चमध्यवर्ग ही है, पूँजीपति वर्ग नहीं करने में बरा भी संकोच नहीं करता।

परम्परागत और पुरुषैनी रूप से वह यही करता जा रहा है। उसके सामने एसीलिये बेकारी की समस्या बहुत कम होती है कि वह छोटे से छोटा काम करने में न शरमाता है न घबराता है जबकि मध्यवर्ग के लोग शारीरिक श्रम और छोटा काम करने को बुरा समझते हैं। गाँव का पढ़ा-लिखा इन्टर ब बी०ए० पास लड़का अपने सैत में काम करना पसन्द नहीं करता और दिनभर कलम घिसने वाली बल्की को पसन्द करता है। गाँव से शहर आने के कारण गाँव की आबादी कम और शहर की बहुत ज्यादा होती जा रही है अतः शहर में मध्यवर्ग और पीड़ित होता जा रहा है। भिक्षा-विस्तार के अनुपात से जीविका के आधार बहुत कम हैं अतः बेरोजगारी का यह भी एक मुख्य कारण है।

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त बाल मनोविज्ञान, रुढ़ि विरोध, वैधव्य, अनमेल विवाह और वैश्यावृत्ति तथा वैश्यागामिता जैसी समस्याएँ मध्यममध्यम वर्गीय परिवार की कहानियों में ही अधिक पाई गई इसलिये उन्हें इसी वर्ग के अन्तर्गत संकलित किया गया है। ऐसा नहीं है कि इन विषयों पर सीमा रेखा लगा दी गई है कि ये कहानियाँ या इनकी संवेदना दूसरे वर्ग के परिवारों में नहीं पाई जाती। ध्यान इस बात का रखा गया है कि इन समस्याओं पर अधिकतम कहानियाँ मध्यवर्गीय परिवार की भूमिका में ही लिखी गई हैं। वर्गों में भी इन पर प्रकाश डाला गया है पर मूलधुरी इनकी मध्यवर्गीय परिवार ही रहा है।

परम्परागत विषयों पर भी लिखा गया है जैसे- वैधव्य, अनमेल विवाह, वैश्यावृत्ति आदि-आदि पर अधिकतर नई दृष्टि और नये परिदृश्य प्रस्तुत किये गये हैं जो स्वाधीनोत्तर साहित्य की देन है। स्वतन्त्रता प्रेरित मनोदृष्टि ने स्वातन्त्र्य मूल्यों और नई जीवनस्थितियों को अपेक्षाकृत अधिक प्रतिष्ठित किया है।



: सप्तम अध्याय :

उपसंहार :-

-: उपसंहार :-

स्वार्तज्ञोच्चर कालीन हिन्दी कहानी का वीर उसमें चित्रित परिवार के स्वरूप का जो विवेचन हम पिछले अध्यायों में प्रस्तुत कर चुके हैं उससे इसकी उपलब्धियों की सहजता से जाँका जा सकता है। हिन्दी कहानी ने कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टि से अपने को अपेक्षाकृत पहले से सशक्त बनाया है। हिन्दी कहानी ने इस काल में शैली, भाषा, यथार्थ की अभिव्यक्ति और व्यञ्जना शक्ति या सांकेतिकता चारों ही दृष्टियों से विकास किया है।

बाब की कहानी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वह यथार्थ के प्रति निष्ठा है और उसकी दृष्टि सर्वतोमुखी रही है। उसने समाज के विभिन्न पदों को अपने बाप में समाहित किया है चाहे वह पारिवारिक स्वरूप का प्रश्न हो या देश में बढ़ती वराजकता या प्रभुत्वाचार का प्रश्न हो अथवा स्वतंत्रता के पश्चात् स्वप्नमर्ग की स्थिति से व्यक्ति के मन में समाये हुए संक्रास या मृत्युबोध का प्रश्न हो सभी को स्वार्तज्ञोच्चर कहानीकारों ने अपनी कहानी का केन्द्र बनाया है इसलिए यह भी कहने में हमें संकोच नहीं है कि स्वार्तज्ञोच्चर कहानी ने अपने दायित्व को भी संपूर्णता के साथ निभाया है।

1- इसकी चर्चा अग्रिम पंक्तियों में करेंगे।

2- इतबार नहीं --रबीन्द्र कालिया- पृ०-138, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 847, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2, पृ० सं०-1969, वासिरी सामान- मोहन राकेश- पहचान- पृ०-58, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वि० सं०-1974।

3- परतों के नीचे- हृदयेश- छोटे शहर के हाँग- पृ०-138, अक्षर पृ०-2136-जसदारी रोड, दरिबार्गज, दिल्ली, पृ० सं०-1972।

जिंदगी और जीक- अमरकांत- जिंदगी और जीक, पृ०-118, नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी- मिन्टो रोड, इलाहाबाद, संस्करण, फरवरी-1958

शौकराज के पिछले अध्याय में हमने जिन परिस्थितियों का उल्लेख किया उनका प्रभाव आलोच्ययुगीन कहानी पर पड़ा और इसलिए परिवार के स्वरूप पर भी निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा। फलस्वरूप स्वतंत्रता के बाद का परिवार का स्वरूप अपने पूर्ण रूप से नितान्त भिन्न हो गया और इस भिन्नता को भी हम परिवार का वैशिष्ट्य मान सकते हैं। आज प्रेमचन्दयुगीन संयुक्त परिवार का स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया है और इस एकाकी परिवार में भी परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने आप में एक इकाई बन गया है। परिवार के संबंधों में एक बहुत बड़ा अन्तर इस काल में आ गया है। आज पहले जैसा माधुर्य परिवार में दृष्टिगत नहीं होता। उसकी समस्याओं में भी काफी भिन्नता आ गई है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वतंत्रता के बाद देश में जो संक्रांति की स्थिति बन गई है उसने परिवार को परिचालित किया है। आज के कहानीकार ने किसी पूरवग्रह से वाक्य हुए बिना आज के परिवार के विघटित स्वरूप का उसकी समस्याओं का, उसकी विसंगतियों का चित्रण किया है।

आज परिवार का संभारना, उसका संभारना दुष्कर सा इसलिए प्रतीत होता है क्योंकि परिवार के रथ के दो पञ्चद्वि पति और पत्नी अलग-अलग दिशाओं में चलना चाहते हैं इसलिए दाम्पत्य संबंधों में तिकतता सी आ गई है कहीं पर इस तिकतता का कारण पति है तो कहीं पर पत्नी 'तनाव' ¹, 'पगडंडिया' ², 'दृष्टिबोध' ³ में इस वृत्त दाम्पत्य को बसूरी चित्रित किया गया है। कहीं-कहीं तो पति-पत्नी में विवाह-

- 1- तनाव- राजेन्द्र यादव- टूटना और अन्य कहानियाँ-- पृ०-25, बहार प्रकाशन, 2136, अंसारी रोड, दरियार्गज, दिल्ली, पृ० सं०-1966।
- 2- पगडंडिया- गिरिराज किशोर- पेपरबैट- पृ०-25, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियार्गज, दिल्ली- पृ० सं०- 1970।
- 3- दृष्टि-बोध- उषा धीरवदा-- जिंदगी और गुलाब के फूल- पृ०-105 भारतीय ज्ञानपीठ, 3620।21- नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली- पृ० सं०- 1971।

बिच्छेद तक की स्थिति बन गई है। *टूटना*¹, *नींद*², *मग्न प्राचीर*³ में इस स्थिति को देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के कारण बदलते हुए परिवेश में सबसे अधिक परिवार की घुरी *पत्नी* बदल गई। अब वह जेनेन्द्र युगीन पत्नी नहीं रही बरन् आज वह पति के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने लगी है और अपने समान अधिकारों के लिए संघर्ष भी कर रही है। यद्यपि पत्नी की वात्मनिर्मिता भी कहीं-कहीं परिवार में तनाव का कारण बन गई है--*बन्द दरारों के साथ*⁴ *फ़ाँक वाला धौड़ा निकर वाला साईस*⁵, *बलग-बीर विपरीत*⁶ में यह संघर्ष उमर कर बाया है। स्वातंत्र्यपूर्व की स्त्री वैद्य के सर्वथ में इतनी मुक्त नहीं हुई थी जितनी कि आज की विधवा हो गई है। आज उसकी इस मुक्तता को उसकी युवा पुत्री भी सहजता से स्वीकार नहीं कर

- 1- टूटना- राजेन्द्र यादव- एक दुनिया समानान्तर - पृ०- 297, सं० राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दरियार्गज, दिल्ली- दि० सं०- 1970 ।
- 2- नींद- देवेन्द्र इस्सर- काले गुलाब की सलीब- पृ०-7, शारदा प्रकाशन, महरौली, दिल्ली, प्र० सं०- 1975 ।
- 3- मग्न प्राचीर- शिव प्रसाद सिंह- कर्मनाश की हार-- पृ०-114, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गा कुण्ड रोड - बाराणसी, प्र० सं०- 1958 ।
- 4- बन्द दरारों के साथ- मन्नू मंहारी- एक प्लेट सैलाब- पृ०-22, अक्षर प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दरियार्गज, दिल्ली- प्र० सं०-1968 ।
- 5- फ़ाँक वाला धौड़ा निकरवाला साईस- गिरिराज किशोर- पेपरबैट, पृ०- 95, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली ।
- 6- बलग बीर विपरीत- रमेश उपाध्याय- शैव इतिहास- पृ०-63, आर्य बुक डिपो, 80- नाईवाला करौंस बाग, नई दिल्ली-5, प्र० सं०- 1973 ।

पातीं *दूसरे का मोग¹*, *तलाश²*, *अपनी मुक्ति³* में वैयध्य के नये वायाम देखे जा सकते हैं जो परिवार की स्वतंत्रता के पश्चात् एक उपलब्धि मानी जा सकती है। स्वातंत्र्यपूर्व कहानीकार इतने साक्ष्यपूर्वक वैयध्य की इन सीमाओं को नहीं तोड़ पाए थे। वाज की स्त्री स्वतंत्रता के बाद अपने पुरानी परम्पराओं से मुक्त करने के लिए, अपने को कैद से छुड़ाने के लिए प्रयत्न कर रही है उसके ये प्रयत्न *संघर्ष⁴*, *मुरब्बो वाली⁵*, *लकड़हारा⁶*, *जहाँ लक्ष्मी कैद है⁷* में देखे जा सकते हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी और वार्थिक विक्षता है। इस बेरोजगारी ने परिवार को तोड़ने में सहायक तत्त्व के रूप में कार्य किया है। इस बेरोजगारी ने पति-पत्नी के मध्य

- 1- दूसरे का मोग- गंगा प्रसाद विमल- कोई शुरूवात- पृ0-71, राजकमल प्रकाशन, 8- फौज बाजार दिल्ली, प्र0 सं0- 1973।
- 2- तलाश- कमलेश्वर- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ0-128, राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रि0 सं0- 1974।
- 3- अपनी मुक्ति- राजेन्द्र अवस्थी- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ0-77, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र0 सं0- 1975।
- 4- संघर्ष- सोमा बीरा- स्वातंत्र्योत्तर कथा लेसिकार्ड - डा0 उर्मिला गुप्ता पृ0- 44, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2- अंसारी रोड, दिल्ली, प्र0 सं0-1967
- 5- मुरब्बो वाली- अमृता प्रीतम- वह बादमी वह वीरत- पृ0-86, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र0 सं0- 1974।
- 6- लकड़हारा- राजेन्द्र यादव- जहाँ लक्ष्मी कैद है- पृ0-100, अक्षर प्रकाशन, 2186- अंसारी रोड, दिल्ली, प्र0 सं0-1971।
- 7- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- कई बाबाजों के बीच- पृ0-104। इकाई प्रकाशन, 16- मुल गोरूम नगर हिम्यलज, इलाहाबाद, प्र0 सं0-1968।

कटुता उत्पन्न कर दी है तो कहीं इस समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति को अनचाहे समझौते करने पड़े हैं। स्वतंत्र्यपूर्व हिन्दी कहानी में शायद यह समस्या परिवार के माध्यम से इस रूप में नहीं होगी। *नया जन्म*¹, *बासिरी रात*², *वासक्ति*³, *जिंदगी और गुलाब के फूल*⁴, *सिमटा हुआ दुःख*⁵ में वार्थिक विवशता के ये नवीन रूप सहजता से देखे जा सकते हैं जो परिवार की सुखद कल्पनावर्षों पर उसके माधुर्य पर कुठाराघात करते हैं।

स्वतंत्र्योत्तर काल की एक नवीन देन है---परिवार में आवास की समस्या, नगरबीध की समस्या। आवास के प्रश्न ने पारिवारिक ढाँचे को बहुत प्रभावित किया है। यह समस्या यद्यपि नगर के स्तर पर ही है किन्तु नगरबीध के इस नये सन्दर्भ ने परिवार के सदस्यों का मानसिक घरातल ही बदल कर रख दिया है। एक तरफ तो व्यक्ति इतना सीमित हो गया है कि वह दूसरे व्यक्ति के सुख-दुःख के विषय में सोचना ही नहीं चाहता। दूसरे वह नगर की इतनी बड़ी मीढ़ में भी अपने का अकेला महसूस करता है। आवास की समस्या- *बीच का दरवाजा*⁶, *शतरूपा की मौत*⁷

- 1- नया जन्म- सुरेश सिन्हा- काँई आबाजों के बीच- पृ०-104, इकाई प्रकाशन, 16-पुस्तकालय नगर हिम्मतनगर इलाहाबाद- पृ० सं०-1968।
- 2- बासिरी रात- काशीनाथ सिंह- ठाँग बिस्तरों पर- पृ०-17, अभिव्यक्ति प्रकाशन, 487- युनिवर्सिटी रोड-इलाहाबाद-2, पृ० सं०-1968।
- 3- वासक्ति- कमलेश्वर- क्यान तथा अन्य कहानियाँ- पृ०-152, लोकप्रतीति प्रकाशन, 15-ए- महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद- पृ० सं०-1972।
- 4- जिंदगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा- यही संग्रह- पृ०-130, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली- पृ० सं०- 1971।
- 5- सिमटा हुआ दुःख- हिमांशु जोशी- अन्ततः- पृ०-118, पूर्वोदय प्रकाशन, 718 दरियार्गज, दिल्ली- पृ० सं०-1973।
- 6- बीच का दरवाजा- कृष्ण बल्लभ वैद- यही संग्रह- पृ०-11, नीलाम प्रकाशन, 8-दुसरी बाग रोड- इलाहाबाद।
- 7- शतरूपा की मौत- विष्णु प्रभाकर- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-126, राजवाठ एण्ड संस- कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ० सं०-1970।

*एक कमरे का घर*¹, *साया*², में दिखाई देती है तो *सोई हुई दिशार्*³ में हमें नारबीब की कटुता और वजनबीपन दिखाई देता है ।

स्वार्तंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में चित्रित यौन वराजकता ने भी परिवार को प्रभावित किया है । यह बहुत बड़ा परिवर्तन हमें स्वतंत्रता की ही देन लगती है क्योंकि इतनी स्वच्छन्दता हम स्वार्तंत्र्यपूर्व हिन्दी कहानी में नहीं दिखाई देती । *बाया गीत गा रही है*⁴ की बाया बच्चों से कहती है कि तुम्हारे मम्मी के होने वाले बच्चे की माँ तो तुम्हारी मम्मी होगी पर पापा पता नहीं होंगे या नहीं । इसके अतिरिक्त *एक कमजोर शास*⁵ *त्रिकोण*⁶ *परछाइयों*⁷ में यह नवीन परिवर्तन देखा जा सकता है ।

पाश्चात्य सभ्यता ने भी स्वार्तंत्र्योत्तर परिवार को परिवर्तित करने में बहुत योगदान दिया है । स्वतंत्रता के पश्चात् व्यक्ति परिचामी रहन-सहन, वैवाहिकता का अनुकरण तीव्रता से करने लगा किन्तु मानसिक धरातल पर वह भारतीय ही रहा । उसके इस अन्तर्विरोध ने उसको कहीं का नहीं रखा । हाँ, परिवार के ढाँचे को उसने अवश्य प्रभावित किया । यह प्रभाव

-
- 1- एक कमरे का घर- शानी- युद्ध- पृ०-174- विधा प्रकाशन मन्दिर, 1691- दरियार्गज, दिल्ली-6-पृ० सं०- 1978 ।
 - 2- साया-सुदयस- छोटे शहर के लोग- पृ०-65, अपार प्रकाशन, 2136- अस्तारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली, पृ० सं०-1972 ।
 - 3- सोई हुई दिशार्- कमलेश्वर- मेरी प्रिय कहानियाँ- पृ०-37, राजपाल रूठर्स कम्पनी गेट, दिल्ली, द्वि० सं०- 1974 ।
 - 4- बाया गीत गा रही थी- रमेश बच्ची- मेज पर टिकी हुई कहानियाँ- पृ०-17, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, बाराणसी-पृ० सं०-1963 ।
 - 5- एक कमजोर शास- सुरेश सिन्हा- विकल्प कथा साहित्य विशेषार्क- पृ०- विकल्प कार्यालय- मौतीलाल नेहरू नगर- इलाहाबाद- सं०- 1969 ।
 - 6- त्रिकोण- कृष्ण वल्लभ वैद- दूसरे किनारे से- पृ०- 11, राधाकृष्ण- प्रकाशन- दरियार्गज, दिल्ली ।

बालोच्च युगीन कहानी में चित्रित परिवार में सहजता से देखा जा सकता है ।
 'सेफ्टीपिन' ¹, 'एक समर्पित महिला' ², 'डेकोरेशन पीस' ³, 'ढोलक पर
 थोप' ⁴ आदि कहानियाँ के पात्र इसी व्यथा से ग्रसित हैं ।

एक बात और है जो स्वतंत्रता के बाद उमर कर आई वह है
 वर्गविषमता का अंकन । ऐसा नहीं है कि यह कोई नितान्त नवीन उपलब्धि
 है किन्तु परतंत्र भारत में यह वर्ग विषमता उतना नहीं सालता था जितना कि
 स्वतंत्र्योत्तर भारत में । प्रेमचन्द ने वर्ग विषमता को लेकर बनेक कहानियाँ
 लिखी थीं । स्वतंत्रता के पश्चात एक सुलपूर्ण जीवन के लिए व्यक्ति जो स्वप्न
 संजोये बैठा था वे बिखर गए । आज भी पूरे देश की संपत्ति 75 परिवारों
 के हाथों में है और स्वतंत्रता के 25-30 वर्ष बाद भी अस्थिर परिवार फटपाय पर
 सदा और गर्मी में सोने को विवश हैं । उनके तन पर वस्त्र कम से कम होते
 जा रहे हैं । इस पूँजीवादी व्यवस्था की देन वर्ग विषमता ने सर्वाधिक
 परिवार के दो माई समान स्तर के नहीं है एक के पास समस्त सुविधाएँ
 हैं तो दूसरा जीवन की अनिवार्य वस्तुएँ भी नहीं जुटा पाता ।

- 1- सेफ्टीपिन- मोहन रोकेश- फौलाद का आकाश- पृ०-99, बहार
 प्रकाशन, 2136- अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, प्र० सं०-1966 ।
- 2- एक समर्पित महिला- नरेश मेहता- यही संग्रह- पृ०-55, भारतीय
 ज्ञानपीठ प्रकाशन, कलकत्ता ।
- 3- डेकोरेशनपीस- हृदयेश- छोटे शहर के लोग- पृ०-154, बहार प्रकाशन,
 2136-अंसारी रोड, दरियागंज-दिल्ली- प्र० सं०-1972 ।
- 4- ढोलक पर थोप- विष्णु प्रभाकर- मेरी प्रिय कहानियाँ, पृ०-82 ,
 राजपाल एंड संस- कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र० सं०-1970 ।

* मैं हार गई *¹, * अपने-अपने बच्चे *², * सुहागिने *³, * ध्यास *⁴ आदि कहानियाँ मैं इस की वैशाख के विभिन्न आयाम दिखाई देते हैं ।

एक सबसे बड़ी उपलब्धि हमें आलोच्ययुगीन परिवार की दिखाई देती है वह है बाल मनोविज्ञान को लेकर लिखी गई कहानियाँ । यह स्वार्तंत्र्योत्तर परिवेश की देन है कि बच्चे तीव्रता से घटित हो रही घटनाओं को शीघ्र ही पकड़ लेते हैं । वह अपने परिवार की समस्याओं के प्रति भी उतने ही जागरूक हैं जितने कि परिवार के बड़े सदस्य । यह परिवेश की पकड़ हमें स्वार्तंत्र्यपूर्व कहानियों में नहीं मिलती । * एक बह *⁵, * तस्वीर *⁶, * अपने घर का देश *⁷, * पुराना मकान *⁸ आदि कहानियों में बच्चों की इस संवेदना को देखा जा सकता है ।

- 1- मैं हार गई- मन्मू मंडारी- श्रेष्ठ कहानियाँ- संपादक- राजेन्द्र यादव, पृ०-145, अक्षर प्रकाशन, 2136, अंसारी रोड, दिल्ली, सं०- 56-ए, जीरा रोड, इलाहाबाद, पृ० सं०-1966 ।
- 2- अपने-अपने बच्चे- मीश साहनी, पटकती रात, पृ०-194, राजकमल प्रकाशन, 8-फौज बाजार, दिल्ली- पृ० सं०-1968 ।
- 3- सुहागिनें- मोहन राकेश- एक और जिंदगी- पृ०-15, राजपाल एंड सन कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ० सं०-1970 ।
- 4- ध्यास- शैलेश मटियानी- दो दुर्लभों का एक सुत-पृ०-40, किताब मल्ल, 56-ए, जीरा रोड, इलाहाबाद, पृ० सं०-1966 ।
- 5- एक बह- रामदत्त मिश्र- एक बह- पृ०-85, नेशनल पब्लिशिंग हाउस- दरियार्ज, दिल्ली- पृ० सं०-1974 ।
- 6- तस्वीर- मीश साहनी-पटरियाँ- पृ०-58, राजकमल प्रकाशन- 8-फौज बाजार, दिल्ली- पृ० सं०-1973 ।
- 7- अपने घर का देश- काशीनाथ सिंह- लोग बिस्तारों पर- पृ०-46, अभिव्यक्ति प्रकाशन- युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद- पृ० सं०-1968 ।
- 8- पुराना मकान- राधाकृष्ण ब्रह्म- जालीदार पर्दे की झुप- पृ०-28, लोकप्रती प्रकाशन, युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, पृ० सं०-1970 ।

स्वातंत्र्योत्तर परिवार में प्रेम का स्वरूप भी बदल गया है । अब प्राचीन काल जैसे 'पवित्र प्रेम' की कल्पना ली गई है । अब पति पत्नी से उसकी तथा कथित पवित्रता को लेकर ही यदि संपूर्ण दाम्पत्य संबंधों का मूल्यांकन करेगा तो स्वयं की ही हानि करेगा क्योंकि परिवर्तित परिवेश में पुराने मूल्यों के स्थान पर, पुरानी धारणाओं के स्थान पर नये मूल्यों और नई धारणाओं की स्थापना हो गई है । इसीलिए 'ऊँचाई' ¹ की नायिका अपने पति से अपने अतीत के प्रेम संबंध को नहीं छिपाती वरन् स्पष्ट रूप से कह देती है कि वह भी सही था और यह भी सही है ।

सारांश रूप में बालौच्ययुगीन परिवार अपने पूर्व रूप से नितान्त भिन्न है । इसका कारण यह है कि स्वतंत्रता के बाद देश में अनेक परिवर्तन हुए । औद्योगीकरण बड़े स्तर पर हुआ जिसने परिवारों को गाँवों से शहरों की ओर खींचा । इसके साथ ही गाँवों में चली आ रही संयुक्त परिवार की प्रथा भी टूटने लगी । दूसरे आर्थिक दबाव व्यक्ति पर इतने पड़े कि उसको एकाकी परिवार को चलाना भी दुष्कर हो गया । स्त्री की शिक्षा उसकी आत्मनिर्भरता ने भी परिवार के ढाँचे को बहुत प्रभावित किया । स्त्री के विवाह, तलाक और सम्पत्ति में भागीदारी के संबंध में सरकार के द्वारा जो कानून बनाये गए उनसे भी स्त्री को अपने समान अधिकार के लिए संघर्ष करने में सहायता मिली ।

इनके अतिरिक्त महान्गरीय समस्याओं ने भी परिवारों पर बहुत प्रभाव डाला । कहीं आवास की समस्या है तो कहीं बेरोजगारी की । इन समस्याओं ने परिवार की सौहार्दता, भाव्यु समाप्त कर दी । पाश्चात्य सभ्यता ने भी परिवारों को प्रभावित किया । पारिवारिक विघटन का एक मुख्य कारण यह भी है कि समाजवादी देशों की भाँति हमारे देश में बच्चों की शिक्षा का,

1- ऊँचाई- मम्मू मंडारी- एक प्लेट सैलाब- पृ०-126, अक्षर प्रकाशन,
पृ० लि०-2136- अक्षरी रोड, दरियागंज, दिल्ली, पृ० सं०- 1968 ।

उनके स्वास्थ्य की कोई गारण्टी सरकार द्वारा नहीं की जाती न ही नौकरी की निश्चितता है। देश की सरकार अभी ऐसी स्थिति में नहीं है कि समस्त बुढ़ लौगों को शैषा आयु व्यतीत करने के लिए पेंशन या भत्ता प्रदान कर सके। ऐसा करने से भी काफी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

जहाँ तक ग्रामीण परिवार का प्रश्न है उसमें भी काफी परिवर्तन आये हैं। वहाँ भी पुरानी मान्यताएं टूट रही हैं। सामन्तवाद, जमींदारी जैसी पुरानी बुराइयाँ शनैः शनैः समाप्त हो रही हैं। वहाँ के परिवारों में भी विघटन हो रहा है परन्तु उतनी तीव्रता से नहीं हो रहा है जितनी तीव्रता से शहरों में हो रहा है। वहाँ पर महानगरीय सभ्यता, औपचारिकता, वहाँ की समस्याओं का समावेश बड़े रूप में नहीं हुआ है। हमारे बहुत से कथाकारों ने ग्रामीण-परिवेश को, वहाँ की मिट्टी की गंध को अपनी कहानियों का केन्द्र बनाया है किन्तु कथाकारों की लम्बी सूची में से कुछ ही कथाकार हैं जिन्होंने ऐसा किया है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि अधिकांश कथाकार शहरों में रहने वाले हैं।

अस्तु, परिवार का भावी स्वरूप क्या होगा यह भी प्रश्न महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार ही एक ऐसी महत्वपूर्ण संस्था है जो समाज की व्यवस्था और अनुशासन में रहती है। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि परिवार का स्वरूप भले ही और बदले पर यह समाप्त होने वाला नहीं है क्योंकि भारत पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव कितना ही क्यों पड़ जाये, इस देश की अपनी एक संस्कृति है वह समूल नष्ट कभी नहीं हो सकती। इसलिए यहाँ के जीवन की स्थिरता और शान्ति भी अक्षुण्ण रहेगी। भारत, इंग्लैंड जैसा अमेरिका नहीं बन सकता। इसलिए वहाँ जैसी विद्रुलता यहाँ नहीं आयेगी और परिवार नामक संस्था का भविष्य उज्ज्वल और सुरक्षित है।

-: परिशिष्ट :-

सहायक ग्रन्थ-सूची

(शीघ्र ग्रन्थ)

<u>ग्रन्थ एवं शीघ्रकर्ता</u>	<u>प्रकाशन तथा संस्करण</u>
आधुनिक हिन्दी साहित्य डा० राम गोपाल सिंह चौहान	विनीत पुस्तक मन्दिर, हास्मिटल रोड, आगरा, प्रथम सं०- 1965
कहानी की संवेदनशीलता-सिद्धान्त और प्रयोग- डा० मगवान दास वर्मा	ग्रन्थम्, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण- 1972 ।
प्रेमचन्दोंतर कहानी साहित्य, डा० राधेश्याम गुप्त	विमल प्रकाशन, तैलीपाड़ा, जयपुर-3 प्रथम संस्करण- 1970
स्वातन्त्र्योत्तर कथा लेखिकार्- डा० उर्मिला गुप्ता	राधाकृष्ण प्रकाशन, 2- बंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967
हिन्दी कहानी उद्भव और विकास डा० सुरेश सिन्हा	अशोक प्रकाशन, नई सड़क-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1967
हिन्दी कहानी कथ्य और शिल्प डा० सन्तवत्स सिंह	अभिनव भारती प्रकाशन, 42-सम्मेलन मार्ग- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1973

(कहानी संग्रह)

कहानी संग्रह तथा कहानीकारप्रकाशन तथा संस्करण

- कलक कलक अस्वीकार-
सै० रा० यात्री
- वन्तत:- स्मिाशु जीशी
- वादम और हब्बा-
मैहरुन्निशा परवैज
- इन्हें भी इन्तजार है
शिव प्रसाद सिंह
- इन्स्टालमेंट- मगवतीचरण वर्मा
- उत्ती की माँ- यशपाल
- उत्तराधिकारी- यशपाल
- एक वह- बरमदरत मित्र
- एक अमूर्त तकलीफ- रमेश बक्षी
- एक प्लेट सैलाक- मन्मू मंडारी
- एक और जिम्दगी- मोहन राकेश
- मावना प्रकाशन, 25।2-रेलवे क्वार्टर,
माता सुन्दरी पैलेस-दिल्ली, संस्करण-
1978
- पूर्वाख्य प्रकाशन, 7।8- दरियार्गज-
दिल्ली, संस्करण- 1973
- नैशनल पब्लिशिंग हाउस- दरियार्गज
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972
- हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय- वाराणसी
प्रथम संस्करण- 1961
- भारती मंडार, छिडर प्रेस, इलाहाबाद
विप्लव कार्यालय, 21-शिवाजी मार्ग
लखनऊ- तृतीय संस्करण- 1965
- विप्लव कार्यालय, 21-शिवाजी मार्ग
लखनऊ- तृतीय संस्करण- 1962
- नैशनल पब्लिशिंग हाउस- दरियार्गज-
दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1974
- मीलाम प्रकाशन, 5- सुसरो बाग रोड
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972
- अरार प्रकाशन, 2।36-जंशारी रोड
दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण-1968
- राजमाठ एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट,
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973

- एक घटना- मोहन राकेश राजपाल एण्ड सन्स- कश्मीरी गेट
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1978
- एक पति के नौटंक्स- महेंद्र मल्ला राजकमल प्रकाशन, फौजबाजार- दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1967
- एक-एक दुनिया- मोहन राकेश राधाकृष्ण प्रकाशन- 8- अंसारी रोड,
वरियार्गज-दिल्ली, संस्करण- 1969
- एक समर्पित महिला-नरेश मेहता संग्रह यही- पृष्ठ-58, भारतीय ज्ञानपीठ
क्लकचा
- जी मैरवी- यशपाल विप्लव कार्यालय, 21-शिवाजी मार्ग-
लखनऊ, संस्करण- 1958
- जी मत्स्यगन्धा- रा जेन्द्र किशोर किताब मल्ल, इलाहाबाद
- कल्लोल- विश्वम्भरनाथ शर्मा विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्मिटल रोड,
कौशिक वागरा, तृतीय संस्करण- 1958
- कई बाबाजों के बीच- सुरेश सिन्हा 15-ए महात्मा गान्धी मार्ग,
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1968
- करिए हिमा- शिवानी शिवानी प्रकाशक- 2208, गली डकौतान
तुर्कमान गेट-दिल्ली, द्वितीय संस्करण-
1978
- कर्मनाशा की हार- शिव प्रसादसिंह भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दुर्गाकुण्ड
रोड, बाराणसी- प्रथम संस्करण-
1958
- काला रजिस्टर- रवीन्द्र कालिया रचना प्रकाशन, 45-ए, सुल्तानाबाद-
इलाहाबाद, प्रथम संस्करण- 1972
- काले गुलाब की सलीब- देवेन्द्र हस्तर शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1975
- क्वाटीर- मोहन राकेश राजपाल एण्ड सन्स- कश्मीरी गेट-
दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1972

- कितना बड़ा फूट- उषा प्रियंवदा राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1974
- किनारे से किनारे तक- राजेन्द्र यादव राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1971
- कोई शुरुवात- गंगा प्रसाद विमल राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार-दिल्ली प्रथम संस्करण- 1973
- लोई हुई दिशायें- कमलेश्वर भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 1966
- चित्र का शीर्षक- यशपाल विप्लव कार्यालय- 21-शिवाजी मार्ग- लखनऊ- संस्करण- 1962
- छोटे-छोटे ताजमहल- राजेन्द्र यादव राजपाल एण्ड सन्स- कश्मीरी गेट- दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1972
- छोटे शहर के लोग- हृदयेश अक्षर प्रकाशन- 2186-अंसारी रोड, दरियार्गज- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974
- छोड़ा हुआ रास्ता- अश्व राजपाल एण्ड सन्स-कश्मीरी गेट- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975
- जहाँ लक्ष्मी कैद है- राजेन्द्र यादव अक्षर प्रकाशन, 2186- अंसारी रोड, दरियार्गज-दिल्ली- तृतीय संस्करण- 1971
- जमी हुई फील- रमेश उपाध्याय अक्षर प्रकाशन- 2186- अंसारी रोड दरियार्गज- दिल्ली- संस्करण- 1969
- जिन्दगी और गुलाब के फूल- उषा प्रियंवदा भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- कनाट प्लेस नई दिल्ली- चतुर्थ संस्करण- 1974
- जिन्दगी और जॉक- अमरकान्त नया साहित्य प्रकाशन, 2-डी-मिन्टो रोड- इलाहाबाद- संस्करण- 1958

- फाड़ी- श्रीकान्त वर्मा राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1969
- टट्टू सवार- विजय मोहन सिंह रचना प्रकाशन- 45-ए, सुल्ताबाद-
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971
- टूटना और अन्य कहानियाँ-
राजेन्द्र यादव अक्षर प्रकाशन- 2136-अंसारी रोड-
दरियागंज- दिल्ली
- ठुमरी- फकीरेश्वरनाथ रेणु राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967
- तलाश- राजेन्द्र अवस्थी राजपाल एण्ड सन्स- कश्मीरी गेट-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970
- तीन-चार दिन- महेंद्र मल्ला रचना प्रकाशन, 45-ए-सुल्ताबाद-
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972
- तीसरा सुत- शैलेश मटियानी प्रतिभा प्रकाशन- 511 कै० एल० कीट
गंज, इलाहाबाद
- तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ-
यशपाल विप्लव कार्यालय- 21-शिवाजी मार्ग
लखनऊ- तृतीय संस्करण- 1965
- दरार- वैद राही उमेश प्रकाशन, नाथ मार्केट, नई सड़क-
दिल्ली
- दूसरे बैहरे- से०रा० यात्री नीलाम प्रकाशन- 5-सुसारी बाग रोड
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971
- दूसरे किनारे से - कृष्ण कलदेव वैद राधाकृष्ण प्रकाशन, 2-अंसारी रोड,
दिल्ली
- देवरानी जिहानी की कहानी-
गीरीदत्त शर्मा ज्ञान सागर प्रेस- मेरठ, संस्करण
संवत्- 1870
- दो दुर्गों का एक सुत- शैलेश मटियानी किताब मल्ल, 56-ए, जीरो रोड
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1966

- वो जोड़ी वासि- राजेन्द्र अवस्थी नेशनल पब्लिशिंग हाउस- दिल्ली,
प्रथम संस्करण- 1971
- धरती अब भी घूम रही है- राजमाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली
विष्णु प्रमाकर प्रथम संस्करण- 1959
- नौ साल छोटी पत्नी अमिष्यवित्त प्रकाशन, यूनिवर्सिटी रोड,
रवीन्द्र कालिया इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1969
- पहचान- मोहन राकेश राजमाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट-
दिल्ली- द्वितीय संस्करण- 1974
- परिन्दे- निर्मल वर्मा राजकमल प्रकाशन-दिल्ली-6
- पटरियाँ- मीष साहनी राजकमल प्रकाशन- दिल्ली-6, प्रथम
संस्करण- 1976
- पानफूल- मार्कण्डेय नया साहित्य प्रकाशन- 2-डी मिन्टो
रोड-इलाहाबाद- तृतीय संस्करण-1961
- पिछली गर्मियाँ मैं- निर्मल वर्मा राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग,
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968
- पुष्पहार- शिवानी म्यूर पेपर बैक्स- 2135-जसारी रोड
दरियागंज-दिल्ली- प्रथम संस्करण-1973
- पैपरबैट- गिरिराज किशोर राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967
- पौन्स के इधर वीर उधर - अक्षर प्रकाशन, 2136-जसारी रोड-
ज्ञानरंजन दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1968
- फौलाद का आकाश- मोहन राकेश अक्षर प्रकाशन, 2136-जसारी रोड,
दरियागंज-दिल्ली- प्रथम संस्करण-1966
- बयान- कमलेश्वर लोकभारती प्रकाशन, महात्मागान्धी
मार्ग- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण-1972

- बन्दगली का वासिरी मकान-
धर्मवीर भारती
- बीर तराश हूँ- सुधा वरौड़ा
- बदशित बाहर- अचला शर्मा
- बीच का दरवाजा- कृष्ण बलदेववैद
- मटकती रात- मीन साहनी
- मानसरोवर भाग-1 - प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-2 प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-3- प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-4- प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-5-प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-6- प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-7- प्रेमचन्द
- मानसरोवर भाग-8- प्रेमचन्द
- माँस का दरिया- कमलेश्वर
- मिले जुले चैहरे- मोहन राकेश
- भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- दुर्गाकुण्ड रोड
वाराणसी- प्रथम संस्करण- 1969
- इकाई प्रकाशन, 16-पुरुषोत्तम नगर,
हिम्मतगंज-इलाहाबाद- प्रथम सं०-1968
- नीलाम प्रकाशन-5-सुसारी बाग रोड,
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1973
- नीलाम प्रकाशन, 5-सुसारी बाग रोड,
इलाहाबाद
- राजकमल प्रकाशन- 8-नैताजी सुभाषमार्ग
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966
- हंस प्रकाशन- इलाहाबाद- 11वाँ संस्करण
1970
- हंस प्रकाशन- इलाहाबाद- नवीन
संस्करण- 1972
- हंस प्रकाशन- इलाहाबाद- वर्तमान
संस्करण- 1968
- हंस प्रकाशन, इलाहाबाद- 10वाँ संस्करण
1965
- हंस प्रकाशन- इलाहाबाद
- हंस प्रकाशन, इलाहाबाद-
- हंस प्रकाशन, इलाहाबाद- संस्करण-1971
- हंस प्रकाशन-इलाहाबाद- नवीन
संस्करण- 1973
- अक्षर प्रकाशन-2136- अंसारी रोड-
दरियामार्ग-दिल्ली
- राधाकृष्ण प्रकाशन, 2-अंसारी रोड,
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972

- मुठ्ठी भर पल्लवान- अन्विता अग्रवाल राधाकृष्ण प्रकाशन-२- अंसारी रोड,
वरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण-1969
- मुर्दा सराय- शिव प्रसाद सिंह भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 9-अलीपुर
पार्क प्लेस कलकत्ता, प्रथम संस्करण-1966
- मेरा दुश्मन- कृष्ण बलदेव वैद राजकमल प्रकाशन- नैताजी सुमाण मार्ग-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1966
- मेरी प्रिय कहानियाँ- उषा प्रियंवदा राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974
- मेरी प्रिय कहानियाँ- निमल वर्मा राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली
द्वितीय संस्करण- 1978
- मेरी प्रिय कहानियाँ- राजेन्द्र यादव राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट- दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1978
- मेरी प्रिय कहानियाँ- फण्णेश्वर नाथ रैणु राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1972
- मेरी प्रिय कहानियाँ- शानी राजपाल एण्ड संस कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1976
- मेरी प्रिय कहानियाँ- कमलेश्वर राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
द्वितीय संस्करण- 1974
- मेरी प्रिय कहानियाँ- राजेन्द्र अवस्थी राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1970
- मेरी प्रिय कहानियाँ- मोहन राकेश राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
तृतीय संस्करण- 1970
- मेरी प्रिय कहानियाँ- आचार्य चतुरसेन राजपाल एण्ड संस-कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1970
- मेरी प्रिय कहानियाँ- अश्वेय राजपाल एण्ड संस-कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1975

- मेरी प्रिय कहानियाँ- विष्णु प्रभाकर-राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1970
- मेज पर टिकी कुहनियाँ-
रमेश बक्षी भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन- वाराणसी-
प्रथम संस्करण- 1973
- मैं हार गई- मन्नु मण्डारी
जदार प्रकाशन- 2186- बंसारी रोड-
दरियार्गज-दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973
- मौत का नगर- अमरकान्त
रचना प्रकाशन- 45-ए- खुल्दाबाद-
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1973
- यारों के यार तिन पहाड़-
कृष्णा सौबती राजकमल प्रकाशन- 8-नेताजी सुभाषमार्ग
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1968
- यात्रा- दुधनाथसिंह
रचना प्रकाशन- 45-ए, खुल्दाबाद-
इलाहाबाद
- युद्ध- शानी
विधा प्रकाशन मन्विर, 1681- दरियार्गज-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973
- राजा निरबंसिया- कमलेश्वर
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पुनाकुंड
मार्ग, वाराणसी- द्वितीय सं०-1966
- रिश्ता और अन्य कहानियाँ-
गिरिराज किशोर राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार-
दरियार्गज-दिल्ली प्रथम संस्करण-1969
- ललक- कुलभूषण-
राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-दिल्ली
- लोग बिस्तरों पर- काशीनाथसिंह
अभिषेक प्रकाशन- यूनिवर्सिटी रोड,
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1968
- वह आदमी वह बीरत- अमृता प्रीतम- राजपाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1974
- दारिस- मोहन राकेश
राजपाल एण्डसंस- कश्मीरी गेट-
दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1970
- शैषा इतिहास- रमेश उपाध्याय
बार्न बुक डिपो- 30-नाईजाला-
करील बाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-
1973

- सप्तमा- प्रेमचन्द सहजवाला युनाइटेड बुक हाउस-4872-बांदनी चौक दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1975
- सहक दुर्घटना- सुदर्शन चौपड़ा- नीलाम प्रकाशन- 8-कुसारी बाग रोड, इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1972
- सपाट चेहरे वाला आदमी- दूधनाथसिंह अक्षर प्रकाशन- 2186-कंसारी रोड- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1967
- समुद्र- राम कुमार राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार-दिल्ली प्रथमसंस्करण- 1968
- संवाद- श्रीकान्त वर्मा राजकमल प्रकाशन- 8-फौजबाजार- दिल्ली प्रथम संस्करण- 1969
- सिफ़ी एक आकाश - सुदर्शन नारंग लोकप्रती प्रकाशन- 15-ए महात्मागान्धी मार्ग-इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1978
- सुतान्त्र - दूधनाथसिंह रचना प्रकाशन- 45-ए-सुल्ताबाद- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1971
- सुबह के फूल- महीप सिंह हिन्दी भवन- जालन्धर
- सुबह का ठर- काशीनाथ सिंह रचना प्रकाशन- 45-ए-सुल्ताबाद- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1975
- सूरजमुखी के फूल- राजेन्द्र किशोर किताब भण्ड- 56-ए-जीरो रोड- इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1883
- हवा में उकेलै- मणिमथकर शिवाब्द राधाकृष्ण प्रकाशन- 8- कंसारी रोड- दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1972

(संपादित कहानी संग्रह)

- एक दुनिया समानान्तर- सं०- अक्षर प्रकाशन-2186-कंसारी रोड, दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1970
- राजेन्द्र यादव

- कहानी नई पुरानी- सं० राघुवीर सिंह
राजकमल प्रकाशन-दिल्ली, 19वां संस्करण- 1974
- कथा-यात्रा- सं० राजेन्द्र यादव
ज्वार प्रकाशन, 2186-जंझारी रोड दिल्ली- चतुर्थ संस्करण- 1975
- कहानी विविधा- डा० देवीशंकर अवस्थी
राजकमल प्रकाशन, प्राणलि० दिल्ली तेरहवीं आवृत्ति- 1974
- नूतन गल्प संग्रह- सं० प्रौ० विश्वम्भरनाथ भट्ट
इंडियन प्रेस लिमिटेड- प्रयाग, संस्करण- 1953
- पुरस्कृत हिन्दी कहानियाँ- सं० श्रीकृष्ण
पराग प्रकाशन, 31114, कणगिली, विश्वास नगर-शाहदरा-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1973
- प्रतिनिधि कहानियाँ- डा० बच्चन सिंह
अनुराग प्रकाशन, विशालाक्षी-चौक वाराणसी- प्रथम संस्करण - 1973
- मन्नू भंडारी की श्रेष्ठ कहानियाँ- राजेन्द्र यादव
ज्वार प्रकाशन, 2186-जंझारी रोड दरियार्गज-दिल्ली, प्रथम संस्करण - 1975
- श्रेष्ठ वाचलिक कथारं- राजेन्द्र अवस्थी- पराग प्रकाशन-31114, विश्वासनगर कणगिली- शाहदरा-दिल्ली
- श्रेष्ठ प्रेम कहानियाँ- राजेन्द्र अवस्थी-पराग प्रकाशन- 31114, कणगिली, विश्वासनगर-शाहदरा-दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1973
- सातवीं दशक की हिन्दी कहानियाँ- शरद देवड़ा
ज्वार प्रकाशन-41-ए, तारादश स्ट्रीट-कलकत्ता
- हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ- नन्द दुलारे वाजपेयी
विद्या मन्दिर- ब्रह्मनाथ, वाराणसी, त्रयोदश संस्करण- 1962
- हिन्दी साहित्य कोश- सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा
ज्ञान मंडल-लिमिटेड, बनारस, प्रथम संस्करण- संवत् 2015

-

(सहायक बालोचनात्मक ग्रन्थ)

क: संपादित ग्रन्थ

- नई कहानी दशा दिशा समावना
सं०-श्री सुरेन्द्र
अपीलो पब्लिकेशन, सवाई मानसिंह
हाइवे-जयपुर- प्रथम संस्करण-1966
- विकल्प कथा साहित्य विशेषांक-
सं०- शैलेश मटियानी
मौली लाल नेहरू नगर, इलाहाबाद
नवम्बर 1969
- समकालीन कहानी: दिशा और
दृष्टि- सं०- डा० धर्मज्य
अभिध्वजि प्रकाशन, यूनिवर्सिटी रोड
इलाहाबाद- प्रथम संस्करण- 1970
- हिन्दी कहानी पहचान और परस
सं०- डा० इन्द्रनाथ मदान
लिपि प्रकाशन - कृष्ण नगर-दिल्ली
प्रथम संस्करण- 1973
- हिन्दी कहानी: दौदशक की यात्रा-
सं०- डा० रामदरश मिश्र, डा०
नरेन्द्रमोहन,
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-
प्रथम संस्करण- 1970
- हिन्दी साहित्य कौश- सं०
डा० धीरेन्द्र वर्मा
ज्ञानमंडल लिमिटेड- बनारस, प्रथम
संस्करण- संवत् 2015

स: स्वतंत्र ग्रन्थ

- आधुनिकता और समकालीन रचना सम्बन्ध- आदर्श साहित्य प्रकाशन-वेस्ट
डा० नरेन्द्र मोहन
सीलमपुर-दिल्ली, प्रथमसंस्करण-1973
- आधुनिक हिन्दी कहानी-
लक्ष्मी नारायण लाल
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर- बम्बई,
प्रथम संस्करण- 1962
- आधुनिक कहानी का परिपार्ष्व
लक्ष्मी सागर वाष्णीय
साहित्य भवन-इलाहाबाद

- वायुनिक सामाजिक बान्दोलन वीर वायं बुक डिपॉ- दिल्ली, प्रथम
वायुनिक हिन्दी साहित्य- डा० संस्करण- 1972
कृष्ण बिहारी मित्र
- वायुनिक परिवेश वीर नक्सेन लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
डा० शिव प्रसाद सिंह प्रथम संस्करण- 1970
- कहानी की कहानी- डा० हिन्दी साहित्य संस्थान-वज्जेर
राधेश्याम गुप्त संस्करण- 1970
- कहानी- नई कहानी- नामवरसिंह लोकभारती प्रकाशन- महात्मागांधी
मार्ग- इलाहाबाद
- कौशिक जी का कथा साहित्य- साहित्य प्रकाशन-मौतीबाड़ा-दिल्ली
सुमित्रा शर्मा संवत् 2024
- द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी राजमाल एण्ड संस- कश्मीरी गेट-
साहित्य का इतिहास- डा० दिल्ली- प्रथम संस्करण- 1973
लक्ष्मी सागर वाण्यैय
- नई कहानी प्रकृति वीर पाठ- श्री सुरेन्द्र
- नई कहानी की भूमिका- कमलेश्वर बदर प्रकाशन, दिल्ली-6, द्वितीय
संस्करण- 1969
- यशपाल वीर हिन्दी कथा साहित्य सरस्वती प्रेस-बनारस- संस्करण- 1969
सुरेश चन्द्र तिवारी
- समाज शास्त्र की रूपरेखा- साहित्य भवन- वागरा, संस्करण-
एस० पी० गुप्त, जी० कै० अग्रवाल 1972
- स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य- राष्ट्रमाणा प्रकाशन, सन्मार्ग प्रकाशन-
डा० केचन दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1967
- हिन्दी कहानियाँ- एक आलोचनात्मक - पद्म बुक कम्पनीअजयपुर- संस्करण-
अध्ययन- श्रीकृष्ण लाल, त्रैलोक्य जैन 1969
पाण्डुरंगलाल प्रकाशन-ई-11।5, कृष्णानगर
- हिन्दी कहानी-बदलते प्रतिमान- दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1975
डा० रघुवर दयाल वाण्यैय

- हिन्दी कहानी- समाज शास्त्रीय दृष्टि - अक्षर प्रकाशन, 8136-कंसारी
डा० रघुवीर सिन्हा राँठ, दरियार्गज-दिल्ली, प्रथम संस्करण-
1977
- हिन्दी कहानी अपनी जुबानी राजकमल प्रकाशन-दिल्ली- प्रथम
डा० इन्दुनाथ मदान संस्करण- 1968
- हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक -डा० ब्रह्मच शर्मा- सरस्वती पुस्तक सदन,
वर्णन वागरा , संस्करण- 1958
- हिन्दी कहानी और कहानीकार- वाणी विहार-60।14, दुलहिन जी राँठ
प्री० वासुदेव एम० ए० वाराणसी- तृतीय संस्करण- 1961
- हिन्दी कहानी और जीवन मूल्य- अमित प्रकाशन- 66-सुभाषमार्ग-
डा० रमेश चन्द्र लवानिया गाज़ियाबाद
- हिन्दी कहानी स्वरूप विकास और विनोद पुस्तक मंडार-वागरा, प्रथम
प्रतिनिधि कहानीकार- प्रकाश संस्करण- संवत्-1996
दीक्षा
- हिन्दू परिवार भीमांसा सरस्वती सदन- मसूरी, द्वितीय
हरिवच वैदालकार संस्करण- 1963
- हिन्दी कहानी सातवाँ दशक मैकमिलन कम्पनी इंडिया लिमिटेड,
प्रह्लाद अग्रवाल दिल्ली, द्वितीय संस्करण- 1977
- हिन्दी के प्रमुख कहानीकार विनोद पुस्तक मन्दिर-हास्पिटल मार्ग
राजनाथ शर्मा एम० ए० प्रथम संस्करण- 1961

(सहायक संस्कृत ग्रन्थ)

- आपस्तम्बस्मृत- 18।6।14।19।- 600-800 ई०पू०
हरिवच कृत टीका सहित हालास्य नाथ शास्त्री द्वारा
संपादित- स्वाध्याय मंडल, पाठी

- मिताक्षरा- विज्ञानेश्वर कृत याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका-
1070-1100- निर्णय सागर बम्बई
- यजुर्वेद- 191361-37- स्वाध्याय मण्डल, पाटी
- शब्दकल्पद्रुम- तृतीय काण्ड- हिन्दू परिवार पीमासा- पृष्ठ-144
लेखक- श्री हरिदत्त वैदालंकार एम0ए0- सरस्वती सदन-
मसूरी, द्वितीय संस्करण- 1963 से उद्धृत

सहायक ग्रन्थ (बीजी)

- इन्साइक्लोपीडिया आफ दि
सोशल साइन्सेज, भाग-3
- फण्डामेन्टल्स आफ दि माक्सिज्म- पब्लिशिंग हाउस मास्को, संस्करण-
लेनिनिज्म, मैन्गुल-फोरेन लैंग्वेज 1963
- माडर्न मैन इन सर्व बीफ ए सोल,
सी0जी0, टंग, केन पॉल ट्रैन्च टर्नर एण्ड कम्पनी लिमिटेड, 1923
- रसेज एण्ड कल्चर- डा0 डी0 एन0 मजूमदार
- सोशल क्लास इन अमेरिकन सोसायटी, उद्युक्त यूनिवर्सिटी प्रेस,
सोशयोलॉजिकल सीरिज, संस्करण- 1958
- सोसायटी- वार0 एम0 मैकाइवर एवं सी0एच0 पैक- मैकमिलन कम्पनी
लिमिटेड, लन्डन, संस्करण- 1957

(पत्र-पत्रिकारं)

- अणिमा- सितम्बर 1965, कलकत्ता
- आधुनिक साहित्य धिरीर्णाक- जनवरी- 1965, बागरा
सं0- राजनाथ शर्मा

- बालीचना- संपादक-
नामवरसिंह (अक्टूबर-दिसम्बर) 1968, राजकमल
प्रकाशन दिल्ली ।
- बालीचना भाग-2 -संपादक-
नामवर सिंह 1975, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
- इन्दु- कला-8 - किरण- 3
- उत्कृष्ट विचारक- संपादक-
यशपाल, गोपाल उपाध्याय 1966
- कहानी - दिसम्बर-1952, सरस्वती प्रेस,
इलाहाबाद
- कहानी- जनवरी-1955, सरस्वती प्रेस
इलाहाबाद
- कहानी- जनवरी-1958, सरस्वती प्रेस
इलाहाबाद
- कहानी- अगस्त- 1960, सरस्वती प्रेस
इलाहाबाद
- कहानी- अक्टूबर-1960, सरस्वती प्रेस
इलाहाबाद
- धर्मयुग- संपादक- धर्मवीर भारती- 8 नवम्बर-1968, बम्बई
- धर्मयुग- संपादक- धर्मवीर भारती- 24 मई 1970, बम्बई
- धर्मयुग- संपादक- धर्मवीर भारती- 30 जून- 1974, बम्बई
- नया पथ- सितम्बर- 1953- लखनऊ
- नई कहानियाँ- अक्टूबर-1960- दिल्ली
- नई कहानियाँ- दिसम्बर-1960-दिल्ली
- नई कहानियाँ- अगस्त-1961-दिल्ली
- नई कहानियाँ- फरवरी-1962- दिल्ली
- नई कहानियाँ- अप्रैल-1969- दिल्ली
- नवभारत टाइम्स- 20 दिसम्बर- 1969-दिल्ली

- परिकेस भाग-२- संपादक- 1972- जयभारत प्रेस- वाराणसी
काशीनाथ सिंह
- राष्ट्र वाणी(कहानी विशेषार्क) महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा समा- 1970 पुणे
चीथा खण्ड- संपादक- श्री सनत कुमार
- लहर- अंक-२, संपादक- प्रकाश जैन, 1970-महात्मा गान्धी मार्ग- अजमेर
मन मोहिनी,
- मनोरमा- (महिला कथाकार विशेषार्क) - अंक-18, अक्टूबर- 1977,
संपादक- आलोक मित्र, माया प्रेस- इलाहाबाद
- सरस्वती भाग-३ - संख्या-९ सितम्बर-1902
- सरस्वती भाग-४ - संख्या-३ सितम्बर-1903
- सरस्वती भाग-19- संख्या-5 सितम्बर-1916
- संचेतना (कथा विशेषार्क) मार्च- 1970, राजपाल एण्ड संस-
अंक-11-12-13 - संपादक- दिल्ली
महीप सिंह-
- साप्ताहिक हिन्दुस्तान 16 दिसम्बर- 1962- दिल्ली
- सारिका- (कहानी अंक) अगस्त- 1963- बम्बई
संपादक- कमलेश्वर
- ज्ञानोदय - जुलाई - 1958- कलकत्ता
- ज्ञानोदय - जनवरी- 1959- कलकत्ता
- ज्ञानोदय - फरवरी- 1961 - कलकत्ता
- ज्ञानोदय - अप्रैल- 1967- कलकत्ता
